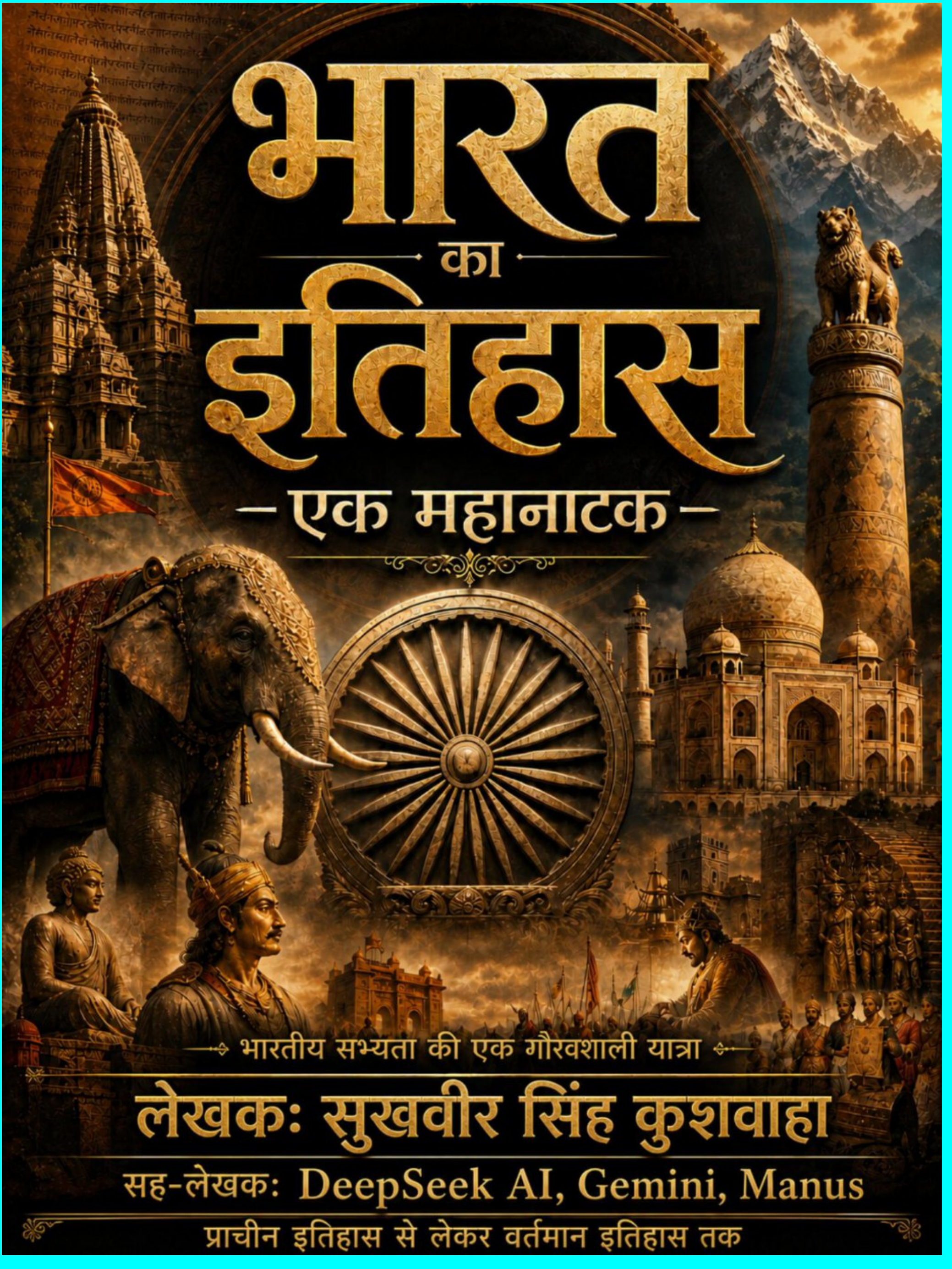
भारत का इतिहास : एक महानाटक



📖 इस पुस्तक के बारे में

इतिहास अक्सर हम सूखी तारीखों, लड़ाइयों, राजाओं के नाम और परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों के रूप में पढ़ते हैं। फिर वही इतिहास हमें बोझ लगने लगता है।
लेकिन क्या यही इतिहास का असली चेहरा है? नहीं।
असली इतिहास कहानियों, संघर्षों, अहंकार, करुणा, पश्चाताप और सीख का अटूट सागर है। हमने यह पुस्तक इसलिए लिखी है कि इतिहास फिर से जीया जाए, रटा नहीं जाए। इतिहास नाटक है –

· जहाँ कभी कोई राजा करुणा से रोता है (अशोक) ।
· जहाँ कभी कोई राजा अहंकार में दिल्ली खो देता है (पृथ्वीराज) ।
· जहाँ कभी एक गुलाम बादशाह बन जाता है (कुतुबुद्दीन ऐबक) ।
· जहाँ कभी एक औरत तख्त संभालती है (रजिया) ।
· जहाँ कभी एक संन्यासी दुनिया बदल देता है (गाँधी)।
▪ जहाँ हर दृश्य में इतिहास का एक नया रंग है।

🎯 यह पुस्तक क्यों पढ़ें?

✅ इस पुस्तक में हर अंक, हर दृश्य, हर पात्र को बिना डरे अच्छाई-बुराई के साथ दिखाया गया है।
✅ यह न किसी धर्म को ऊँचा उठाती है, न किसी को नीचा।
✅ यह न कोई राजा को पूरा खलनायक बनाती है, न पूरा नायक।
✅ इसमें इतिहास को बिल्कुल सही तथ्यों के साथ कहानी की तरह पिरोया गया है।
✅ हर अंक के अंत में तुलना (भारत vs विश्व), प्रश्न-उत्तर और महत्वपूर्ण बिंदु जोड़े गए हैं, जो न सिर्फ याद रखने में मदद करते हैं, बल्कि दूसरी दृष्टि से सोचने पर मजबूर करते हैं।यह पुस्तक उन सभी के लिए है –

· जो इतिहास से प्यार करते हैं,
· जो इतिहास से डरते हैं,
· जो इतिहास को परीक्षा का विषय मानकर नफरत करते हैं,

· और जो समझना चाहते हैं कि भारत आज जैसा है, वैसा क्यों है।

✍️ इस किताब का निर्माण किसने किया?

यह पुस्तक अकेले किसी एक व्यक्ति का काम नहीं है। यह एक विचार, एक सपना, और कई जुड़े दिमागों की साझा मेहनत का परिणाम है।

▪मुख्य लेखक एवं रचनाकार :
इस पुस्तक के मूल लेखक सुखवीर सिंह कुशवाहा हैं।

▪ सह-लेखन एवं व्यवस्थापन :
▪जैमिनी (Gemini Ai) & Deepseek Ai तथा Manus Ai । जिन्होंने इतिहास के सूखे तथ्यों में भावनाएँ भरीं, तारीखों को संवादों में बदला।पर यह किताब पूरी तरह से एक मानवीय सोच और रचनात्मकता का नतीजा है।

सर्वाधिकार:
· यह पुस्तक ऐतिहासिक तथ्यों, प्रसिद्ध विद्वानों के शोध, शिलालेखों, विदेशी यात्रियों के वृतांतों, पुरातात्विक साक्ष्यों और UPSC/NCERT स्तर की मान्य सामग्री पर आधारित है।
· जहाँ भी विवाद है – वहाँ “कुछ विद्वान कहते हैं”, “शायद”, “संभवतः” लिखकर बिना पक्षपात के प्रस्तुत किया गया है।
· हर विवरण को मनोरंजक बनाने के चक्कर में तथ्यों से समझौता नहीं किया गया है। लेखक का उद्देश्य किसी भी धर्म, जाति या समुदाय की भावनाओं को ठेस पहुँचाना नहीं है। इतिहास की व्याख्या अलग-अलग स्रोतों के अनुसार भिन्न हो सकती है, इसलिए लेखक ने सर्वमान्य और निष्पक्ष तथ्यों को ही 'महानाटक' का रूप दिया है।

सुधार और सुझाव :

यदि इस पुस्तक में कोई अनपेक्षित त्रुटि पाई जाती है, तो पाठक बेझिझक लेखक से संपर्क कर सकते हैं ।

सम्पर्क :

Email : skchauhanapur@gmail.com
sukhveersinghkushwaha2@gmail.com

Social Media Account :
Facebook :
Sk Chauhanapur Entertainment
Instagram :
Sk Chauhanapur Entertainment

अंक सूची

अंक 1: प्रागैतिहासिक काल – "जब इंसान गुफाओं में रहता था"

(2,000,000 ई.पू. – 4,000 ई.पू.)

· इतिहास के चार स्रोत – साहित्य, विदेशी विवरण, पुरातत्व, पुरातात्विक स्थल ।
· आदिमानव के प्रकार – जावा, पेकिंग, हीडलबर्ग, नीएंडरथल, क्रोमैग्नॉन, होमो सेपियन ।
· पुरापाषाण काल – शिकारी जीवन, आग की जानकारी (प्रयोग नहीं), होमो सेपियन (36,000 ई.पू.) ।
· मध्यपाषाण काल – कुत्ता पालतू, माइक्रोलिथ (छोटे पत्थर के औजार) ।
· नवपाषाण काल – कृषि, पहिया, ताँबा (पहली धातु), मिट्टी के बर्तन, गतावास (स्थायी बस्ती) ।

· प्रमुख स्थल – भीमबेटका, बेलन घाटी, मेहरगढ़, कोलडीहवा, बुर्जहोम, चिरांद, कालीबंगा, लोथल
· खोजकर्ता: रॉबर्ट ब्रूस फुट (1863 ई.) ।

अंक 2: सिंधु घाटी सभ्यता – "जब सीवर लाइनें भी स्मार्ट थीं"

(2350 ई.पू. – 1750 ई.पू.)

· खोज: हड़प्पा (दयाराम साहनी, 1921), मोहनजोदड़ो (राखालदास बनर्जी, 1922) ।
· सभी 15 प्रमुख स्थल (सारणी सहित):
हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, चन्हूदड़ो, रोपड़, लोथल, कालीबंगा, बनावली, सुरकोटड़ा, कोट दीजी, धौलावीरा, रंगपुर, अमरी, आलमगीरपुर, माँडा, दैमाबाद ।

· नगर नियोजन – सीधी सड़कें, स्नानागार, सीवर लाइन, अन्नागार, सभा भवन ।
· कला – काँसे की नर्तकी, पशुपति मूर्ति (शिव का सबसे पुराना रूप), मातृदेवी ।
· रहस्य – लिपि (भाव-चित्रात्मक, बस्ट्रोफेडन, अब तक नहीं पढ़ी गई) ।
· व्यापार – वस्तु-विनिमय, 16 के अनुपात में माप, कपास (दुनिया के पहले उगाने वाले) ।
· पतन – सरस्वती का सूखना, बाढ़ (7 बार), जलवायु परिवर्तन ।

अंक 3: वैदिक काल – "जब वेद लिखे गए, वर्ण बंटे, और एक समाज का जन्म हुआ"

(1500 ई.पू. – 600 ई.पू.)

· आर्य:
आगमन (2000-1500 ई.पू.), भाषा (संस्कृत), धर्म (यज्ञ, अग्नि, इंद्र)।
· ऋग्वैदिक काल (1500-1000 ई.पू.):
सभा-समिति (लोकतंत्र के बीज), स्त्रियों का स्वर्ण युग (विधवा विवाह, नियोग), इंद्र सबसे बड़े देवता, सरस्वती नदी।
· उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई.पू.):
राजा वंशानुगत, वर्ण जन्म पर (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र), स्त्रियों के अधिकार कम (पर्दा, बाल-विवाह), लोहे का आगमन (अतरंजीखेड़ा, 1000 ई.पू.)।
· चार वेद, उपनिषद (108, 'सत्यमेव जयते'), मनुस्मृति।
· षड्दर्शन:
कपिल (सांख्य), पतंजलि (योग), गौतम (न्याय), कणाद (वैशेषिक), जैमिनी (पूर्व मीमांसा), बादरायण (उत्तर मीमांसा)।

अंक **4:** महाजनपद से मौर्य तक – **"**जब भारत ने साम्राज्य का स्वाद चखा**"**

(600 ई.पू. – 322 ई.पू.)

· 16 महाजनपद –
मगध सबसे ताकतवर (लोहा, हाथी, नदियाँ, राजधानी, महत्वाकांक्षी राजा)।
· हर्यक वंश:

बिम्बिसार (मगध का वास्तविक संस्थापक, बुद्ध का अनुयायी), अजातशत्रु (पिता-हत्यारा, रथमूसल, महाशिलाकंटक), प्रथम बौद्ध संगीति (483 ई.पू., राजगृह)।

· शिशुनाग वंश:

कालाशोक – द्वितीय बौद्ध संगीति (383 ई.पू., वैशाली)।

· नंद वंश:

महापद्मनंद ('सर्वक्षत्रान्तक'), धनानंद (अहंकारी)।

· सिकंदर का आक्रमण (326 ई.पू.) –

झेलम युद्ध, पोरस, व्यास नदी पर सेना का विद्रोह, बेबीलोन में मृत्यु।

· चाणक्य (कौटिल्य) –

अर्थशास्त्र, धनानंद से अपमानित, प्रतिज्ञा, चंद्रगुप्त को तक्षशिला में प्रशिक्षण।

· चंद्रगुप्त मौर्य (322 ई.पू.) –

मौर्य साम्राज्य की स्थापना, बाद में जैन संन्यासी (श्रवणबेलगोला, कायाक्लेश)।

· मेगस्थनीज –

यूनानी राजदूत, 'इंडिका' के लेखक।

अंक **5:** अशोक – "जब एक नरसंहारक बुद्ध का सिपाही बन गया"

(273 ई.पू. – 232 ई.पू.)

· 99 भाइयों की हत्या (चंडाशोक)।

· कलिंग युद्ध (261 ई.पू.) –

1 लाख मरे, 1.5 लाख बंदी (तेरहवें शिलालेख)।

· बौद्ध धर्म अपनाना –

निग्रोध (भतीजा) से प्रभावित, उपगुप्त से दीक्षा।

· धम्म की घोषणा –

अहिंसा, सत्य, करुणा, सभी धर्मों का सम्मान, प्रजा कल्याण।
· शिलालेख (33) –
ब्राह्मी, खरोष्ठी, अरामाईक, ग्रीक; सारनाथ का स्तंभ (राष्ट्रीय चिह्न, 'सत्यमेव जयते')।
· साँची का स्तूप – बुद्ध के अवशेषों पर।
· महेंद्र और संघमित्रा (पुत्र-पुत्री) :
– श्रीलंका में बौद्ध धर्म का प्रचार, बोधि वृक्ष की शाखा (अनुराधापुरा)।

अंक 6: मौर्योत्तर काल – "जब भारत में यूनानी, शक, और कुषाण राजा बने"

(200 ई.पू. – 300 ई.)

· यवन (इंडो-ग्रीक, 200-100 ई.पू.) –
पहला विदेशी आक्रमण, मिनांडर (मिलिंद) और नागसेन ('मिलिंद पन्हो')।
देन:
सिक्कों पर लेख, सप्ताह के सात दिन, राशियाँ।
· शक (सीथियन, 100-50 ई.पू.) :
– रुद्रदामन, जूनागढ़ अभिलेख (संस्कृत में)।
· पहलव (पार्थियन, 50 ई.पू.-50 ई.) –
गोन्दोफर्निस, सेंट थॉमस का भारत आगमन (52 ई.)।
· कुषाण (30-250 ई.) –
कनिष्क (78 ई.) : शक संवत, राजधानी पेशावर और मथुरा, चतुर्थ बौद्ध संगीति (कुण्डलवन, कश्मीर, अध्यक्ष वसुमित्र), गांधार कला (यूनानी+भारतीय), दरबारी विद्वान (नागार्जुन, चरक, अश्वघोष)।

अंक 7: गुप्त काल – "जब भारत 'सोने की चिड़िया' कहलाया"

(240 ई. – 550 ई.)

· चन्द्रगुप्त प्रथम (319-350 ई.) –
गुप्त संवत (320 ई.), लिच्छवी राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह, 'महाराजाधिराज' ।
· समुद्रगुप्त (350-375 ई.) –
'भारत का नेपोलियन', प्रयाग प्रशस्ति (हरिषेण), वीणा वादक (सिक्कों पर) ।
· चन्द्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) (375-415 ई.) –
शकों को हराया, नवरत्न (9 विद्वान – कालिदास, अमर सिंह, धन्वंतरि, क्षपणक, शंकु, घटकर्पर, वररुचि, वेताल भट्ट, वराहमिहिर) ।
· फाह्यान (चीनी यात्री, 399-412 ई.) –
"भारत स्वर्ग जैसा है" ।
· कुमारगुप्त प्रथम (415-455 ई.) –
नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना ।
· स्कन्दगुप्त (455-467 ई.) –
हूणों को तीन बार हराया, अंतिम प्रतापी ।
· गुप्त शासन – संस्कृत राजभाषा, कर (भाग और भोग), ग्राम प्रशासन ।

अंक 8: गुप्तोत्तर काल – हर्ष और राजपूत – "हर्ष का सपना, राजपूतों का उदय"

(550 ई. – 1192 ई.)

· हर्षवर्धन (606-647 ई.) –
 राजधानी थानेश्वर से कन्नौज, बाणभट्ट ('हर्षचरित'), हर्ष के तीन नाटक (नागानन्द, रत्नावली, प्रियदर्शिका), ह्वेनसांग (चीनी यात्री, 'सि-यू-की'), पुलकेशिन द्वितीय (चालुक्य) ने नर्मदा पर हराया ।
· दक्षिण भारत के राजवंश:
 पल्लव (महाबलीपुरम के रथ मन्दिर, 'मत्तविलास प्रहसन'), राष्ट्रकूट (एलोरा का कैलाश मन्दिर, 'कविराजमार्ग' – कन्नड़), चोल (तंजौर का बृहदेश्वर मन्दिर, श्रीलंका और इंडोनेशिया पर आक्रमण, स्थानीय स्वशासन) ।
· त्रिपक्षीय संघर्ष (750-950 ई.) –
प्रतिहार vs पाल vs राष्ट्रकूट, कन्नौज के लिए 200 साल का युद्ध ।
विजेता: प्रतिहार ।
· राजपूत वंश:
 प्रतिहार (कन्नौज), चौहान (पृथ्वीराज), चन्देल (खजुराहो), परमार (भोज – 'कविराज', 80 से अधिक ग्रंथ), सोलंकी (भीम द्वितीय – 1175 ई. में गोरी को हराया), गहड़वाल (जयचन्द), तोमर (अनंगपाल तोमर – दिल्ली शहर बसाया) ।
· पृथ्वीराज चौहान –
 तराईन का प्रथम युद्ध जीता (1191 ई.), द्वितीय में हारे (1192 ई.), जयचन्द का विश्वासघात, चन्दबरदाई ('पृथ्वीराज रासो') ।

अंक 9: दिल्ली सल्तनत – "पाँच वंश, 320 साल, एक तख्त"

(1206 ई. – 1526 ई.)

· गुलाम वंश (1206-1290):
कुतुबुद्दीन ऐबक ('लाख बख्श', कुतुब मीनार की नींव), इल्तुतमिश (इक़्ता प्रणाली, तुर्कान-ए-चहलगानी), रजिया सुल्तान

(प्रथम महिला मुस्लिम शासिका, पुरुषों के कपड़े), बलबन ('सिजदा', 'पाबोस', 'लोहा और रक्त') ।

· खिलजी वंश (1290-1320):

अलाउद्दीन खिलजी ('सिकंदर-ए-सानी', प्रथम मुस्लिम सुल्तान जिसने दक्षिण भारत पर आक्रमण किया, बाजार नियंत्रण, 'चेहरा' और 'दाग' प्रथा) ।

· तुगलक वंश (1320-1413):

मुहम्मद बिन तुगलक (चार प्रयोग – राजधानी परिवर्तन, कर वृद्धि, सांकेतिक मुद्रा, खुरासन योजना; दीवान-ए-अमीर कोही; इब्नबतूता का आगमन), फिरोजशाह तुगलक (कल्याणकारी कार्य, आत्मकथा 'फुतूहात-ए-फिरोजशाही') ।

· सैय्यद वंश (1414-1451):

खिज्र खाँ (तैमूर का सेनापति) ।

· लोदी वंश (1451-1526):

सिकंदर लोदी ('सिकन्दरी गज़', आगरा शहर की स्थापना, 'गुलरुखी' उपनाम से कविताएँ), इब्राहिम लोदी (अंतिम सुल्तान, पानीपत का प्रथम युद्ध (1526 ई.) में बाबर से हारा) ।

अंक **10:** मुगल साम्राज्य **– "**ताजमहल से लेकर औरंगजेब के सपने तक**"**

(1526 ई. – 1707 ई.)

· बाबर (1526-1530) –

पानीपत का प्रथम युद्ध (तुलगुमा नीति, तोपखाना), 'बाबरनामा' (तुर्की) ।

· हुमायूँ (1530-1540,1555-1556) –

शेरशाह से हार, निर्वासन (अमरकोट में अकबर का जन्म, 1542), दीनपनाह में गिरकर मृत्यु ।

· शेरशाह सूरी (1540-1545) –
‘जब्ती’ प्रणाली, ग्रांड ट्रंक रोड, शुद्ध सोने-चाँदी के सिक्के ।
· अकबर (1556-1605) –
पानीपत का द्वितीय युद्ध (1556), जजिया कर हटाया (1564) , फतेहपुर सीकरी (1571), इबादतखाना (1575), दीन-ए-इलाही (1582) , मनसबदारी प्रणाली, नवरत्न (बीरबल, तानसेन, अबुल फजल, फैजी, राजा टोडरमल, मानसिंह, फकीर अज़ियाओद्दीन, अब्दुल रहीम खानखाना, मुल्ला दो प्याजा) ।
· जहाँगीर (1605-1627) –
‘न्याय की जंजीर’, नूरजहाँ, अंग्रेजों की पहली फैक्ट्री (सूरत, 1611), सिख गुरु अर्जुन देव को फाँसी ।
· शाहजहाँ (1627-1657) –
ताजमहल (1631-1653) , लाल किला, जामा मस्जिद, मोती मस्जिद, मयूर सिंहासन, औरंगजेब ने कैद किया ।
· औरंगजेब (1658-1707) –
जजिया कर फिर से लगाया (1679), सिख गुरु तेग बहादुर को मरवाया, दक्कन में 27 साल, ‘जिन्दा पीर’ ।

अंक **11:** मराठा साम्राज्य **– "**शिवाजी के सपने से लेकर पानीपत के खून तक**"**

(1627 ई. – 1818 ई.)

· शिवाजी (1627-1680) –
गुरिल्ला युद्ध, अफजल खाँ का वध (बाघ नख), राज्याभिषेक (1674, रायगढ़, ‘छत्रपति’) , अष्टप्रधान (8 मंत्री – पेशवा, अमात्य, मंत्री, सचिव, सुमंत, सेनापति, पंडितराव, न्यायाधीश) ।
· पेशवा काल:

बालाजी विश्वनाथ (प्रथम पेशवा, 'मराठा साम्राज्य का द्वितीय संस्थापक', 1719 की मुगल संधि – 'मराठा साम्राज्य का मैग्नाकार्टा'), बाजीराव प्रथम ('हिंदू पादशाही', कभी युद्ध नहीं हारा), बालाजी बाजीराव – पानीपत का तृतीय युद्ध (14 जनवरी, 1761) – मराठों की करारी हार, बाजीराव द्वितीय (अंतिम पेशवा, 1818 में अंग्रेजों ने पेशवा पद समाप्त किया)।
· सिख गुरु (10) – गुरु नानक से गुरु गोबिन्द सिंह तक, खालसा पंथ (1699)।

अंक **12:** स्वतंत्रता तक – **"**जब भारत ने **'**करो या मरो**'** कहा**"**

(1857 ई. – 1947 ई.)

· 1857 का विद्रोह (10 मई, 1857) –
कारण: चर्बी वाले कारतूस
नेता:
 बहादुर शाह जफर (दिल्ली), रानी लक्ष्मीबाई (झाँसी), नाना साहब (कानपुर), तात्या टोपे, कुँवर सिंह (बिहार), बेगम हजरत महल (लखनऊ), मंगल पांडे।
· सामाजिक सुधारक:
राजा राममोहन राय (ब्रह्म समाज, सती प्रथा समाप्त), स्वामी दयानंद (आर्य समाज, 'वापस वेदों की ओर'), स्वामी विवेकानन्द (रामकृष्ण मिशन, शिकागो धर्म संसद), ज्योतिबा फुले (सत्यशोधक समाज), सर सैयद अहमद खाँ (अलीगढ़ आंदोलन)।
· क्रांतिकारी:
भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु (फाँसी: 23 मार्च, 1931), राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ, रोशन सिंह (काकोरी कांड, 1925), चंद्रशेखर आज़ाद (1931 में आत्महत्या), प्रफुल्ल चाकी, खुदीराम बोस (मुजफ्फरपुर, 1908), सूर्य सेन (मास्टर दा) (चटगाँव, 1930),

रासबिहारी बोस, मदन लाल धींगरा, उधम सिंह, लाला हरदयाल, श्यामजी कृष्ण वर्मा, मैडम भीकाजी कामा, विनायक दामोदर सावरकर ।

· कांग्रेस (1885, बॉम्बे) –
पहले अध्यक्ष व्योमेश चंद्र बनर्जी ।

· गरमपंथी:
लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक ('स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है'), बिपिन चन्द्र पाल ('लाल-बाल-पाल') ।

· महात्मा गाँधी:
चंपारण (1917 – पहला सत्याग्रह), असहयोग (1920-22), दांडी यात्रा (1930) , भारत छोड़ो (1942 – 'करो या मरो') ।
साथी:
जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, डॉ. भीमराव अंबेडकर (पूना पैक्ट, 1932) ।

· सुभाष चन्द्र बोस –
फॉरवर्ड ब्लॉक (1939), आजाद हिंद फौज (INA) , आजाद हिंद सरकार (21 अक्टूबर, 1943, सिंगापुर) ।
नारे :
'दिल्ली चलो', 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा ।

· विभाजन (1947) –
मुहम्मद अली जिन्ना (पाकिस्तान की मांग, 1940), लॉर्ड माउंटबेटन (अंतिम वायसराय), माउंटबेटन योजना (3 जून, 1947), 14/15 अगस्त, 1947 – भारत और पाकिस्तान स्वतंत्र ।

· गाँधी की हत्या (30 जनवरी, 1948) – नाथूराम गोडसे ।

अंक **13:** आज़ादी के बाद – नए भारत का जन्म और धर्मों की यात्रा

(1947 ई. – वर्तमान, और धर्मों का इतिहास)

· संविधान (26 जनवरी, 1950) –
डॉ. भीमराव अंबेडकर (मुख्य निर्माता), डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (प्रथम राष्ट्रपति), गणतंत्र ।
· रियासतों का विलय –
सरदार पटेल (560 से अधिक), जूनागढ़ (जनमत संग्रह), हैदराबाद (‘ऑपरेशन पोलो’, 1948), कश्मीर (विवादित) ।
· प्रधानमंत्री:
नेहरू (1947-64), लाल बहादुर शास्त्री (1964-66, ‘जय जवान, जय किसान’), इंदिरा गाँधी (1966-77,1980-84 – 1971 युद्ध, आपातकाल 1975-77, ऑपरेशन ब्लू स्टार 1984, हत्या), राजीव गाँधी (1984-89 – कंप्यूटर क्रांति, बोफोर्स घोटाला, हत्या 1991), अटल बिहारी वाजपेयी (1998-2004 – पोखरण-2 1998, परमाणु शक्ति), मनमोहन सिंह (2004-14 – मनरेगा), नरेन्द्र मोदी (2014-वर्तमान – नोटबंदी 2016, जीएसटी 2017, बालाकोट हमला 2019, राम मंदिर 2024) ।
· भारत के धर्म:
· हिंदू धर्म –
सबसे पुराना (4000 ई.पू. से), वेद, उपनिषद (‘सत्यमेव जयते’), रामायण, महाभारत ।
अच्छाई:
सहिष्णुता, ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ ।
बुराई:
वर्ण-जाति व्यवस्था, छुआछूत, स्त्रियों पर अत्याचार ।
· बौद्ध धर्म –
गौतम बुद्ध (563 ई.पू.), चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग, अहिंसा ।
अच्छाई: अहिंसा, सब समान ।
बुराई: भारत में विलीन ।
· जैन धर्म –
महावीर (540-468 ई.पू.), 24 तीर्थंकर, पाँच व्रत।
अच्छाई: अहिंसा, सादगी ।

बुराई: बहुत कट्टर ।
· सिख धर्म –
गुरु नानक (1469 ई.), 10 गुरु, खालसा पंथ (1699) ।
अच्छाई: सब समान, लंगर ।
बुराई:
ऑपरेशन ब्लू स्टार (1984) – सिख-हिंदू दंगे ।
· इस्लाम –
मुहम्मद बिन कासिम (712 ई.), सूफी संत
अच्छाई: एकेश्वरवाद, सब समान ।
बुराई:
बलपूर्वक धर्म परिवर्तन, 1947 का बँटवारा ।
· ईसाई धर्म –
सेंट थॉमस (52 ई.), पुर्तगाली (1498), अंग्रेज (1600) ।
अच्छाई: प्रेम, क्षमा, शिक्षा-स्वास्थ्य में मदद ।
बुराई: गोवा इंक्विजिशन (1560-1812)।

अंक सूची समाप्त

भारत का इतिहास : एक महानाटक

नाटक आरम्भ

अंक **1:** प्रागैतिहासिक काल **– "**जब इंसान गुफाओं में रहता था**"**

(लगभग 2,000,000 ई.पू. से 4,000 ई.पू. तक – 20 लाख साल की वह लंबी रात, जब मानव का इतिहास चुपके-चुपके लिखा जा रहा था)

प्रस्तावना**:** इतिहासकार जासूस होता है **–** हमें अतीत कैसे पता चलता है**?**

एक शाम। दादा और पोता बैठे हैं। पोता एक पुराने पत्थर के टुकड़े को पलट-पलटकर देख रहा है।

पोता: “दादा, हमें इतना पुराना सब कैसे पता चलता है? उस समय तो कैमरे नहीं थे, न मोबाइल थे, न किताबें थीं।”

दादा (आँखें खोलते हुए, मुस्कुराते हुए): “बेटा, इतिहासकार चार जासूसों की तरह होते हैं। हर जासूस अलग तरह के सबूत इकट्ठा करता है।”

पहला जासूस – किताबें (साहित्य):

“बेटा, कुछ बहुत पुरानी किताबें हैं, जिनसे हमें पता चलता है कि राजा कैसे राज करते थे, क्या सोचते थे।”

· चाणक्य (जिन्हें कौटिल्य भी कहते हैं) ने ‘अर्थशास्त्र’ लिखा। यह राजा के लिए ‘हाउ टू रन एन एम्पायर’ की गाइडबुक थी। इससे मौर्यकालीन इतिहास की जानकारी मिलती है।
· पाणिनी ने ‘अष्टाध्यायी’ लिखी – संस्कृत व्याकरण का पहला और सबसे सटीक नियम। इतना सटीक कि आज भी कंप्यूटर वैज्ञानिक इसकी तुलना प्रोग्रामिंग भाषाओं से करते हैं।
· कल्हण ने ‘राजतरंगिणी’ लिखी – कश्मीर के राजाओं का फैमिली ट्री। इसे ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित भारत की पहली पुस्तक कहा जाता है। इससे कश्मीर के इतिहास की जानकारी मिलती है।

दूसरा जासूस – विदेशी मेहमान (विदेशी विवरण):

“बेटा, जब भारत में राजा राज कर रहे थे, तब दूसरे देशों से लोग यहाँ आते थे – कभी राजदूत बनकर, कभी व्यापारी बनकर, कभी भिक्षु बनकर। वे जो देखते, उसे लिखकर अपने देश ले जाते। वही डायरियाँ आज हमारे लिए इतिहास बन गई हैं।”

· मेगस्थनीज – एक यूनानी राजदूत। वह चंद्रगुप्त मौर्य (322-298 ई.पू.) के दरबार में आया। उसने 'इंडिका' नाम की किताब लिखी। उसने लिखा – “भारत में कोई दास नहीं, लोग खुश हैं, दो शहरों की लड़ाई में किसान अपने खेत जोतते रहते हैं।” इससे मौर्यकालीन समाज और संस्कृति की जानकारी मिलती है।
· टॉलमी – उसने 'भारत का भूगोल' लिखा – पहला विदेशी जिसने भारत का नक्शा बनाने की कोशिश की।
· फाह्यान – एक चीनी भिक्षु। वह चन्द्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य, 375-415 ई.) के दरबार में आया। उसने लिखा – “भारत स्वर्ग जैसा है, कर कम हैं, मांस-मदिरा नहीं चलती।” इससे गुप्तकालीन समाज और संस्कृति की जानकारी मिलती है।
· ह्वेनसांग – एक और चीनी भिक्षु। वह हर्षवर्धन (606-647 ई.) के दरबार में आया। 14 साल नालंदा विश्वविद्यालय में रहा। उसने 'सि-यू-की' (पश्चिम का रिकॉर्ड) लिखी, जिसमें छठी सदी के भारतीय समाज, धर्म और राजनीति का बारीकी से वर्णन है।
· इत्सिंग – सातवीं शताब्दी के अंत में भारत आया। उसने नालंदा और विक्रमशिला विश्वविद्यालयों का वर्णन किया।
· अलबरूनी – एक अरब विद्वान। वह महमूद गजनवी (लगभग 1017 ई.) के साथ भारत आया। उसने भारत को बारीकी से समझा और 'तहकीक-ए-हिन्द' (किताब-उल-हिन्द) लिखी। इस किताब में राजपूत-कालीन समाज, धर्म, रीति-रिवाज, और राजनीति का सुंदर वर्णन है।
· तारानाथ – एक तिब्बती लेखक। उसने 'कंग्यूर' और 'तंग्यूर' नाम की दो पुस्तकों में भारतीय इतिहास का वर्णन किया।

तीसरा जासूस – पुराने निशान (पुरातत्व):

“बेटा, जब किताबें नहीं होतीं, तब हम जमीन खोदते हैं। पत्थर के खंभे मिलते हैं, जिन पर राजाओं के अभिलेख उकेरे होते हैं। सिक्के मिलते हैं, जिनसे पता चलता है कि उस समय क्या व्यापार होता था, किसका चेहरा सिक्कों पर बनता था।”

· अभिलेख: राजा अपनी उपलब्धियाँ पत्थर के खंभों पर उकेरते थे। जैसे – प्रयाग स्तंभ अभिलेख (समुद्रगुप्त का), जूनागढ़ अभिलेख (रुद्रदामन का), हाथीगुम्फा अभिलेख (खारवेल का), वेसनगर का गरुड़ स्तंभ लेख (होलियोडोरस का – एक यवन राजदूत जो भागवत धर्म का अनुयायी बन गया)।
· सिक्के: सबसे प्राचीन सिक्कों को ‘आहत सिक्के’ कहते हैं। किताबों में इन्हें ‘काषापण’ भी कहा गया है। सबसे पहले सिक्कों पर लेख लिखने का काम यवन (यूनानी) शासकों ने किया। अरिकमेडू (पुदुचेरी के पास) से रोमन सिक्के भी मिले हैं।
· मुहरें और मिट्टी के बर्तन: इनसे पता चलता है कि उस समय के लोग कैसे रहते थे, क्या खाते थे, किसकी पूजा करते थे।

चौथा जासूस – जमीन के अंदर दबी बस्तियाँ (पुरातात्विक स्थल):

“बेटा, कभी-कभी पूरे शहर जमीन के अंदर दबे होते हैं। हम उन्हें खोदते हैं, और फिर एक पूरी सभ्यता हमारे सामने आ जाती है।”

· बुर्जहोम (कश्मीर) – यहाँ ‘गतावास’ (स्थायी बस्ती) के साक्ष्य मिले।
· कालीबंगा (राजस्थान) – यहाँ ‘जुते हुए खेत’ मिले – दुनिया के सबसे पुराने जुते हुए खेतों में से एक। ‘कालीबंगा’ का अर्थ है – ‘काले रंग की चूड़ियाँ’।
· लोथल (गुजरात) – यहाँ ‘गोदीवाड़ा’ (डॉकयार्ड) मिला – जहाँ नावें खड़ी की जाती थीं। इससे पता चलता है कि ये लोग समुद्री व्यापार करते थे।

· मेहरगढ़ – यहाँ से व्यवस्थित कृषि का पहला साक्ष्य मिला।
· कोलडीहवा (इलाहाबाद) – यहाँ से चावल की खेती का प्राचीनतम साक्ष्य मिला।
· चिरांद (बिहार) – एक नवपाषाण स्थल। यहाँ से हड्डी के औजार मिले।
· बेलन घाटी (इलाहाबाद) – यहाँ से पाषाण काल के तीनों चरणों (पुरापाषाण, मध्यपाषाण, नवपाषाण) के साक्ष्य मिले।

सबसे महत्वपूर्ण: भारत में पाषाणकालीन सभ्यता का अनुसंधान सबसे पहले रॉबर्ट ब्रूस फुट ने 1863 ई. में शुरू किया।

महत्वपूर्ण नोट **(TIME –** पाषाण काल की दो समयसीमाएँ**)**

दादा: “बेटा, विद्वानों में इस बात पर मतभेद है कि पाषाण काल के ये चरण कब से कब तक चले। इसलिए दो तरह की समय सीमा चलती हैं – एक विश्व इतिहास की, और दूसरी भारतीय इतिहास की (जिसे परीक्षाओं में पूछा जाता है)। दोनों सही हैं – बस अलग-अलग नज़रिए हैं।”

कालखंड विश्व इतिहास भारतीय इतिहास **(UPSC/**परीक्षा मानक**)**

पुरापाषाण काल 2,000,000 – 10,000 ई.पू. ,
(5,00,000 – 10,000 ई.पू.)
मध्य पाषाण काल 10,000 – 8,000 ई.पू.,
(9,000 – 4,000 ई.पू.)
नवपाषाण काल 8,000 – 4,000 ई.पू.
(7,000 – 2,500 ई.पू.)

आदिमानव के प्रकार – “हम कहाँ से आए?”

दादा: “बेटा, आज से लाखों साल पहले, हम जैसा इंसान नहीं था। धीरे-धीरे कई तरह के आदिमानव आए और गए। उनके अवशेष हमें बताते हैं कि हम कहाँ से आए।”

आदिमानव समय (लगभग) कहाँ मिला?
क्या खासियत थी?
जावा मानव 5,00,000 ई.पू. (इंडोनेशिया में) :
सबसे पुराना मिला मानव ।
पेकिंग मानव 5,00,000 ई.पू. (चीन में) :
आग का प्रयोग जानता था ।
हीडलबर्ग मानव 3,00,000 ई.पू. (यूरोप में) :
भाले बनाना जानता था।
नीएंडरथल मानव 1,00,000 ई.पू. (यूरोप में) :
एशिया मृतकों को दफनाता था, बुद्धिमान था ।
क्रोमैग्नॉन मानव 35,000 ई.पू. (यूरोप में) :
गुफा चित्र बनाता था।
होमो सेपियन 36,000 ई.पू. (पूरी दुनिया में) :
हम आधुनिक मानव।

दृश्य **1:** पुरापाषाण काल **– "**जब इंसान भूखा था**,** और आग देवता थी**"**

कब: लगभग 2,000,000 ई.पू. से 10,000 ई.पू. तक
(भारतीय इतिहास के अनुसार: 5,00,000 ई.पू. से 10,000 ई.पू. तक) ।

कहाँ: भीमबेटका (मध्य प्रदेश) की गुफाएँ, बेलन घाटी (इलाहाबाद) , हथनोरा (नर्मदा घाटी) ।

कौन था वहाँ: होमो सेपियन – यानी हम, बिल्कुल हम जैसा इंसान, पर बिना कपड़ों के, बिना मकान के, बिना आग के।

कहानी:



एक गुफा के बाहर। रात का समय है। सर्दी बहुत है। एक आदमी, एक औरत, और एक छोटा बच्चा आपस में चिपके बैठे हैं। गुफा के अंदर अंधेरा है।

बच्चा (काँपते हुए): “पिता… ठंड बहुत लग रही है। मेरा पेट भी भूखा है।”

आदमी (उदासी से): “बेटा, आज शिकार नहीं मिला। कल सुबह फिर कोशिश करेंगे।”

औरत (बच्चे को अपने सीने से लगाते हुए): “चुप रहो। जल्दी सुबह होगी।”

बच्चा: “पिता, वह क्या है जो पेड़ पर लाल-लाल चमक रहा है?”

आदमी (आकाश की ओर देखते हुए): “वह आग है। जब बादल गरजते हैं और बिजली गिरती है – तो पेड़ जलने लगते हैं। वह बहुत ताकतवर है। पर वह हमसे दूर रहती है।”

(अचानक, आसमान में बादल गरजते हैं। बिजली कड़कती है। दूर एक पेड़ जलने लगता है।)

आदमी (दौड़ता है, डरते-डरते एक जलती हुई टहनी उठा लेता है। उँगलियाँ जल रही हैं, दर्द से वह चीखता है – पर टहनी नहीं छोड़ता। वह गुफा तक ले आता है।)

आदमी: “देखो! यह गर्म है। अगर हम इसे जलती रखें, तो मांस भून सकें, जाड़े में ताप सकें!”

टहनी बुझ जाती है।

बच्चा: “बुझ गई…”

आदमी (अपनी जली हुई उँगलियों को देखता है): “पर अब मुझे पता है – आग को काबू में किया जा सकता है। हम अभी नहीं कर सकते – पर हमारे बाद… कोई ज़रूर करेगा।”

तथ्य: इसी काल में लगभग 36,000 ई.पू. में आधुनिक मानव – होमो सेपियन – पहली बार अस्तित्व में आया। वही हम। उसके हाथ वही थे, दिमाग वही था – बस तकनीक नहीं थी।

दादा: “बेटा, उस समय के इंसान शिकार करके जीता था – हिरण, सूअर, छोटे-मोटे जानवर। और जब शिकार नहीं मिलता, तो फल-मूल तोड़कर पेट भरता। इसलिए इतिहासकार इस काल को ‘आखेटक और खाद्य-संग्राहक काल’ कहते हैं।”

दृश्य **2:** मध्यपाषाण काल – **"**जब इंसान ने पहली दोस्ती की**"**

कब: लगभग 10,000 ई.पू. से 8,000 ई.पू. तक
(भारतीय इतिहास के अनुसार: 9,000 ई.पू. से 4,000 ई.पू. तक) ।

कहाँ: उत्तर भारत के विभिन्न क्षेत्र ।

कहानी:



एक छोटा लड़का जंगल के किनारे खेल रहा है। उसे दूर एक छोटा सा कुत्ता दिखता है – भूखा, अकेला, डरा हुआ।

बच्चा (धीरे-धीरे उसके पास जाता है): “डरो मत। मैं तुम्हें खाना दूंगा।”

बच्चा अपनी रोटी का टुकड़ा उसकी तरफ बढ़ाता है। कुत्ता सूँघता है, फिर खा लेता है।

बच्चा: “तुम अब मेरे साथ रहोगे। तुम मेरे दोस्त हो।”

कुछ हफ्तों बाद – कुत्ता बच्चे का पीछा करने लगता है।

बच्चा (अपने पिता से): “पिता, यह मेरे साथ रहेगा? यह रात को हमारी रखवाली करेगा।”

पिता (थोड़ा डरते हुए): “पर यह जंगली है। यह हमें काट सकता है।”

बच्चा: “नहीं, यह मुझसे प्यार करता है। देखो, यह मेरे पीछे-पीछे चलता है। यह मेरा दोस्त है।”

एक रात। गुफा के पास कोई जानवर आता है। कुत्ता ज़ोर से भौंकता है, जानवर भाग जाता है।

पिता (प्रभावित होकर): “बेटा, तुम सही थे। यह हमारा रखवाला है।”

तथ्य: यह थी इंसान और कुत्ते के बीच पहली दोस्ती। कुत्ता पहला पालतू जानवर बना। अब इंसान अकेला नहीं था। उसके पास एक रखवाला था, एक साथी था, एक शिकार में मददगार था।

दादा: “बेटा, इसी काल में छोटे-छोटे पत्थर के औजार बनने लगे – जिन्हें माइक्रोलिथ कहते हैं। ये इतने नुकीले थे कि इनसे मछली पकड़ी जा सकती थी, पक्षी मारे जा सकते थे। अब इंसान शेर-भालू से नहीं लड़ रहा था – वह चालाक बन गया था।”

दृश्य **3:** नवपाषाण काल **– "**जब इंसान ने बीज बोया**,** और बीज ने उसे बसाया**"**

कब: लगभग 8,000 ई.पू. से 4,000 ई.पू. तक
(भारतीय इतिहास के अनुसार: 7,000 ई.पू. से 2,500 ई.पू. तक)

कहाँ: मेहरगढ़ (व्यवस्थित कृषि का पहला साक्ष्य), चिरांद (बिहार) – हड्डी के औजार, कोलडीहवा (इलाहाबाद) – चावल की सबसे पुरानी खेती, बुर्जहोम (कश्मीर) – स्थायी बस्ती, कालीबंगा (राजस्थान) – जुते हुए खेत, लोथल (गुजरात) – गोदीवाड़ा (डॉकयार्ड) ।

कहानी:



एक औरत ज़मीन पर बैठी है। उसने कुछ बीज बिखेरे थे। अब उन बीजों से छोटे-छोटे पौधे उग आए हैं।

औरत (हैरानी से): “यह बीज ज़मीन में गिरे, पानी मिला, धूप लगी – और यह पौधा बन गया। अगर मैं जान-बूझकर बीज बोऊँ, तो हर साल अनाज मिलेगा, और मुझे भूखा नहीं रहना पड़ेगा!”

बूढ़ा (जो पास में बैठा है): “तुम बहुत बड़ी बात कह रही हो। अब हम भटकेंगे नहीं। हम यहीं बसेंगे।”

तथ्य: यही वह क्षण था जब इंसान ने खेती करना शुरू किया। अब उसे भटकना नहीं पड़ता था। वह एक जगह बस गया – इसे गतावास कहते हैं। बुर्जहोम (कश्मीर) में इसके सबूत मिले हैं।

पोता: “दादा, इस काल में और क्या बदलाव आए?”

दादा: “बेटा, पाँच बड़े बदलाव हुए:

1. मिट्टी के बर्तन –

 अनाज रखने के लिए, पानी रखने के लिए। पहले पत्तों या लकड़ी के बने बर्तन होते थे, जो जल्दी खराब हो जाते थे। मिट्टी के बर्तन सदियों तक चलते थे।
2. ताँबा –
पहली धातु। पत्थर से ज़्यादा मज़बूत। पत्थर के औजार टूट जाते थे, ताँबे के औज़ार ज़्यादा मज़बूत थे।
3. पहिया –



अब भारी सामान घसीटने के बजाय लुढ़काकर ले जाया जा सकता था।
4. खेती: –
 मेहरगढ़ में व्यवस्थित कृषि का पहला सबूत, कोलडीहवा में चावल की सबसे पुरानी खेती, कालीबंगा में जुते हुए खेत । दुनिया के सबसे पुराने जुते हुए खेतों में से एक। 'कालीबंगा' का अर्थ है – 'काले रंग की चूड़ियाँ' (यहाँ खुदाई में चूड़ियाँ मिली थीं)।
5. समुद्री व्यापार –
लोथल (गुजरात) में गोदीवाड़ा (डॉकयार्ड) मिला –
यानी ये लोग समुद्री व्यापार करते थे, नावों से सामान ले जाते थे।"

पोता: “हड्डी के औजार कहाँ मिले?”

दादा: “चिरांद (बिहार) में हड्डी के औजार मिले – यानी वहाँ के लोग जानवरों की हड्डियों को तराशकर सुई, छुरी, कुल्हाड़ी बना लेते थे। जैसे आज प्लास्टिक है, वैसे उनके लिए हड्डी थी।”

अंतिम दृश्य – बूढ़े और पोते का संवाद

दादा और पोता उसी जगह बैठे हैं। अब अंधेरा हो चला है। आकाश में तारे दिख रहे हैं।



पोता: “दादा, उन लोगों के नाम क्या थे?”

दादा (गहरी साँस लेते हुए): “बेटा, नवपाषाण काल के लोगों के नाम नहीं मिलते। वे गुमनाम रहे। उन्होंने खेती सीखी, धातु सीखी, पहिया बनाया – पर लिखना नहीं सीख सके। इसलिए हम उनके

नाम नहीं जानते। मिलते हैं सिर्फ उनके औज़ार, उनके बर्तन, उनके जले हुए चूल्हे।

बस एक चीज़ रह गई – लिखना। जब तक लिखना नहीं सीखते, सब कुछ भूल जाएगा। तुम भूल जाओगे कि तुम्हारे पिता ने कैसे शिकार किया, कैसे आग जलाई, कैसे बीज बोए। और फिर कभी कोई दूसरा आएगा, हमारी हड्डियाँ खोदेगा, और सोचेगा – 'ये लोग कौन थे?'"

पोता: "तो हमें उनके बारे में कैसे पता चला?"

दादा (मुस्कुराते हुए, पोते के सिर पर हाथ रखते हुए): "यही तो इतिहास का जादू है, बेटा। उन्होंने खुद तो नहीं लिखा, पर उनके कर्म ने लिखा – पत्थरों पर, मिट्टी के बर्तनों पर, और ज़मीन के अंदर दबी बस्तियों में। और हम इतिहासकार उसे पढ़ना जानते हैं।"

🔄 तुलना **–** भारत और विश्व **(**एक ही समय में क्या हो रहा था**?)**

दादा: "बेटा, जब भारत में यह सब हो रहा था, दुनिया के दूसरे हिस्सों में भी मानव सभ्यता विकसित हो रही थी।"

समय **:** भारत में और विश्व में

2,000,000 ई.पू. (पुरापाषाण काल) :
▪होमो सेपियन अफ्रीका में
 ▪यूरोप में नीएंडरथल
▪36,000 ई.पू. होमो सेपियन भारत में
▪यूरोप में क्रोमैग्नॉन मानव (गुफा चित्र)

10,000-8,000 ई.पू. (मध्य पाषाण काल) :
▪कुत्ता पालतू मध्य पूर्व में
▪वन्य अनाज की खेती शुरू
8,000-4,000 ई.पू. (नवपाषाण काल) :
▪कृषि, पहिया, ताँबा
▪मेसोपोटामिया में पहले शहर (उर, उरुक)
▪मिस्र में बस्तियाँ

(भारतीय समय सीमा भिन्न है, पर घटनाओं का क्रम समान है।)

इस अंक के प्रश्न-उत्तर

▪मानव द्वारा प्रथम पालतू पशु कौन था और किस काल में?
कुत्ता – मध्यपाषाण काल ।
▪आग की जानकारी किस काल से थी और प्रयोग कब शुरू हुआ?
जानकारी – पुरापाषाण, प्रयोग – नवपाषाण ।
▪पहिए का आविष्कार किस काल में हुआ?
नवपाषाण काल ।
▪प्रयोग की जाने वाली पहली धातु कौन-सी थी?
ताँबा ।
▪चावल की खेती का प्राचीनतम साक्ष्य कहाँ से मिला?
कोलडीहवा (इलाहाबाद) ।
▪व्यवस्थित कृषि का पहला साक्ष्य कहाँ से मिला? मेहरगढ़ ।
▪पाषाण काल के तीनों चरणों के साक्ष्य कहाँ से मिले?
बेलन घाटी (इलाहाबाद) ।
▪'गतावास' (स्थायी बस्ती) के साक्ष्य कहाँ से मिले?
बुर्जहोम (कश्मीर) ।
▪'जुते हुए खेत' कहाँ मिले और 'कालीबंगा' का अर्थ?
कालीबंगा (राजस्थान) – 'काले रंग की चूड़ियाँ' ।

▪‘हड्डी के औजार’ कहाँ मिले?
चिरांद (बिहार) ।
▪‘गोदीवाड़ा’ (डॉकयार्ड) कहाँ मिला?
लोथल (गुजरात) ।
▪भारत में पाषाणकालीन खोज सबसे पहले किसने और कब की?
रॉबर्ट ब्रूस फुट – 1863 ई. ।
▪आधुनिक मानव ‘होमो सेपियन’ कब अस्तित्व में आया?
लगभग 36,000 ई.पू. ।

महत्वपूर्ण याद रखने योग्य बिंदु

1. पुरापाषाण काल –
शिकारी जीवन, आग की जानकारी (प्रयोग नहीं), होमो सेपियन का जन्म (36,000 ई.पू.)।
(विश्व: 2,000,000-10,000 ई.पू.;
भारत: 5,00,000-10,000 ई.पू.)
2. मध्यपाषाण काल –
कुत्ता पहला पालतू जानवर, माइक्रोलिथ (छोटे पत्थर के औजार) शुरू।
(विश्व: 10,000-8,000 ई.पू.;
भारत: 9,000-4,000 ई.पू.)
3. नवपाषाण काल –
कृषि शुरू, ताँबा पहली धातु, पहिए का आविष्कार।
(विश्व: 8,000-4,000 ई.पू.;
भारत: 7,000-2,500 ई.पू.)
4. प्रमुख स्थल और उनकी खासियतें:
- कोलडीहवा (इलाहाबाद) – चावल की सबसे पुरानी खेती ।
- मेहरगढ़ – व्यवस्थित कृषि का पहला सबूत ।
- बेलन घाटी (इलाहाबाद) – तीनों कालों के साक्ष्य ।

· बुर्जहोम (कश्मीर) – स्थायी बस्ती (गतावास) ।
· चिरांद (बिहार) – हड्डी के औजार ।
· कालीबंगा (राजस्थान) –
जुते हुए खेत (‘काले रंग की चूड़ियाँ’) ।
· लोथल (गुजरात) – गोदीवाड़ा (डॉकयार्ड) ।
5. भारत में पाषाण काल की खोज:
रॉबर्ट ब्रूस फुट (1863 ई.) ।
6. आदिमानव के प्रकार:
जावा मानव, पेकिंग मानव, हीडलबर्ग मानव, नीएंडरथल मानव, क्रोमैग्नॉन मानव, होमो सेपियन।

अंक समाप्त

अगले अंक 2 में: सिंधु घाटी सभ्यता – जब शहरों में सीवर लाइनें थीं, लोग कपास उगाते थे, एक रहस्यमय लिपि थी जिसे अब तक कोई नहीं पढ़ पाया, और यह सभ्यता अचानक गायब हो गई – बिना कोई निशान छोड़े।

तो चलिए, अब हम इस महानाटक के दूसरे अंक में प्रवेश करते हैं।

यह वह अंक है जहाँ इंसान ने गुफाएँ छोड़ीं, शहर बनाना सीखा, सीवर लाइन बिछाई, कपास उगाई, और दुनिया को दिगा दिया कि सभ्यता क्या होती है। यह कहानी है सिंधु घाटी सभ्यता की – जो अपने समय से हज़ारों साल आगे थी, पर अचानक गायब हो गई। और सबसे बड़ा रहस्य – उनकी लिपि अब तक नहीं पढ़ी जा सकी।

अंक 2: सिंधु घाटी सभ्यता – "जब सीवर लाइनें भी स्मार्ट थीं"

(लगभग 2350 ई.पू. से 1750 ई.पू. तक –
600 साल का स्वर्ण युग, फिर अचानक गायब) ।

प्रस्तावना: खोज का रोमांच – कैसे मिली यह सभ्यता?

एक दिन, दादा और पोता बैठे हैं। पोता एक पुरानी मिट्टी की मूर्ति को पलट-पलटकर देख रहा है।

पोता: "दादा, यह मूर्ति कहाँ से मिली?"

दादा: "बेटा, यह मोहनजोदड़ो से मिली है – सिंधु घाटी सभ्यता का एक शहर। पर इसकी खोज का अपना एक रोमांचक किस्सा है।"

पोता: "बताओ न, दादा!"

दादा: "सुनो। 1921 ई. की बात है। उस समय भारत में अंग्रेजों का राज था। भारतीय पुरातत्व विभाग के निदेशक थे सर जॉन मार्शल। उन्होंने आदेश दिया – 'सिंधु नदी के आसपास खुदाई करो।'

एक दिन, राय बहादुर दयाराम साहनी नाम के एक अधिकारी ने हड़प्पा नामक स्थान पर खुदाई शुरू की। उन्हें कुछ अजीब पत्थर के टुकड़े, कुछ मुहरें, और ईंटों के ढेर मिले। जैसे-जैसे खुदाई गहरी हुई, एक पूरा शहर निकल आया – ईंटों का, सड़कों का, सीवर लाइनों का।"

पोता: "वाह! फिर?"

दादा: “तारीख थी – 1921 ई. हड़प्पा मिल गया था। अगले साल – 1922 ई. में राखालदास बनर्जी को मोहनजोदड़ो मिला। दोनों जगहों से एक जैसी ईंटें, एक जैसे बर्तन, एक ही तरह की मुहरें निकलीं। यह साफ हो गया – यह कोई अलग-अलग बस्तियाँ नहीं थीं, बल्कि एक ही विशाल सभ्यता थी, जो सिंधु नदी के किनारे फैली हुई थी।”

पोता: “कितनी पुरानी है यह सभ्यता?”

दादा: “वैज्ञानिकों ने रेडियो कार्बन C^{14} विश्लेषण नामक विधि से पता लगाया – यह सभ्यता लगभग 2350 ई.पू. से 1750 ई.पू. के बीच फली-फूली। यानी 600 साल का स्वर्ण काल। और सबसे बड़ी बात – यह सभ्यता कांस्ययुगीन (Bronze Age) थी – यानी यहाँ के लोग ताँबे और टिन को मिलाकर कांसा बनाना जानते थे। पत्थर से कहीं ज़्यादा मज़बूत।

महत्वपूर्ण: भारत में सबसे अधिक सैन्धव स्थल गुजरात में पाए गए हैं।

सिंधु सभ्यता के पात्र – क्या कोई राजा था?

दादा: “बेटा, इस सभ्यता की सबसे अजीब बात यह है कि यहाँ कोई राजा, कोई सिपाही, कोई महल नहीं मिला। हम नहीं जानते कि यहाँ किसने शासन किया। शायद व्यापारियों ने, शायद किसी परिषद (Council) ने, शायद पुजारियों ने। यह एक रहस्य है।”

पोता: “तो अच्छाई-बुराई किसकी?”

दादा: “इसलिए इस अंक में ‘अच्छाई’ और ‘बुराई’ पूरे समाज के ढाँचे पर लागू होगी – क्योंकि यहाँ कोई एक राजा नहीं था।”

समाज की अच्छाइयां

1. नगर नियोजन –
 दुनिया से आगे,सड़कें बिल्कुल सीधी, एक-दूसरे को समकोण पर काटती थीं – जैसे आज के चंडीगढ़ या न्यूयॉर्क में होता है।
2. सीवर लाइन –
 हर घर में, ईंटों से बनी नालियाँ, मुख्य नालियाँ ढकी हुईं – गंदा पानी शहर के बाहर बह जाता था। उस समय की दुनिया में कहीं और यह नहीं था।
3. समानता:
कोई राजमहल नहीं, कोई विशाल मंदिर नहीं, कोई तलवार या ढाल का निशान नहीं। सब घर लगभग एक जैसे थे – शायद सामाजिक समानता थी।
4. अंतर्राष्ट्रीय व्यापार:
 बहरीन, ओमान, मेसोपोटामिया (आज का इराक) तक व्यापार।
5. कला और कारीगरी:
काँसे की नर्तकी, पशुपति की मूर्ति (शिव का सबसे पुराना रूप), मातृदेवी की मूर्तियाँ।
6. दुनिया को कपास दी:
यहाँ के लोग कपास उगाने वाले दुनिया के पहले लोग थे। मेसोपोटामिया में कपास के लिए ‘सिंधु’ शब्द इस्तेमाल होता था, यूनानी इसे ‘सिंडन’ कहते थे।

समाज की बुराइयाँ (जहाँ तक हम जानते हैं)

1. लिपि अब तक नहीं पढ़ी गई –

इसलिए हम उनके धर्म, राजनीति, साहित्य के बारे में लगभग कुछ नहीं जानते।

2. असमानता के कुछ संकेत –

कुछ घर बड़े थे, कुछ में अन्नागार (बड़े गोदाम) थे। शायद व्यापारिक असमानता थी।

3. स्त्रियों की स्थिति अस्पष्ट –

मातृदेवी की मूर्तियाँ मिली हैं, पर क्या उनके पास राजनीतिक अधिकार थे? हम नहीं जानते।

4. अचानक पतन –

सरस्वती नदी का सूखना, बाढ़, जलवायु परिवर्तन – कोई पक्का कारण नहीं।

दृश्य **1:** मोहनजोदड़ो **– "**एक ऐसा शहर जो सिंड्रेला की तरह आया और गायब हो गया**"**

कब: लगभग 2350 ई.पू. – 1750 ई.पू. के बीच।
कहाँ: सिंधु नदी के किनारे, आज का पाकिस्तान (लरकाना जिला)।
खोजकर्ता: राखालदास बनर्जी – 1922 ई.।
नाम का अर्थ:
'मुर्दों का टीला' – नाम डरावना है, पर यहाँ की ज़िंदगी उस नाम से बिल्कुल अलग थी।

कल्पना करें –



2350 ई.पू. के मोहनजोदड़ो का एक दृश्य।

दादा: “बेटा, चलो मैं तुम्हें उस शहर की सैर करवाता हूँ।”

सड़कें बिल्कुल सीधी हैं, एक-दूसरे को समकोण (सीधे 90 डिग्री के कोण) पर काटती हैं – जैसे आज के चंडीगढ़ या न्यूयॉर्क में होता है। सड़कों के दोनों तरफ ईंटों के मकान हैं – दो मंजिला भी। हर मकान के आँगन में एक कुआँ है। हर मकान में ईंटों से बनी हुई सीवर लाइन है – और वह सीवर लाइन मुख्य सड़क के नीचे बनी बड़ी नाली से जुड़ी है। गंदा पानी शहर के बाहर बह जाता है।

पोता: “दादा, चार हज़ार साल पहले ऐसा शहर? यह तो आज के शहरों से भी बेहतर है!”

दादा: “इतिहासकार इस सीवर प्रणाली को ‘दुनिया की पहली आधुनिक सीवर प्रणाली’ कहते हैं।”

शहर के बीच में एक विशालकाय स्नानागार (Great Bath) है – इतना बड़ा कि आज का ओलंपिक स्विमिंग पूल उसके सामने छोटा

लगे। ईंटों से बना, तालाब जैसा, जिसमें सीढ़ियाँ उतरती हैं। दीवारों पर चूना लगा था ताकि पानी रिसे नहीं – यह टेक्नोलॉजी उस समय अद्भुत थी।



पोता: “यह किसलिए था?”

दादा: “हम नहीं जानते। शायद लोग नहाते थे, शायद कोई धार्मिक अनुष्ठान करते थे। पर इतना बड़ा निर्माण – वह भी बिना किसी राजा के आदेश के – सोचकर हैरानी होती है।”

अन्नागार (बड़े-बड़े गोदाम) थे – यानी सरकारी स्टोर, जहाँ फसल जमा की जाती थी। पास में एक सभा भवन (Assembly Hall) था – जहाँ लोग इकट्ठा होकर बातें करते थे, शायद फैसले लेते थे। एक पुरोहित आवास (Priest's Residence) भी था – यानी कोई बड़ा धार्मिक या प्रशासनिक अधिकारी यहाँ रहता था।

पोता: “और राजा का महल?”

दादा: “यहाँ कोई राजमहल नहीं है। कोई विशाल मंदिर नहीं। कोई तलवार या ढाल का निशान नहीं। यह शहर बिना राजा, बिना सेना, बिना तानाशाह के चल रहा था – मानो कोई सपना सच हो गया हो।”

मोहनजोदड़ो से क्या-क्या मिला?

· काँसे की नर्तकी की मूर्ति – एक छोटी सी मूर्ति, चार इंच लंबी। एक लड़की जो नृत्य की मुद्रा में है – एक हाथ कमर पर, दूसरा घुटने पर। लंबे बाल, पूरे हाथों में चूड़ियाँ। यह दुनिया की सबसे पुरानी कांस्य मूर्तियों में से एक है। इतनी जीवंत कि लगता है अभी हिलेगी, नाचेगी।



· पशुपति की मूर्ति – एक मुहर पर तीन मुख वाला एक योगी बैठा है, चारों तरफ से जानवरों से घिरा – हाथी, बाघ, गैंडा, भैंस। यह शिव का सबसे पुराना रूप माना जाता है – ‘पशुपति’ यानी जानवरों का स्वामी।



· मातृदेवी की मूर्तियाँ – छोटी-छोटी, मिट्टी की बनी, अक्सर बिना चेहरे के। ये उर्वरता (fertility) की देवी थीं।
· स्नानागार – ऊपर बताया।
· अन्नागार और सभा भवन।

दृश्य 2: हड़प्पा – "तौल के पैमाने और ताँबे की इक्कागाड़ी"

कब: लगभग 2350 ई.पू. – 1750 ई.पू. ।
कहाँ: रावी नदी के किनारे, आज का पाकिस्तान (मोंटगोमरी जिला) ।
खोजकर्ता: दयाराम साहनी – 1921 ई. ।



हड़प्पा मोहनजोदड़ो से बड़ा था, पर उतना सुरक्षित नहीं बचा था। फिर भी, यहाँ से कुछ अनोखी चीज़ें मिलीं:

· तौल का पैमाना – पत्थर से बने सटीक बाट। हर चीज़ 16 के अनुपात में नापी जाती थी। 16 के दाने, 16 के बाट, 16 के टुकड़े। (आज भी जौहरी 16 के अनुपात में तोलते हैं – 'सोलह आना' याद है?) ।
· ताँबे की इक्कागाड़ी – दुनिया के सबसे पुराने खिलौनों में से एक। एक छोटी गाड़ी जिसमें बैल जुते हैं। शायद कोई बच्चा इससे खेलता था। इससे पता चलता है कि उस समय पहिया सिर्फ सामान ढोने के लिए नहीं, बल्कि खेल के लिए भी इस्तेमाल होता था।
· ताँबे की भट्टी – जहाँ ताँबे को पिघलाकर औजार बनाए जाते थे। यहाँ के लोग धातु गलाने में माहिर थे।

दृश्य 3: लोथल – "जहाँ समंदर से व्यापार होता था"

कब: लगभग 2350 ई.पू. – 1750 ई.पू. ।

कहाँ: गुजरात, अहमदाबाद के पास, भोगवा नदी के किनारे ।
खोजकर्ता: रंगनाथ राव – 1955-62 ई. ।



लोथल अलग था – यह समुद्र के किनारे बसा था। यहाँ से मिला गोदीवाड़ा (डॉकयार्ड) – एक विशाल ईंटों का टैंक, जो नदी से जुड़ा था। सोचिए, यहाँ छोटी नावें आती-जाती थीं, सामान लादती-उतारती थीं, और समंदर की ओर निकल जाती थीं।

पोता: “क्या वे समंदर में जाते थे?”

दादा: “हाँ! बहरीन (पर्शियन गल्फ) में वही सिक्के, वही मुहरें, वही बर्तन मिले हैं। इराक (मेसोपोटामिया) में भी। पता चलता है – ये लोग समुद्री व्यापार करते थे।”

वे कपास, मनके, आभूषण, लकड़ी, हाथी दाँत निर्यात करते थे, और बदले में चाँदी, ताँबा, टिन, मोती लाते थे।

लोथल में मिट्टी पर उकेरे गए जहाजों के चित्र मिले हैं – पाल खोले, समंदर में लहरों पर तैरते हुए। यह सबूत है कि यह सभ्यता घरेलू नहीं, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय थी।

लोथल से और क्या मिला?

· युग्मित शवाधान (Dual burial) – एक ही कब्र में दो लोग एक साथ दफन – शायद पति-पत्नी या माँ-बच्चा।
· रंगाई के कुण्ड (Dyeing vats) – कपड़े रंगने की फैक्ट्री। यानी यहाँ टेक्सटाइल इंडस्ट्री थी।

दृश्य 4: कालीबंगा और बनावली **– "**जुते हुए खेत और अग्नि वेदियाँ**"**

कालीबंगा (राजस्थान, श्रीगंगानगर जिला) ।
खोजकर्ता: बी. बी. लाल और बी. के. थापर – 1961 ई. ।



यहाँ जुते हुए खेत मिले हैं – दुनिया के सबसे पुराने जुते हुए खेतों में से एक। यानी यहाँ के लोग हल चलाना जानते थे।

पोता: “दादा, कालीबंगा नाम कैसे पड़ा?”

दादा: “‘कालीबंगा’ का अर्थ है – ‘काले रंग की चूड़ियाँ’ – यहाँ खुदाई में चूड़ियाँ मिली थीं।”

सबसे खास बात – यहाँ अग्नि वेदियाँ मिली हैं। यानी हवन और यज्ञ की परंपरा सिंधु काल से भी पुरानी है – और यहाँ से सीधा संबंध बाद के वैदिक काल से जुड़ता है।

बनावली (हरियाणा, हिसार जिला)
खोजकर्ता: रवीन्द्र सिंह बिष्ट – 1973-74 ई.

यहाँ से हल मिला है – मिट्टी का बना एक खिलौना हल। यानी यहाँ के बच्चे खेत-खलिहान का खेल खेलते थे – उनके खिलौने भी उनके व्यवसाय से जुड़े थे।

मातृदेवी की मूर्तियाँ – छोटी-छोटी, बिना चेहरे की, बड़े-बड़े गले के हारों वाली। यह बताता है कि यहाँ मातृसत्तात्मक समाज था, स्त्रियों का पूजनीय स्थान था।

🏛️ सभी प्रमुख सैन्धव स्थल (सारणी सहित)

दादा: “बेटा, सिंधु सभ्यता सिर्फ इन्हीं शहरों तक सीमित नहीं थी। पूरे भारत-पाकिस्तान में इसके सैकड़ों स्थल हैं। कुछ बहुत खास हैं – जिन्हें तुम्हें जानना चाहिए।”

क्र. | स्थल | खोजकर्ता | वर्ष |नदी |स्थिति | विशेषता |

1 | हड़प्पा | दयाराम साहनी |1921 |रावी | पाकिस्तान | तौल का पैमाना | ताँबे की इक्कागाड़ी |

2 |मोहनजोदड़ो | राखालदास बनर्जी | 1922 |सिंधु | पाकिस्तान | स्नानागार, नर्तकी, पशुपति |

3 |चन्हूदड़ो |एन. जी. मजूमदार | 1931 | सिंधु | पाकिस्तान | मनका कारखाना, दवात, काजल , शिल्प केंद्र |

4 |रोपड़ |यज्ञदत्त शर्मा | 1953-55 | सतलज | पंजाब (भारत) |मानव के साथ कुत्ता दफन , सतलज पर एकमात्र स्थल |

5 | लोथल | रंगनाथ राव |1955-62 |भोगवा | गुजरात | गोदीवाड़ा, युग्मित शवाधान, रंगाई कुण्ड |

6 |कालीबंगा | बी. बी. लाल, थापर |1961 | घग्गर | राजस्थान | जुते हुए खेत, अग्नि वेदियाँ |

7 |बनावली |रवीन्द्र सिंह बिष्ट | 1973-74 | रंगोई | हरियाणा | मिट्टी का हल, मातृदेवी |

8 | सुरकोटड़ा | जे. पी. जोशी | 1964-68 |गुजरात (कच्छ) | स्टेडियम, लिपि के दस बड़े अक्षर |

9 |कोट दीजी |फजल अहमद |1955 |सिंधु |पाकिस्तान |सिंधु का सबसे पुराना स्थल (हड़प्पा से पहले) |

10 | धौलावीरा |जे. पी. जोशी | 1967-68 | गुजरात (कच्छ) |विशाल जलाशय (बाँध) |जल प्रबंधन का अद्भुत उदाहरण |

11 | रंगपुर |एम. एस. वत्स | 1931 |भोगवा | गुजरात | चावल की भूसी ‘,चावल का पहला प्रमाण |

12 |अमरी | एन. जी. मजूमदार |1929 | गुजरात | पशुपालन के साक्ष्य (गाय, भैंस, भेड़) |

13 |आलमगीरपुर | यज्ञदत्त शर्मा | 1958 | हिन्दन | उत्तर प्रदेश (मेरठ) | हड़प्पा का सबसे पूर्वी स्थल |

14 |माँडा | – – – |जम्मू |हड़प्पा का सबसे उत्तरी स्थल |

15 |दैमाबाद |– – – |महाराष्ट्र | हड़प्पा का सबसे दक्षिणी स्थल |

पोता: “दादा, यह तो बहुत सारे शहर थे!”

दादा: “हाँ बेटा। और हर शहर की अपनी खासियत थी। चन्हूदड़ो शिल्प का केंद्र था, लोथल बंदरगाह था, धौलावीरा में विशाल जलाशय था, कोट दीजी सबसे पुराना था, और आलमगीरपुर, माँडा, दैमाबाद ने इस सभ्यता के विस्तार की सीमाएँ बताईं।”

दृश्य **5:** धर्म और विश्वास – **"**मातृदेवी से पशुपति तक**"**

यहाँ के लोग किसकी पूजा करते थे?

देवता/प्रतीक क्यों?

मातृदेवी (माँ की मूर्तियाँ) मातृसत्तात्मक समाज था – स्त्रियों का स्थान ऊँचा था। प्रकृति की शक्तियाँ माँ के रूप में पूजी जाती थीं।
पशुपति (तीन मुख वाला योगी) शिव की प्राचीनतम मूर्ति – जानवरों के स्वामी, योग के देवता।
लिंग और योनि प्रकृति की शक्तियाँ – उर्वरता के प्रतीक।
कूबड़ वाला साँड (Zebu bull) सबसे अधिक मुहरों पर बना। यह सबसे महत्वपूर्ण पशु था, शायद पवित्र भी।
पीपल का पेड़ आज भी भारत में पीपल की पूजा होती है – यह परंपरा चार हज़ार साल पुरानी है।
स्वस्तिक एक बहुत पुराना प्रतीक – यहाँ की मुहरों पर पाया गया। यह शुभता का निशान है।

लेकिन एक बड़ा अंतर: यहाँ कोई मंदिर नहीं मिला। पूजा घरों में होती थी, या बाहर पेड़ों के नीचे। कोई भव्य मंदिर, कोई मीनार – यह नहीं था। यह सभ्यता प्रकृति पूजक थी – आकाश, पृथ्वी, पानी, जानवर, पेड़ – इनकी पूजा करती थी।

दृश्य 6: रहस्य – "एक लिपि जो अब तक नहीं पढ़ी गई"



दादा: “बेटा, इस सभ्यता का सबसे बड़ा रहस्य है – उनकी लिपि।”

हड़प्पा सभ्यता की लिपि को अब तक कोई नहीं पढ़ पाया है।

यह लिपि भाव-चित्रात्मक (pictographic) है – यानी शब्दों के लिए अक्षर नहीं, बल्कि छोटे-छोटे चित्र बनाए गए हैं। लगभग 400-500 अलग-अलग चिह्न मिले हैं।

पोता: “लिखा कैसे जाता था?”

दादा: “सबसे अजीब बात – यह लिपि दाएँ से बाएँ लिखी गई है। पहली पंक्ति दाएँ से बाएँ, दूसरी पंक्ति बाएँ से दाएँ। जैसे साँप चलता है – इस लेखन पद्धति को ‘बस्ट्रोफेडन’ कहते हैं (यूनानी शब्द – ‘बैल की तरह मुड़ना’)।”

लिपि क्यों नहीं पढ़ी गई?

1. बहुत छोटे-छोटे लेख – किसी एक लेख में 5 से 20 अक्षर से ज़्यादा नहीं। कोई लंबा लेख नहीं – न कोई किताब, न कोई अभिलेख।
2. कोई ‘रोसेटा पत्थर’ नहीं – ऐसा लेख जिसमें यह लिपि और किसी ज्ञात लिपि (जैसे ब्राह्मी या यूनानी) में एक ही बात लिखी हो।
3. शायद यह लिपि बिल्कुल अनोखी थी – किसी अन्य भाषा से जुड़ी नहीं।

पोता: “तो क्या यह कभी पढ़ी जा सकेगी?”

दादा: “कुछ वैज्ञानिक कहते हैं – शायद। अगर कोई बहुत बड़ा दो-भाषाई लेख मिल गया, या नई तकनीक (जैसे डीप लर्निंग मॉडल) सफल हो गई। पर अभी तक नहीं।”

दृश्य 7: व्यापार – "बिना सिक्के के अरबपति"



यहाँ के लोग सिक्कों का प्रयोग नहीं करते थे। वे वस्तु-विनिमय (barter) करते थे – 'मेरे पास अनाज है, तुम्हारे पास कपास है, चलो बदल लें।'

माप-तोल बहुत सटीक था। पत्थर के बाट मिले हैं – सब कुछ 16 के अनुपात में था।

वे क्या उगाते थे? गेहूँ, जौ, खजूर, तरबूज़, सरसों। और कपास – यहाँ के लोग कपास उगाने वाले दुनिया के पहले लोग थे।

व्यापार कहाँ-कहाँ तक था?

· उत्तर: अफगानिस्तान, मध्य एशिया (लैपिस लजुली – एक नीला पत्थर)
· पश्चिम: बहरीन, ओमान, मेसोपोटामिया (आज का इराक)
· दक्षिण: दक्षिण भारत (सोना, मोती, हाथी दाँत)

लोथल का गोदीवाड़ा इसी व्यापार का केंद्र था।

दृश्य **8:** पतन **–** **"**इतनी तरक्की के बाद क्या हुआ**?"**

पोता: "दादा, इतनी उन्नत सभ्यता अचानक क्यों समाप्त हो गई?"

दादा: "कोई एक कारण नहीं – कई वजहों का मिलाजुला असर।"

1. सरस्वती नदी का सूखना: ऋग्वेद में सरस्वती को 'महान नदी' बताया गया है। लेकिन जलवायु परिवर्तन के कारण वह सूख गई। नदी सूखी, तो खेती चौपट, लोग पलायन करने लगे।

2. अत्यधिक बाढ़: मोहनजोदड़ो में सात परतें (layers) मिली हैं – सात बार बाढ़ आई, सात बार शहर फिर से बना। लोगों ने सात बार शहर बनाया – पर सातवीं बार शायद थक गए।
3. जलवायु परिवर्तन: बारिश कम हुई, तापमान बढ़ा, रेगिस्तान बढ़ा। खेती मुश्किल हुई।
4. आर्यों का आगमन? कुछ विद्वान कहते हैं कि आर्यों ने हमला किया और सभ्यता को नष्ट कर दिया। पर इस बात का कोई पुख्ता सबूत नहीं है। न कोई युद्ध के निशान, न सामूहिक हत्या के सबूत। शायद आर्य बाद में आए, जब हड़प्पा पहले से ही कमज़ोर था।

पोता: “तो फिर क्या हुआ?”

दादा: “लेकिन एक बात पक्की है – लगभग 1750 ई.पू. के बाद यह सभ्यता गायब हो गई। शहर खाली हो गए, लोग पूर्व की ओर (गंगा के मैदान) चले गए।

‘सो गई सिंधु, जाग उठी गंगा।’ ”

अंतिम दृश्य – बिखरी हुई सभ्यता, बिखरा हुआ सपना

कहते हैं, जब हड़प्पा के लोग अपने शहर छोड़ रहे थे, तो एक माँ ने अपना पीपल का पौधा उखाड़ा और अपने बर्तन में लगाकर ले गई। कई साल बाद, गंगा की घाटी में, वही पौधा बड़ा हो गया। आज भी भारत में हर गाँव में एक पीपल होता है – जड़ें तो सिंधु घाटी में थीं, पर शाखाएँ पूरे देश में फैल गईं।

दादा: “बेटा, हड़प्पा वालों ने सीवर बनाना सीखा, पर अपनी बस्ती नहीं बचा सके। उन्होंने कपास उगाई, पर अपने नाम की कपास नहीं बो सके। उन्होंने लिपि बनाई, पर कोई उसे पढ़ नहीं पाया।

वे गुमनाम रहे – गुमनाम नायक, जिन्होंने हमें शहर दिए, व्यापार दिया, कला दी, पर बदले में सिर्फ मिट्टी के ढेर छोड़े।"

🔄 तुलना – भारत और विश्व

▪समय (लगभग) भारत में और विश्व में
▪3000-2500 ई.पू.
▪सिंधु घाटी सभ्यता (हड़प्पा, मोहनजोदड़ो)
– नगर नियोजन, सीवर लाइन, लिपि ।
▪मेसोपोटामिया (सुमेरियन)
– कीलाकार लिपि, पहिये वाले रथ।
▪मिस्र – पिरामिड निर्माण शुरू ।
▪2500-2000 ई.पू.
▪लोथल (डॉकयार्ड) – कपास उत्पादन
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार (दिलमुन, मेसोपोटामिया) ।
▪क्रेटन सभ्यता (यूरोप) – महलों का निर्माण ।
▪चीन – शांग वंश का उदय
▪1900-1700 ई.पू.
▪सिंधु सभ्यता का पतन (सरस्वती का सूखना, बाढ़, पलायन) ।
▪ बेबीलोन में हम्मुराबी का शासन ।
▪मिस्र में मध्य साम्राज्य का अंत ।
▪1700-1500 ई.पू.
▪ हड़प्पा संस्कृति का लगभग पूर्ण अंत; लोग गंगा घाटी की ओर पलायन ।
▪माइसीनीयन सभ्यता (यूनान) का उदय ।
▪चीन में शांग वंश का स्थापन

इस अंक के प्रश्न उत्तर

▪हड़प्पा सभ्यता की खोज किसने और कब की?
दयाराम साहनी – 1921 ई. ।
▪मोहनजोदड़ो की खोज किसने और कब की?
राखालदास बनर्जी – 1922 ई. ।
▪'मोहनजोदड़ो' का क्या अर्थ है?
'मुर्दों का टीला' ।
▪'कालीबंगा' का क्या अर्थ है?
'काले रंग की चूड़ियाँ' ।
▪हड़प्पा सभ्यता की सर्वमान्य तिथि क्या है?
2350 ई.पू. से 1750 ई.पू. (रेडियो कार्बन C^{14} से) ।
▪हड़प्पा सभ्यता किस युग की थी?
कांस्ययुगीन (Bronze Age) ।
▪सबसे अधिक सैन्धव स्थल किस राज्य में हैं?
गुजरात ।
▪'काँसे की नर्तकी की मूर्ति' कहाँ मिली?
मोहनजोदड़ो ।
▪'पशुपति की मूर्ति' कहाँ मिली?
मोहनजोदड़ो ।
▪'स्नानागार' (Great Bath) कहाँ मिला?
मोहनजोदड़ो ।
▪'गोदीवाड़ा' (डॉकयार्ड) कहाँ मिला?
लोथल (गुजरात) ।
▪'जुते हुए खेत' कहाँ मिले?
कालीबंगा (राजस्थान) ।
▪'अग्नि वेदियाँ' कहाँ मिलीं?
कालीबंगा ।
▪'मातृदेवी की मूर्तियाँ' कहाँ मिलीं?
बनावली, मोहनजोदड़ो, हड़प्पा ।

▪हड़प्पा की लिपि किस प्रकार की है?
 भाव-चित्रात्मक (pictographic)।
▪लिपि की लेखन शैली को क्या कहते हैं?
'बस्ट्रोफेडन' (साँप की चाल) ।
▪हड़प्पा सभ्यता के लोग किस धातु का उपयोग करते थे?
ताँबा, कांसा, सोना, चाँदी – पर लोहा नहीं ।
▪हड़प्पा सभ्यता के पतन का मुख्य कारण क्या माना जाता है?
 सरस्वती नदी का सूखना, बाढ़, जलवायु परिवर्तन, संभवतः आर्यों का आगमन ।

महत्वपूर्ण याद रखने योग्य बिंदु

1. हड़प्पा सभ्यता (2350-1750 ई.पू.) – कांस्ययुगीन। सबसे अधिक स्थल गुजरात में।
2. मोहनजोदड़ो ('मुर्दों का टीला') – स्नानागार, काँसे की नर्तकी, पशुपति की मूर्ति, अन्नागार, सभा भवन।
3. हड़प्पा – तौल-माप (16 के अनुपात में) , ताँबे की भट्टी, ताँबे की इक्कागाड़ी (दुनिया का सबसे पुराना खिलौना)।
4. लोथल – गोदीवाड़ा (डॉकयार्ड) – समुद्री व्यापार का प्रमाण (बहरीन, ओमान, मेसोपोटामिया)।
5. कालीबंगा – जुते हुए खेत (दुनिया के सबसे पुराने) – अग्नि वेदियाँ – 'काले रंग की चूड़ियाँ'।
6. बनावली – मातृदेवी की मूर्तियाँ, मिट्टी का हल (खिलौना)।
7. चन्हूदड़ो – मनका कारखाना, शिल्प केंद्र।
8. रोपड़ – मानव के साथ कुत्ते का दफन – सतलज पर एकमात्र स्थल।
9. धौलावीरा – विशाल जलाशय (बाँध) – जल प्रबंधन का अद्भुत उदाहरण।
10. कोट दीजी – सिंधु का सबसे पुराना स्थल (हड़प्पा से पहले)।

11. आलमगीरपुर, माँडा, दैमाबाद – क्रमशः पूर्वी, उत्तरी, दक्षिणी सीमाएँ।
12. लिपि – भाव-चित्रात्मक, बस्ट्रोफेडन, अब तक नहीं पढ़ी गई।
13. व्यापार – वस्तु-विनिमय (कोई सिक्का नहीं), 16 के अनुपात में माप, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार।
14. कपास – दुनिया के पहले कपास उगाने वाले ('सिंधु' शब्द कपास के लिए)।
15. पतन के कारण: सरस्वती का सूखना, बाढ़ (7 बार), जलवायु परिवर्तन, संभवतः आर्यों का आगमन।

अंक समाप्त

अगले अंक 3 में: वैदिक काल – आर्यों का आगमन, ऋग्वेद की रचना, वर्ण-व्यवस्था की शुरुआत, और उत्तर वैदिक काल में समाज का कठोर होना – स्त्रियों से अधिकार छीनना, शूद्रों पर अत्याचार, और जाति व्यवस्था का जन्म।

तो चलिए, अब हम इस महानाटक के तीसरे अंक में प्रवेश करते हैं।

यह वह अंक है जहाँ सिंधु घाटी के स्मार्ट शहर धूल में मिल चुके हैं, और उत्तर-पश्चिम से घोड़ों पर सवार एक नए लोगों का आगमन होता है – आर्य। वे अपने साथ वेद लाते हैं, अग्नि लाते हैं, इंद्र और वरुण लाते हैं, और एक नई सामाजिक व्यवस्था – वर्ण-व्यवस्था – जो आज भी भारत की पहचान बनी हुई है।

यह कहानी है वैदिक काल की – लगभग 900 साल की यात्रा, जिसमें ऋग्वैदिक स्त्रियाँ आज़ाद थीं, और उत्तर वैदिक स्त्रियाँ परदा करने लगीं; जहाँ वर्ण कर्म पर आधारित था, और फिर जन्म पर; जहाँ यज्ञ सरल थे, और फिर जटिल हो गए; जहाँ उपनिषद रचे गए

– जिसमें 'सत्यमेव जयते' जैसा मंत्र लिखा गया – पर वही उपनिषद स्त्रियों और शूद्रों के लिए बंद थे।

अंक 3: वैदिक काल – "जब वेद लिखे गए, वर्ण बंटे, और एक समाज का जन्म हुआ"

(लगभग 1500 ई.पू. से 600 ई.पू. तक – 900 साल की वह यात्रा जिसने भारत को 'हिंदू' बनाया)

प्रस्तावना: 'आर्य' कौन थे? – एक खुला प्रश्न

एक दिन, दादा और पोता बैठे हैं। पोता एक पुरानी पांडुलिपि को पलट-पलटकर देख रहा है।

पोता: “दादा, हम हिंदू क्यों कहलाते हैं? और ये 'आर्य' कौन थे?”



दादा (आँखें बंद करके, यादों में खोते हुए): “बेटा, बहुत पुराना सवाल है। कुछ विद्वान कहते हैं – आर्य मध्य एशिया (ईरान के आसपास) से आए, घोड़ों और रथों पर सवार होकर। कुछ कहते हैं – वे भारत के ही मूल निवासी थे, और सिंधु सभ्यता उन्हीं की एक शाखा थी। यह बहस आज तक चल रही है। पर हम जो सबसे पुरानी किताबों में पढ़ते हैं – वेद – उनकी रचना आर्यों ने ही की थी।”

पोता: “'आर्य' का मतलब क्या है?”

दादा: “'आर्य' का अर्थ होता है – 'कुलीन' या 'सम्मानित'। यह किसी जाति का नाम नहीं था – यह एक उपाधि थी, जो उन्हें मिलती थी जो वेदों को जानते थे, यज्ञ करते थे, और संस्कृत बोलते थे।”

पोता: “वे कैसे दिखते थे?”

दादा: “बेटा, पुराने ज़माने के कुछ पश्चिमी विद्वानों ने कहा था – 'गोरे, लंबे, नीली आँखों वाले'। पर यह बिल्कुल गलत है। आर्यों की कोई एक निश्चित शक्ल नहीं थी। उनकी पहचान थी – भाषा (प्राचीन संस्कृत), धर्म (यज्ञ, अग्नि, इंद्र), और उनकी सामाजिक संरचना (जिसे बाद में वर्ण-व्यवस्था कहा गया)।”

महत्वपूर्ण नोट (वैदिक काल के दो भाग)

दादा: “बेटा, वैदिक काल को हम दो हिस्सों में बाँटते हैं:”

कालखंड समय मुख्य ग्रंथ विशेषता
ऋग्वैदिक काल | 1500 ई.पू. – 1000 ई.पू. |
ऋग्वेद | राजा | जनता का मुखिया, स्त्रियां स्वतंत्र, वर्ण कर्म पर, इंद्र सबसे बड़े देवता |

उत्तर वैदिक काल | 1000 ई.पू. – 600 ई.पू. |
| यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, ब्राह्मण, उपनिषद | राजा वंशानुगत, स्त्रियों के अधिकार कम, वर्ण जन्म पर, प्रजापति (ब्रह्मा) सबसे बड़े देवता, लोहे का आगमन |

पहला दृश्य: ऋग्वैदिक काल – "जब राजा भी जनता से छोटा था"



कब: 1500 ई.पू. – 1000 ई.पू. (500 साल)
कहाँ: सप्त सिंधु क्षेत्र –
आज का पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश ।
मुख्य पात्र – कोई एक नहीं, पूरा समाज। यहाँ कोई राजा नहीं था जो दूसरों पर हुक्म चलाता। इसलिए 'अच्छाई' और 'बुराई' पूरे समाज के ढाँचे पर लागू होगी।

राजनीति – "लोकतंत्र के बीज"

दादा: “बेटा, ऋग्वैदिक समाज में राजा जनता का सेवक था, मालिक नहीं। उसकी सत्ता असीमित नहीं थी।”

ऋग्वैदिक समाज की राजनीतिक इकाइयाँ:

इकाई	मतलब	प्रधान
कुल	परिवार	
ग्राम	गाँव	ग्रामणी
विश	कई गाँवों का समूह (जिला)	विशपति
जन	कई विशों का समूह (राज्य)	राजा

दो महत्वपूर्ण संस्थाएँ थीं – सभा (बड़ों की परिषद) और समिति (पूरी जनता की आम सभा)। राजा को सभा और समिति की सहमति से ही कोई बड़ा फैसला लेना होता था।

दादा: “यह लोकतंत्र के बीज थे। ऋग्वेद में 'जन' शब्द 275 बार आया है, और 'विश' शब्द 170 बार आया है – जबकि 'राजा' बहुत कम। यानी लोग अपने समुदाय ('जन') को ज़्यादा महत्व देते थे, राजा को नहीं। दुनिया के किसी दूसरे हिस्से में उस समय ऐसा कुछ नहीं था। यूनानी लोकतंत्र तो 1000 साल बाद आया।”

💚 अच्छाई:
जनता की आवाज राजा से ऊपर थी – यह अनोखा प्रयोग था।
🖤 बुराई:
यह व्यवस्था केवल आर्य जनजातियों तक सीमित थी – जो आर्य नहीं थे, वे इससे बाहर थे।

समाज – "औरतों का स्वर्ण युग"

दादा: “बेटा, यह सुनकर हैरानी होगी, पर ऋग्वैदिक काल में स्त्रियाँ बहुत आज़ाद थीं।”

प्रचलित था | प्रचलित नहीं था |
विधवा विवाह | सती प्रथा |
नियोग प्रथा (बिना शादी के संतान) | बाल-विवाह |
पुनर्विवाह |दहेज प्रथा |

दादा: “स्त्रियाँ ऋषि होती थीं – महिला ऋषियों ने ऋग्वेद के कई सूक्तों की रचना की। वे युद्ध में जाती थीं – कुछ रानियाँ सेना का नेतृत्व करती थीं। उनके नाम पर सूक्त रचे गए। कोई पर्दा नहीं था। स्कूल जाती थीं। घर का नेतृत्व करती थीं।”

💚 अच्छाई:
स्त्रियों के लिए यह स्वर्ण युग था – उन्हें हर क्षेत्र में आज़ादी थी।
🖤 बुराई:
यह स्त्री-स्वातंत्र्य बाद के काल में (उत्तर वैदिक में) खत्म हो गया – शायद पितृसत्ता और ब्राह्मणवाद के बढ़ते दबाव ने यह किया।

अर्थव्यवस्था – "गाय करेंसी, जौ रोटी"

· गाय सबसे बड़ी दौलत थी। 'गविष्टि' (गाय की खोज) के अभियान पर निकलते थे – इसी को युद्ध कहते थे। (गाय को 'पवित्र' मानने की परंपरा बाद में आई – ऋग्वैदिक काल में गाय का मांस खाया जाता था, पर केवल अतिथियों या यज्ञों में।)
· 'यव' (जौ) मुख्य भोजन था। गेहूँ था, पर जौ ज़्यादा। चावल नहीं के बराबर था – बाद में आया।

· 'सोम' नाम का एक पेय था – जो पीने से देवताओं के दर्शन होते थे (माना जाता है)। सोम क्या था? यह आज भी एक रहस्य है – शायद भांग, शायद कोई हॉलूसिनोजेनिक मशरूम, शायद दूध का किण्वित पेय।

धर्म – "इंद्र परम हीरो"

ऋग्वेद के लिए इंद्र सबसे बड़े देवता थे। उनके नाम पर 250 सूक्त (मंत्र) हैं – यानी हर दूसरा मंत्र इंद्र को समर्पित।

देवता काम क्यों सबसे बड़ा?
इंद्र बारिश, वज्र, युद्ध, किले तोड़ना ('पुरंदर') वह सोम रस पीता था, और सूखे से लड़ता था – आर्यों के लिए सूखा सबसे बड़ा दुश्मन था
अग्नि यज्ञ का देवता वह माध्यम था – इंसानों और देवताओं के बीच
वरुण आकाश, जल, न्याय का देवता सबके काम देखता था – पापियों को दंड देता था

गाय की पूजा नहीं होती थी – गाय दौलत थी, देवी नहीं। प्रकृति की शक्तियों की पूजा होती थी – आकाश, पृथ्वी, वायु, अग्नि, वर्षा। कोई मूर्ति पूजा नहीं थी – यह बाद में आई।

ऋग्वैदिक नदियाँ – "जब सरस्वती लहराती थी"

दादा: “बेटा, ऋग्वेद में नदियों का बड़ा महत्व है – विशेष रूप से सरस्वती।”

प्राचीन नाम (आधुनिक नाम)
कुभा (काबुल)
वितस्ता (झेलम)
परुषणी (रावी)
विपाशा (व्यास)
शतुद्रि (सतलुज)
सरस्वती (अब सूखी – घग्गर-हकरा मानी जाती है, राजस्थान में)
अस्किनी (चिनाब)
गोमती (नाम वही रहा)

दादा: “सरस्वती को इतना पवित्र क्यों माना जाता था? क्योंकि वह पहाड़ों से निकलकर समंदर तक जाती थी – और रास्ते में कई सहायक नदियाँ उसमें मिलती थीं। आज वह बिल्कुल सूख गई है – जलवायु परिवर्तन और भूगोल के बदलाव का सबूत।”

दूसरा दृश्य: उत्तर वैदिक काल – "जब राजा भगवान बन गया"



कब: 1000 ई.पू. – 600 ई.पू. (400 साल)
कहाँ: गंगा-यमुना दोआब (पश्चिमी उत्तर प्रदेश, दिल्ली क्षेत्र, हरियाणा)
क्या बदला: लोहा आया → जंगल कटे → गंगा के मैदान बसे → शहर बढ़े → राजा ताकतवर हुए → समाज बदला।

राजनीति – "राजा की दैवी उत्पत्ति"

दादा: “ऋग्वैदिक काल में राजा जनता का सेवक था। उत्तर वैदिक काल में राजा वंशानुगत हो गया – यानी पिता के बाद पुत्र, पोता, बिना चुनाव के।”

'ऐतरेय ब्राह्मण' नाम के ग्रंथ में पहली बार लिखा गया – "राजा की उत्पत्ति दैवी है" – यानी राजा ईश्वर का अवतार है, उससे छेड़छाड़ नहीं की जा सकती। अब राजा निरंकुश (तानाशाह) हो गया। सभा और समिति कमज़ोर पड़ गईं। जनता की आवाज़ दब गई।

💚 अच्छाई: बड़े राज्य बने – मगध, कोशल, काशी, वत्स, आदि। प्रशासन व्यवस्थित हुआ।
🖤 बुराई: लोकतंत्र खत्म हुआ, राजा अहंकारी बन गया, जनता के अधिकार छिन गए।

समाज – "वर्ण जन्म से बंटने लगा"

दादा: “सबसे बड़ा बदलाव – वर्ण-व्यवस्था पक्की हो गई।”

· ऋग्वैदिक काल में वर्ण कर्म पर आधारित था – तुम्हारी जाति तुम्हारे काम से तय होती थी।
· उत्तर वैदिक काल में वर्ण जन्म पर आधारित हो गया – यानी ब्राह्मण के घर पैदा हुआ तो चाहे मूर्ख हो, ब्राह्मण ही रहेगा। शूद्र के घर पैदा हुआ तो चाहे प्रतिभाशाली हो, शूद्र ही रहेगा।

चार वर्ण (अब पक्के):

वर्ण	काम	सामाजिक स्थिति
ब्राह्मण	पढ़ाना, पूजा करना, यज्ञ कराना	सर्वोच्च राजा से भी ऊपर
क्षत्रिय	राज करना, युद्ध करना	दूसरे नंबर ब्राह्मणों के आधीन
वैश्य	व्यापार, खेती, पशुपालन	तीसरे नंबर कर देते थे, युद्ध नहीं कर सकते थे
शूद्र	दूसरों की सेवा करना, सफाई, मजदूरी	सबसे नीचे वेद पढ़ने का अधिकार नहीं, यज्ञ में भाग नहीं ले सकते थे

💚 अच्छाई:
समाज व्यवस्थित हुआ – हर किसी को एक काम मिल गया।
🖤 बुराई:
सामाजिक गतिशीलता (सामाजिक उन्नति का मार्ग) खत्म हो गई। जाति जन्म पर आधारित हो गई – यह दोष आज तक चला आ रहा है।

🖤 स्त्रियों के अधिकार छीन लिए गए:

· उन्हें वेद पढ़ने से रोक दिया गया।
· पर्दा शुरू हुआ।
· बाल-विवाह शुरू हुआ।
· सती प्रथा के पहले संकेत मिले।
· 'विधवा' को कलंक समझा जाने लगा।

आश्रम – "जीवन की समयरेखा"

'जाबालोपनिषद्' में पहली बार चार आश्रमों का वर्णन मिलता है:

आश्रम उम्र (लगभग) क्या करना?
ब्रह्मचर्य 0-25 साल :
गुरुकुल में रहो, विद्या अर्जित करो ।
गृहस्थ 25-50 साल :
शादी करो, परिवार चलाओ, यज्ञ करो ।
वानप्रस्थ 50-75 साल :
जंगल चले जाओ, त्याग की तैयारी करो ।
संन्यास 75+ साल :
घर-बार छोड़ दो, केवल मोक्ष की खोज करो ।

💚 अच्छाई:
जीवन का एक आदर्श चार्ट था – हर उम्र के लिए अलग कर्तव्य।
🖤 बुराई:
यह सिद्धांत में था, व्यवहार में नहीं – बहुत कम लोग वानप्रस्थ या संन्यास ले पाते थे। महिलाओं के लिए यह चार्ट नहीं था।

धर्म – "प्रजापति बना बॉस"

पुराने देवता इंद्र, अग्नि, वरुण पीछे हो गए। नए देवता आए:

नए देवता पुराने संबंध क्यों बड़े हुए?
▪प्रजापति (ब्रह्मा) :

सृष्टि के रचयिता यज्ञ इतने जटिल हो गए थे कि एक निर्माता देवता की ज़रूरत पड़ी।
▪विष्णु :
पहले एक छोटे देवता थे ब्राह्मणों ने उन्हें 'पालनहार' बना दिया।
▪रुद्र (शिव) :
एक क्रोधी देवता, जो बीमारियाँ भेजता था बाद में शंकर बन गए – 'शंकर' यानी कल्याण करने वाले।

💚 अच्छाई:
नए देवता अधिक सार्वभौमिक थे – प्रजापति ने सृष्टि बनाई, विष्णु ने पालन किया, रुद्र ने संहार किया – यह पूरा चक्र था।
🖤 बुराई:
यज्ञ और भी जटिल और क्रूर हो गए। अब सिर्फ घी और अनाज नहीं चढ़ता था, बलि दी जाती थी (जानवरों की – घोड़े, बकरे, भैंस)। बड़े यज्ञों में सैकड़ों जानवर मारे जाते थे।

लोहा – "जब तकनीक आई"

दादा: “सबसे पहले लोहे का प्रमाण कहाँ मिला?
उत्तर प्रदेश के अतरंजीखेड़ा (आगरा के पास) से लगभग 1000 ई.पू. के लोहे के उपकरण मिले हैं। यह उत्तर वैदिक काल के मध्य का समय है।”

लोहे का असर:
पहले जंगल काटना मुश्किल था – पत्थर और ताँबे के औजार जल्दी खराब हो जाते थे। लोहे से जंगल साफ करना आसान हो गया। गंगा के घने जंगल कटे, खेती बढ़ी, आबादी बढ़ी, शहर बढ़े। भारत का केंद्र सप्त सिंधु (पंजाब-हरियाणा) से गंगा की ओर शिफ्ट हुआ।

💚 अच्छाई:
तकनीकी प्रगति – लोहे ने जीवन आसान बना दिया।
🖤 बुराई:
जंगल कटने से पर्यावरण को नुकसान हुआ, और जिन जनजातियों के पास लोहा नहीं था, वे पीछे रह गईं।

कहानी का भावनात्मक मोड़ – शूद्र माँ का बेटा

एक शूद्र महिला अपने बेटे को लेकर गुरुकुल पहुँची।

महिला: “गुरुदेव, मेरा बेटा पढ़ना चाहता है।”

गुरु: “तेरा बेटा वेद नहीं पढ़ सकता, वह शूद्र है।”

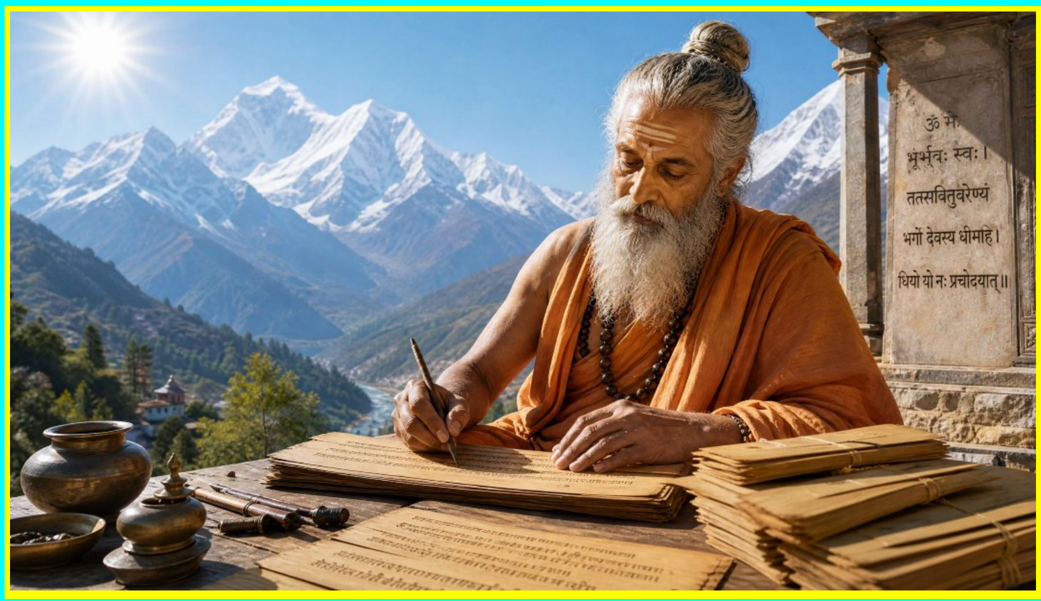
वह महिला रो पड़ी।

महिला: “भगवान ने हम सबको एक जैसा बनाया, पर तुम लोगों ने जन्म से बाँट दिया। मेरे बेटे को कम से कम लिखना तो सिखा दो – ताकि वह अपने बारे में लिख सके।”

गुरु चुप रहा। शूद्र लड़के का नाम इतिहास में नहीं मिलता।

दादा: “बेटा, यही उत्तर वैदिक काल की त्रासदी थी – जन्म से बंधा भाग्य। ”

तीसरा दृश्य: वैदिक साहित्य – "वेद से उपनिषद तक"



दादा: “बेटा, आर्यों के सबसे पवित्र ग्रंथ हैं – वेद। चार वेद हैं:”

वेद की विशेषता :

▪ऋग्वेद :
सबसे प्राचीन (1500 ई.पू.), 10 मण्डल, 1028 सूक्त, पद्यात्मक।
गायत्री मंत्र यहीं है।

▪सामवेद :
गाए जाने वाले मंत्र – 'भारतीय संगीत का मूल' ।

▪यजुर्वेद :
पद्य और गद्य दोनों में – यज्ञों के नियमों की किताब ।

▪अथर्ववेद :
जादू, टोना, औषधि, रोग निवारण – आम लोगों का वेद ।

उपनिषद – "वेदों का गूढ़ रहस्य"

दादा: “ऋषियों ने सोचा – 'यज्ञों से देवता तो खुश हो जाते हैं, पर सच्चा ज्ञान क्या है? अंततः मोक्ष कैसे मिलेगा?'”

इन सवालों से पैदा हुए उपनिषद। उपनिषदों को 'ब्रह्म विद्या' भी कहते हैं – क्योंकि इनमें ब्रह्म (परम सत्ता) और आत्मा (अपने भीतर का चेतन) के ज्ञान की चर्चा है।

उपनिषदों की संख्या 108 है।
भारत का राष्ट्रीय आदर्श वाक्य 'सत्यमेव जयते' किस उपनिषद से लिया गया है? – मुण्डकोपनिषद् से।

💚 अच्छाई:
उपनिषदों में आत्मा, ब्रह्म, मोक्ष पर गहरे विचार हैं – यह भारतीय दर्शन की आधारशिला है।
🖤 बुराई:
ये उपनिषद केवल ब्राह्मणों और क्षत्रियों के लिए थे – स्त्रियाँ और शूद्र इन्हें नहीं पढ़ सकते थे।

वेदांग – "वेदों को समझने के लिए 6 अंग"

वेद कठिन थे – उच्चारण ठीक न हो तो यज्ञ का फल नष्ट हो जाता था। इसलिए छह सहायक विधाएँ बनाई गईं

वेदांग:
1. शिक्षा – मंत्रों के उच्चारण के नियम ।
2. कल्प – यज्ञों की विधि ।
3. व्याकरण – भाषा का नियम ।
4. निरुक्त – शब्दों की व्युत्पत्ति (यास्क ने लिखी) ।
5. छन्द – मीटर (ताल) ।

6. ज्योतिष – खगोल विज्ञान (यज्ञों का सही समय जानने के लिए)
।

स्मृति – "समाज के कानून"

सबसे प्राचीन स्मृति – 'मनुस्मृति' (रचना: 200 ई.पू. – 100 ई. के बीच)।

🖤 मनुस्मृति का विवाद:
इसने वर्ण-व्यवस्था को पक्का किया, स्त्रियों को पुरुषों के अधीन कर दिया, शूद्रों पर अत्याचार को कानूनी रूप दिया। 'मनु' कोई व्यक्ति नहीं था – यह एक परंपरा है।

💚 अच्छाई:
 इसने समाज को कानून दिया – कुछ करना और न करना साफ़ हो गया।
🖤 बुराई:
यह कानून जातिवादी और पितृसत्तात्मक था।

चौथा दृश्य: षड्दर्शन – "जब दार्शनिकों ने दुनिया को नए नज़रिए से देखा"



उत्तर वैदिक काल के अंत में छह दर्शन (दार्शनिक प्रणालियाँ) विकसित हुईं।

दर्शन रचियता एक लाइन में क्या कहते हैं?

▪सांख्य (कपिल) :
दुनिया = प्रकृति (जड़) + पुरुष (चेतना) – गणना करो, भक्ति नहीं ।

▪योग (पतंजलि) :
मन को साधो, आत्मा को पहचानो – 'चित्त वृत्ति निरोध' ।

▪न्याय (गौतम) :
तर्क से सत्य पर पहुँचो – न्याय का दर्शन ।

▪वैशेषिक (कणाद):
हर चीज़ परमाणुओं से बनी है – 600 ई.पू. में परमाणु सिद्धांत (यूनान से पहले) ।

▪पूर्व मीमांसा (जैमिनी) :
यज्ञ से सब कुछ मिलता है – वेदों के कर्मकांड को सबसे अधिक महत्व देती है ।

▪उत्तर मीमांसा (बादरायण) :
ब्रह्म ही सत्य है, दुनिया मिथ्या – ज्ञान से मोक्ष ।

अंतिम दृश्य – एक बूढ़े ब्राह्मण का पोते से संवाद



एक बुजुर्ग ब्राह्मण अपने पोते को वेद पढ़ा रहा है।

पोता: “दादा, क्या शूद्र ये वेद नहीं पढ़ सकते?”

ब्राह्मण (शून्य में देखता है, धीरे से कहता है): “बेटा, हमने बड़ी गलती की। वर्ण को जन्म से जोड़ दिया। जब वेद बन रहे थे, तब राजा जनता का सेवक था, औरतें आज़ाद थीं, शूद्र नहीं थे। हमने बाद में जंजीरें बनाईं और उन जंजीरों को हमने खुद ही मजबूत किया।”

पोता: “तो क्या हम उन जंजीरों को तोड़ सकते हैं?

ब्राह्मण (गहरी साँस लेता है): “तोड़ना होगा – नहीं तो ये वेद भी बोझ बन जाएँगे, ज्ञान नहीं। पर एक बात याद रखना – 'सत्यमेव

जयते' हमारा आदर्श है – सत्य ही जीतता है। उस सत्य का रास्ता बनाना हमारी ज़िम्मेदारी है।”

🔄 तुलना – भारत और विश्व

समय (लगभग) भारत में और विश्व में
▪1500-1000 ई.पू.
▪ऋग्वैदिक काल –
सभा-समिति, स्त्रियों का स्वर्ण युग, इंद्र पूजा ।
▪यूनान में : माइसीनीयन सभ्यता ।
▪चीन में : शांग वंश ।
▪1000-600 ई.पू.
▪उत्तर वैदिक काल –
वर्ण जन्म पर, राजा वंशानुगत, लोहा आया ।
▪यूनान में - अंधकार युग (डार्क एज) समाप्त, स्पार्टा और एथेंस का उदय ।
▪फारस में - जोरोस्ट्रियन धर्म का विकास ।

इस अंक के प्रश्न-उत्तर

▪वैदिक काल के दो भाग और उनके समय क्या हैं? ऋग्वैदिक काल (1500-1000 ई.पू.) और उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई.पू.) ।
▪ऋग्वेद में कितने मण्डल और सूक्त हैं?
10 मण्डल, 1028 सूक्त ।
▪ऋग्वेद के दसवें मण्डल के 'पुरुष सूक्त' का वर्णन किसका है?
चार वर्णों (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) का ।
▪ऋग्वैदिक काल की राजनीतिक इकाइयाँ कौन-सी थीं?

कुल → ग्राम (ग्रामणी) → विश (विशपति) → जन (राजा) ।
▪ऋग्वैदिक काल में कौन-सी दो महत्वपूर्ण राजनीतिक संस्थाएँ थीं?
सभा (बड़ों की परिषद) और समिति (जनता की आम सभा) ।
▪'राजा की दैवी उत्पत्ति' का सिद्धांत पहली बार कहाँ मिलता है?
ऐतरेय ब्राह्मण में ।
▪चार आश्रमों का सबसे पहला उल्लेख कहाँ मिलता है?
जाबालोपनिषद् में ।
▪लोहे के प्रयोग का सबसे पहला साक्ष्य कहाँ से मिला और कब का है?
अतरंजीखेड़ा (उत्तर प्रदेश) – लगभग 1000 ई.पू. ।
▪'सामवेद' को क्या कहा जाता है?
'भारतीय संगीत का मूल' ।
▪'सत्यमेव जयते' किस उपनिषद से लिया गया है? मुण्डकोपनिषद् ।
▪उपनिषदों की कुल संख्या कितनी मानी जाती है?
108 ।
▪उपनिषदों को क्या कहते हैं?
'ब्रह्म विद्या' – क्योंकि इनमें ब्रह्म और आत्मा के ज्ञान की चर्चा है ।
▪सबसे प्राचीन स्मृति कौन-सी है और उसकी रचना कब हुई?
'मनुस्मृति' – लगभग 200 ई.पू. से 100 ई. के बीच ।
▪'न्याय दर्शन' के प्रवर्तक कौन हैं?
गौतम ।
▪'योग दर्शन' के प्रवर्तक कौन हैं?
पतंजलि ।
▪'सांख्य दर्शन' के प्रवर्तक कौन हैं?
कपिल ।
▪'वैशेषिक दर्शन' के प्रवर्तक कौन हैं?
कणाद (या उलूक) ।

महत्वपूर्ण याद रखने योग्य बिंदु

1. ऋग्वैदिक काल (1500-1000 ई.पू.) –
राजा जनता का मुखिया, स्त्रियाँ स्वतंत्र, वर्ण कर्म पर, इंद्र सबसे बड़े देवता।
💚 अच्छाई:
लोकतंत्र के बीज, महिला-अधिकारों का स्वर्ण युग।
🖤 बुराई:
यह व्यवस्था केवल आर्यों तक सीमित थी।
2. उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई.पू.) –
राजा वंशानुगत, स्त्रियों के अधिकार कम, वर्ण जन्म पर, प्रजापति सबसे बड़े देवता।
💚 अच्छाई:
बड़े राज्यों का उदय (मगध, कोशल, आदि), लोहे से तकनीकी प्रगति।
🖤 बुराई:
लोकतंत्र का पतन, जाति जन्म पर बंटी, स्त्रियों और शूद्रों पर अत्याचार।
3. लोहा (अतरंजीखेड़ा, 1000 ई.पू.) –
जंगल कटे → गंगा घाटी बसी → शहर बढ़े → राज्य बड़े हुए → मगध का उदय (जो अगले अंक में आएगा)।
4. चार वेद:
ऋग्वेद (सबसे प्राचीन, 10 मण्डल, 1028 सूक्त), सामवेद (संगीत का मूल), यजुर्वेद (यज्ञ), अथर्ववेद (जादू-टोना)।
5. उपनिषद (108):
'ब्रह्म विद्या' – 'सत्यमेव जयते' मुण्डकोपनिषद् से।
6. षड्दर्शन:
सांख्य (कपिल), योग (पतंजलि), न्याय (गौतम), वैशेषिक (कणाद – परमाणु सिद्धांत, 600 ई.पू. – यूनान से पहले), पूर्व मीमांसा (जैमिनी), उत्तर मीमांसा (वेदांत) (बादरायण)।

7. सरस्वती नदी –
ऋग्वेद में सबसे पवित्र, अब सूखी (राजस्थान में घग्गर मानी जाती है)।

अंक समाप्त

अगले अंक 4 में: महाजनपद से मौर्य तक – 16 महाजनपदों की रेस, मगध का उदय, बिम्बिसार, अजातशत्रु (पिता-हत्या का काला अध्याय), प्रथम बौद्ध संगीति, सिकंदर का आक्रमण, पोरस का वीरतापूर्ण युद्ध, चाणक्य की चालाकी, चंद्रगुप्त मौर्य का राज्याभिषेक।

तो चलिए, अब हम इस महानाटक के चौथे अंक में प्रवेश करते हैं।

यह वह अंक है जहाँ वैदिक काल के छोटे-छोटे राज्य बड़ी महत्वाकांक्षाओं में बदल गए। यहाँ 16 महाजनपद आपस में लड़ रहे थे – और उस लड़ाई में एक विजेता बना – मगध। फिर आया सिकंदर – दुनिया का सबसे बड़ा विजेता – जिसने भारत में पोरस से युद्ध किया, पर अपनी ही सेना से हार गया। और फिर आया चाणक्य – एक अपमानित ब्राह्मण, जिसने अपनी चालाकी से नंदों को उखाड़ फेंका और एक गरीब लड़के चंद्रगुप्त मौर्य को सम्राट बना दिया।

यह कहानी है महाजनपदों से मौर्यों तक – जब भारत ने साम्राज्यवाद का स्वाद चखा, और गुलामी का भी।

अंक 4: महाजनपद से मौर्य तक – "जब भारत ने साम्राज्य का स्वाद चखा"



दृश्य 2: मगध का उत्कर्ष और बिंबिसार - राजा बिंबिसार ने वैवाहिक संबंधों, विजय और संसाधनों से साम्राज्य विस्तार शुरू किया.

(लगभग 600 ई.पू. से 322 ई.पू. तक – 300 साल की वह दहाड़ जिसने भारत को बदल दिया)

प्रस्तावना: सोलह व्यंजनों का थाली – "महाजनपदों की रेस"

एक दिन, दादा और पोता बैठे हैं। दादा एक पुराने नक्शे को देख रहे हैं।

पोता: “दादा, उस समय भारत में कितने राज्य थे?”

दादा: “बेटा, लगभग 600 ई.पू. के आसपास, उत्तरी भारत 16 बड़े राज्यों में बँटा था – जिन्हें महाजनपद कहते थे। ये आपस में लगातार लड़ रहे थे। और इसी लड़ाई में एक राज्य सबसे ताकतवर निकला – मगध।”

पोता: “वे कौन-कौन से थे?”

दादा: “बौद्ध ग्रंथ 'अंगुत्तरनिकाय' में इन 16 का वर्णन मिलता है।”

---

16 महाजनपद :



क्र. महाजनपद (राजधानी) विशेषता
1. मगध : राजगृह (बाद में पाटलिपुत्र)
 सबसे ताकतवर (लोहा, हाथी, नदियाँ, महत्वाकांक्षी राजा) ।
2. कोशल : श्रावस्ती
(राम की जन्मभूमि अयोध्या यहीं थी)
3. वत्स : कौशाम्बी

व्यापार का केंद्र ।
4. अवन्ति : उज्जैन
दक्षिण-पश्चिम का प्रवेश द्वार ।
5. गांधार : तक्षशिला
यूनानी प्रभाव, सिकंदर का प्रवेश द्वार ।
6. काशी : वाराणसी
शिक्षा और धर्म का केंद्र ।
7. वज्जि (संघ) : वैशाली गणतंत्र (लिच्छवी)
राजा नहीं, निर्वाचित मुखिया ।
8. मल्ल : कुशीनगर
बुद्ध के महापरिनिर्वाण का स्थान ।
9. कुरु : इंद्रप्रस्थ
महाभारत का युद्ध स्थल ।
10. पांचाल : अहिच्छत्र
द्रौपदी की जन्मभूमि ।
11. मत्स्य : विराटनगर
पांडवों का अज्ञातवास स्थल ।
12. शूरसेन : मथुरा
कृष्ण की जन्मभूमि ।
13. चेदि : शुक्तिमती
बुंदेलखंड क्षेत्र ।
14. अंग : .चम्पा
मगध ने इसे पहले जीता ।
15.कम्बोज : राजधानी अज्ञात
उत्तर-पश्चिमी सीमा ।
16. अश्मक : पोटली
एकमात्र दक्षिण भारत का ।

दादा: “बेटा, इन सोलह में से मगध सबसे ताकतवर क्यों बना? इसके पास पाँच ताकतें थीं जो दूसरों के पास नहीं थीं:”

ताकत कैसे मदद मिली?
लोहा मगध के पास लौह अयस्क के समृद्ध भंडार थे (आधुनिक झारखंड) – ताकतवर हथियार
हाथी जंगलों में हाथी पकड़े जाते थे – युद्ध में टैंक की तरह
नदियाँ गंगा, सोन, गंडक – व्यापार का रास्ता, अनाज बहुत, संचार आसान
राजधानी पहले राजगृह (पहाड़ियों से घिरी – प्राकृतिक किला), बाद में पाटलिपुत्र (सात नदियों के बीच – जल-दुर्ग)
महत्वाकांक्षी राजा बिम्बिसार, अजातशत्रु, महापद्मनंद – सबने साम्राज्य बढ़ाया

दृश्य 1: हर्यक वंश **– "**पिता-पुत्र की कहानी जिसने इतिहास बदल दिया**"**

टाइम: 544 ई.पू. – 412 ई.पू.

🔹 बिम्बिसार (544-492 ई.पू.) – "मगध का निर्माता, पर पुत्र को पहचानने में असफल"

कौन था: हर्यक वंश का वह राजा जिसने मगध को वास्तविक ताकत दी।

💚 अच्छाई:

· मगध का वास्तविक संस्थापक। उसने अंग (पूर्वी बिहार) पर कब्जा करके मगध के चारों ओर एक सुरक्षा कवच बना लिया।
· राजनयिक संबंध – उसने अपनी बेटियों का विवाह पड़ोसी राजाओं (कोशल, वत्स) से करके मगध को दुश्मनों से बचाया।
· बुद्ध का अनुयायी – उसने बुद्ध को वेणुवन विहार (बाँस का बाग) दान में दिया – जो बौद्धों का पहला मठ बना।
· प्रजा से प्रेम – कहते हैं, वह आम लोगों के बीच जाता था, उनकी समस्याएँ सुनता था।

🖤 बुराई:

· अपने बेटे अजातशत्रु को समझ नहीं पाया – अजातशत्रु बुद्ध के शत्रु देवदत्त से मिलता था, पर बिम्बिसार ने कोई कदम नहीं उठाया।
· उत्तराधिकारी तैयार नहीं कर पाया – उसने माना कि अजातशत्रु ही राजा बनेगा – पर वह क्रूर था।
· बुद्ध की चेतावनी अनसुनी कर दी – बुद्ध ने उसे कहा था – "महाराज, सत्ता नशा देती है। जिसे तुम प्यार करते हो, वही तुम्हें सबसे गहरा घाव दे सकता है।"

उसका अंत:
अजातशत्रु ने उसे कैद करवा दिया। कैद में बिना खाना दिए सिर्फ पानी दिया गया। बुद्ध का ध्यान करते हुए उसने प्राण त्यागे।

(दृश्य: बिम्बिसार का दरबार। बुद्ध प्रवेश करते हैं। सब खड़े हो जाते हैं।)



बुद्ध: “महाराज, तुम्हारा राज्य बढ़ेगा। पर सत्ता एक अग्नि है। अगर तुम सतर्क रहोगे, तो यह तुम्हें रोशनी देगी। अगर लापरवाह रहे, तो तुम्हें जला डालेगी।”

बिम्बिसार: “हे भन्ते, अगर कोई करीबी ही सत्ता का दुरुपयोग करे – तो क्या करें?”

बुद्ध (बिना आँखें खोले, शांत स्वर में): “जिसे तुम प्यार करते हो, वही तुम्हें सबसे गहरा घाव देता है। तुम्हारा पुत्र…” (रुकते हैं, फिर धीरे से कहते हैं) “परन्तु यह तुम्हारा कर्म है।”

बिम्बिसार चुप हो गया। उसने कोई कदम नहीं उठाया।

- अजातशत्रु (492-460 ई.पू.) – "वीर योद्धा, पर पिता-हत्यारा"

कौन था: बिम्बिसार का पुत्र। उसने पिता को कैद कर मार डाला – और फिर जीवन भर पश्चाताप किया।

💚 अच्छाई:

· प्रतिभाशाली सेनापति – उसने दो नए हथियार बनवाए – रथमूसल (लोहे के मूसल से लदा रथ) और महाशिलाकंटक (पत्थर फेंकने वाली मशीन – प्राचीन गुलेल)।
· वज्जि संघ (लिच्छवी गणराज्य) को 16 साल के संघर्ष के बाद हराया।
· प्रथम बौद्ध संगीति (483 ई.पू.) उसके शासनकाल में राजगृह में हुई। बुद्ध के उपदेशों को संकलित किया गया – जो बाद में त्रिपिटक बने।

🖤 बुराई:

· पिता-हत्यारा – उसने अपने पिता बिम्बिसार को कैद करवाकर मरवा दिया।
· बुद्ध के शत्रु देवदत्त से मिलता था। देवदत्त ने ही उसे पिता-हत्या के लिए उकसाया था।
· क्रूर शासक – कहते हैं, उसने कई विद्रोहियों को जेल में डाल दिया, और बिना मुकदमे के मरवा दिया।

पिता-हत्या के बाद का पश्चाताप: कहते हैं, अजातशत्रु को जीवन भर अनिद्रा रही। वह अपने पिता के सपने देखता था – सपने में पिता उसका गला घोंट रहे थे। वह बुद्ध के पास गया और रोया। बुद्ध ने उसे क्षमा नहीं किया – पर उसे धम्म (बुद्ध के उपदेश) समझाए। अजातशत्रु बौद्ध धर्म का अनुयायी बन गया – पर अपने पापों से कभी मुक्त नहीं हुआ।

(दृश्य: अजातशत्रु का गुप्त कक्ष, रात के समय। देवदत्त कानाफूसी करता है। मोमबत्ती की लो धीमी है।)



देवदत्त: “राजकुमार, तुम्हारे पिता बूढ़े हो चुके हैं। राजगद्दी पर तुम्हारा अधिकार है। तुम्हें कैद करना होगा।”

अजातशत्रु (थरथराते होंठों से): “पिता को… कैसे?”

देवदत्त (ठंडी मुस्कान): “कैद करो। बस इतना ही। खुद को राजा घोषित करो। लोग मान जाएँगे।”

अगली सुबह, बिम्बिसार कैद हो चुका था।

- 🔹 उदायिन (उदयभद्र) (460-444 ई.पू.)

अच्छाई:

उसने पाटलिपुत्र (आज का पटना) नगर बसाया और राजधानी राजगृह से वहाँ स्थानांतरित कर दी। पाटलिपुत्र गंगा के किनारे बसा था – व्यापार के लिए अनुकूल और सात नदियों से घिरा।

बुराई:
वह स्वयं एक निर्बल राजा था – उसने कोई युद्ध नहीं जीता, कोई विद्रोह नहीं दबाया। उसके बाद हर्यक वंश का पतन हो गया।

दृश्य **2:** शिशुनाग और नंद **–** **"**जब नाई राजा बना**"**

- शिशुनाग वंश (412-344 ई.पू.)

हर्यक वंश के अंतिम राजा को उसके सेनापति शिशुनाग ने मारकर खुद राजा बन लिया।

इस वंश का सबसे महत्वपूर्ण राजा कालाशोक (काकवर्ण) था। उसी के शासनकाल में द्वितीय बौद्ध संगीति वैशाली में हुई (383 ई.पू.)। यहाँ बौद्ध भिक्षुओं के बीच मतभेद सामने आए – जो बाद में हीनयान (पुराने मार्ग) और महायान (नए मार्ग) के विभाजन का कारण बने।

- नंद वंश (345-324 ई.पू.) – "नाई से नरेश तक"

संस्थापक: महापद्मनंद।



कहानी:
महापद्मनंद एक नाई था – जो राजा को स्नान कराने के लिए महल में आता था। उसने सभी क्षत्रियों को मार डाला – इसलिए उसे 'सर्वक्षत्रान्तक' (सभी क्षत्रियों का नाश करने वाला) कहा जाता है। उसने 'एकराट्' (एकमात्र सम्राट) की उपाधि ली।

अच्छाई:
उसने मगध को और मजबूत बनाया – उसके पास 200,000 पैदल सैनिक, 20,000 घुड़सवार, 2,000 रथ, और 3,000 हाथी थे। उसके खजाने में इतना सोना था कि पड़ोसी राज्य ईर्ष्या से जलते थे।

बुराई:
अत्याचारी और लालची। उसने क्षत्रियों का संहार किया। प्रजा से भारी कर वसूलता था – किसानों को उपज का आधा हिस्सा देना पड़ता था। लोग उससे नफरत करते थे।

अंतिम राजा:
धनानंद। और भी अत्याचारी, और भी अहंकारी। उसने अपने सैनिकों को तनख्वाह नहीं दी, अपने मंत्रियों को अपमानित किया।

एक दिन एक ब्राह्मण चाणक्य उससे मिलने आया – चाणक्य ने उसे सिकंदर के खतरे से आगाह किया। धनानंद ने उसका अपमान किया और दरबार से निकलवा दिया। चाणक्य ने प्रतिज्ञा की – "नंदों की जड़ खोद दूंगा।"

दृश्य **3:** सिकंदर का आक्रमण **– "**जब विश्व**-**विजेता भारत में रुक गया**"**



(326 ई.पू.)

टाइम: 326 ई.पू.
स्थान: झेलम नदी (वितस्ता) के किनारे, पंजाब

पात्र:

· सिकंदर – मैसेडोनिया का राजा, 33 वर्ष, दुनिया जीत चुका, पर अब ऊब चुका है

· पोरस (पुरु) – पंजाब का राजा, 7 फुट से भी ऊँचा, हाथी पर सवार, आत्मसम्मान का पुतला
· कोइनोस (Coenus) – सिकंदर का सबसे अनुभवी सेनापति, बूढ़ा, पर वफादार

पृष्ठभूमि:



सिकंदर ने पर्शिया, मिस्र, बैक्ट्रिया – सब जीत लिया था। अब बारी थी भारत की। उसने सुना था – यहाँ सोना सड़कों पर बिखरा है, और हाथी युद्ध में इस्तेमाल होते हैं।

वह तक्षशिला के राजा अम्भी से मिला – अम्भी ने बिना युद्ध के समर्पण कर दिया। सिकंदर आगे बढ़ा। झेलम नदी के किनारे पोरस अपनी सेना लेकर खड़ा था – हाथियों पर, घोड़ों पर, रथों पर। बारिश हो रही थी, नदी उफान पर थी।

(सिकंदर की सेना झेलम नदी के किनारे खड़ी है। दूसरी तरफ पोरस हाथी पर सवार है। बारिश मूसलाधार।)

सिकंदर (अपने सेनापति को): “मैंने दुनिया जीत ली। यह पोरस – यह मेरे सामने कैसे खड़ा हो सकता है? नदी पार करो।”

कोइनोस (घुटनों पर गिरकर): “महाराज, इन सैनिकों ने 10 साल से अपने घर नहीं देखे हैं। वे थक गए हैं। हाथी – हमने कभी हाथी से युद्ध नहीं किया। एक गलती हुई तो पूरी सेना डूब जाएगी।”

सिकंदर (गुस्से से): “तो क्या मैं अधूरा सपना लेकर लौटूं? यहाँ भारत है – सोने की चिड़िया! एक बार जीत लो, फिर कभी भूखे नहीं रहोगे।”

युद्ध हुआ – झेलम का युद्ध। सिकंदर की चालाकी ने काम किया। अंत में पोरस हारा। घायल पोरस को बंदी बनाकर सिकंदर के सामने पेश किया गया।

सिकंदर: “तुम्हारी क्या इच्छा है?”

पोरस (विशालकाय देह, पर आँखों में चमक): “मेरे साथ एक राजा जैसा व्यवहार करो। बस इतना चाहिए।”

सिकंदर (प्रभावित होकर): “तुम्हारा राज्य लौटाता हूँ। और एक यूनानी सेनापति तुम्हारे साथ रहेगा – मित्र बनकर।”

💚 पोरस की अच्छाई:
वीरता और आत्मसम्मान – हार के बाद भी नहीं झुका।
🖤 पोरस की बुराई:

अहंकारी थोड़ा था – उसने सिकंदर से पहले ही युद्ध की चुनौती दे दी थी।

(युद्ध के बाद, सिकंदर आगे बढ़ना चाहता था। वह व्यास नदी के किनारे पहुँचा।)

सिकंदर (उत्साह से): “चलो! एक और नदी पार करनी है। उस पार गंगा है।”

सन्नाटा। दस हजार सैनिकों में से कोई हिलता नहीं। फिर एक सैनिक ने आवाज उठाई – “महाराज, हम वापस चलना चाहते हैं।” फिर दूसरे ने, फिर पूरी सेना ने शोर मचा दिया – “वापस चलिए! वापस!”

कोइनोस (आगे बढ़ता है, पूरी सेना की तरफ से आवाज़ बनकर): “महाराज, 10 साल हो गए। हमने आपके साथ दुनिया देखी। पर अब हमारे पैरों में छाले हैं, हमारी पत्नियाँ हमें भूल गई हैं, हमारे बच्चे बड़े हो गए। हम थक गए हैं। व्यास पार मत कीजिए। वापस चलिए।”

सिकंदर ने तीन दिन तक तम्बू में बंद रहकर सोचा। चौथे दिन तम्बू खुला। उसने कहा – “हम वापस जा रहे हैं।”

तथ्य: इस युद्ध को 'वितस्ता का युद्ध' या 'हाइडेस्पीज का युद्ध' कहते हैं। सिकंदर की मृत्यु 323 ई.पू. में बेबीलोन में हुई – उसका विश्व साम्राज्य अधूरा रह गया।

दृश्य **4:** चाणक्य और चंद्रगुप्त **– "**जब अपमान ने एक साम्राज्य बना दिया**"**

(322 ई.पू.)

पात्र:

· चाणक्य (कौटिल्य) – एक ब्राह्मण विद्वान, तक्षशिला विश्वविद्यालय का प्रोफेसर, जो नंद दरबार में अपमानित हुआ
· चंद्रगुप्त मौर्य – एक गरीब युवक, जो शायद मोरों को पालने वाले परिवार से था (इसलिए 'मौर्य' नाम)
· धनानंद – नंद वंश का अंतिम राजा, अमीर, अत्याचारी, अहंकारी

—



(नंद दरबार। धनानंद अपने सिंहासन पर लेटा है – बिल्कुल शेर की तरह अकड़कर नहीं, बल्कि अहंकार में आलस्य से। पास में मदिरा का प्याला है। चाणक्य प्रवेश करता है – साधारण वस्त्र, पर आँखों में चमक।)

चाणक्य (विनम्र स्वर में, पर आँखों में कोमलता नहीं): “महाराज, मैं चाणक्य हूँ – तक्षशिला से आया हूँ। सिकंदर पश्चिम में है। उसने पर्शिया जीत लिया है, उसने बैक्ट्रिया जीत लिया है। अब वह भारत की तरफ बढ़ रहा है। हमें सेना बढ़ानी होगी, दुर्ग मजबूत करने होंगे, और राजाओं से संधि करनी होगी।”

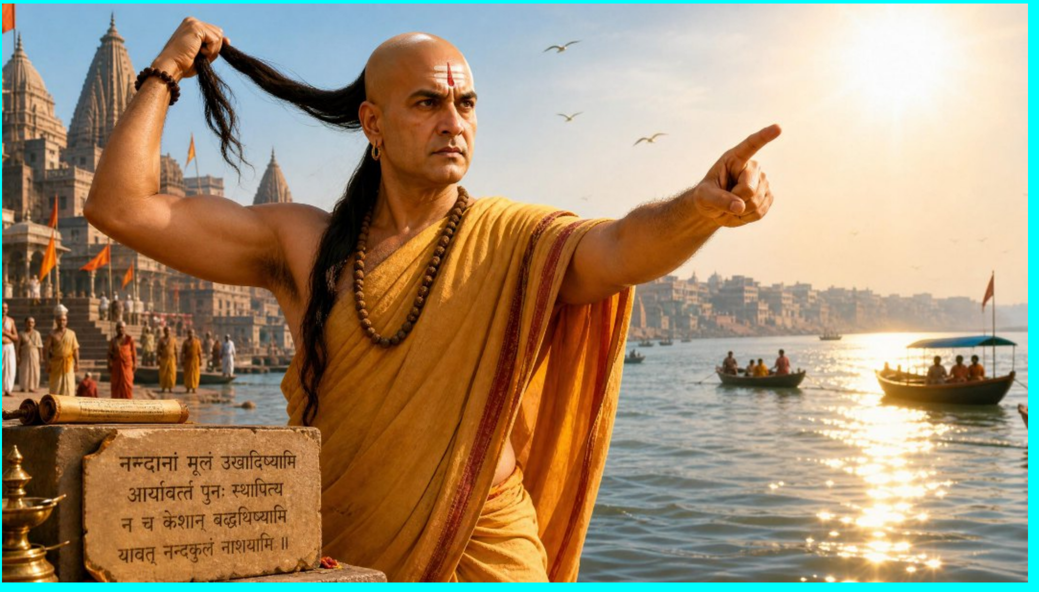
धनानंद (हँसते हुए, बिना सिर उठाए): “चुप रे ब्राह्मण। हमारे पास इतना सोना है कि हम सिकंदर को खरीद सकते हैं। सेना क्या चीज़ है? बैठो, यह मदिरा पियो।”

चाणक्य (ध्यान से): “महाराज, सिकंदर को सोने से नहीं रोका जा सकता। उसने पर्शिया का सोना लूटा, वह और अमीर हो गया। हमें तलवार चाहिए।”

धनानंद (अब गुस्से में, उठकर बैठता है): “तू मुझे सिखाएगा? मेरे दरबार से बाहर निकालो इस ब्राह्मण को!”

चाणक्य को दरबार से बाहर निकाल दिया गया। उसकी चोटी (जटा – ब्राह्मणों की पहचान) खोल दी गई – एक ब्राह्मण के लिए सबसे बड़ा अपमान।

*चाणक्य बाहर निकला। उसने अपनी कटी हुई चोटी को देखा, और गंगा के किनारे जाकर प्रतिज्ञा की – "जब तक नंद वंश नष्ट नहीं हो जाता, यह चोटी नहीं बाँधूंगा। और तब तक नहीं रुकूंगा जब तक सारे अत्याचारी राजा नहीं मिट जाते।"



चाणक्य ने एक युवा को देखा – चंद्रगुप्त।

एक दिन, चंद्रगुप्त एक अखाड़े में युवाओं से लड़ रहा था। चाणक्य ने उसे देखा – देह में दम था, आँखों में आग थी, और हार मानने का नाम नहीं था।



चाणक्य: “बेटा, मैं एक ब्राह्मण हूँ। मुझे तुम्हारे जैसे युवा की ज़रूरत है – साहसी, निडर। क्या तुम मेरे साथ चलोगे?”

चंद्रगुप्त (आत्मविश्वास से): “आप कौन हैं?”

चाणक्य: “एक ब्राह्मण जो तुम्हें सम्राट बनाना चाहता है। क्या तुममें साहस है?”

चंद्रगुप्त (आग से भरी आँखें): “साहस है। बस साथ चलिए।”

चाणक्य ने 'फूट डालो और राज करो' की नीति अपनाई। उसने पड़ोसी राज्यों से संधि की, सेना खड़ी की, और नंदों पर हमला कर दिया।

धनानंद मारा गया। नंद वंश समाप्त। चंद्रगुप्त मौर्य गद्दी पर बैठा। यह था 322 ई.पू. – मौर्य साम्राज्य की शुरुआत।

💚 चाणक्य की अच्छाई:
प्रतिभाशाली रणनीतिकार, दूरदर्शी, उसने 'अर्थशास्त्र' लिखा – जो राजनीति, अर्थव्यवस्था, युद्ध-नीति, जासूसी पर सबसे पुरानी पुस्तकों में से एक है।
🖤 चाणक्य की बुराई:
क्रूर, निर्दयी – कहते हैं, उसने अपने ही एक शिष्य को मरवा दिया था क्योंकि उसने विश्वासघात किया था।

अंतिम दृश्य – चंद्रगुप्त का त्याग (बाद की बात)

बाद में, चंद्रगुप्त ने अपने अंतिम समय में जैन धर्म अपना लिया। वह श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) चला गया, और कायाक्लेश (स्वेच्छिक उपवास) द्वारा प्राण त्याग दिए।

चाणक्य (चंद्रगुप्त से, उसके जाने से पहले): “महाराज, आप सब कुछ छोड़ रहे हैं – साम्राज्य, सेना, धन, परिवार?”



चंद्रगुप्त (मुस्कुराते हुए, आँखों में शांति): “चाणक्य, तुमने मुझे राजा बनाया। अब मैं खुद को बनाने जा रहा हूँ। तुमने मुझे धन दिया, सत्ता दी – पर मोक्ष नहीं दिया। अब मैं स्वयं खोजूंगा।”

🔄 तुलना – भारत और विश्व

समय (लगभग) भारत में और विश्व में
600 ई.पू.
▪16 महाजनपद – मगध का उदय ।
▪यूनान में - एथेंस का स्वर्ण युग, पाइथागोरस ।
▪फारस में - जोरोस्ट्रियन धर्म ।
▪चीन में - कन्फ्यूशियस धर्म ।
500 ई.पू.
▪ बुद्ध (563-483), महावीर (540-468) ।
▪यूनान में - फारस युद्ध, सुकरात ।
▪रोम में - गणराज्य की स्थापना ।
326 ई.पू.
▪सिकंदर का आक्रमण, पोरस का युद्ध ।
▪सिकंदर का विश्व अभियान ।
▪रोम का उदय ।
322 ई.पू.
▪ चंद्रगुप्त मौर्य, मौर्य साम्राज्य की स्थापना सिकंदर की मृत्यु, उसके सेनापतियों में बँटवारा ।

इस अंक के प्रश्न-उत्तर

▪16 महाजनपदों में सबसे ताकतवर कौन था?
मगध ।
▪राजगृह (गिरिव्रज) किसकी राजधानी थी?
बिम्बिसार की ।
▪'रथमूसल' और 'महाशिलाकंटक' किसने बनवाए? अजातशत्रु ने ।
▪प्रथम बौद्ध संगीति कहाँ और कब हुई?
राजगृह – 483 ई.पू. ।
▪द्वितीय बौद्ध संगीति कहाँ और कब हुई?
वैशाली – 383 ई.पू. ।

▪पाटलिपुत्र (पटना) की स्थापना किसने की?
उदायिन (उदयभद्र) ।
▪'सर्वक्षत्रान्तक' किसे कहते हैं?
महापद्मनंद – 'सभी क्षत्रियों का नाश करने वाला' ।
▪सिकंदर और पोरस के बीच युद्ध कब और कहाँ हुआ?
326 ई.पू., झेलम नदी (वितस्ता) के किनारे ।
▪पोरस की हार के बाद भी सिकंदर को भारत छोड़ना क्यों पड़ा?
उसकी सेना ने व्यास (ब्यास) नदी पार करने से मना कर दिया ।
▪'अर्थशास्त्र' किसने लिखा?
चाणक्य (कौटिल्य) ।
▪मेगस्थनीज कौन था?
सेल्युकस का राजदूत, चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में आया, इंडिका लिखी ।
▪चंद्रगुप्त मौर्य ने अंतिम समय में क्या किया?
जैन धर्म अपनाया, श्रवणबेलगोला में कायाक्लेश द्वारा प्राण त्यागे ।
▪'गणतंत्र' का उदाहरण कौन-सा महाजनपद था?
वज्जि संघ – राजधानी वैशाली (लिच्छवी) ।

महत्वपूर्ण याद रखने योग्य बिंदु

1. 16 महाजनपद (600 ई.पू.) – मगध सबसे ताकतवर।
पाँच कारण: लोहा, हाथी, नदियाँ, राजधानी, महत्वाकांक्षी राजा।
2. हर्यक वंश (544-412 ई.पू.):
   · बिम्बिसार – मगध का वास्तविक संस्थापक, बुद्ध का अनुयायी (वेणुवन विहार दान में दिया)।
   · अजातशत्रु – पिता-हत्यारा, रथमूसल और महाशिलाकंटक बनवाए, प्रथम बौद्ध संगीति (483 ई.पू.)।
   · उदायिन – पाटलिपुत्र (पटना) की स्थापना।

3. शिशुनाग वंश (412-344 ई.पू.) – कालाशोक – द्वितीय बौद्ध संगीति (383 ई.पू., वैशाली) – यहीं से हीनयान और महायान का विभाजन शुरू।
4. नंद वंश (345-324 ई.पू.) – महापद्मनंद (नाई → राजा, ‘सर्वक्षत्रान्तक’), धनानंद (अंतिम नंद राजा, अहंकारी)।
5. सिकंदर vs पोरस (326 ई.पू.) – झेलम (वितस्ता) का युद्ध। पोरस हारा, पर सिकंदर ने उसका राज्य लौटा दिया। सिकंदर की सेना ने व्यास (ब्यास) पार करने से मना कर दिया – भारत बच गया।
6. चाणक्य – अपमानित ब्राह्मण → नंदों का अंत → चंद्रगुप्त मौर्य को सम्राट बनाया। ‘अर्थशास्त्र’ लिखा।

💚 अच्छाई: दूरदर्शी, प्रतिभाशाली रणनीतिकार।

🖤 बुराई: क्रूर, निर्दयी।

7. चंद्रगुप्त मौर्य (322 ई.पू.) – मौर्य साम्राज्य के संस्थापक। बाद में जैन संन्यासी बना, श्रवणबेलगोला में प्राण त्यागे।
8. मेगस्थनीज – सेल्युकस (सिकंदर का सेनापति) का राजदूत, चंद्रगुप्त के दरबार में आया – ‘इंडिका’ लिखी।

🔹 तथ्य: उसने लिखा – “भारत में 7 जातियाँ हैं, कोई दास प्रथा नहीं, जनता खुश है।”

अंक समाप्त

अगले अंक 5 में: अशोक – “जब एक नरसंहारक बुद्ध का सिपाही बन गया” – कलिंग युद्ध (261 ई.पू.), 1 लाख मरे, 1.5 लाख बंदी, और उसके बाद अशोक का बदलाव, धम्म की घोषणा, शिलालेख, और बौद्ध धर्म का विश्वव्यापी प्रसार।

तो चलिए, अब हम इस महानाटक के पांचवें अंक में प्रवेश करते हैं।

यह वह अंक है जहाँ हमारी कहानी अपने सबसे नाटकीय, सबसे भावुक और सबसे बदलाव वाले मोड़ पर पहुँचती है। एक ऐसा राजा जिसने अपने ही 99 भाइयों का कत्ल करवाया – एक ऐसा योद्धा जिसने कलिंग में इतना खून बहाया कि नदियाँ लाल हो गईं – और फिर अचानक, वही राजा वहीं बैठ गया, तलवार फेंक दी, बुद्ध के पीछे चल पड़ा, और इतिहास का पहला अहिंसक सम्राट बन गया।

यह कहानी है अशोक की – "चंडाशोक" (क्रूर अशोक) से "धम्माशोक" (धार्मिक अशोक) तक की यात्रा की। पश्चाताप, परिवर्तन, और एक ऐसा प्रयोग जिसका कोई सानी नहीं – पूरे साम्राज्य में पत्थर के खंभों पर दया, अहिंसा, और करुणा के संदेश लिखवाना।

अंक **5:** अशोक **– "**जब एक नरसंहारक बुद्ध का सिपाही बन गया**"**

(273 ई.पू. से 232 ई.पू. तक – 41 साल का शासन, पर कहानी सिर्फ एक युद्ध में समाई है)

प्रस्तावना**:** खूनी रास्ता **– "99** भाई और एक अशोक**"**

एक दिन, दादा और पोता बैठे हैं। पोता एक पुराने पत्थर के टुकड़े (अभिलेख) को देख रहा है।

पोता: "दादा, अशोक कौन था? हम उसे 'महान' क्यों कहते हैं?"



दादा (गहरी साँस लेते हुए): “बेटा, अशोक को ‘महान’ कहना और ‘क्रूर’ कहना – दोनों सच हैं। उसने सत्ता पाने के लिए अपने 99 भाइयों को मरवा दिया। उसने कलिंग युद्ध में लाखों लोग मारे। और फिर उसी अशोक ने तलवार फेंक दी, बुद्ध का अनुयायी बन गया, और पूरे विश्व में अहिंसा का संदेश फैलाया।”

पोता: “99 भाई? यह तो बहुत क्रूरता है…”

दादा: “हाँ बेटा। इसलिए उसे पहले ‘चंडाशोक’ (क्रूर अशोक) कहा जाता था। पर कलिंग युद्ध के बाद वह ‘धम्माशोक’ (धार्मिक अशोक) बन गया।”

टाइम: 273 ई.पू.
जगह: पाटलिपुत्र (आज का पटना), मौर्य महल

पात्र:

· बिन्दुसार – चंद्रगुप्त का पुत्र, बूढ़ा और बीमार। उपनाम 'अमित्रघात' (दुश्मनों का संहारक)।
· अशोक – युवा, महत्वाकांक्षी, पर माँ धर्मा (एक साधारण ब्राह्मण महिला) के कारण 'छोटा' राजकुमार। उसे सिंहासन का उत्तराधिकारी नहीं माना जाता था – क्योंकि वह 'पूर्ण क्षत्रिय' नहीं था।
· सुशीम – बिन्दुसार का बड़ा पुत्र, वारिस। घमंडी, अशोक से ईर्ष्या करने वाला।
· राधागुप्त – अशोक का मंत्री और विश्वासपात्र।

कहानी:

बिन्दुसार बीमार था। उसने फैसला किया – राजा सुशीम बनेगा, क्योंकि वह सबसे बड़ा था। अशोक को उसने तक्षशिला भेज दिया – वहाँ विद्रोह चल रहा था। बिन्दुसार ने सोचा – "यहाँ मर जाएगा या विद्रोह दबा नहीं पाएगा।"

पर अशोक ने विद्रोहियों से तलवार से नहीं, बल्कि बातचीत से काम किया। उसने उनकी समस्याएँ सुनीं, उनके नेताओं से मुलाकात की, और बिना खून बहाए विद्रोह खत्म कर दिया। तक्षशिला के लोग उसके दीवाने हो गए।

जब अशोक वापस लौटा, तो बिन्दुसार पहले ही मर चुका था। सुशीम राजा बनने के लिए पाटलिपुत्र आया। पर अशोक ने पहले ही शहर पर कब्जा कर लिया था। उसने राधागुप्त के साथ मिलकर तख्तापलट कर दिया।

फिर जो हुआ, वह इतिहास के काले पन्नों में दर्ज है। अशोक ने 99 भाइयों को मरवा दिया – कुछ को जला दिया गया, कुछ को जीवित दफना दिया गया, कुछ को कैद में मरने के लिए छोड़ दिया गया।

सिर्फ एक भाई तिष्य बचा, क्योंकि वह बच्चा था और उसने कभी अशोक का विरोध नहीं किया।

तथ्य: यह संख्या शायद अतिरंजित है, पर सच यह है कि अशोक सत्ता पाने के लिए निर्दयी बना। उसे उसके नाम के पहले ‘चंडाशोक’ (क्रूर अशोक) कहा जाने लगा।

💚 अशोक की अच्छाई (पहले से):

· विद्रोह दबाने में कुशल – तक्षशिला में बातचीत से काम किया।
· प्रजा से प्रेम – तक्षशिला के लोग उससे प्यार करने लगे थे।

🖤 अशोक की बुराई (पहले से):

· निर्दयी – 99 भाइयों का कत्ल करवाना उसे ‘चंडाशोक’ कहलवाता है।
· महत्वाकांक्षी – सत्ता के लिए कुछ भी करने को तैयार।

दृश्य **1:** कलिंग युद्ध **– "**जब नदियाँ लाल हो गईं**"**

टाइम: 261 ई.पू. (अशोक के राज्याभिषेक के 8वें वर्ष)
जगह: कलिंग (आधुनिक ओडिशा)

पात्र:

· अशोक – अब सम्राट। पूरा उत्तर भारत उसके चरणों में, बस कलिंग बचा है।
· कलिंग का राजा – उसका नाम इतिहास में नहीं मिलता – एक शासक जिसने हार मानने से मना कर दिया था।

· अशोक का सेनापति – बूढ़ा, अनुभवी, युद्धों को देख-चुका, पर इस युद्ध की भयावहता से वह भी डर जाता है।

पृष्ठभूमि:

अशोक ने पूरा उत्तर भारत जीत लिया था – पश्चिम में अफगानिस्तान तक, पूर्व में बंगाल तक। बस कलिंग (ओडिशा) बचा था – एक छोटा सा राज्य, पर व्यापार के रास्ते पर बैठा था। उसके पास समुद्री मार्ग था – जो दक्षिण-पूर्व एशिया से सोना, मसाले, मोती लाता था। अशोक उस रास्ते पर कब्जा चाहता था – व्यापार बढ़ाने के लिए, और साथ ही दक्षिण के राजाओं को संदेश देना था – "मैं सबसे बड़ा हूँ।"

उसने कलिंग के राजा को संधि का प्रस्ताव भेजा – "मेरे अधीन रहो, मैं तुम्हें कर मुक्त रखूंगा, और तुम्हारे राजा रहोगे।" कलिंग का राजा हार मानने को तैयार नहीं था। उसने जवाब दिया – "हमारे पूर्वज कभी किसी के गुलाम नहीं रहे। आकर ले लो, अगर ले सको।"

अशोक ने युद्ध का ऐलान किया।

(युद्ध से पहले, अशोक अपने सेनापति से पूछता है:)

अशोक: "कितना समय लगेगा?"

सेनापति: "महाराज, कलिंग के सैनिक कम हैं, हमारे हाथी ज़्यादा हैं। यह युद्ध हम जीतेंगे। पर…"

अशोक: “पर क्या?”

सेनापति: “वे आत्मसमर्पण नहीं करेंगे। उनकी स्त्रियाँ भी ढाल लेकर खड़ी हैं। हमें उन्हें मारना होगा। बूढ़ों को, बच्चों को, औरतों को – सबको। कलिंग वाले खुद को नहीं बचाएँगे, बल्कि मरना पसंद करेंगे।”

अशोक (ठंडे स्वर में, बिना झिझक): “तो मारो। हम सेना भेजेंगे। कोई रहम नहीं।”

(युद्ध शुरू होता है। अशोक के हाथी कलिंग के सैनिकों को कुचलते हैं। कलिंग के सैनिक कम हैं, पर दिलेर हैं – वे पीछे नहीं हटते। एक-एक इंच ज़मीन के लिए खून बहता है। युद्ध एक दिन नहीं, कई दिन चलता है। घोड़े मरते हैं, हाथी मरते हैं, सैनिक मरते हैं – और साथ में किसान मरते हैं, औरतें मरती हैं, बच्चे मरते हैं।)



तथ्य: अशोक के तेरहवें शिलालेख के अनुसार – कलिंग युद्ध में 1 लाख लोग मारे गए, 1.5 लाख बंदी बनाए गए, और उतने ही भूख-प्यास से मरे।

युद्ध के बाद। अशोक घोड़े पर बैठा युद्धक्षेत्र का नज़ारा देखता है।

हर तरफ खून। नदियाँ लाल। मुर्दों के ढेर। माँएँ अपने बेटों के शवों पर बैठी रो रही हैं – बिना आवाज़ के, क्योंकि अब उनके गले सूख गए हैं। बच्चे भूखे हैं – कोई दूध देने वाला नहीं। बूढ़े लहूलुहान पड़े हैं – कोई उन्हें दफनाने वाला नहीं।



एक बूढ़ी औरत – उसके बाल बिखरे हुए, कपड़े फटे हुए – अशोक के पैरों से लगती है और कहती है:

बूढ़ी औरत: "महाराज, मेरा बेटा मारा गया। उसकी पत्नी ने उसकी चिता पर आग लगा ली। मेरा पोता – अभी दो साल का – भूखा है।

अपना बेटा वापस दे सकता है? हमारी खुशियाँ लौटा सकता है? मैं बूढ़ी हूँ – मुझे कोई मत दो, पर इस बच्चे को बचा लो।"

अशोक (पहली बार उसके हाथ काँपते हैं, उसकी आवाज़ रुक जाती है): "नहीं... नहीं लौटा सकता। मैं... मैं माफी नहीं माँग सकता।"

वह वापस अपने तंबू में जाता है। वहाँ बैठता है। बाहर से आवाज़ें आती हैं – रोने की, कराहने की, चीखने की। वह अपने हाथ देखता है – खून से सने हुए। वह अपनी आँखें बंद कर लेता है – पर वह नज़ारा नहीं भूलता। पूरी रात वह नहीं सो पाता। उसके सपने में वही बूढ़ी औरत आती है – और उसका पोता, जो भूखा है, उसकी ओर हाथ बढ़ाता है।

अगले दिन अशोक बाहर आता है। उसने फैसला कर लिया है।

दृश्य **2:** बौद्ध भिक्षु का स्पर्श **– "**निग्रोध और उपगुप्त**"**

टाइम: युद्ध के कुछ दिनों बाद
जगह: पाटलिपुत्र, अशोक का महल – एकांत कक्ष में, बिना राजचिह्नों के ।



अशोक को नींद नहीं आ रही। वह महल के बाग में घूम रहा है – लंबी सफ़ेद चादर ओढ़े, सिर झुकाए। रात का सन्नाटा है – सिर्फ कभी कोयल की आवाज़ आती है। वहाँ एक छोटा सा बौद्ध भिक्षु निग्रोध बैठा है – अशोक के बड़े भाई सुमन का पुत्र, जिसे अशोक ने सत्ता संभालते समय बचा लिया था (जबकि दूसरे भाइयों को मार डाला था)। वह बिना कुछ कहे, शांति से ध्यान कर रहा है।

अशोक (चिढ़कर, पर डांट नहीं पाता): "तुम कौन हो? तुम यहाँ क्यों बैठे हो? क्या तुम जानते हो, मैंने तुम्हारे पिता सुमन को…"

निग्रोध (बिना डरे, सीधी आँखों से देखते हुए): "जी, महाराज। मुझे पता है। पर उस खून को अब आप वापस नहीं ले सकते। आप पूछ रहे थे कि मैं कौन हूँ – मैं वही हूँ जो आपको 'आप' बताने के लिए आया हूँ। आपने बाहर लाखों मारे, पर भीतर का दुश्मन – क्रोध, लोभ, घमंड – अभी ज़िंदा है। कब मारोगे उसे?"

अशोक (गुस्से से, फिर उतना ही अचानक शांत होकर): "तू… बुद्ध का शिष्य है?"

निग्रोध (हल्की मुस्कान): “बुद्ध ने कहा था – ‘विजय से घृणा बढ़ती है। शांति से शांति। युद्ध से तुम जीत तो गए, पर आत्मा हार गई।’ मैं सिर्फ आपको वह याद दिला रहा हूँ जो आप पहले से जानते हैं – पर जानने से मना कर रहे थे। आपने पिता-हत्या की, भाई-हत्या की, अब कलिंग में लाखों की हत्या की। पर क्या आपको नींद आती है?”

अशोक का चेहरा भावशून्य हो जाता है – पर होंठ काँप रहे हैं।

अशोक (फुसफुसाते हुए, टूटी आवाज़ में): “नहीं… नहीं आती। मैं पूछता हूँ – क्या कोई उपाय है? क्या बुद्ध ने कोई रास्ता बताया?”

निग्रोध: “हाँ। करुणा का रास्ता। अहिंसा का रास्ता। धम्म का रास्ता। पर वह रास्ता आसान नहीं है। तुम्हें राजा रहते संन्यासी बनना होगा – सत्ता छोड़ना नहीं, पर अपने भीतर का राजा बदलना होगा।”

अशोक चुप हो गया। उसने उस रात पहली बार बुद्ध के उपदेश पढ़े – जो उसके भाई की चिट्ठियों में छिपे थे।

तथ्य: अशोक ने अपने बड़े भाई सुमन के पुत्र निग्रोध से प्रभावित होकर बौद्ध धर्म अपनाया। बाद में उपगुप्त ने उसे दीक्षित किया। अशोक साधु नहीं बना – वह राजा बना रहा, पर अहिंसक राजा।

दृश्य **3:** शिलालेख **– "**जब ढोल की जगह धम्म बजा**"**

टाइम: 260 ई.पू. से 232 ई.पू. – उसके शासन के शेष 28 साल

जगह: पूरे साम्राज्य में – पाकिस्तान के शाहबाजगढ़ी से लेकर ओडिशा के धौली तक, गुजरात के गिरनार से लेकर नेपाल के लुंबिनी तक ।

अशोक ने तलवार नीचे रखी – अब वह युद्ध नहीं करेगा। उसने शिकार करना छोड़ दिया, मांसाहार छोड़ दिया – यहाँ तक कि शाही रसोई में भी मांस नहीं बनता था। उसने 'धम्म' (बुद्ध के उपदेश) को अपनी नीति बना लिया।



धम्म के मुख्य सिद्धांत:

· अहिंसा (किसी भी प्राणी की हत्या न करना) ।
· सत्य बोलना ।
· बड़ों का सम्मान करना ।
· सभी धर्मों के प्रति सहिष्णुता ("दूसरे के धर्म की आलोचना मत करो") ।
· दान देना (गरीबों, भिक्षुओं को) ।

अशोक ने यह सब पत्थरों पर उकेरवाया – चट्टानों पर, स्तंभों पर।

तथ्य: अशोक के शिलालेख ब्राह्मी, खरोष्ठी, अरामाईक, और ग्रीक – चार लिपियों में हैं। अशोक के शिलालेखों का पता सबसे पहले टी. फैन्थेलर ने लगाया और उन्हें पढ़ने की सफलता जेम्स प्रिंसेप (ब्रिटिश) को मिली, 1837 ई. में।

प्रमुख शिलालेख:

1. 13वाँ शिलालेख (सबसे लंबा और सबसे महत्वपूर्ण) – इसमें अशोक लिखता है:
    · "कलिंग में एक लाख लोग मारे गए, डेढ़ लाख बंदी बनाए गए। इस पीड़ा ने मुझे बदल दिया।"
    · "अब मैं 'धम्मघोष' (धर्म की आवाज़) करूंगा, 'भेरीघोष' (युद्ध का नगाड़ा) नहीं।"
    · "मैंने यूनान, सीरिया, मिस्र, श्रीलंका में राजदूत भेजे हैं – धम्म के प्रचार के लिए।"
    · "हर जगह अस्पताल बनवाए गए हैं – इंसानों के लिए और जानवरों के लिए भी।"
    · "सड़कों के किनारे पेड़ लगवाए गए हैं, कुएँ खुदवाए गए हैं, यात्रियों के लिए सराय बनवाए गए हैं।"
2. सारनाथ का स्तंभ लेख – यह वही है जिस पर चार शेर बने हैं। इस पर लिखा है – "बुद्ध के भिक्षुओं और भिक्षुणियों का सम्मान करो।" इस स्तंभ के शीर्ष को आज भारत का राष्ट्रीय चिह्न बनाया गया है। और उसके नीचे लिखा है – 'सत्यमेव जयते' – यह मुण्डकोपनिषद् से लिया गया है।

💚 अशोक की अच्छाई (बदलाव के बाद):

· अहिंसा का प्रचार – युद्ध छोड़ा, शिकार छोड़ा, मांस छोड़ा – एक सम्राट के लिए अनोखी बात।

· धार्मिक सहिष्णुता – सभी धर्मों का सम्मान करने का आदेश दिया।
· प्रजा कल्याण – सड़कें, कुएँ, सराय, अस्पताल (जानवरों के लिए भी!) – उस समय की दुनिया में बहुत आगे की बात।
· बौद्ध धर्म का विश्वव्यापी प्रचार – यूनान, सीरिया, मिस्र में राजदूत भेजे; अपने पुत्र-पुत्री को श्रीलंका भेजा।
· पारदर्शिता – पत्थरों पर अपने निर्णय लिखवाए – ताकि कोई बाद में बदल न सके।

🖤 अशोक की बुराई (बदलाव के बाद भी):

· अतीत नहीं मिटाया जा सकता – 99 भाइयों का कत्ल और कलिंग में लाखों की हत्या – बाद में पश्चाताप करना उसे 'संत' नहीं बनाता।
· बौद्ध धर्म का थोपा जाना? – कुछ इतिहासकार कहते हैं कि अशोक ने बौद्ध धर्म को राजधर्म बनाकर दूसरे धर्मों पर दबाव डाला।
· शिलालेखों की सीमा – वे पत्थरों पर हैं, पर उन्हें पढ़ने वाले चुनिंदा थे (बहुत से लोग अनपढ़ थे)।

दृश्य 4: महेंद्र और संघमित्रा – "जब बोधि वृक्ष की शाखा श्रीलंका गई"

टाइम: 250 ई.पू. के आसपास
जगह: पाटलिपुत्र से श्रीलंका तक – समुद्र पार करके

अशोक का पुत्र महेंद्र और पुत्री संघमित्रा – दोनों बौद्ध भिक्षु (भिक्षु और भिक्षुणी) बन चुके थे। अशोक ने उन्हें श्रीलंका भेजने का फैसला

किया – क्योंकि श्रीलंका के राजा ने अशोक से मित्रता का हाथ बढ़ाया था।

अशोक (अपने बच्चों से): “बेटा महेंद्र, बेटी संघमित्रा – तुम दोनों अब भिक्षु हो गए। राजपाट नहीं, पर एक बड़ा काम तुम्हें सौंप रहा हूँ। श्रीलंका जाओ। वहाँ के राजा ने हमसे मित्रता माँगी है – और हमें बुद्ध का संदेश पहुँचाना है।”



संघमित्रा (साथ में थोड़ा सा पौधा लेकर): “पिता, हम बोधगया से बोधि वृक्ष की एक शाखा ले जाएँगे – ताकि बुद्ध ने जहाँ ज्ञान पाया, उसका एक हिस्सा वहाँ भी पहुँचे।”

तथ्य: अशोक ने धम्म के प्रचार के लिए महेंद्र (पुत्र) और संघमित्रा (पुत्री) को श्रीलंका भेजा। बोधि वृक्ष की शाखा आज भी अनुराधापुरा (श्रीलंका) में मौजूद है – यह दुनिया का सबसे पुराना पेड़ माना जाता है (2,200 साल से अधिक)।

अंतिम दृश्य – अशोक की अंतिम साँस – "कोई किला नहीं, कोई महल नहीं, बस धम्म"

टाइम: 232 ई.पू.
जगह: पाटलिपुत्र – अशोक का महल, पर अब वैभव नहीं है। दीवारों पर सोने की पत्तरें उतर चुकी हैं – उसने वह सब बौद्ध मठों को दान दे दिया था।

अशोक बूढ़ा हो चुका है। बीमार है। अंतिम समय में एक बौद्ध भिक्षु और उसकी बेटी संघमित्रा (जो श्रीलंका से लौट आई थी) के अलावा कोई नहीं है।

अशोक (कमज़ोर आवाज़ में): "बेटी, मैंने कलिंग में एक लाख बेटे मरवाए – पर आज मेरे पास कोई बेटा नहीं है। सिर्फ तुम हो। मैंने जीवन में दो बड़ी गलतियाँ कीं – पहली, अपने भाइयों को मरवाना। दूसरी, कलिंग में खून बहाना। सुधरा नहीं जाता। पर कोशिश... की है। क्या बुद्ध मुझे क्षमा करेंगे?"

भिक्षु (उसका हाथ अपने हाथ में लेता है): "महाराज, बुद्ध ने कहा था – 'कर्म ही एकमात्र अपना है, कर्म ही एकमात्र देन है, कर्म ही एकमात्र मित्र है, कर्म ही एकमात्र सहारा है।' आपका कर्म – धम्म के हजारों शिलालेख – हजारों साल बाद भी बोलेंगे। लोग आपका नाम याद रखेंगे।"

अशोक (आँखें बंद करते हुए, आखिरी साँस – बहुत धीरे से, बस फुसफुसाकर): "बस... कोई युद्ध न हो फिर कभी। कभी नहीं।"

तथ्य: अशोक के धम्म का प्रचार श्रीलंका, सीरिया, मिस्र, यूनान तक हुआ। वह विश्व इतिहास का पहला सम्राट था जिसने युद्ध जीतकर उसे छोड़ा और अहिंसा को राज्य का आधार बनाया।

🔄 तुलना – भारत और विश्व

समय (लगभग) भारत में और विश्व में
273-232 ई.पू.
▪अशोक का शासन –
कलिंग युद्ध (261), धम्म, शिलालेख, बौद्ध धर्म का प्रचार।
▪ रोम गणराज्य – प्यूनिक युद्ध (कार्थेज से)।
▪चीन – चिन वंश (महान दीवार का निर्माण)।
▪यूनान – हेलेनिस्टिक काल।

इस अंक के प्रश्न-उत्तर

▪अशोक ने कलिंग पर आक्रमण कब किया?
261 ई.पू. (अपने राज्याभिषेक के 8वें वर्ष)।
▪कलिंग युद्ध का विवरण किस शिलालेख में है?
तेरहवें शिलालेख में।
▪कलिंग युद्ध में कितने लोग मारे गए और कितने बंदी बनाए गए?
1 लाख मारे गए, 1.5 लाख बंदी बनाए गए।
▪अशोक के धम्म की परिभाषा किस ग्रंथ से ली गई है?
'राहुलोवादसुत' (बुद्ध के अपने पुत्र राहुल को दिए गए उपदेशों का संग्रह)।
▪अशोक के शिलालेखों को पढ़ने वाला पहला यूरोपीय कौन था?
जेम्स प्रिंसेप (ब्रिटिश) – 1837 ई.।
▪शिलालेखों का पता लगाने वाला पहला व्यक्ति कौन था?
टी. फैन्थेलर।
▪अशोक के शिलालेख किन-किन लिपियों में हैं?
ब्राह्मी, खरोष्ठी, अरामाईक, ग्रीक।

▪साँची के स्तूप का निर्माण किसने करवाया?
अशोक ने ।
▪अशोक ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए किस-किस को श्रीलंका भेजा?
महेंद्र (पुत्र) और संघमित्रा (पुत्री) ।
▪अशोक ने किससे प्रभावित होकर बौद्ध धर्म अपनाया?
निग्रोध (अपने बड़े भाई सुमन के पुत्र) से ।
▪अशोक का दूसरा नाम क्या है?
देवानां प्रिय (देवताओं का प्रिय), प्रियदर्शी ।
अशोक को दीक्षा किसने दी?
उपगुप्त ने ।
'सत्यमेव जयते' कहाँ लिखा गया है?
सारनाथ के स्तंभ पर – जिसे राष्ट्रीय चिह्न बनाया गया है। यह मुण्डकोपनिषद् से लिया गया है ।

महत्वपूर्ण याद रखने योग्य बिंदु

1. अशोक (273-232 ई.पू.) – मौर्य वंश का तीसरा सम्राट, सबसे महान। पहले 'चंडाशोक' (क्रूर अशोक), बाद में 'धम्माशोक' (धार्मिक अशोक)।
2. कलिंग युद्ध (261 ई.पू.) – 1 लाख मरे, 1.5 लाख बंदी। इसी युद्ध ने अशोक को बदल दिया। (वर्णन: तेरहवाँ शिलालेख)
3. बौद्ध धर्म अपनाना: निग्रोध (भतीजा) से प्रभावित हुआ, बाद में उपगुप्त ने दीक्षा दी। अशोक ने संन्यास नहीं लिया – राजा बना रहा, पर अहिंसक राजा बन गया।
4. धम्म: अहिंसा, सत्य, करुणा, सभी धर्मों का सम्मान, प्रजा कल्याण। 'धम्म' की परिभाषा 'राहुलोवादसुत' से ली गई है।
5. शिलालेख (33): पूरे साम्राज्य में पत्थर के खंभों और चट्टानों पर उकेरे गए। 13वाँ शिलालेख सबसे लंबा और सबसे महत्वपूर्ण –

इसमें कलिंग युद्ध का वर्णन और पश्चाताप है। ब्राह्मी, खरोष्ठी, अरामाईक, ग्रीक – चार लिपियाँ।
6. सारनाथ का स्तंभ – जिसे राष्ट्रीय चिह्न बनाया गया है। नीचे लिखा है – 'सत्यमेव जयते' (मुण्डकोपनिषद् से)।
7. साँची का स्तूप – अशोक ने बनवाया था – बुद्ध के अवशेषों पर।
8. बौद्ध धर्म का प्रचार: श्रीलंका (महेंद्र और संघमित्रा), सीरिया, मिस्र, यूनान तक राजदूत भेजे। बोधि वृक्ष की एक शाखा श्रीलंका ले जाई गई – जो आज भी अनुराधापुरा में जीवित है।
9. शिलालेखों को पढ़ना: जेम्स प्रिंसेप (ब्रिटिश) ने 1837 ई. में ब्राह्मी लिपि को पढ़ा। टी. फैन्थेलर ने पता लगाया था।
10. अशोक का विरोधाभास: एक नरसंहारक से एक संत बनने की कोशिश। वह सफल नहीं हुआ, पर कोशिश तो की। और उसी कोशिश ने उसे इतिहास का पहला अहिंसक सम्राट बना दिया।

अंक समाप्त

अगले अंक 6) : मौर्योत्तर काल और कुषाण – अशोक के बाद मौर्य साम्राज्य टुकड़ों में बिखर गया। उत्तर-पश्चिम से यवन (यूनानी) , शक, पहलव, कुषाण आए – और भारत में अपने सिक्के चलाए। सबसे शक्तिशाली थे कुषाण – जिन्होंने शक संवत (78 ई.) चलाया, चौथी बौद्ध संगीति करवाई, और गांधार कला को जन्म दिया।

तो चलिए, अब हम इस महानाटक के छठे अंक में प्रवेश करते हैं।

यह वह अंक है जहाँ अशोक का विशाल साम्राज्य टुकड़ों में बिखर जाता है। मौर्य वंश के अंतिम राजा को उसके सेनापति मार डालता है – और उत्तर-पश्चिम से नए मेहमान आते हैं: यवन (यूनानी) , शक, पहलव, और सबसे शक्तिशाली – कुषाण। वे भारत में अपने

सिक्के चलाते हैं, अपने देवता पूजते हैं, और एक नई कला – गांधार कला – को जन्म देते हैं।

यह कहानी है मौर्योत्तर काल की – जब भारत बिखरा, पर और चमका।

अंक 6: मौर्योत्तर काल – "जब भारत में यूनानी, शक, और कुषाण राजा बने"

(लगभग 200 ई.पू. से 300 ई. तक – 500 साल का वह दौर जब भारत बिखरा, पर और चमका)

प्रस्तावना: मौर्य साम्राज्य का पतन – "जब शेर के बच्चे चूहे बन गए"

एक दिन, दादा और पोता बैठे हैं। दादा एक पुराने सिक्के को देख रहे हैं।

पोता: “दादा, अशोक के बाद क्या हुआ?”

दादा: “बेटा, अशोक के बाद मौर्य राजा कमज़ोर थे – एक-एक करके गद्दी पर बैठे, पर कोई ताकतवर नहीं था। अंतिम मौर्य राजा बृहद्रथ को उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने सेना के सामने ही मार डाला। शुंग वंश आया – पर वे भी अशोक जैसे नहीं थे। और जब वे कमज़ोर पड़े, तो उत्तर-पश्चिम से… तीन नए मेहमान आए – यवन (यूनानी) , शक, और पहलव। और फिर सबसे ताकतवर – कुषाण।”

पोता: “ये सब कौन थे?”

दादा: “चलो, एक-एक करके समझते हैं।”

दृश्य 1: यवन (इंडो-ग्रीक) – "जब सिकंदर के पर-पोते ने बुद्ध को अपना लिया"

टाइम: 200 ई.पू. – 100 ई.पू.
जगह: गांधार (पेशावर), तक्षशिला, पंजाब

मुख्य पात्र: मिनांडर (मिलिंद) – यूनानी राजा, सिकंदर के सेनापति का वंशज। तेज दिमाग, पर अहंकारी।

कहानी:



दादा: “बेटा, सिकंदर को भारत छोड़कर जाना पड़ा था। पर उसके सेनापति सेल्युकस के वंशज बैक्ट्रिया (अफगानिस्तान) में बसे रहे। सदियों बाद, उनके वंशजों ने फिर से भारत की ओर रुख किया। अब वे ‘हिन्द-यवन’ कहलाए।”

मिलिंद नाम का एक राजा था। वह साकल (सियालकोट) में रहता था। उसने सुना – एक बौद्ध भिक्षु है नागसेन, जो बुद्ध के उपदेशों पर बहस कर सकता है। मिलिंद ने उसे बुलाया।

(मिलिंद का दरबार। मिलिंद सिंहासन पर बैठा है। उसके आग-जैसे बाल हैं, नीली आँखें हैं, पर उसने भारतीय पगड़ी बाँध रखी है।)

मिलिंद (तेज आवाज़ में): “नागसेन, मैंने सुना है – तुम बुद्ध के सबसे बड़े तर्कशास्त्री हो। मैं तुमसे बहस करूंगा। एक शर्त है – अगर मैं हारा, तो मैं तुम्हारा शिष्य बनूंगा। अगर तुम हारे…” (वह रुकता है, अपनी तलवार की ओर इशारा करता है) “तुम्हारा सिर कट जाएगा।”

नागसेन (शांत, बिना डरे): “महाराज, मैं आपसे एक शर्त रखूंगा – बहस तर्क से होगी, तलवार से नहीं। अगर आप गुस्सा आएँ, तो बहस खत्म।”

मिलिंद (हँसते हुए): “चलो, मान लिया।”

तीन दिन की बहस हुई। अंत में मिलिंद हार गया।

मिलिंद: “नागसेन, तुमने मुझे हरा दिया। अब मैं तुम्हारा शिष्य हूँ।”

तथ्य: मिनांडर और नागसेन के बीच हुए वाद-विवाद का विवरण ‘मिलिंद पन्हो’ (मिलिंद के प्रश्न) नामक पुस्तक में है – यह पाली भाषा में रचित है।

💚 मिनांडर (मिलिंद) की अच्छाई:
जिज्ञासु, बुद्धि का भूखा, हारने के बाद शिष्य बनने का साहस रखता है।
🖤 मिनांडर (मिलिंद) की बुराई:
पहले अहंकारी था, पर बहस के बाद बदल गया।

यवनों की देन:

· सिक्कों पर लेख लिखना – सबसे पहले यवनों ने यह शुरू किया।
· सप्ताह के सात दिन (रविवार, सोमवार…)
· राशियाँ (मेष, वृषभ, मिथुन…)

दृश्य **2:** शक **(**सीथियन**)** **– "**जब एक विदेशी राजा ने संस्कृत में अभिलेख लिखवाया**"**

टाइम: 100 ई.पू. – 50 ई.
जगह: पश्चिमी भारत – गुजरात, सौराष्ट्र, मालवा, उज्जैन (राजधानी)

मुख्य पात्र: रुद्रदामन प्रथम (130-150 ई.) – शक राजा, विदेशी पर भारतीय बनने को बेताब।

कहानी:

दादा: “शक मध्य एशिया के खानाबदोश (एक जगह न रहने वाले, लगातार घूमते रहने वाले लोग) थे। उन्हें यवनों ने खदेड़ दिया, और वे भारत आ गए।”

शकों में सबसे प्रसिद्ध राजा रुद्रदामन था।

(गुजरात, गिरनार पहाड़ी के पास। एक सूखी झील के किनारे रुद्रदामन खड़ा है।)



रुद्रदामन (अपने सेनापति से): “यह झील चंद्रगुप्त मौर्य ने बनवाई थी – बहुत पुरानी। अब इसमें गाद भर गई है। पानी नहीं है। खेत सूख रहे हैं। मरम्मत करो।”

सेनापति: “महाराज, यह झील तो आपके दुश्मनों ने बनवाई थी। आप इसकी मरम्मत क्यों कर रहे हैं?”

रुद्रदामन (मुस्कुराते हुए): “दुश्मन के काम को अच्छा कहने में कोई बुराई नहीं। यह झील प्रजा के काम आती है। मरम्मत करो। और… इस अभिलेख को संस्कृत में लिखवाओ।”

सेनापति: “संस्कृत में? हम तो प्राकृत लिखते हैं।”

रुद्रदामन: “अब से संस्कृत में लिखेंगे। हम यहीं के हैं। संस्कृत हमारी भाषा है।” (वह चुप होता है, फिर कहता है) “हमारे पूर्वज विदेश से आए थे, पर हम अब भारतीय हैं।”

तथ्य: रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख (गुजरात में) संस्कृत का सबसे पुराना लिखित अभिलेख माना जाता है। इसमें उसने सुदर्शन झील की मरम्मत का वर्णन किया है।

💚 रुद्रदामन की अच्छाई:
उसने प्रजा के लिए झील की मरम्मत करवाई। संस्कृत को बढ़ावा दिया।
🖤 रुद्रदामन की बुराई:
विदेशी राजा था – उसने अपने सिक्कों पर यूनानी और भारतीय दोनों भाषाओं में लेख लिखवाए – शायद वह खुद को भारतीय साबित करना चाहता था।

दृश्य 3: पहलव (पार्थियन) – "जब सेंट थॉमस भारत आया"

टाइम: 50 ई.पू. – 50 ई.
जगह: तक्षशिला, सिंध

मुख्य पात्र:

· गोन्दोफर्निस – पहलव राजा, शक्तिशाली पर अनिश्चित
· सेंट थॉमस – ईसा मसीह का शिष्य

कहानी:

दादा: “पहलव ईरान (पार्थिया) से आए थे। उनके राजा गोन्दोफर्निस का नाम इतिहास में इसलिए अमर है – क्योंकि उसी के शासनकाल में सेंट थॉमस भारत आया था।”

(तक्षशिला, गोन्दोफर्निस का दरबार। राजा अपने सिंहासन पर बैठा है। सेंट थॉमस प्रवेश करता है – लंबा, पतला, हाथ में क्रॉस।)



गोन्दोफर्निस (गर्व से): “तुम कौन हो?”

थॉमस: “मैं ईसा मसीह का शिष्य हूँ। मैं तुम्हारे लिए ईश्वर का संदेश लाया हूँ।”

गोन्दोफर्निस: “तो चलो, मेरे लिए एक महल बनाओ। सबसे सुंदर, सबसे बड़ा। मैं तुम्हें पैसे दूंगा।”

थॉमस (मुस्कुराते हुए): “महाराज, मैं महल बनाऊंगा – पर वह इस दुनिया में नहीं, स्वर्ग में बनेगा।”

गोन्दोफर्निस (गुस्से में): “मैंने तुम्हें पैसे दिए – महल कहाँ है?”

थॉमस: “मैंने वे पैसे गरीबों में बाँट दिए। तुम्हारा महल स्वर्ग में बन रहा है।”

गोन्दोफर्निस पहले गुस्सा हुआ, फिर सोचा – फिर थॉमस की बात मान ली। कहते हैं, वह ईसाई बन गया।

तथ्य: गोन्दोफर्निस के शासनकाल में ही सेंट थॉमस भारत आया था – यह भारत में ईसाई धर्म के आगमन का सबसे पुराना प्रमाण है।

दृश्य 4: कुषाण – "जब एक विदेशी राजा ने शक संवत चलाया"

टाइम: 30 ई. – 250 ई.
जगह: पेशावर (राजधानी), मथुरा (दूसरी राजधानी), पूरा उत्तर भारत

मुख्य पात्र:

· कनिष्क – कुषाण वंश का सबसे महान शासक
· वसुमित्र – बौद्ध भिक्षु, चौथी बौद्ध संगीति के अध्यक्ष
· नागार्जुन, चरक, अश्वघोष – उसके दरबार के विद्वान

कहानी:

दादा: “कुषाण मध्य एशिया (यू-ची जनजाति) से आए थे। कनिष्क उनका सबसे बड़ा राजा था। उसने पूरे उत्तर भारत पर कब्जा किया – पटना से पेशावर तक।”

(कनिष्क का दरबार, पेशावर। वह सिंहासन पर बैठा है, पर उसके चारों तरफ बौद्ध भिक्षु बैठे हैं।)

कनिष्क (अपने मंत्री से): “हमने शकों को हराया, पहलवों को हराया, यवनों को भगाया। अब सब मेरे हैं। पर एक काम रह गया है।”

मंत्री: “क्या, महाराज?”

कनिष्क: “एक नया संवत चलाऊँगा। 78 ई. से शक संवत शुरू। यही हमारी पहचान होगी।”

वसुमित्र (बौद्ध भिक्षु): “महाराज, संवत तो ठीक है, पर बुद्ध के उपदेश बिखर गए हैं। कुछ भिक्षु कहते हैं – बुद्ध केवल शिक्षक थे। कुछ कहते हैं – वे भगवान थे। यह विभाजन बढ़ रहा है।”

कनिष्क (गंभीरता से): “तो एक बौद्ध संगीति बुलाओ। सब भिक्षु आएँ। जो सही है, उसे मान्यता दो।”



(कश्मीर, कुण्डल वन में। सैकड़ों भिक्षु इकट्ठा हैं। वसुमित्र अध्यक्षता कर रहे हैं।)

वसुमित्र: “हम सब मिलकर बुद्ध के उपदेशों का संकलन करेंगे। और जो नहीं मानेंगे – वे हीनयान होंगे, जो मानेंगे – वे महायान होंगे। दोनों चलेंगे, पर अलग-अलग।”

तथ्य: चतुर्थ बौद्ध संगीति कनिष्क के शासन में कुण्डलवन (कश्मीर) में आयोजित हुई। इसकी अध्यक्षता वसुमित्र ने की। इसी संगीति के बाद हीनयान और महायान का विभाजन स्पष्ट हुआ।

कनिष्क के दरबार के विद्वान:

· नागार्जुन – बौद्ध दार्शनिक, शून्यवाद के प्रवर्तक
· चरक – प्रसिद्ध चिकित्सक, ‘चरक संहिता’ के लेखक
· अश्वघोष – महाकवि, ‘बुद्धचरित’ के रचयिता

💚 कनिष्क की अच्छाई:

बौद्ध धर्म और कला का महान संरक्षक। विद्वानों को आश्रय दिया। शक संवत चलाकर उसने समय गणना में स्थिरता लाई।
🖤 कनिष्क की बुराई:
क्रूर विजेता था। शक संवत बलपूर्वक थोपा – लोगों को नया कैलेंडर मानना पड़ा।

गांधार कला: कनिष्क के समय में यूनानी और भारतीय कला का मिलन हुआ। बुद्ध की मूर्तियाँ यूनानी चोगे में, यूनानी बालों में बनने लगीं। यह यथार्थवादी (realistic) शैली थी – जैसे बुद्ध जीवित हों।

अंतिम दृश्य – कनिष्क के बाद का पतन

दादा: “बेटा, कनिष्क के बाद कुषाण साम्राज्य टुकड़ों में बिखर गया। पश्चिम से सस्सानियों (पारसी) ने हमला किया, पूर्व में गुप्तों ने ताकत बटोरी। 250 ई. के बाद कुषाणों का अंत हो गया।”

पोता: “लेकिन उनकी देन क्या रही?”



दादा: "शक संवत, गांधार कला, महायान बौद्ध धर्म – यह सब उनकी देन है। और यह सब हमेशा के लिए रहा।"

🔄 तुलना – भारत और विश्व

समय (लगभग) भारत में और विश्व में
200-100 ई.पू.
▪यवन (इंडो-ग्रीक) –
मिनांडर, 'मिलिंद पन्हो', सिक्कों पर लेख ।
▪ रोम गणराज्य का उत्कर्ष ।
▪चीन में हान वंश ।
100-50 ई.पू.
▪शक – रुद्रदामन, जूनागढ़ अभिलेख (संस्कृत) ।
▪रोम में - जूलियस सीजर का शासन ।
50 ई.पू.-50 ई.
▪पहलव – गोन्दोफर्निस ।
▪सेंट थॉमस का आगमन (52 ई.) ।

▪ईसा मसीह का जन्म (4 ई.पू. – 29 ई.) ।
▪रोम साम्राज्य का आरंभ ।
78-150 ई.
▪कुषाण – कनिष्क (शक संवत, चतुर्थ बौद्ध संगीति, गांधार कला) ।
▪रोम में - ट्रोजन और हैड्रियन का शासन ।
▪चीन में - हान वंश का पतन ।

इस अंक के प्रश्न-उत्तर

▪'मिलिंद पन्हो' किस रचना है?
मिनांडर (मिलिंद) और नागसेन के बीच बौद्ध दार्शनिक संवाद ।
▪सिक्कों पर पहली बार लेख किसने लिखवाया?
यवन (इंडो-ग्रीक) शासकों ने ।
▪'शक संवत' किसने चलाया और कब?
कनिष्क – 78 ई. में ।
▪चतुर्थ बौद्ध संगीति कहाँ और किसके शासनकाल में हुई?
कुण्डलवन (कश्मीर) – कनिष्क के शासन में ।
▪सेंट थॉमस किस शासक के समय भारत आया? गोन्दोफर्निस (पहलव शासक) ।
▪कुषाण वंश का संस्थापक कौन था?
कुजुल कडफिस्से (15 ई.) ।
▪भारत में सबसे पहले सोने के सिक्के किसने चलाए? विम कडफिस्से (कुषाण) – बड़े पैमाने पर ।
▪कनिष्क की दूसरी राजधानी कौन-सी थी?
मथुरा ।
▪'चरक संहिता' किसकी रचना है?
चरक – आयुर्वेद का प्रसिद्ध ग्रंथ ।
▪गांधार कला किन दो शैलियों का मिलन है?

यूनानी और भारतीय ।

महत्वपूर्ण याद रखने योग्य बिंदु

1. यवन (इंडो-ग्रीक, 200-100 ई.पू.) –
पहला विदेशी आक्रमण। मिनांडर (मिलिंद) सबसे प्रसिद्ध। 'मिलिंद पन्हो' की रचना।
देन: सिक्कों पर लेख, सप्ताह के सात दिन, राशियाँ।
2. शक (100-50 ई.पू.) –
रुद्रदामन प्रसिद्ध। जूनागढ़ अभिलेख – संस्कृत में पहला अभिलेख।
3. पहलव (50 ई.पू.-50 ई.) –
गोन्दोफर्निस के राज्य में सेंट थॉमस (52 ई.) भारत आया।
4. कुषाण (30-250 ई.) –
कनिष्क (78 ई.) सबसे महान।
· शक संवत चलाया।
· चतुर्थ बौद्ध संगीति (कुण्डलवन, कश्मीर) – अध्यक्ष वसुमित्र।
· गांधार कला (यूनानी+भारतीय) –
बुद्ध की यथार्थवादी मूर्तियाँ।
· दरबारी विद्वान: नागार्जुन, चरक, अश्वघोष।

अंक समाप्त

अगले अंक 7 में: गुप्त काल – भारत का स्वर्ण युग। समुद्रगुप्त (भारत का नेपोलियन), चन्द्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) के नवरत्न, कालिदास, फाह्यान, और नालंदा विश्वविद्यालय।

तो चलिए, अब हम इस महानाटक के सातवें अंक में प्रवेश करते हैं।

यह वह अंक है जहाँ मौर्योत्तर काल के बिखराव के बाद, मगध (बिहार) से एक नए वंश ने जन्म लिया – गुप्त वंश। उन्होंने धीरे-धीरे पूरे उत्तर भारत पर कब्जा कर लिया, और फिर दक्षिण में भी धावा बोला। यह वह दौर था जब भारत को दुनिया 'सोने की चिड़िया' (Golden Bird) कहने लगी – क्योंकि यहाँ सोने के सिक्के बरस रहे थे, कालिदास जैसे कवि थे, वराहमिहिर जैसे खगोलशास्त्री थे, और अजंता-एलोरा की कला फल-फूल रही थी।

पर इस स्वर्ण पर एक कलंक भी था – जाति-व्यवस्था और शूद्रों पर अत्याचार गुप्त काल में ही चरम पर पहुँचे। यही इस अंक की विडंबना है।

अंक **7:** गुप्त काल **– "**जब भारत **'**सोने की चिड़िया**'** कहलाया**"**

(लगभग 240 ई. से 550 ई. तक – 300 साल का वह दौर जब विद्या, कला और धन का सूरज चमका)

प्रस्तावना**:** गुप्त वंश की जड़ें **– "**श्रीगुप्त से चन्द्रगुप्त प्रथम तक**"**

एक दिन, दादा और पोता बैठे हैं। दादा एक पुराने सोने के सिक्के को देख रहे हैं।

पोता: “दादा, यह सिक्का कितना पुराना है?”

दादा: “बेटा, यह गुप्त काल का सिक्का है – जब भारत को ‘सोने की चिड़िया’ कहा जाता था। पर इस वंश की शुरुआत बहुत छोटी थी।”

पोता: “कैसे?”

दादा: “गुप्त वंश की नींव रखी श्रीगुप्त (240-285 ई.) ने। फिर घटोत्कच (280-320 ई.) आया। पर ये छोटे राजा थे – इन्होंने कोई साम्राज्य नहीं बनाया। असली शुरुआत हुई चन्द्रगुप्त प्रथम (319-350 ई.) से।”

दृश्य 1: चन्द्रगुप्त प्रथम **– "**वो शादी जिसने एक साम्राज्य बना दिया**"**

टाइम: 320 ई.
जगह: पाटलिपुत्र, गुप्त दरबार
पात्र:

· चन्द्रगुप्त प्रथम – एक नवोदित राजा, अभी पूरे मगध पर भी अधिकार नहीं, पर सपने बहुत बड़े
· कुमारदेवी – लिच्छवी राजकुमारी, साहसी, बुद्धिमान
· लिच्छवी राजा – कुमारदेवी के पिता

कहानी:



दादा: “बेटा, चन्द्रगुप्त प्रथम के पास न सेना थी, न सोना। पर वह चतुर था। उसने सोचा – अगर मैं लिच्छवी राजकुमारी से शादी कर लूँ, तो उनकी सेना और खजाना दोनों मेरे हो जाएँगे।”

(चन्द्रगुप्त लिच्छवी दरबार में गया। वहाँ बूढ़े राजा ने उसका स्वागत किया।)

लिच्छवी राजा: “चन्द्रगुप्त, तुम छोटे राजा हो, पर तुम्हारी आँखों में बड़ी बात है। मेरी बेटी कुमारदेवी तुमसे शादी करेगी। पर एक शर्त है – उसका सम्मान करना।”

कुमारदेवी (पिता से): “पिता, मैंने उसे देखा है। वह नहीं घुटने टेके। वह सीधा खड़ा था। मैं उससे शादी करूंगी।”

विवाह हुआ। चन्द्रगुप्त प्रथम ने लिच्छवी सेना – और लिच्छवी सिंहासन – दोनों हासिल कर लिए।

तथ्य: चन्द्रगुप्त प्रथम ने लिच्छवी राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया था – यह उस समय की महत्त्वपूर्ण घटना थी।

उसके बाद, चन्द्रगुप्त प्रथम ने 320 ई. में गुप्त संवत चलाया। और खुद को 'महाराजाधिराज' (राजाओं का सबसे बड़ा राजा) घोषित किया।

💚 चन्द्रगुप्त प्रथम की अच्छाई:
दूरदर्शी राजनीतिज्ञ। उसने जाति या क्षेत्र नहीं देखा – सिर्फ ताकत देखी। सिक्कों पर अपनी पत्नी के साथ खड़ा होना – उस समय के लिए बहुत बड़ी बात थी।
🖤 चन्द्रगुप्त प्रथम की बुराई:
उसके बारे में बहुत कुछ नहीं पता – शायद किसी को मार-काट कर गद्दी मिली हो।

दृश्य 2: समुद्रगुप्त – "जो युद्ध में नेपोलियन था, पर युद्ध के बाद वीणा बजाता था"

टाइम: 350 ई.
जगह: पाटलिपुत्र, समुद्रगुप्त का दरबार
पात्र:

· समुद्रगुप्त – चन्द्रगुप्त प्रथम का बेटा, मध्यम कद, पर आँखों में आग
· हरिषेण – दरबारी कवि, चापलूस तो था, पर सच भी लिखता था
· दक्षिण के राजाओं का एक दूत – हार मानने आया था

कहानी:



दादा: “बेटा, समुद्रगुप्त को युद्ध से प्यार था। उसने पूरे उत्तर भारत पर कब्जा किया – गंगा के मैदान से लेकर हिमालय तक। फिर दक्षिण की तरफ बढ़ा।”

(एक दृश्य: समुद्रगुप्त के तम्बू में। उसके सामने दक्षिण के एक राजा का दूत घुटनों पर है।)

दूत: “महाराज, मेरे स्वामी ने हार मान ली है। वह आपको कर देगा, सेना देगा, बस उसका राज्य बचा लीजिए।”

समुद्रगुप्त (ठंडे स्वर में, पर मुस्कान के साथ): “तुम्हारे स्वामी ने समय पर समझदारी दिखाई। मैं उनका राज्य लौटाता हूँ। उनसे कहो – अगली बार जब मैं बुलाऊँ, बिना युद्ध के आ जाएँ।”

(दूत चला गया। समुद्रगुप्त ने अपने सेनापति से कहा):

समुद्रगुप्त: “यह युद्ध समाप्त हुआ। अब संगीत लाओ। मेरी वीणा लाओ।”

वह वीणा बजाने लगा। उसके सिक्कों पर वह वीणा बजाते दिखता है – एक राजा जो युद्ध के बाद हथियार नहीं, संगीत उठाता है।

हरिषेण (उसकी प्रशंसा में गाता है): "जिसके आगे देवता भी झुकते हैं, उस समुद्रगुप्त की जय हो।"

तथ्य: इतिहासकार वी. ए. स्मिथ ने समुद्रगुप्त को 'भारत का नेपोलियन' कहा है। समुद्रगुप्त की विजयों का स्रोत उसके दरबारी कवि हरिषेण द्वारा रचित 'प्रयाग प्रशस्ति' (इलाहाबाद स्तंभ अभिलेख) है।

💚 समुद्रगुप्त की अच्छाई:
महान योद्धा, कला-प्रेमी, उदार विजेता – दक्षिण के राजाओं को हराने के बाद उनका राज्य वापस कर दिया।
🖤 समुद्रगुप्त की बुराई:
बहुत युद्ध लड़े – खून बहा होगा। उसके बेटों को युद्ध की कला नहीं सिखा पाया – वे कवि बन गए, योद्धा नहीं।

दृश्य 3: चन्द्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) – "जब नवरत्न जड़े गए और फाह्यान ने भारत देखा"

टाइम: 400 ई.
जगह: उज्जैन – विक्रमादित्य की दूसरी राजधानी
पात्र:

· चन्द्रगुप्त द्वितीय – उसने शकों को पूरी तरह हराया – जो पश्चिमी भारत (गुजरात, मालवा) में बैठे थे
· कालिदास – महाकवि, साधारण दिखने वाला, पर जिसकी कविता से रानियाँ भी मोहित हो जाती थीं

· फाह्यान – चीनी भिक्षु, लंबी यात्रा करके आया था

कहानी:

दादा: “चन्द्रगुप्त द्वितीय ने शकों को हराकर 'विक्रमादित्य' की उपाधि ली। उसके दरबार में नवरत्न (9 विद्वान) थे।”

नवरत्नों की सूची:



1. कालिदास (महाकवि) –
 ‘अभिज्ञान शाकुन्तलम’, ‘मेघदूत’, ‘रघुवंश’ के रचयिता ।
2. अमर सिंह (कोशकार) – ‘अमरकोश’ के रचयिता ।
3. धन्वंतरि (आयुर्वेद के ज्ञाता) ।
4. क्षपणक (व्याकरण के विद्वान) ।
5. शंकु (वास्तुकला के विशेषज्ञ) ।
6. घटकर्पर (कवि) ।
7. वररुचि (व्याकरण के विद्वान) ।

8. वेताल भट्ट (कवि) ।
9. वराहमिहिर (ज्योतिषी और खगोलशास्त्री) ।

(एक दृश्य: विक्रमादित्य का दरबार। कालिदास अपनी कविता सुना रहे हैं।)

कालिदास: “महाराज, आपने मुझे सबसे बड़ा सम्मान दिया – मुझे 'नवरत्न' में रखा। पर मैं सिर्फ एक कवि हूँ – मैं बादशाहों का नाम याद रखता हूँ। यही मेरा काम है।”

विक्रमादित्य (मुस्कुराते हुए): “कालिदास, तुमने 'अभिज्ञान शाकुन्तलम' लिखा – इसमें राजा दुष्यन्त और शकुन्तला की प्रेम कहानी है। यह दुनिया भर में पढ़ी जाएगी। तुम मुझसे ज़्यादा अमर हो।”

उसी समय, चीनी यात्री फाह्यान (399-412 ई.) भारत आया। वह चीन से पैदल चला – रेगिस्तान, पहाड़, नदियाँ पार करके। भारत पहुँचा तो उसने देखा – यहाँ कोई चोरी नहीं, कोई झगड़ा नहीं, कर कम हैं, लोग शाकाहारी हैं।



फाह्यान ने लिखा – “भारत स्वर्ग जैसा है।”

तथ्य: चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में चीनी यात्री फाह्यान (399-412 ई.) भारत आया था।

💚 चन्द्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) की अच्छाई:
कला, साहित्य, विज्ञान का संरक्षक। शकों को हराकर पश्चिमी भारत में व्यापार के रास्ते खोले।
🖤 विक्रमादित्य की बुराई:
अपने बड़े भाई रामगुप्त को हटाकर राजा बना। जरूरत पड़ने पर निर्दयी हो सकता था।

दृश्य **4:** कुमारगुप्त प्रथम – **"**जब नालंदा विश्वविद्यालय बना**"**

टाइम: 450 ई.
जगह: नालंदा (बिहार) – एक जंगल के बीच
पात्र:

· कुमारगुप्त – विक्रमादित्य का बेटा, शांत स्वभाव का, उसे युद्ध से ज्यादा पढ़ने में रुचि थी
· रानी – उसकी पत्नी, बुद्धिमान
· बुद्धघोष – बौद्ध भिक्षु, श्रीलंका से आया था

कहानी:



दादा: “कुमारगुप्त युद्ध नहीं लड़ना चाहता था। उसकी पत्नी ने एक दिन कहा – ‘महाराज, आप युद्ध नहीं लड़ते, तो फिर आप क्या छोड़ेंगे इस दुनिया के लिए?’”

कुमारगुप्त (चुप, फिर बोला): “एक विश्वविद्यालय। जहाँ दुनिया भर से विद्यार्थी आएँ, और भारत को ज्ञान के बल पर याद रखा जाए।”

उसने नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना की। यहाँ 10,000 छात्र, 2,000 शिक्षक रहते थे। चीन, कोरिया, जापान, तिब्बत, श्रीलंका से विद्यार्थी आते थे। यह उस समय का हार्वर्ड-ऑक्सफोर्ड था।

💚 कुमारगुप्त की अच्छाई:
 उसने युद्ध नहीं लड़े, पर शांति में एक ऐसा संस्थान बनाया जिसने सदियों तक दुनिया को ज्ञान दिया।
🖤 कुमारगुप्त की बुराई:
 युद्ध की उपेक्षा की – और परिणामस्वरूप, गुप्त साम्राज्य कमजोर पड़ा।

दृश्य **5:** स्कन्दगुप्त **– "**अंतिम प्रतापी**,** हूणों का संहारक**"**

टाइम: 465 ई.
जगह: उत्तरी सीमा, हूणों के खिलाफ युद्धक्षेत्र
पात्र:

· स्कन्दगुप्त – कुमारगुप्त का पुत्र, जवान, पर आँखों में एक बूढ़े की थकान
· हूण सेनापति – जंगली, भीषण योद्धा
· बूढ़ा सैनिक – अशोक के समय से चली आ रही एक परंपरा – एक मौर्य सैनिक का वंशज था

कहानी:



दादा: “उत्तर-पश्चिम से एक नया खतरा आया – हूण। ये वही थे जिन्होंने यूरोप को तबाह कर दिया था (अट्टिला द हूण)।”

बूढ़ा सैनिक (स्कन्दगुप्त से): “महाराज, मेरे परदादा ने अशोक के साथ कलिंग में लड़ाई नहीं लड़ी – उसने विरोध किया था। पर उसका बेटा और पोता – हम सब – हर बार आए दुश्मन से लड़े। हूण… ये बहुत क्रूर हैं। पर आपने पिता को नहीं सुना, नालंदा बनाने दिया – अब सेना कमज़ोर है।”

स्कन्दगुप्त (ठंडे स्वर में): “तो क्या करें? युद्ध तो लड़ना ही होगा।”

युद्ध हुआ। स्कन्दगुप्त हूणों को हराने में सफल रहा – एक बार, दो बार, तीन बार। पर तीसरी बार उसने सोचा – “अब ये वापस नहीं आएँगे।” वह गलत था। हूणों ने फिर हमला किया, और इस बार गुप्त साम्राज्य कमज़ोर पड़ चुका था।

💚 स्कन्दगुप्त की अच्छाई:
हूणों को तीन बार हराकर भारत का नाम रोशन किया।
🖤 स्कन्दगुप्त की बुराई:
उसने अपने बेटों को युद्ध की कला नहीं सिखाई। वह एक महान योद्धा था, पर एक नाकाम पिता।

अंतिम दृश्य – गुप्त साम्राज्य का अंत

टाइम: 550 ई.
जगह: पाटलिपुत्र, एक बिखरा हुआ दरबार
पात्र:

· विष्णुगुप्त – अंतिम गुप्त राजा, कमज़ोर

· एक बौद्ध भिक्षु – नालंदा से आया था

विष्णुगुप्त (भिक्षु से): “हमारे पूर्वजों ने सोने के सिक्के चलाए, कालिदास को पाला, नालंदा बनाया। आज मेरे पास सेना भी नहीं है। हूण दरवाजे पर हैं। क्या बचेगा?”

भिक्षु: “महाराज, नालंदा बचेगा। अजंता की गुफाएँ बचेंगी। कालिदास के नाटक बचेंगे। आप विद्या से अमर हो गए – सिक्कों से नहीं।”

तथ्य: गुप्त काल के बाद उत्तर भारत फिर से छोटे-छोटे राज्यों में बँट गया। नालंदा और अजंता उस विरासत के प्रतीक बने रहे।

गुप्त शासन और जीवन – "ग्राम से पेठ तक, भाग और भोग"

प्रशासन की सबसे छोटी इकाई – ग्राम (गाँव) – इसका मुखिया ग्रामिक। कई गाँव मिलकर पेठ बनाते थे। ऊपर विषय और फिर भुक्ति।

तथ्य: गुप्तकालीन प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ‘ग्राम’ थी, जिसका प्रशासन ग्रामिक के हाथ में होता था।

कर व्यवस्था:

· भाग – फसल का हिस्सा (आमतौर पर 1/6 भाग)।
· भोग – सब्जी, फल, फूल – कर के रूप में।

भाषा: संस्कृत गुप्तों की राजकीय भाषा बनी। पाली (बौद्धों की भाषा) पीछे रह गई।

मंदिर निर्माण शुरू: गुप्त काल से पहले भारत में पत्थर के बड़े मंदिर नहीं थे। गुप्तों ने शुरू किए।

तथ्य: भारत में मन्दिरों का निर्माण गुप्तकाल से शुरू हुआ। देवगढ़ का दशावतार मन्दिर प्रसिद्ध है।

गुप्तकालीन बौद्ध गुफा चित्रकारी: अजंता और बाघ की गुफाओं के चित्र गुप्तकाल में बने.

🔄 तुलना – भारत और विश्व

समय (लगभग) भारत में विश्व में
320-550 ई.
▪ गुप्त काल – 'स्वर्ण युग', नवरत्न, नालंदा, अजंता ।
▪रोम साम्राज्य का पतन (476 ई.) ।
▪ बीजान्टिन साम्राज्य का उदय ।
▪ इस्लाम का जन्म (7वीं सदी में) ।

इस अंक के प्रश्न-उत्तर

▪गुप्त वंश का प्रथम महत्त्वपूर्ण शासक कौन था? चन्द्रगुप्त प्रथम (319-350 ई.) ।
▪गुप्त संवत कब शुरू हुआ?
320 ई. – चन्द्रगुप्त प्रथम ने ।

▪'भारत का नेपोलियन' किसे कहा जाता है?
समुद्रगुप्त ।
▪'प्रयाग प्रशस्ति' किसने लिखी?
हरिषेण (समुद्रगुप्त का दरबारी कवि) ।
▪'नवरत्न' किसके दरबार में थे?
चन्द्रगुप्त द्वितीय (विक्रमादित्य) के ।
▪चीनी यात्री फाह्यान किसके शासनकाल में आया?
चन्द्रगुप्त द्वितीय के ।
▪नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना किसने करवाई?
कुमारगुप्त प्रथम ने ।
▪गुप्तकाल की राजकीय भाषा क्या थी?
संस्कृत ।
▪'भाग' और 'भोग' क्या थे?
भाग (फसल का हिस्सा), भोग (फल-सब्जी) – दो प्रकार के कर ।
▪सर्वाधिक सोने के सिक्के किस काल में चले?
गुप्त काल ।
▪अजंता की गुफाएँ किस काल में बनीं?
गुप्त काल ।
▪हूणों के आक्रमण को किसने विफल किया?
स्कन्दगुप्त ने ।
▪'अभिज्ञान शाकुन्तलम' किसकी रचना है?
कालिदास की ।
▪'अमरकोश' किसने लिखा?
अमर सिंह ने ।

महत्वपूर्ण याद रखने योग्य बिंदु

1. गुप्त वंश का संस्थापक: श्रीगुप्त (240-285 ई.)। प्रभावी सम्राट: चन्द्रगुप्त प्रथम (319-350 ई.) –

गुप्त संवत (320 ई.) शुरू किया, लिच्छवी राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया।

2. समुद्रगुप्त (350-375 ई.) –

'भारत का नेपोलियन'। महान योद्धा, वीणा वादक, कला-प्रेमी। 'प्रयाग प्रशस्ति' (हरिषेण द्वारा रचित) उसकी विजयों का प्रमाण।

3. चन्द्रगुप्त द्वितीय (375-415 ई.) –

विक्रमादित्य। शकों को हराया, नवरत्न (9 विद्वान) – कालिदास प्रमुख। चीनी यात्री फाहयान उसके समय आया।

4. कुमारगुप्त (415-455 ई.) –

नालंदा विश्वविद्यालय के संस्थापक।

5. स्कन्दगुप्त (455-467 ई.) –

हूणों को हराया (तीन बार)। अंतिम प्रतापी गुप्त शासक।

6. गुप्त शासन:

संस्कृत राजभाषा। भाग (फसल कर) और भोग (फल-सब्जी कर)। स्थानीय स्वशासन – ग्राम (मुखिया – ग्रामिक)।

7. गुप्तोत्तर वंश:

स्कन्दगुप्त के बाद कमजोर राजा। हूणों से हार, 550 ई. के बाद साम्राज्य बिखर गया।

8. गुप्त काल = स्वर्ण काल:

सोने के सिक्के, मंदिर निर्माण (देवगढ़), गुफा चित्रकारी (अजंता), शास्त्रीय संगीत एवं साहित्य (कालिदास), खगोलशास्त्र एवं गणित (वराहमिहिर) का उत्कर्ष।

अंक समाप्त

अगले अंक 8 में: हर्षवर्धन, त्रिपक्षीय संघर्ष, और राजपूत वंशों का उदय।

तो चलिए, अब हम इस महानाटक के आठवें अंक में प्रवेश करते हैं।

यह वह अंक है जहाँ गुप्तों का स्वर्ण युग समाप्त हो चुका है, और उत्तर भारत में कई छोटे राज्य लड़ रहे हैं। इसी अशांति के बीच हर्षवर्धन एक बार फिर पूरे उत्तर भारत को एक करने का सपना देखता है, पर नर्मदा के किनारे पुलकेशिन द्वितीय उसे रोक देता है। और फिर आता है त्रिपक्षीय संघर्ष – तीन राजवंश (प्रतिहार, पाल, राष्ट्रकूट) आपस में 200 साल तक लड़ते हैं, और इसी संघर्ष से राजपूत वंशों का उदय होता है।

यह वह अंक है जहाँ हम राजपूतों के इतिहास को विस्तार से देखेंगे – चौहान, परमार, चन्देल, सोलंकी, गहड़वाल, तोमर – उनकी वीरता, उनका गौरव, और उनकी वह कमजोरी जिसने दिल्ली का दरवाजा विदेशियों के लिए खोल दिया।

अंक **8:** गुप्तोत्तर काल **– "**हर्ष का सपना**,** राजपूतों का उदय**,** और एक शहर का संघर्ष**"**

(लगभग 550 ई. से 1192 ई. तक – 650 साल की वह गाथा जब भारत कई राजाओं में बँट गया)

प्रस्तावना**:** गुप्तों के बाद की अराजकता

एक दिन, दादा और पोता बैठे हैं। दादा एक पुराने तीर के निशान को देख रहे हैं।

पोता: “दादा, गुप्तों के बाद क्या हुआ?”

दादा: “बेटा, गुप्त साम्राज्य का अंत हो गया। 550 ई. के बाद उत्तर भारत में छोटे-छोटे राजा आपस में लड़ रहे थे। इसी अराजकता में एक राजा ने सपना देखा – पूरे उत्तर भारत को फिर से एक करने का। उसका नाम था हर्षवर्धन।”

पोता: “क्या वह सफल हुआ?”

दादा (आँखें बंद करके): “आधा। उसने उत्तर को एक किया, पर दक्षिण में पुलकेशिन द्वितीय ने उसे रोक दिया। और हर्ष के बाद फिर से अराजकता आई। तीन राजवंशों के बीच 200 साल का युद्ध हुआ – प्रतिहार, पाल, राष्ट्रकूट। इसी युद्ध से राजपूत वंशों का उदय हुआ – चौहान, परमार, चन्देल, सोलंकी, गहड़वाल… पर उनकी आपसी फूट ने दिल्ली का दरवाजा विदेशियों के लिए खोल दिया।”

दृश्य **1:** हर्षवर्धन **– "**जब एक बहन के लिए एक राजा ने इतिहास रच दिया**"**

टाइम: 606 ई.
जगह: थानेश्वर (हरियाणा), पुष्पभूति वंश की राजधानी
पात्र:

· प्रभाकरवर्धन – बूढ़ा, बीमार राजा
· राज्यवर्धन – बड़ा बेटा, योद्धा
· हर्षवर्धन – 16 साल का छोटा बेटा
· राजश्री – उनकी बहन, कन्नौज की रानी

· शशांक – गौड़ (बंगाल) का राजा, क्रूर और चालाक
· देवगुप्त – मालवा का राजा, शशांक का सहयोगी

कहानी:

दादा: “बेटा, प्रभाकरवर्धन मरने वाला था। उसने अपने बेटों से कहा कि राजश्री बंदी है – उसे बचाओ।”

(प्रभाकरवर्धन की मृत्युशैया पर। राज्यवर्धन और हर्ष उसके सिरहाने बैठे हैं।)

प्रभाकरवर्धन (बहुत कमजोर आवाज में): “बेटों… देवगुप्त और शशांक ने कन्नौज पर हमला कर दिया है… राजश्री का पति मारा गया… वह बंदी है… उसे बचाओ…”

(उसकी मृत्यु हो जाती है। राज्यवर्धन सेना लेकर निकलता है।)

राज्यवर्धन: “भाई, मैं अभी जाता हूँ। तुम थानेश्वर संभालो।”

(तीन दिन बाद। एक सैनिक खून से लथपथ आता है।)

सैनिक (रोता हुआ): “युवराज… राज्यवर्धन… शशांक ने धोखे से मार डाला…”

(हर्ष एक पल स्तब्ध हो जाता है। फिर उसकी आँखों से आँसू बहने लगते हैं। वह अपनी तलवार उठाता है।)

हर्ष: “पिता मरा, भाई मारा गया, बहन बंदी… अब मैं अकेला हूँ। पर मैं प्रतिज्ञा करता हूँ – जब तक राजश्री को नहीं बचा लेता, तब तक राजगद्दी पर नहीं बैठूंगा।”

हर्ष सेना लेकर निकलता है। वह राजश्री को एक जंगल में खोज निकालता है – वह पागलपन की कगार पर थी। हर्ष उसे गोद में उठाता है और रोता है।



तथ्य: हर्षवर्धन ने अपनी राजधानी थानेश्वर से कन्नौज स्थानान्तरित की। उसके दरबारी कवि बाणभट्ट ने 'हर्षचरित' लिखा। हर्ष ने स्वयं तीन नाटक लिखे – नागानन्द, रत्नावली, प्रियदर्शिका। (नागानन्द एक नाग की कहानी है, जो आत्मबलिदान का प्रतीक है; रत्नावली प्रेम कहानी है; प्रियदर्शिका हास्य नाटक है।)

दृश्य 2: हर्ष का दरबार **– "**कवि**,** नाटककार**,** और एक चीनी भिक्षु**"**

टाइम: 630 ई.

जगह: कन्नौज, हर्ष का दरबार
पात्र:

· हर्षवर्धन – अब 40 के पार
· बाणभट्ट – दरबारी कवि
· ह्वेनसांग – चीनी भिक्षु

कहानी:



बाणभट्ट (हाथ में 'हर्षचरित' की पांडुलिपि लिए): “महाराज, मैंने आपके जीवन पर एक काव्य लिखा है। नंदों का अंत, शशांक से युद्ध, राजश्री का बचाव – सब कुछ लिखा है।”

तभी ह्वेनसांग प्रवेश करता है – कपड़े फटे हैं, चेहरा थका है, पर आँखों में चमक है।

हर्ष: “तुम कौन हो?”

ह्वेनसांग: “महाराज, मैं चीन से आया हूँ। 14 साल नालंदा में बिताए। अब 600 से अधिक बौद्ध ग्रंथ लेकर वापस जा रहा हूँ। पर आपके दरबार को देखे बिना नहीं जा सकता था।”

हर्ष: “तुमने भारत में क्या देखा?”

ह्वेनसांग (सीधी आँखों से देखते हुए, बिना झिझक): “महाराज, फाह्यान (चीनी यात्री जो 200 साल पहले आया था) ने लिखा था – ‘भारत में कोई मांस नहीं खाता, कोई मदिरा नहीं पीता, कोई चोरी नहीं है।’ वह सब बदल गया है। अब लोग मांस खाते हैं, कर बहुत हैं, और चोरी-चकारी होती है।”

(हर्ष का चेहरा थोड़ा उतर जाता है। पर वह ह्वेनसांग को टोकता नहीं।)

ह्वेनसांग: “पर एक चीज़ नहीं बदली है – विद्या। नालंदा में 10,000 विद्यार्थी रहते हैं। यहाँ पूरे एशिया से लोग आते हैं – चीन, कोरिया, जापान, तिब्बत, श्रीलंका। आपका राज्य समृद्ध है। पर एक बात कहूँ?”

हर्ष: “कहो।”

ह्वेनसांग: “दक्षिण आपके अधीन नहीं है। और जब तक दक्षिण नहीं मिलेगा, भारत पूरी तरह सुरक्षित नहीं होगा। एकता के बिना कोई भी राज्य टिक नहीं सकता।”

(हर्ष की आँखों में एक चमक आती है – वह जानता है कि ह्वेनसांग सच कह रहा है।)

तथ्य: ह्वेनसांग (चीनी यात्री) हर्ष के शासनकाल में भारत आया। उसका यात्रा-वृतांत 'सि-यू-की' के नाम से जाना जाता है।

दृश्य 3: नर्मदा का युद्ध – "जब हर्ष को रोक दिया गया"

टाइम: 620 ई.
जगह: नर्मदा नदी के किनारे
पात्र:

· हर्षवर्धन – उत्तर का सम्राट
· पुलकेशिन द्वितीय – चालुक्य राजा

कहानी:



दादा: “हर्ष ने दक्षिण की ओर कूच किया। नर्मदा के किनारे पुलकेशिन द्वितीय अपनी सेना लेकर खड़ा था।”

हर्ष: “पुलकेशिन, मैं उत्तर का सम्राट हूँ। अब दक्षिण मेरे अधीन होगा।”

पुलकेशिन (हाथी पर बैठा, ठंडी मुस्कान के साथ): “हर्ष, तुमने उत्तर जीत लिया – मानता हूँ। पर नर्मदा के इस पार मेरा राज्य है। तुम नहीं आ सकते। मेरे राज्य में घुसने से पहले मुझे हराना होगा।”

युद्ध हुआ। हर्ष को पीछे हटना पड़ा।

तथ्य: हर्ष का चालुक्य शासक पुलकेशिन द्वितीय से नर्मदा नदी तट पर युद्ध हुआ था, जिसमें हर्ष की पराजय हुई थी।

दृश्य **4:** त्रिपक्षीय संघर्ष **– "200** साल का युद्ध**,** और एक शहर कन्नौज**"**

टाइम: 750-950 ई.
जगह: पूरा उत्तरी भारत

कहानी:



दादा: “हर्ष के बाद उत्तर भारत में तीन बड़ी शक्तियाँ उठीं ।

· प्रतिहार (पश्चिम)
· पाल (पूर्व)
· राष्ट्रकूट (दक्षिण)

ये तीनों कन्नौज पर कब्जा करना चाहते थे – क्योंकि कन्नौज उत्तरी भारत की ‘गद्दी’ थी। 200 साल तक युद्ध चला। अंत में प्रतिहारों ने कन्नौज जीता।”

तथ्य: कन्नौज के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष की शुरुआत प्रतिहार नरेश वत्सराज ने की।

दृश्य **5:** राजपूत वंशों का उदय – **"**वीरता**,** गौरव**,** और परस्पर विरोध**"**

दादा: “बेटा, इसी त्रिपक्षीय संघर्ष से राजपूत वंशों का उदय हुआ। राजपूत क्षत्रिय थे – योद्धा जाति। उनका मानना था कि युद्ध में मरना ही सबसे बड़ा सम्मान है। पर उनकी सबसे बड़ी कमजोरी आपसी फूट थी।”

प्रमुख राजपूत वंश और उनकी उपलब्धियाँ:

वंश प्रसिद्ध शासक उपलब्धि



▪प्रतिहार वंश :
मिहिर भोज त्रिपक्षीय संघर्ष में विजेता,
कन्नौज पर अधिकार, महान योद्धा, महमूद गजनवी के हमले रोक नहीं सके ।
▪ चौहान वंश :
पृथ्वीराज चौहान तराईन का प्रथम युद्ध जीता (1191 ई.) । वीर, कवि , अहंकारी, जयचन्द से दुश्मनी ।
▪चन्देल वंश :

धन्ग खजुराहो के मन्दिर बनवाए ,अद्भुत स्थापत्य, मन्दिरों पर कामुक मूर्तियाँ ।
▪परमार वंश :
भोज 'कविराज', 80 से अधिक ग्रंथों के लेखक,विद्वान राजा , उसके बाद परमार कमजोर पड़े ।
▪सोलंकी वंश :
भीम द्वितीय ने 1175 ई. में गोरी को हराया और बाद में कमजोर पड़े ।
▪गहड़वाल वंश :
जयचन्द कला-साहित्य का संरक्षक – पृथ्वीराज के साथ विश्वासघात ।
▪तोमर वंश :
अनंगपाल तोमर दिल्ली शहर बसाया दूरदर्शी बाद में चौहानों से हारे ।

तथ्य: परमार वंशी शासक भोज ने 'समरांगणसूत्रधार' (वास्तुकला), 'सरस्वतीकण्ठाभरण' (व्याकरण), 'विद्याविनोद' (नाटकशास्त्र), 'राजमार्तण्ड' (योग) जैसे ग्रंथ लिखे। उसने भोजशाला और सरस्वती मन्दिर (धार में) बनवाया।

तथ्य: अनंगपाल तोमर ने दिल्ली शहर बसाया था । 1175 ई. में भीम द्वितीय (सोलंकी/चालुक्य वंश, गुजरात) ने मुहम्मद गोरी को हराया था – यह पृथ्वीराज से 16-17 साल पहले की बात है।

दृश्य **6:** पृथ्वीराज चौहान **– "**जिसने गोरी को हराया**,** पर अपने अहंकार से हार गया**"**

टाइम: 1191-1192 ई.
जगह: तराईन का मैदान

पात्र:

· पृथ्वीराज चौहान – अजमेर और दिल्ली का राजा
· मुहम्मद गोरी – अफगानिस्तान का राजा
· जयचन्द – कन्नौज का राजा
· चन्दबरदाई – पृथ्वीराज का दरबारी कवि

कहानी:



दादा: “1191 ई. में तराईन के मैदान में पृथ्वीराज और गोरी के बीच युद्ध हुआ। पृथ्वीराज ने गोरी को बुरी तरह हराया। गोरी घायल होकर भागा।”

सैनिक: “महाराज, गोरी भाग रहा है – पीछा करें?”

पृथ्वीराज (अहंकार में): “राजपूत घायल का पीछा नहीं करते। जाने दो।”

चन्दबरदाई (दरबारी कवि): “महाराज, आपने गलती की है। गोरी भागा तो ज़रूर – पर हार नहीं मानी। वह फिर आएगा, और अगली बार वह तैयार होकर आएगा।”

(पृथ्वीराज ने उसकी बात नहीं मानी।)

दादा: “अगले साल, 1192 ई. – गोरी फिर आया। इस बार जयचन्द (कन्नौज का राजा) ने पृथ्वीराज की मदद नहीं की – बल्कि गोरी का साथ दिया। कहते हैं, जयचन्द की बेटी संयोगिता के स्वयंवर में पृथ्वीराज ने उसे उठाकर भगा लिया था – जयचन्द ने इसे अपना अपमान समझा और पृथ्वीराज से दुश्मनी मोल ले ली।”

युद्ध हुआ। पृथ्वीराज हार गया। पकड़ा गया। गोरी ने उसे मार डाला।

तथ्य: पृथ्वीराज चौहान ने तराईन के प्रथम युद्ध (1191 ई.) में मुहम्मद गोरी को पराजित किया, किन्तु तराईन के द्वितीय युद्ध (1192 ई.) में गोरी से पराजित हो गया। चन्दबरदाई ने 'पृथ्वीराज रासो' लिखा।

💚 पृथ्वीराज की अच्छाई:
 बेहद वीर, कवि – उसने 'पृथ्वीराज रासो' लिखवाया।
🖤 पृथ्वीराज की बुराई:
 अत्यधिक अहंकारी – उसने जयचन्द की बेटी से शादी न करके उसे दुश्मन बना लिया।

🖤 जयचन्द की बुराई:
 राजपूतों में फूट डालने वाला – उसने अपने व्यक्तिगत अपमान के कारण पूरे देश को दुश्मन के हाथ में दे दिया।

अंतिम दृश्य – राजपूतों का पतन

एक बूढ़ा राजपूत योद्धा अपने पोते से कह रहा है:

बूढ़ा योद्धा: “बेटा, हम राजपूत युद्ध में मरना सम्मान मानते हैं। पर हम सब एक साथ नहीं लड़े। पृथ्वीराज को गोरी ने हराया – पर जयचन्द ने उसकी मदद नहीं की, बल्कि उसके साथ दगा की। यही हमारी सबसे बड़ी कमजोरी थी – आपस में लड़ना।”

पोता: “दादा, अब क्या होगा?”

बूढ़ा (आँखें बंद करके, थकी साँस): “अब दिल्ली पर गुलाम वंश राज करेगा। फिर खिलजी, फिर तुगलक, फिर मुगल आएँगे… पर हम राजपूत कभी झुके नहीं। हमारे खून में आज़ादी है – चाहे हमारे पास राज्य न हो, पर आत्मसम्मान हमेशा रहेगा।”

🔄 तुलना – भारत और विश्व

समय (लगभग) भारत में विश्व में
▪550-647 ई.
हर्षवर्धन, ह्वेनसांग, पुलकेशिन द्वितीय इस्लाम का उदय ।
▪(570-632 ई.)
अरब साम्राज्य का विस्तार ।
▪750-950 ई.
त्रिपक्षीय संघर्ष (प्रतिहार vs पाल vs राष्ट्रकूट) अब्बासिद खिलाफत का स्वर्ण युग (बगदाद)
▪यूरोप में मध्यकाल (डार्क एज) ।

▪1000-1200 ई.
राजपूत वंशों का उदय, पृथ्वीराज चौहान (1191-92)।
▪चीन में सुंग वंश
▪यूरोप में क्रूसेड्स (धर्मयुद्ध)
▪मंगोलों का उदय (चंगेज खाँ)

इस अंक के प्रश्न-उत्तर

▪हर्षवर्धन ने राजधानी कहाँ से कहाँ स्थानान्तरित की?
थानेश्वर से कन्नौज।
▪हर्ष के दरबारी कवि कौन थे?
बाणभट्ट – 'हर्षचरित' के लेखक।
▪हर्ष ने स्वयं कौन-से तीन नाटक लिखे?
नागानन्द, रत्नावली, प्रियदर्शिका।
▪चीनी यात्री ह्वेनसांग किसके शासनकाल में आया?
हर्षवर्धन के।
▪हर्ष को किस चालुक्य राजा ने हराया?
पुलकेशिन द्वितीय – नर्मदा पर।
▪त्रिपक्षीय संघर्ष का अंत किसने किया?
प्रतिहारों ने।
▪पृथ्वीराज चौहान ने गोरी को कब हराया और कब हारे?
1191 ई. में जीता, 1192 ई. में हारे।
▪'पृथ्वीराज रासो' किसने लिखा?
चन्दबरदाई।
▪1175 ई. में मुहम्मद गोरी को किस राजपूत राजा ने हराया?
भीम द्वितीय (सोलंकी/चालुक्य वंश, गुजरात)।
▪चन्दावर के युद्ध (1194 ई.) में किस राजा को मुहम्मद गोरी ने हराया?
जयचन्द (गहड़वाल वंश, कन्नौज)।

▪अनंगपाल तोमर ने कौन-सा शहर बसाया?
दिल्ली ।

महत्वपूर्ण याद रखने योग्य बिंदु

1. हर्षवर्धन (606-647 ई.) –
अंतिम महान उत्तर भारतीय सम्राट। राजधानी कन्नौज। पुलकेशिन द्वितीय ने उसे नर्मदा पर हराया।
2. त्रिपक्षीय संघर्ष (750-950 ई.) –
प्रतिहार vs पाल vs राष्ट्रकूट। विजेता: प्रतिहार।
3. राजपूत वंश: प्रतिहार (कन्नौज), चौहान (पृथ्वीराज), चन्देल (खजुराहो), परमार (भोज), सोलंकी (गुजरात), गहड़वाल (जयचन्द), तोमर (दिल्ली)।
4. पृथ्वीराज चौहान – तराईन का प्रथम युद्ध जीता (1191 ई.), द्वितीय में हारे (1192 ई.)। जयचन्द का विश्वासघात राजपूतों की सबसे बड़ी कमजोरी थी।

अंक समाप्त

अगले अंक 9 में: दिल्ली सल्तनत – गुलाम वंश, खिलजी, तुगलक, सैय्यद, लोदी।

अंक **9:** दिल्ली सल्तनत **–** **"**पाँच वंश**, 320** साल**,** एक तख्त**"**

(1206 ई. से 1526 ई. तक – 320 साल की वह दास्तान जब दिल्ली पर तलवार का कानून चला) ।

प्रस्तावना

एक शाम। दादा और पोता बैठे हैं। पोता एक पुराने सिक्के पर अरबी अक्षर देख रहा है।

पोता: “दादा, पृथ्वीराज चौहान के बाद क्या हुआ?”

दादा (सिक्का पलटते हुए): “1192 ई. में तराईन का दूसरा युद्ध था – उस लड़ाई ने दिल्ली की गद्दी बदल दी। पृथ्वीराज हार गया। मुहम्मद गोरी वापस अफगानिस्तान चला गया – पर उसका एक गुलाम, कुतुबुद्दीन ऐबक, दिल्ली में रुक गया। 1206 ई. में गोरी मरा – और ऐबक ने खुद को ‘सुल्तान’ घोषित कर दिया। यहीं से दिल्ली सल्तनत की शुरुआत हुई। अब चुप बैठो – मैं कहानी सुनाता हूँ।”

दृश्य **1:** गुलाम वंश **(1206-1290** ई.**) – "**जब गुलाम ही बादशाह बन गये

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई.) – "लाख बख्श"



(तम्बू। ऐबक सिंहासन नहीं, साधारण चारपाई पर बैठा है। उसके सामने सोने-चाँदी के ढेर लगे हैं – हाल ही में उत्तर भारत के कई राज्यों से लूटकर लाया गया है। मंत्री हाथ जोड़े, आँखें झुकाए खड़ा है।)

मंत्री (थोड़ी झिझक के साथ): "महाराज, यह सोना-चाँदी हमारी ताकत है। सेना को तनख्वाह देनी है, नए हथियार बनवाने हैं, किले मजबूत करने हैं। और आप रोज दान में बंटवा देते हैं – खजाना खाली हो रहा है। कल जो सैनिक आए थे, उन्हें खाली हाथ लौटाना पड़ा।"

ऐबक (हाथ में सोने का एक सिक्का उठाकर, उसे देखते हुए, फिर नीचे रखकर): "यह सोना – कल कोई और लूट ले जाएगा। यह चाँदी – जंग लग जाएगी। घोड़े मर जाएँगे, तलवारें कुंद हो जाएँगी। पर 'लाख बख्श' कहलाने से जो नाम मिलता है – वह जंग नहीं लगाता, वह मरता नहीं। मुझे याद रखोगे तुम इस सोने से? नहीं। मुझे याद रखोगे इसलिए कि मैंने वह दिया जो मेरे पास था। बस इतना ही।"

(उसने उसी दिन कुतुब मीनार की नींव रखवाई – एक ऐसी मीनार जो सात सौ साल बाद भी दिल्ली के आसमान को चीर रही है।)

💚 अच्छाई:
उदार, दानी, कला-प्रेमी – उसकी उदारता की कहानियाँ दिल्ली की गलियों में गूँजती थीं।

🖤 बुराई:
राज्य अभी छोटा था – उसने सिर्फ नींव रखी, इमारत नहीं खड़ी कर पाया। 1210 ई. में चौगान (पोलो) खेलते समय घोड़े से गिरकर मर गया। एक गुलाम से बादशाह बना, पर खेल-खेल में ही सब कुछ खो दिया।

तथ्य: कुतुबुद्दीन ऐबक को 'लाख बख्श' (लाखों का दान करने वाला) कहा जाता था। उसने कुतुब मीनार की नींव रखी थी।

इल्तुतमिश (1210-1236 ई.) – "असली संस्थापक"



(दरबार। इल्तुतमिश सिंहासन पर बैठा है – लकड़ी का बना हुआ, पर मजबूत। उसके चारों तरफ तुर्क सरदार खड़े हैं – दूरी बनाकर, आँखें नीची किए। माहौल तनावपूर्ण है। दीवार पर नई तलवारें टंगी हैं।)

इल्तुतमिश (धीरे, पर हर शब्द को तौलकर): "मैंने सोचा था – गद्दी मिलते ही सब ठीक हो जाएगा। पर यहाँ तो हर रोज नई साजिश होती है। इसी कमरे में कल रात तीन सरदार मिले थे – मेरे खिलाफ। मैं जानता हूँ। इसलिए अब मैंने नियम बना दिए हैं। सुनो।

पहला – साम्राज्य टुकड़ों में बँटेगा। हर टुकड़े पर एक 'इकतादार' होगा। वह कर वसूलेगा, सेना रखेगा, विद्रोह दबाएगा। और अगर वह खुद विद्रोह करेगा – तो उसकी जगह दूसरा रख दूंगा।

दूसरा – मैंने तुर्कान-ए-चहलगानी बनाई है। चालीस गुलाम – बिना परिवार के, बिना रिश्तेदारी के, बिना किसी और के साथ वफादारी के – सिर्फ मेरे। ये मेरी आँखें होंगे, मेरे कान होंगे। तुम लोगों की हर फुसफुसाहट इन तक पहुँचेगी। और तब तुम्हारे पास सिर्फ एक ही रास्ता बचेगा – मेरा कहना मानना।"

तुर्क सरदार (बुदबुदाता है – पर सामने कुछ नहीं बोलता। अपने साथी की तरफ देखता है, फिर आँखें नीची कर लेता है): "गुलाम… और हम… ठीक है महाराज।"

(इल्तुतमिश ने अपनी बेटी रजिया को उत्तराधिकारी बनाया – एक ऐसा फैसला जिसने हर किसी को चौंका दिया।)

💚 अच्छाई:
दूरदर्शी, कुशल प्रशासक – उसने दिल्ली सल्तनत को एक ढाँचा दिया, एक व्यवस्था दी।

🖤 बुराई:
विरोधियों को बेरहमी से मरवाया – कोई मौका नहीं दिया, कोई सुनवाई नहीं की। सत्ता के लिए उसने रिश्तेदारों तक को नहीं बख्शा।

तथ्य: इकता प्रणाली और तुर्कान-ए-चहलगानी इल्तुतमिश की देन हैं। उसने कुतुब मीनार पूरी करवाई।

रजिया सुल्तान (1236-1240 ई.) – "तख्त पर औरत"



(दरबार। रजिया सिंहासन पर बैठी है – पर उसने पुरुषों के कपड़े पहने हैं: सिर पर कुलाह (टोपी), शरीर पर कुबा (कोट), कमर में तलवार। उसके लंबे बाल टोपी के नीचे छिपे हैं। तुर्क सरदार उसे घूर रहे हैं – उनकी आँखों में तिरस्कार है, पर मुँह पर हँसी।)

तुर्क सरदार (चुपके से, साथी के कान में फुसफुसाते हुए): “यही है वह औरत… जिसके बारे में बादशाह ने सपना देखा था। सपना देखा

– मर गया। और अब यह हम पर राज करेगी? एक औरत? जिसने कभी तलवार नहीं उठाई? जिसने… हमें क्या सिखाएगी यह?”

रजिया (सुनकर – उसने सुन लिया था। वह उठकर खड़ी हो गई, तलवार निकालकर सरदार की तरफ बढ़ी): “तुम क्यों नहीं मुँह पर कहते? वही बात जो तुम चुपके-चुपके कहते हो? ‘औरत क्या करेगी?’ – सुनो तो। मैं खुद युद्ध लड़ूंगी – तुम्हें सामने खड़ा नहीं होना पड़ेगा। मैं खुद फैसले लूंगी – तुम्हारे सलाहकार तुम्हारे पास रखे रहोगे। मैं खुद तुम्हारी आँखों में देखकर बताऊंगी – मैं तुमसे कम नहीं हूँ। अब बोलो – क्या अब भी लगता है कि मैं नहीं कर सकती?”

(सरदार की आँखें झुक गईं – पर दिल में आग और भड़क गई।)

दादा (बीच में टोकते हुए): “रजिया ने खुद सेना का नेतृत्व किया – घोड़े पर सवार, तलवार लहराती। पर चार साल में ही तुर्क सरदारों ने विद्रोह कर दिया। उसे बंदी बना लिया गया, फिर वह भागी, पर रास्ते में मारी गई। एक औरत ने तख्त संभालने की कोशिश की – और उस कोशिश ने उसे अमर कर दिया।”

💚 अच्छाई:
साहसी, न्यायप्रिय, पहली महिला मुस्लिम शासिका – उसने साबित किया कि औरत भी तलवार उठा सकती है।

🖤 बुराई:
तुर्क सरदारों का विश्वास नहीं जीत सकी – वह अकेली पड़ गई। अपने लिए कोई मजबूत गुट नहीं बना पाई।

तथ्य: रजिया ने पर्दा त्यागकर पुरुष वस्त्र धारण किए। उसके सिक्कों पर ‘रजिया सुल्तान’ छपा।

बलबन (1266-1287 ई.) – "ईश्वर की छाया"



(दरबार। एक अलग ही माहौल है – सन्नाटा। सब झुके हैं, माथा ज़मीन पर। कोई सीधा खड़ा नहीं। बलबन शेर के चमड़े पर बैठा है – चेहरे पर न झुर्री है, न थकान। उसकी आँखों में बस एक ही बात है – 'डरो।')

बलबन (धीरे, पर हर शब्द में बिजली गिराते हुए): "तुम सब सोचते हो – यह बूढ़ा हो गया। अब इसकी ताकत कम हो गई। पर मैं अब भी वही हूँ जिसने तुम्हारे पिताओं को जेल में सड़ाया, तुम्हारे चाचाओं को फाँसी दी, और तुम्हारे भाइयों को दिल्ली से बाहर निकलवाया। मैं 'ज़िल-ए-इलाही' हूँ – ईश्वर की छाया। ईश्वर की छाया में कोई खड़ा नहीं होता – सब झुकते हैं। तुम भी झुको। सिजदा करो। मेरे पैर चूमो – पाबोस करो। जो नहीं झुकेगा – उसकी जीभ कटवा दूंगा, और उस जीभ को दरबार के बाहर लटकवा दूंगा – ताकि आने वाले हर शख्स देखे कि बलबन के आगे झुकना क्यों जरूरी है।"

(सन्नाटा। कोई हिलने की हिम्मत नहीं करता। एक सरदार का हाथ काँपता है – बलबन उसे देखता है, मुस्कुराता है, फिर दूसरी तरफ देख लेता है।)

💚 अच्छाई:
 शक्तिशाली शासक – उसने विद्रोहों को कुचल दिया, राज्य को मजबूत किया।

🖤 बुराई:
 क्रूर तानाशाह – डर के बल पर राज करता था। ‘लोहा और रक्त’ उसकी नीति थी। उसके डर से लोग काँपते थे।

तथ्य: बलबन ने ‘सिजदा’ (झुकना) और ‘पाबोस’ (पैर चूमना) की प्रथा चलाई। ‘नवरोज’ (ईरानी नव वर्ष) मनाना शुरू किया। वह खुद को ‘ज़िल-ए-इलाही’ कहता था।

दृश्य 2: खिलजी वंश (1290-1320 ई.) – "जब बाजार नियंत्रित हुआ"

जलालुद्दीन खिलजी (1290-96 ई.) – "प्रजा का समर्थन"



(दरबार। जलालुद्दीन सिंहासन पर बैठा है – पर वह सीधा नहीं बैठा, थोड़ा झुका हुआ है, जैसे बोझ उठा रहा हो। उसके चेहरे पर चिंता की लकीरें हैं। उसके सामने एक किसान खड़ा है – हाथ जोड़े, रो रहा है।)

जलालुद्दीन (किसान की तरफ झुककर, नरम स्वर में): “बोल, क्या हुआ? डर मत। मैं तुम्हारी बात सुनूंगा।”

किसान (रोते हुए): “महाराज, इकतादार ने मेरा खेत छीन लिया। कहता है – कर नहीं भर सकता, तो खेत मेरा। मेरे पास अब कुछ नहीं बचा – न अनाज, न पशु, न आशा।”

जलालुद्दीन (एक गहरी साँस लेता है, फिर धीरे से): “उस इकतादार को बुलाओ। और उससे कहो – जो खेत उसने छीना, वह वापस दे। जो अनाज लिया, वह लौटाए। और हाँ – उससे यह भी कहना कि जलालुद्दीन ने कहा है – ‘मैं प्रजा के समर्थन से राज करता हूँ। तलवार से नहीं, कर से नहीं – प्रजा के समर्थन से।’ जिसने प्रजा को लूटा, उसने मुझे लूटा।”

(उसका भतीजा अलाउद्दीन कोने में खड़ा है – आँखें नीची, पर दिल में आग।)

अलाउद्दीन (चुपके से, अपने साथी से फुसफुसाते हुए): “चाचा बहुत दयालु हैं… बहुत। दयालु ज्यादा दिन नहीं चलते। ये किसान… ये प्रजा… इनका समर्थन? एक दिन कोई आएगा जो तलवार उठाएगा – तो ये सब समर्थन भाग जाएगा।”

(छह साल बाद – उसी अलाउद्दीन ने अपने ही चाचा की हत्या करवा दी। जलालुद्दीन अपनी ही दया का शिकार हुआ।)

💚 अच्छाई:
 दयालु, प्रजाप्रिय – पहला सुल्तान जिसने कहा “मैं प्रजा के समर्थन से राज करता हूँ”।

🖤 बुराई:
बहुत कोमल – उसने दुश्मनों को पहचाना नहीं, और अपने भतीजे के हाथों मारा गया।

तथ्य: जलालुद्दीन ने राजत्व का आधार प्रजा का समर्थन माना – यह अनोखा था।

अलाउद्दीन खिलजी (1296-1316 ई.) – "सिकंदर-ए-सानी"



(दिल्ली का बाजार। हर दुकान पर कीमतें तख्ती पर लिखी हैं – इतनी छोटी लिखावट कि पढ़ने वाला पढ़ तो ले, पर याद न रख सके। हर गली के नुक्कड़ पर सिपाही खड़े हैं – हाथ में तलवार, चेहरे पर नकाब। एक व्यापारी रो रहा है।)

व्यापारी (फुसफुसाते हुए, डर-डर के): “महाराज… हमें हर दिन हिसाब देना पड़ता है – क्या बेचा, कितना बेचा, किसे बेचा। और अगर हम एक पैसा भी ज़्यादा लें… तो सिर कट जाएगा। मेरे बाप के जमाने में हम अपनी मर्जी से दाम रखते थे। अब…”

(अलाउद्दीन स्वयं बाजार में आया है – बिना ताज के, बिना घोड़े के। वह व्यापारी के पास आकर रुकता है।)

अलाउद्दीन (ठंडे स्वर में, पर आँखों में आग): “अब क्या? अब तुम नहीं बढ़ा सकते दाम – यही अब है। मैंने सोचा – अगर सैनिक को तनख्वाह कम मिलेगी, तो वह मुझसे खुश नहीं रहेगा। अगर व्यापारी बेशुमार कमाएगा, तो वह मुझसे खुश रहेगा – पर सैनिक गरीब रहेगा, और गरीब सैनिक मेरे खिलाफ होगा। मैं सैनिक चुनता

हूँ – क्योंकि तलवार उसी के हाथ में है। तुम चाहे रो लो – पर दाम वही रहेगा जो मैंने तय किया है।”

(वह मलिक काफूर की तरफ मुड़ता है – एक गुलाम, जिसे अलाउद्दीन ने अपना सेनापति बना रखा है।)

अलाउद्दीन (मलिक काफूर से): “दक्षिण जाओ। देवगिरि जीतो। वारंगल जीतो। मदुरई जीतो। वहाँ के राजाओं का सोना दिल्ली लाओ – ताँबा, चाँदी, हीरे, मोती – सब। और हाँ – उन राजाओं को ज़िंदा न लाना। मरा हुआ राजा ज्यादा वफादार होता है।”



तथ्य: अलाउद्दीन खिलजी का मूल नाम ‘अली गुरशास्प’ था। उसने ‘सिकंदर-ए-सानी’ (दूसरा सिकंदर) की उपाधि ली। वह प्रथम मुस्लिम सुल्तान था जिसने दक्षिण भारत पर आक्रमण किया – देवगिरि (1294), वारंगल (1303), मदुरई (1311)। उसने ‘चेहरा’ (सैनिकों की पहचान) और ‘दाग’ (घोड़ों पर राज्य का निशान) प्रथा शुरू की। बाजार नियंत्रण लागू किया – गेहूँ सात जीतल प्रति मन, जौ चार जीतल।

💚 अच्छाई:
बाजार नियंत्रण ने महँगाई रोकी – सैनिक खुश रहे, आम जनता भूखी नहीं रही।

🖤 बुराई:
 निर्दयी – अपने ही रिश्तेदारों और सेनापतियों को मरवाया। शराब पर पाबंदी लगाई – पर खुद पीता था।

दृश्य **3:** तुगलक वंश **(1320-1413** ई.**) – "**प्रतिभा और पागलपन का मेल**"**

मुहम्मद बिन तुगलक (1325-51 ई.) – "प्रतिभाशाली पागल"



(दौलताबाद के रास्ते में। हज़ारों लोग पैदल चल रहे हैं – बूढ़े, जिनके पैरों में छाले हो गए हैं। औरतें, जिनके बच्चे रास्ते में ही मर गए। बच्चे, भूख से बिलख रहे हैं। धूप तेज है – पानी नहीं, छाँव नहीं।)

पहला प्रयोग – राजधानी परिवर्तन:
(एक बूढ़ी औरत रास्ते के किनारे बैठी है – उसका पोता बुखार में तड़प रहा है।)

बूढ़ी औरत (आसमान की तरफ देखते हुए): "मैंने दिल्ली छोड़ी तो सोचा – सात दिन में दौलताबाद पहुँच जाएँगे। सात दिन हुए – अभी आधा रास्ता भी नहीं निकला। मेरा पोता… वह मर जाएगा। यह कैसा बादशाह है जो अपनी ही प्रजा को पैदल भगा रहा है? हमें क्या चाहिए था दौलताबाद? हम तो कबाड़ी थे – अपना सामान लेकर चल पड़े। अब सामान के बोझ ही बचे हैं – घर पीछे रह गए।"

(तीन साल बाद – दूसरा आदेश – "वापस दिल्ली लौटो!" – फिर से वही रास्ता, फिर से वही यातना, फिर से हजारों की मौत।)

दूसरा प्रयोग – कर वृद्धि और अकाल:



(दोआब का एक गाँव। खेत सूखे पड़े हैं – अनाज का एक दाना नहीं। किसान घर की देहरी पर बैठा है – उसके सामने ज़मीन जब्त करने का फरमान है।)

सेनापति (किसान से, बिना दया के): “महाराज का फरमान है – इस वर्ष कर दोगुना देना होगा।”

किसान (रोते हुए): “साहब, खेत सूख गए हैं – एक बीज भी नहीं उगा। हमें दो वक्त का खाना नसीब नहीं। आप दोगुना कर माँग रहे हैं? हम ज़मीन छोड़ देंगे – आप ले लो। हम जंगल में चले जाएँगे – वहाँ भूखे मरना कम से कम आजादी में तो होगा।”

सेनापति (ठंडे स्वर में): “बादशाह की आज्ञा है – कोई ज़मीन नहीं छोड़ सकता। जो कर नहीं देगा – उसे कैद कर लिया जाएगा।”

(गाँव में विद्रोह हुआ – सेना ने आग लगा दी।)

तीसरा प्रयोग – सांकेतिक मुद्रा:
(दिल्ली का बाजार। एक लकड़ी का खिलौना बेचने वाला ताँबे की छोटी-सी थैली को हाथ में लिए खड़ा है – उसके सामने एक खरीदार है।)

खरीदार: “यह थैली ताँबे की है। तुम कहते हो – यह पाँच चाँदी के सिक्कों के बराबर। पर यह तो ताँबा है – पिघलाओ तो एक पैसे का भी नहीं।”

खिलौना बेचने वाला (चिढ़कर): “बादशाह का हुक्म है – यह सिक्का चाँदी के बराबर है। तुम्हें लेना होगा – मुझे भी लेना होगा।”

(बाजार में हाहाकार मच गया। लोगों ने घरों में ताँबे के नकली सिक्के बनाने शुरू कर दिए। अर्थव्यवस्था चरमरा गई – अब कोई किसी का सिक्का लेने को तैयार नहीं था।)

चौथा प्रयोग – खुरासान विजय योजना:
(दरबार। मुहम्मद बिन तुगलक सिंहासन पर बैठा है – उसके चेहरे पर न उदासी है, न गुस्सा – बस एक अजीब सी चमक है।)

मुहम्मद बिन तुगलक (अपने सेनापति से): “हम खुरासान पर हमला करेंगे। वहाँ के बादशाह कमज़ोर हैं – एक झटके में पूरा मध्य एशिया हमारा हो जाएगा।”

सेनापति (घबराकर): “महाराज… खुरासान हज़ारों कोस दूर है। रास्ते में बीहड़ पहाड़ हैं, मरुस्थल हैं – सेना भूखी-प्यासी ही मर जाएगी। और वहाँ के बादशाह… उनके पास तो हाथी नहीं – पर तोपें हैं, घोड़े हैं, और उनकी संख्या हमसे कई गुना ज्यादा है।”

मुहम्मद बिन तुगलक (गुस्से में, मुट्ठी पीटते हुए): “तुम्हें क्या पता? मैं सोचता हूँ – तुम नहीं सोचते। मैं दूर देखता हूँ – तुम सिर्फ अपनी तलवार और अपने पेट की चिंता करते हो। खुरासान पर हमला होगा – चाहे तुम्हारी पूरी सेना भाग जाए, तो मैं अकेला ही चला जाऊँगा।”

(हमला नहीं हुआ – सेना ही तैयार नहीं हुई।)

दादा (दृश्य के बीच में): “एक अच्छी बात भी थी उसने – दीवान-ए-अमीर-कोही नाम का कृषि विभाग बनाया। किसानों को सरकारी खेतों में बीज और औजार दिए – यह बहुत आगे की सोच थी। पर उसकी चार गलतियाँ इतनी बड़ी थीं कि उसकी एक अच्छाई को किसी ने याद नहीं रखा।”

💚 अच्छाई:
बहुत पढ़ा-लिखा था – अरबी, फारसी, तुर्की, संस्कृत – चारों जानता था। कला-प्रेमी था। किसानों के लिए ‘दीवान-ए-अमीर-कोही’ बनाया।

🖤 बुराई:
उसके चार प्रयोग – राजधानी परिवर्तन, कर वृद्धि, सांकेतिक मुद्रा, खुरासान योजना – सब विफल रहे। लाखों लोग मरे। इतिहासकार उसे ‘पागल’ और ‘रक्त-पिपासु’ कहते हैं।

तथ्य: मुहम्मद बिन तुगलक के चारों प्रयोग असफल रहे। उसने ‘दीवान-ए-अमीर-कोही’ (कृषि विभाग) बनाया। इब्नबतूता (मोरक्को का यात्री) उसके शासनकाल में भारत आया और 8 साल यहाँ रहा।

फिरोजशाह तुगलक (1351-88 ई.) – "कल्याणकारी बादशाह"

(दिल्ली। एक नहर के किनारे – फिरोजशाह खड़ा है, उसके सामने किसानों की भीड़ है।)



फिरोजशाह तुगलक (किसानों से): “मैंने तुम्हारे लिए नहरें बनवाई हैं – यमुना से पानी लाऊँगा। अब तुम्हारे खेत सूखेंगे नहीं। मैंने दीवान-ए-खैरात बनाया है – गरीबों को दान दूंगा। दीवान-ए-बंदगान – दासों की देखभाल के लिए। मैं चाहता हूँ – मेरी प्रजा भूखी न रहे।”

(एक बूढ़ा किसान उसके पैर छू लेता है।)

बूढ़ा किसान: “महाराज, पिछले बादशाह ने हमसे सब कुछ छीन लिया था – हमारे खेत, हमारी आशा। आपने नहरें दीं, हमें अनाज दिया। अब हम भूखे नहीं रहेंगे।”

(फिरोजशाह का चेहरा शांत है – पर एक काला सत्य भी है।)

फिरोजशाह तुगलक (मन ही मन सोचते हुए): “मैंने अच्छे काम किए हैं – नहरें, हॉस्पिटल, मदरसे। पर मैंने हिंदुओं पर फिर से जजिया कर लगा दिया है। अकबर ने बाद में इसे हटाया – पर मैंने लगाया। यह मेरी गलती है।”

💚 अच्छाई:
प्रजा कल्याण – नहरें, अस्पताल, मदरसे, दान विभाग।

🖤 बुराई:
जजिया कर फिर से लगाया – हिंदुओं पर धर्म कर। इसने हिंदू-मुस्लिम दूरियाँ बढ़ाईं।

तथ्य: फिरोजशाह तुगलक ने ‘दीवान-ए-खैरात’ और ‘दीवान-ए-बंदगान’ की स्थापना की। उसने अपनी आत्मकथा ‘फुतूहात-ए-फिरोजशाही’ लिखी।

दृश्य 4: सैय्यद वंश (1414-1451 ई.) – "खिज़्र खाँ से खोई गद्दी"

खिज़्र खाँ (1414-1421 ई.) – "तैमूर का सेनापति"

दादा: “तैमूर ने 1398 ई. में दिल्ली लूटी – सोना, चाँदी, मोती, और करोड़ों लोग मारे। उसने वापस जाते समय अपने एक सेनापति खिज़्र खाँ को दिल्ली का वायसराय बनाया। जब तुगलक वंश खत्म हुआ, तो खिज़्र खाँ ने खुद को सुल्तान घोषित कर दिया – यह सैय्यद वंश था।”



(दरबार। खिज़्र खाँ सिंहासन पर बैठा है – लेकिन वह असहज है। वह अपनी गद्दी से उठना चाहता है, पर उठता नहीं।)

खिज़्र खाँ (मन ही मन सोच रहा है): "मैं तैमूर का गुलाम था – उसने मुझे यहाँ रखा। और अब मैं बादशाह हूँ… पर किसी की नजरों में नहीं। मेरे सरदार मेरा मजाक उड़ाते हैं – 'खिज़्र खाँ, जिसकी तलवार तैमूर के आगे झुक गई, वही आज हम पर राज करेगा?' मैं भी जानता हूँ – मेरी गद्दी की कोई कीमत नहीं। जिस दिन कोई ताकतवर आएगा, मैं भाग जाऊंगा।"

(उसके बाद के शासक और कमजोर थे। 1451 ई. तक सैय्यद वंश खत्म हो गया – उनके अपने ही सरदारों ने उखाड़ फेंका।)

तथ्य: सैय्यद वंश के संस्थापक खिज़्र खाँ तैमूर के सेनापति थे। यह वंश केवल 37 साल चला – बेहद कमज़ोर शासक।

💚 अच्छाई:
(कोई नहीं – कमज़ोर, अस्थिर राज्य)

🖤 बुराई:
 तैमूर की देन पर बैठे – उनका अपना कोई अधिकार नहीं था। सरदार उनसे डरते नहीं थे।

दृश्य 5: लोदी वंश (1451-1526 ई.) – "अफगान राज्य और आखिरी सुल्तान"

सिकंदर लोदी (1489-1517 ई.) – "आगरा का संस्थापक"

(आगरा। एक नया शहर बस रहा है – मजदूर ईंटें रख रहे हैं, पत्थर कट रहे हैं, नहर खोदी जा रही है। सिकंदर लोदी घोड़े पर बैठा है – उसके चेहरे पर एक सपना है।)



सिकंदर लोदी (अपने मंत्री से): “दिल्ली बूढ़ी हो चुकी है – वहाँ बहुत साजिशें होती हैं, बहुत शोर होता है। मैं एक नया शहर बसाऊँगा –

आगरा। यहाँ हम नए सिरे से शुरू करेंगे – नए किले, नए बाजार, नए रास्ते। और हाँ – ज़मीन नापने के लिए मैंने 'सिकंदरी गज' बनाया है – एक नई इकाई, सबके लिए एक जैसी। अब कोई अपनी मर्जी से ज़मीन नहीं बढ़ाएगा, न ही घटाएगा।"

(वह कविता भी लिखता था – 'गुलरुखी' उपनाम से।)

सिकंदर लोदी (अपनी कविता खुद से बुदबुदाते हुए): "जिस दिल में दर्द हो, वही शायर बनता है – और जिसके पास तलवार हो, वही बादशाह। मेरे पास दोनों हैं – दर्द भी, तलवार भी। पर क्या यह काफी होगा? मुझे नहीं पता।"

💚 अच्छाई:
दूरदर्शी – आगरा की नींव रखी, जो बाद में मुगलों की राजधानी बनी। कवि – 'गुलरुखी' उपनाम से कविताएँ लिखीं।

🖤 बुराई:
हिंदू मंदिरों को तोड़ा, उनकी जगह मस्जिदें बनवाईं – धार्मिक कट्टरता।

तथ्य: सिकंदर लोदी ने 'सिकंदरी गज' (माप की इकाई) और आगरा नगर (1504 ई.) की स्थापना की। उसने 'गुलरुखी' उपनाम से फारसी कविताएँ लिखीं।

इब्राहिम लोदी (1517-1526 ई.) – "आखिरी सुल्तान, पहली पानीपत"

(दरबार। इब्राहिम लोदी सिंहासन पर बैठा है – पर उसके सरदार खड़े नहीं, बैठे हैं व्याकुलता से। कोई उसकी तरफ देखता नहीं – सब आपस में फुसफुसा रहे हैं।)



इब्राहिम लोदी (गुस्से से मुट्ठी पीटते हुए): "तुम लोग मेरा अपमान करते हो – मेरे सामने भी, और मेरी पीठ पीछे भी। अब से जो भी मेरे खिलाफ बोलेगा, उसकी जीभ कटवा दूंगा। जो मुझसे ज़्यादा घोड़े रखेगा, उसे दिल्ली से निकाल दूंगा। तुम लोग मेरी नजरों में बैठे हो – मैं जानता हूँ कि तुममें से कौन मेरी तलवार का इंतज़ार कर रहा है।"

(एक सरदार – दौलत खाँ लोदी – उठता है और दरबार से बाहर चला जाता है, बिना इजाजत के।)

दौलत खाँ लोदी (बाहर निकलकर, अपने साथी से): "यह बादशाह अपने ही लोगों को दुश्मन बना रहा है। मैं देखूंगा – यह बादशाह बचेगा या मैं। और अगर यह बच गया तो भी – मैं इससे बदला लूंगा। मैं अभी काबुल जा रहा हूँ – वहाँ एक बादशाह बैठा है, बाबर। उसी को बुलाऊंगा – आकर इस दिल्ली की गद्दी संभाले।"

(21 अप्रैल, 1526 ई. – पानीपत का मैदान। दो सेनाएँ आमने-सामने।)

बाबर (अपने सैनिकों से, तोपों की तरफ इशारा करते हुए): “तुम थोड़े हो – पर तुम्हारे पास तोपें हैं। और मेरे पास एक चाल है – तुलगुमा नीति। गाड़ियों को रस्सियों से बाँधो – एक गोला बनाओ। गाड़ियों के बीच में तोपें रखो। यह चलता-फिरता किला होगा – इसे कोई नहीं तोड़ सकता।”



(युद्ध शुरू हुआ – तोपों की आग, हाथियों की चिंघाड़, घोड़ों की टापें। इब्राहिम का हाथी काँप गया – वह गिर गया। एक तीर उसकी आँख में लगा – वह मर गया।)

बाबर (इब्राहिम की लाश को देखते हुए, थोड़ी देर चुप, फिर अपने सेनापति से): “यहाँ दफना दो। एक बादशाह था – गलतियाँ की, पर बादशाह था।”

💚 अच्छाई:

(कोई नहीं – वह एक अत्याचारी और अयोग्य शासक था)

🖤 बुराई:
अपने ही सरदारों को दुश्मन बना लिया – उसी के कारण दौलत खाँ ने बाबर को बुलाया। पानीपत की पहली लड़ाई (1526) हारा – दिल्ली सल्तनत खत्म हो गई।

तथ्य: पानीपत के प्रथम युद्ध (1526 ई.) में बाबर ने तुलगुमा पद्धति (गाड़ियाँ बाँधकर चलते-फिरते किले बनाना) और तोपखाने का प्रयोग किया। इब्राहिम लोदी युद्ध में मारा गया – उसकी मृत्यु के साथ दिल्ली सल्तनत समाप्त हो गई।

अंतिम दृश्य – दिल्ली सल्तनत का अंत

(दादा और पोता फिर से उसी जगह बैठे हैं – जहाँ से कहानी शुरू हुई थी। पोता सिक्का उठाता है – वही अरबी अक्षर वाला।)

पोता: "दादा, यह सिक्का किस वंश का है?"

दादा (सिक्का लेकर देखता है, फिर धीरे से रख देता है): "इस पर 'इब्राहिम शाह' लिखा है – इब्राहिम लोदी का सिक्का। आखिरी सुल्तान – जो पानीपत के मैदान में हार गया। यह सिक्का उसी हार की याद दिलाता है।"

पोता: "तो अब दिल्ली पर कौन राज करेगा?"

दादा: "अब दिल्ली पर बाबर राज करेगा – मुगलों की सत्ता आएगी। और वह सत्ता 300 साल से भी ज्यादा चलेगी। पर यह कहानी फिर कभी।"

तुलना – भारत और विश्व (दिल्ली सल्तनत काल)

समय (लगभग) भारत में और विश्व में

▪1206-1290 ई.

▪गुलाम वंश – ऐबक, इल्तुतमिश, रजिया ।

▪बलबन में - मंगोल आक्रमण (चंगेज खाँ) ।

▪ यूरोप में - मध्यकाल जारी ।

▪1290-1320 ई.

▪खिलजी वंश –

अलाउद्दीन (बाजार नियंत्रण, दक्षिण पर आक्रमण) ।

▪यूरोप में - क्रूसेड्स (धर्मयुद्ध) का अंत, मार्को पोलो की यात्राएँ ।

▪1320-1413 ई.

▪तुगलक वंश –

▪मुहम्मद बिन तुगलक (चार प्रयोग), फिरोजशाह (कल्याणकारी कार्य) ।

▪इंग्लैंड-फ्रांस के बीच 'सौ साल का युद्ध' ।

▪(1337-1453)

▪ब्लैक डेथ (प्लेग) ने यूरोप को तबाह किया ।

▪1414-1451 ई.

▪सैय्यद वंश – कमज़ोर शासक, तैमूर की देन ।

▪चीन में - मिंग वंश (महान दीवार पूरी हुई) ।

▪ओटोमन में - तुर्कों का उदय ।

▪1451-1526 ई.

▪लोदी वंश –

सिकंदर लोदी (आगरा), इब्राहिम लोदी (पानीपत-1)

कॉन्स्टेंटिनोपल पर तुर्कों का कब्जा (1453) ।

▪कोलंबस अमेरिका पहुँचा (1492) ।

▪ मैजलन विश्व का चक्कर लगाता है ।

इस अंक के प्रश्न-उत्तर

▪'लाख बख्श' किसे कहा जाता था?
कुतुबुद्दीन ऐबक को ।
▪इकता प्रणाली और तुर्कान-ए-चहलगानी किसने शुरू की?
इल्तुतमिश ने ।
▪भारत की प्रथम महिला मुस्लिम शासिका कौन थी?
रजिया सुल्तान ।
▪'सिजदा' और 'पाबोस' की प्रथा किसने चलाई?
बलबन ने ।
▪अलाउद्दीन खिलजी का मूल नाम क्या था?
अली गुरशास्प ।
▪'चेहरा' और 'दाग' प्रथा किसने और क्यों शुरू की?
अलाउद्दीन खिलजी – सैनिकों की पहचान और घोड़ों पर निशान लगाने के लिए ।
▪मुहम्मद बिन तुगलक के चार प्रयोग कौन-से थे?
1. राजधानी परिवर्तन (दिल्ली→दौलताबाद), 2. कर वृद्धि (दोआब में अकाल के समय), 3. सांकेतिक मुद्रा (ताँबे के सिक्के), 4. खुरासान विजय योजना ।
▪“दीवान-ए-अमीर-कोही” किसने बनाया और क्यों?
मुहम्मद बिन तुगलक – कृषि विकास के लिए ।
▪इब्नबतूता किसके शासनकाल में भारत आया?
मुहम्मद बिन तुगलक के ।
▪सैय्यद वंश का संस्थापक कौन था और वह किसका सेनापति था?
खिज्र खाँ – तैमूर का सेनापति ।
▪आगरा शहर की स्थापना किसने की और कब?
सिकंदर लोदी ने – 1504 ई. में ।
▪दिल्ली सल्तनत का अंतिम सुल्तान कौन था?

इब्राहिम लोदी।
▪पानीपत का प्रथम युद्ध कब हुआ और किसके बीच? 1526 ई. – बाबर (मुगल) vs इब्राहिम लोदी।

महत्वपूर्ण याद रखने योग्य बिंदु

1. गुलाम वंश (1206-1290 ई.)
   · कुतुबुद्दीन ऐबक ('लाख बख्श', कुतुब मीनार की नींव)।
   · इल्तुतमिश (इकता प्रणाली, तुर्कान-ए-चहलगानी, दिल्ली सल्तनत का असली संस्थापक)।
   · रजिया सुल्तान (प्रथम महिला मुस्लिम शासिका, पुरुष वस्त्र, साहसी पर अकेली)।
   · बलबन (सिजदा, पाबोस, ज़िल-ए-इलाही, क्रूर तानाशाह)।
2. खिलजी वंश (1290-1320 ई.)
   · जलालुद्दीन (प्रजा का समर्थन, दयालु पर कमज़ोर)
   · अलाउद्दीन (बाजार नियंत्रण, चेहरा-दाग प्रथा, प्रथम मुस्लिम सुल्तान जिसने दक्षिण पर आक्रमण किया)।
3. तुगलक वंश (1320-1413 ई.)
   · मुहम्मद बिन तुगलक (चार प्रयोग – असफल, 'दीवान-ए-अमीर-कोही', प्रतिभाशाली पर पागल)
   · फिरोजशाह तुगलक (नहरें, अस्पताल, मदरसे, दान विभाग – पर जजिया कर लगाया)।
4. सैय्यद वंश (1414-1451 ई.)
   · खिज्र खाँ (तैमूर का सेनापति, कमज़ोर शासक, 37 साल का कमज़ोर वंश)।
5. लोदी वंश (1451-1526 ई.)
   · सिकंदर लोदी (आगरा की स्थापना, 'सिकंदरी गज', कवि, पर मंदिर तोड़ने वाला)

· इब्राहिम लोदी (अंतिम सुल्तान, अपने ही सरदारों को दुश्मन बना लिया) ।

6. पानीपत का प्रथम युद्ध – 1526 ई.

· बाबर (मुगल) vs इब्राहिम लोदी
· तुलगुमा नीति और तोपखाने से बाबर जीता
· दिल्ली सल्तनत का अंत – मुगल साम्राज्य का आरंभ ।

अंक समाप्त

अगले अंक 10 में: मुगल साम्राज्य – बाबर (पानीपत-1, बाबरनामा), हुमायूँ (शेरशाह से हार, निर्वासन), शेरशाह सूरी (जब्ती प्रणाली, ग्रांड ट्रंक रोड), अकबर (जजिया कर हटाया, फतेहपुर सीकरी, दीन-ए-इलाही, मनसबदारी, नवरत्न), जहाँगीर (न्याय की जंजीर, नूरजहाँ), शाहजहाँ (ताजमहल, लाल किला, मयूर सिंहासन, कैद), औरंगजेब (जजिया कर फिर से, सिख गुरु तेग बहादुर को फाँसी, दक्कन में 27 साल, मुगल साम्राज्य का पतन)।

तो चलिए, अब हम इस महानाटक के दसवें अंक में प्रवेश करते हैं।

यह वह अंक है जिसे हर कोई जानता है – मुगल साम्राज्य। बाबर से लेकर औरंगजेब तक – छह बादशाह, छह कहानियाँ। एक बादशाह जिसने अपनी आत्मकथा लिखी, एक जो भागता रहा, एक जो 14 साल में बादशाह बन गया, एक जिसने न्याय की जंजीर लटकाई, एक जिसने ताजमहल बनवाया, और एक जिसने अपने पिता को कैद कर दिया।

यह कहानी है मुगलों की – जब तोपों ने राज किया, जब हिंदू-मुस्लिम एकता का प्रयोग हुआ, जब कला अपने चरम पर पहुँची, और जब एक बादशाह ने अपने ही धर्म के लोगों पर कर लगा दिया।

अंक **10:** मुगल साम्राज्य **– "**ताजमहल से लेकर औरंगजेब के सपने तक**"**

(1526 ई. से 1707 ई. तक – छह बादशाह, छह कहानियाँ, एक साम्राज्य)

प्रस्तावना**:** पानीपत का वह मैदान

एक शाम। दादा और पोता पानीपत के मैदान की तरफ देख रहे हैं – आज यहाँ सरसों के खेत हैं, पर दादा की आँखों में वही मैदान है, वही खून, वही तोपों की गड़गड़ाहट।

पोता: “दादा, आप बता रहे थे – इब्राहिम लोदी हार गया, दिल्ली सल्तनत खत्म हो गई। तो फिर... दिल्ली पर किसका राज आया?”

दादा (आँखें बंद करके, उस मैदान को देखते हुए जो अब नहीं है): “बेटा, 21 अप्रैल, 1526 ई. – पानीपत का वही मैदान। एक तरफ इब्राहिम लोदी – 1,00,000 सैनिक, 1,000 हाथी। दूसरी तरफ बाबर – 12,000 सैनिक, 20 तोपें। सबने सोचा – इब्राहिम जीतेगा। पर बाबर के पास तोपें थीं – और एक चाल। उसने गाड़ियों को रस्सियों से बाँधकर एक चलता-फिरता किला बना दिया – तुलगुमा नीति। तोपों ने हाथियों को उड़ा दिया – हाथी भागे, सैनिक कुचले

गए। इब्राहिम घोड़े से गिर गया – एक तीर उसकी आँख में लगा। वह मर गया। उसी दिन बाबर ने दिल्ली की गद्दी पर कब्जा किया। यहीं से मुगल साम्राज्य की शुरुआत हुई।”

पोता: “तो ये मुगल कहाँ से आए थे?”

दादा (मुस्कुराते हुए): “बेटा, खुद को मुगल कहते थे – पर असल में वे तुर्क-मंगोल थे। चंगेज खाँ के खून से, तैमूर के वंश से। बाबर तैमूर का परपोता था – और चंगेज खाँ की 14वीं पीढ़ी में। उसकी रगों में सत्ता का नशा था – और उसके हाथ में तलवार। पर एक बात और – वह कवि भी था, लेखक भी था, और शराबी भी था। अब चलो – कहानी आगे बढ़ाते हैं।”

—

दृश्य **1:** बाबर **(1526-1530** ई.**) – "**जिसने अपनी जिंदगी की कहानी खुद लिखी**"**

टाइम: 1526-1530 ई.
जगह: आगरा और दिल्ली

पात्र:

· बाबर – फरगना (मध्य एशिया) का राजा, तैमूर का वंशज, 14 साल की उम्र में सिंहासन पर बैठा, अब 40 के पार
· हुमायूँ – उसका बड़ा बेटा, 18 साल का, नर्म स्वभाव का
· बैरम खाँ – हुमायूँ का संरक्षक, बाद में अकबर का

(बाबर का तम्बू – आगरा के बाहर। वह एक छोटी सी डायरी पर लिख रहा है। उसके आसपास तलवारें, नक्शे, और शराब की खाली बोतलें पड़ी हैं।)



बाबर (खुद से बात करते हुए, लिखते हुए): “मैंने सोचा था – दिल्ली जीत ली तो सब ठीक हो जाएगा। पर यहाँ का मौसम… यह गर्मी… मुझे तरबूज़ याद आते हैं – काबुल के तरबूज़। यहाँ के तरबूज़ में वह मिठास नहीं। मैंने लिखा है – ‘बाबरनामा’ में। सब कुछ लिखा है – अपनी हार, अपनी जीत, अपनी शराब की दीवानगी, और अपनी वह रात जब मैंने तय किया – अब शराब नहीं पीऊंगा। खानवा के युद्ध के पहले – राणा साँगा के खिलाफ। उस रात मैंने सारी शराब तोड़ दी। कसम खाई – ‘अब शराब नहीं पीऊंगा।’ और जीत गया।”

(वह पन्ना पलटता है।)

बाबर: “पर सबसे दर्दनाक सच – मेरा बेटा हुमायूँ। वह बीमार पड़ा – बहुत बीमार। डॉक्टरों ने कहा – ‘अब उम्मीद कम है।’ मैंने ईश्वर से कहा – ‘उसकी जान बचाओ, मेरी ले लो।’ हुमायूँ ठीक हो गया – और मैं बीमार पड़ गया। क्या ईश्वर ने सच में मेरी प्रार्थना सुन ली?

मुझे नहीं पता। पर मुझे लगता है – मैंने अपने बेटे के लिए अपनी जान दे दी। यह कोई बात नहीं है – यह कविता है।”

(वह अपनी डायरी बंद करता है। उसके हाथ काँप रहे हैं।)

💚 बाबर की अच्छाई:
साहसी, कवि, लेखक – ‘बाबरनामा’ उसकी आत्मकथा है, जो तुर्की भाषा में लिखी गई। उसने तोपों और तुलगुमा नीति से बड़ी सेना को हराने का जादू सीखा।

🖤 बाबर की बुराई:
शराबी था – हालाँकि बाद में उसने छोड़ दिया। क्रूर भी था – युद्धों में उसने कैदियों को मरवाया।

तथ्य: बाबर ने पानीपत के प्रथम युद्ध (1526) में तुलगुमा पद्धति और तोपखाने का प्रयोग किया। उसने खानवा के युद्ध (1527) में राणा साँगा को हराया। उसने ‘बाबरनामा’ तुर्की में लिखी – बाद में अब्दुल रहीम खानखाना ने फारसी अनुवाद किया। 1530 ई. में उसकी मृत्यु हुई – पहले आगरा में दफनाया गया, बाद में काबुल ले जाया गया।

दृश्य 2: हुमायूँ (1530-1540, 1555-1556 ई.) – "भाग्य का मारा"

टाइम: 1530-1556 ई.
जगह: आगरा, फिर सिंध, फिर ईरान, फिर दिल्ली

पात्र:

· हुमायूँ – बाबर का बेटा, युवा, सपने देखने वाला, पर उतना सख्त नहीं जितना होना चाहिए
· शेरशाह सूरी – एक अफगान सेनापति, चालाक, दूरदर्शी
· बैरम खाँ – हुमायूँ का सबसे वफादार सेनापति, बाद में अकबर का संरक्षक

—

(हुमायूँ का तम्बू – चौसा के मैदान में, 1539 ई. युद्ध से एक रात पहले। वह घबराया हुआ है। उसके हाथ में तलवार है, पर उसकी निगाहें खाली हैं।)

हुमायूँ (बैरम खाँ से): “बैरम, मुझे डर लग रहा है। शेरशाह – वह कोई साधारण दुश्मन नहीं। उसने अपने सैनिकों को जंगलों में छुपा रखा है – हम नहीं देख सकते, पर वे हमें देख रहे हैं। मैंने अपने पिता से सीखा था कि तोपों से युद्ध जीते जाते हैं – पर यहाँ तो जंगल है, तोपें कहाँ रखूँ?”

बैरम खाँ (हाथ जोड़कर, पर मन ही मन चिंतित): “महाराज, घबराइए मत। हमारे पास तोपें हैं – और आपके पिता ने तुलगुमा सिखाया था। हम गाड़ियाँ बाँधकर…”

हुमायूँ (बीच में टोकते हुए): “बैरम, यहाँ गाड़ियाँ नहीं चलेंगी – यह दलदल है। शेरशाह हमें इसी दलदल में धकेलना चाहता है। और हम उसके जाल में फंस रहे हैं। मैंने अपने पिता को एक बात कहते सुना था – ‘बेटा, युद्ध से पहले सोच, दुश्मन को पढ़, फिर चाल चल।’ मैंने शेरशाह को नहीं पढ़ा। अब मुझे लगता है – कल हार होगी।”

तथ्य: चौसा का युद्ध (1539 ई.) – हुमायूँ बुरी तरह हारा। वह नंगे पैर, अकेला, एक हाथी पर सवार होकर भागा। कन्नौज का युद्ध

(1540 ई.) – फिर से हार। हुमायूँ को 15 साल का निर्वासन झेलना पड़ा।

(दृश्य बदलता है – सिंध का रेगिस्तान। हुमायूँ एक ऊँट पर बैठा है – उसके पास न कोई सेना है, न कोई साथी, बस बैरम खाँ और उसकी गर्भवती पत्नी हमीदा बानो।)

हुमायूँ (बैरम खाँ से, हताश स्वर में): “बैरम, मैंने सब कुछ खो दिया – दिल्ली, आगरा, तख्त, ताज। यहाँ सिर्फ रेत है – और यह गर्मी… मेरी पत्नी प्रसव वाली है – यहाँ तो पानी भी नहीं है। हम कहाँ जाएँ?”

बैरम खाँ (थककर, पर हार नहीं मानते हुए): “महाराज, हम ईरान जाएँगे – शाह तहमास्प हमारा स्वागत करेंगे। उनसे मदद लेंगे – सेना, घोड़े, हथियार। और फिर वापस आएंगे। दिल्ली हमारी थी – दिल्ली फिर हमारी होगी।”

(सिंध के एक गाँव में – अमरकोट। एक छोटे से घर में हमीदा बानो ने एक बच्चे को जन्म दिया। हुमायूँ के पास जश्न मनाने के लिए कुछ नहीं था – उसने कस्तूरी की एक बोतल तोड़ी, उसकी महक पूरे कमरे में फैला दी।)

हुमायूँ (नवजात बच्चे को गोद में लेकर, आँखों में आँसू): “मेरा बेटा – उसका नाम रखूंगा जलालुद्दीन मुहम्मद अकबर। यह बेटा एक दिन मेरी खोई हुई गद्दी वापस लाएगा। मुझे नहीं पता कि मैं उसे देख पाऊंगा या नहीं – पर यह बेटा तैमूर के खून से है, यह बेटा चंगेज खाँ के खून से है – यह बेटा हारेगा नहीं।”



तथ्य: हुमायूँ ने 15 साल निर्वासन में बिताए – सिंध, ईरान, अफगानिस्तान घूमता रहा। ईरान के शाह तहमास्प ने उसे सेना और हाथी दिए। 1555 ई. में वह वापस आया – सिकंदर सूरी (शेरशाह के वंशज) को हराया, और दिल्ली की गद्दी वापस पाई।

(दिल्ली – हुमायूँ की दूसरी राजधानी, दीनपनाह। वह अपनी लाइब्रेरी की सीढ़ियों से उतर रहा है। उसके हाथ में किताबें हैं।)

हुमायूँ (खुद से बुदबुदाते हुए): “मैंने दिल्ली वापस पा ली – पर मुझे लगता है, मैं बीमार हूँ। यह सीढ़ियाँ… मेरे पैर काँप रहे हैं। क्या हुआ…”



(वह फिसलता है – किताबें बिखर जाती हैं। सीढ़ियों से गिरता है – उसका सिर पत्थर से टकराता है।)

तथ्य: 1556 ई. में हुमायूँ अपनी लाइब्रेरी की सीढ़ियों से गिरकर मर गया। उसके बाद उसका 14 साल का बेटा अकबर गद्दी पर बैठा।

💚 हुमायूँ की अच्छाई:
साहसी था – पूरी जिंदगी संघर्ष की। कला-प्रेमी था – दीनपनाह शहर बसाया।

🖤 हुमायूँ की बुराई:
उतना सख्त नहीं था जितना बादशाह को होना चाहिए। अपनी लाइब्रेरी की सीढ़ियों से गिरकर मरना – एक दुखद अंत।

तथ्य: हुमायूँ ने अपनी जीवनी 'हुमायूँनामा' अपनी बहन गुलबदन बेगम को लिखवाई।

दृश्य **3:** शेरशाह सूरी **(1540-1545** ई.**) – "**जिसने अकबर को सिखाया कि राज कैसे करते हैं**"**

टाइम: 1540-1545 ई.
जगह: सासाराम (बिहार), फिर दिल्ली और आगरा

पात्र:

· शेरशाह सूरी – असली नाम फरीद खाँ, एक साधारण ज़मींदार का बेटा, जिसने अपनी प्रतिभा से साम्राज्य बना लिया
· हुमायूँ – बाबर का बेटा, शेरशाह का दुश्मन, जो हारकर भाग रहा है

(शेरशाह का दरबार – उसने सिर्फ दो युद्ध जीते, पर दिल्ली की पूरी गद्दी उसके सामने थी। वह साधारण कपड़े पहनता है – कोई शाही वस्त्र नहीं, कोई सोने का ताज नहीं।)

शेरशाह सूरी (अपने मंत्री से): "हुमायूँ हार गया – अब दिल्ली हमारी है। पर तुम जानते हो, हुमायूँ कमज़ोर नहीं था – वह सिर्फ एक गलती कर गया। उसने अपनी सेना को तोपों पर बहुत भरोसा किया – और तोपें दलदल में फंस गईं। उसने अपने सैनिकों को जंगलों में उतरना नहीं सिखाया – और हम जंगलों के बाशिंदे थे। उसकी हार में मेरी प्रतिभा नहीं, उसकी अपनी गलती थी। यह मत भूलना – हम विजेता हैं, पर हमें सीखना चाहिए कि विजेता कैसे बने रहते हैं।"

(वह एक नक्शा खोलता है।)



शेरशाह (उंगली घुमाते हुए): “देखो – यह सड़क बनेगी। ग्रांड ट्रंक रोड – सोनारगाँव (बंगाल) से शुरू, पटना, बनारस, इलाहाबाद, कानपुर, दिल्ली, लाहौर, और पेशावर तक। सात सौ कोस – इतनी लंबी सड़क पहले कभी नहीं बनी। इस सड़क पर हर दो कोस पर एक सराय होगी – यात्रियों के लिए छाँव, पानी, और दाना। इस सड़क के किनारे पेड़ लगेंगे – ताकि यात्रियों को धूप तकलीफ न दे। और इस सड़क के नक्शे के साथ – भूमि की पैमाइश होगी। ‘जब्ती’ प्रणाली – हर खेत को नापा जाएगा, हर साल उपज का अनुमान लगाया जाएगा, और फसल का एक-तिहाई हिस्सा कर वसूला जाएगा। न एक पैसा कम, न एक पैसा ज्यादा। यही सच्चा न्याय है।”

मंत्री (हैरान होकर): “महाराज… यह सब… यह तो कोई बादशाह नहीं, कोई इंजीनियर कर रहा है। आपने यह कहाँ से सीखा?”

शेरशाह (मुस्कुराते हुए): “मैंने अपने पिता के साथ खेत देखा है – कैसे किसान को लूटा जाता है। मैंने सड़कों पर यात्रियों को लूटते देखा है – कैसे डाकू डकैती करते हैं। मैं जानता हूँ कि जनता क्या चाहती है – सिर्फ एक व्यवस्था। यही मैं ला रहा हूँ।”

(1545 ई. – कालिंजर का किला। शेरशाह तोप की गोला-बारूद का निरीक्षण कर रहा है।)

शेरशाह (अपने सेनापति से): “यह गोला… बहुत बड़ा है। इसे रखो…”

(एक विस्फोट – आग का गोला। शेरशाह लहूलुहान होकर गिरता है।)

शेरशाह (अंतिम साँस लेते हुए, फुसफुसाकर): “मैंने… पाँच साल में… दिल्ली बदल दी… पर पाँच साल कम हैं… मुझे और समय चाहिए था…”

(वह मर जाता है। उसके हाथ में ग्रांड ट्रंक रोड का नक्शा है – खून से सना हुआ।)

दादा (दृश्य के बीच में, धीरे से): “शेरशाह सिर्फ पाँच साल जीवित रहा – पर उसने अकबर को रास्ता दिखा दिया। अकबर ने वही किया – जब्ती प्रणाली को और सुधारा, ग्रांड ट्रंक रोड को आगे बढ़ाया, और मनसबदारी प्रणाली शुरू की। अकबर महान था – पर उसके पीछे शेरशाह था।”

💚 शेरशाह की अच्छाई:
 कुशल प्रशासक – जब्ती प्रणाली (भूमि की पैमाइश, उपज का 1/3 कर), ग्रांड ट्रंक रोड (कोलकाता से पेशावर), शुद्ध सोने-चाँदी के सिक्के। उसने वह नींव रखी जिस पर अकबर ने इमारत खड़ी की।

🖤 शेरशाह की बुराई:
 सिर्फ 5 साल जीवित रहा – अगर वह जीवित रहता, शायद मुगल वापस नहीं आ पाते।

तथ्य: शेरशाह का असली नाम फरीद खाँ था। उसने 'जब्ती' प्रणाली लागू की। उसने ग्रांड ट्रंक रोड का निर्माण शुरू किया। 1545 ई. में कालिंजर के किले पर हमले के दौरान उसकी मृत्यु हुई – अपनी ही बनवाई तोप के गोले से।

दृश्य 4: अकबर (1556-1605 ई.) – "14 साल में बादशाह, 49 साल में महान"

टाइम: 1556-1605 ई.
जगह: आगरा, फतेहपुर सीकरी, दिल्ली

पात्र:

· अकबर – हुमायूँ का बेटा, 13 साल में बादशाह बना, उम्र पूरी होने तक बैरम खाँ के संरक्षण में रहा
· बैरम खाँ – वफादार सेनापति, अकबर का संरक्षक
· खानजहाँ – शेरशाह के बाद एक अफगान सेनापति
· मुल्ला दो प्याजा – अकबर के नवरत्नों में से एक, मजाकिया
· अबुल फजल – अकबर का दरबारी कवि और इतिहासकार, 'अकबरनामा' और 'आइने अकबरी' का लेखक
· राजा टोडरमल – अकबर का वित्त मंत्री, शेरशाह से प्रभावित
· राजा मान सिंह – अकबर का सेनापति, आमेर का राजा
· बीरबल – अकबर का सबसे चहेता सलाहकार, मजाकिया, विद्वान

(दिल्ली – पानीपत का दूसरा युद्ध, 1556 ई. अकबर और बैरम खाँ की सेना हेमू (हिंदू राजा) से लड़ रही है। हेमू जीतने वाला था –

अचानक एक तीर उसकी आँख में लगा। हेमू बेहोश होकर गिर गया – सेना भाग गई। अकबर जीत गया – वह सिर्फ 13 साल का था।)



दादा: “पानीपत का दूसरा युद्ध – बड़ी लड़ाई थी। हेमू ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया था – अकबर के नाम का सिक्का बदल दिया था। अगर वह तीर न लगता – शायद मुगल खत्म हो जाते। पर इतिहास का हर ‘अगर’ व्यर्थ है – इतिहास में केवल ‘तब’ होता है।”

(आगरा – अकबर बैरम खाँ को हटा रहा है।)

अकबर (बैरम खाँ से, परिपक्व स्वर में, अब वह कोई बच्चा नहीं): “बैरम, तुमने मुझे बचपन में गद्दी दिलाई। पर अब मैं बड़ा हो गया हूँ। तुम मेरे पीछे बैठकर हुक्म चलाते हो – ऐसा नहीं चलेगा। मैंने तुम्हें मक्का जाने का आदेश दिया है – एक बुज़ुर्ग की तरह शांति से बिताओ। पर अगर तुम विद्रोह करोगे… तो मैं भी कोई हुमायूँ नहीं हूँ।”

(बैरम खाँ ने विद्रोह किया – हार गया। अकबर ने उसे माफ कर दिया। बैरम खाँ मक्का गया, पर रास्ते में ही उसकी हत्या हो गई।)

अकबर (खुद से, अफसोस में): "बैरम खाँ मेरे पिता थे – परिवार से नहीं, पर उसने मुझे पाला था। उसे माफ करना मेरा फैसला था – पर उसकी मौत… मैं रोक नहीं सका। यह भी सत्ता का सच है – कोई नहीं रुकता जब चाहो, सब जाते हैं जब समय होता है।"

(अकबर ने जजिया कर – हिंदुओं पर धर्म कर – हटा दिया (1564 ई.) – अपने दरबारियों को चौंका दिया।)

अकबर (दरबार में, सभी को संबोधित करते हुए): "मैंने जजिया कर समाप्त किया है। सुनकर हैरानी होगी – हिंदू... मेरे सामने राजपूत खड़े हैं, जिन्होंने मेरे खिलाफ युद्ध लड़े। अब वे मेरे साथ हैं। उनके साथ सिर्फ तलवार का रिश्ता कमज़ोर होता है – उनके साथ दिल का रिश्ता बनाना होगा। राजपूत राजकुमारियों से शादी… हाँ, मैंने अपनी पत्नियाँ राजपूत घरानों से चुनीं। क्या इससे पूछताछ करोगे? वह मेरा निजी निर्णय था। राजनैतिक निर्णय था। सैन्य निर्णय था। उस निर्णय ने मुझे शक्तिशाली बनाया – और उस निर्णय ने साम्राज्य को एकता दी।"

(फतेहपुर सीकरी – अकबर ने एक नया शहर बसाया, जहाँ वह बार-बार जाता था। यहाँ उसने इबादतखाना बनवाया – एक ऐसी जगह जहाँ हर धर्म के विद्वान आकर बहस करते थे।)

मुल्ला दो प्याजा (हँसते हुए): "महाराज, आपने इबादतखाना बनवा दिया – अब हिंदू पंडित भी यहाँ आते हैं, ईसाई पादरी भी, यहाँ तक कि जैन साधु भी। अब सच बताइए – क्या आपने कोई नया धर्म खोज लिया है?"

अकबर (मुस्कुराते हुए): "नया धर्म नहीं – एक नया दर्शन। दीन-ए-इलाही – ईश्वर का धर्म। सब धर्मों में एक सच है – बस लोग उसे देखना नहीं चाहते। मैं उसे देखने की कोशिश कर रहा हूँ। एक

बात और – सबसे पहले आपको मनसबदारी प्रणाली से परिचित होना होगा। हर अधिकारी को एक 'मनसब' (पद) मिलेगा – उसके अनुसार घोड़े और सैनिक रखने होंगे। जितना बड़ा मनसब, उतने घोड़े, उतने सैनिक। पद बिकता नहीं – बादशाह देता है। और बादशाह ले भी सकता है।"

तथ्य: अकबर ने 1564 ई. में जजिया कर हटाया। फतेहपुर सीकरी (1571 ई.) बसाई। इबादतखाना (1575 ई.) बनवाया – जहाँ सभी धर्मों के विद्वान बहस करते थे। दीन-ए-इलाही (1582 ई.) – नया धर्म, जो नहीं चला। मनसबदारी प्रणाली – प्रशासन का एक बड़ा सुधार।

(एक रात – अकबर अपने बेटे सलीम (जो बाद में जहाँगीर बना) से बात कर रहा है।)

अकबर (बेटे से, थोड़ी थकान के साथ): "बेटा, मैंने जजिया कर हटाया – राजपूतों से दोस्ती की – मैंने एक ऐसा समाज बनाने की कोशिश की जहाँ हिंदू और मुसलमान साथ रह सकें। मैंने बैरम खाँ को माफ किया – अपने ही भाई हाकिम को माफ किया – अपने ही विद्रोही भतीजों को माफ किया… पर क्या तुम समझोगे? तुम्हारे दिल में पर्दा है जिसे मैं खोल नहीं पाया। पर मैं तुमसे प्रार्थना नहीं – मैं तुमसे आदेश देता हूँ – उस दर्शन को आगे बढ़ाना।"

(सलीम चुप रहता है।)

💚 अकबर की अच्छाई:
उदार, सहिष्णु – जजिया कर हटाया, राजपूतों को राज्य में शामिल किया। कला और साहित्य का संरक्षक – नवरत्न (9 विद्वान) उसके दरबार में थे। मनसबदारी प्रणाली – सैन्य और प्रशासन का सुधार।

🖤 अकबर की बुराई:

अपने विद्रोही भाई-बहनों और रिश्तेदारों को मरवाया – सत्ता के लिए वह भी निर्दयी हो सकता था। दीन-ए-इलाही बनाकर कुछ लोगों को नाराज किया।

तथ्य: अकबर ने पानीपत का द्वितीय युद्ध (1556) जीता। जजिया कर (1564) हटाया। फतेहपुर सीकरी (1571) बसाई। इबादतखाना (1575) बनवाया। दीन-ए-इलाही (1582) – नया धर्म। मनसबदारी प्रणाली – उसी ने शुरू की। उसके दरबार के नवरत्न – बीरबल, तानसेन, अबुल फजल, फैजी, राजा टोडरमल, मानसिंह, फकीर अज़ियाउद्दीन, अब्दुल रहीम खानखाना, मुल्ला दो प्याजा।

दृश्य **5:** जहाँगीर **(1605-1627** ई.**) – "**न्याय की जंजीर और नूरजहाँ**"**

टाइम: 1605-1627 ई.
जगह: आगरा, दिल्ली

पात्र:

· जहाँगीर (सलीम) – अकबर का बेटा, शराब और अफीम का आदी, पर न्यायप्रिय हृदय
· नूरजहाँ (मेहरुन्निसा) – जहाँगीर की पत्नी, अपने पति से अधिक बुद्धिमान
· गुरु अर्जुन देव – सिक्खों के पाँचवें गुरु
· अंग्रेज अधिकारी – व्यापार के लिए आया हुआ

(आगरा का किला। जहाँगीर ने एक बड़ी साँकल लटकवाई है – 'न्याय की जंजीर' – जो किले से बाहर तक लटकती है।)



जहाँगीर (अपने मंत्री से): "सुनो। यह जंजीर बाहर तक लटकेगी – किले के बाहर चबूतरे तक। कोई भी – चाहे वह किसान हो, चाहे मजदूर, चाहे औरत – इस जंजीर को खींच सकता है। खींचते ही मैं अपने कमरे से सुन लूंगा – और मैं खुद आकर उसकी बात सुनूंगा। मैं चाहता हूँ – मेरे राज्य में कोई अन्याय न हो। मैं शराबी हूँ – हाँ, पर अन्यायी नहीं। मैं अफीम खाता हूँ – पर मैं अपने लोगों को भूखा नहीं रखूंगा।"

(एक दिन – मेहरुन्निसा (नूरजहाँ) जहाँगीर के पास आती है। वह एक विधवा थी – जहाँगीर ने उससे शादी की।)

नूरजहाँ (अपने सिक्कों की तरफ इशारा करते हुए): "महाराज, आपने मुझे 'नूरजहाँ' – दुनिया की रोशनी – नाम दिया। पर मैं केवल नाम की रौशनी नहीं हूँ – मैं असल में दरबार चलाती हूँ। देखिए – मेरे नाम के सिक्के चल रहे हैं – 'बादशाह बेगम'। पहली बार किसी बादशाह की पत्नी के नाम के सिक्के चले हैं। आप शराब

के नशे में फैसले लेते हैं – मैं उन फैसलों को सुधारती हूँ। आप नहीं जानते, पर मैं ही आपको बचाए रखती हूँ।”



जहाँगीर (मुस्कुराते हुए, हालाँकि थोड़ा व्यंग्य भी है): “तुम सच कहती हो। मैं शराबी हूँ – पर मुझमें अच्छा आदमी है। वह अच्छा आदमी तुम बाहर निकालती हो। इसके लिए मैं तुम्हारा शुक्रगुज़ार हूँ। पर एक बात – गुरु अर्जुन देव ने विद्रोह कर दिया है – उन्हें फाँसी देनी होगी।”

नूरजहाँ (थोड़ी उदास, पर सिर झुकाकर): “वह सिख गुरु है – उसने कोई विद्रोह नहीं किया। उसने सिर्फ अपने धर्म का पालन किया – आपके बेटे खुर्रम (शाहजहाँ) ने उसे फँसाया है। पर आप बादशाह हैं – आपका फैसला।”

(जहाँगीर ने गुरु अर्जुन देव को फाँसी देने का आदेश दिया – एक ऐसा फैसला जिसने सिक्खों को मुगलों का दुश्मन बना दिया।)

तथ्य: जहाँगीर ने ‘न्याय की जंजीर’ आगरा के किले में लटकवाई। नूरजहाँ (मेहरुन्निसा) – उसकी पत्नी – के नाम के सिक्के चलते

थे। अंग्रेजों ने 1611 ई. में सूरत में पहली फैक्ट्री स्थापित की। जहाँगीर ने गुरु अर्जुन देव को फाँसी दे दी – सिखों से मुगलों की दुश्मनी का आरंभ।

💚 जहाँगीर की अच्छाई:
न्याय की जंजीर – उसकी सबसे खूबसूरत देन। कला-प्रेमी – मुगल चित्रकला उसके समय चरम पर थी।

🖤 जहाँगीर की बुराई:
शराबी – और अफीम का आदी। उसके नशे में लिए फैसले अक्सर गलत होते थे। गुरु अर्जुन देव को फाँसी – सिक्खों के साथ लंबे टकराव की शुरुआत।

तथ्य: जहाँगीर ने अपनी आत्मकथा 'तुजुके जहाँगीरी' (स्मृतियाँ) लिखी।

दृश्य 6: शाहजहाँ (1627-1657 ई.) – "ताजमहल और कैद का दर्द"

टाइम: 1627-1657 ई., फिर 1657-1666 ई. (कैद में)

जगह: आगरा (ताजमहल), दिल्ली, आगरा का किला (कैद)

पात्र:

· शाहजहाँ (खुर्रम) – जहाँगीर का बेटा, महत्वाकांक्षी, कला-प्रेमी
· मुमताज महल (अर्जुमंद बानो) – उसकी पत्नी, जिसके लिए उसने ताज बनवाया
· औरंगजेब – शाहजहाँ का तीसरा बेटा, कट्टर

· दारा शिकोह – शाहजहाँ का बड़ा बेटा, उदार, सूफी

(आगरा। शाहजहाँ अपनी पत्नी मुमताज के पास बैठा है – वह बीमार है। वह अपनी 14वीं संतान को जन्म देने वाली है।)



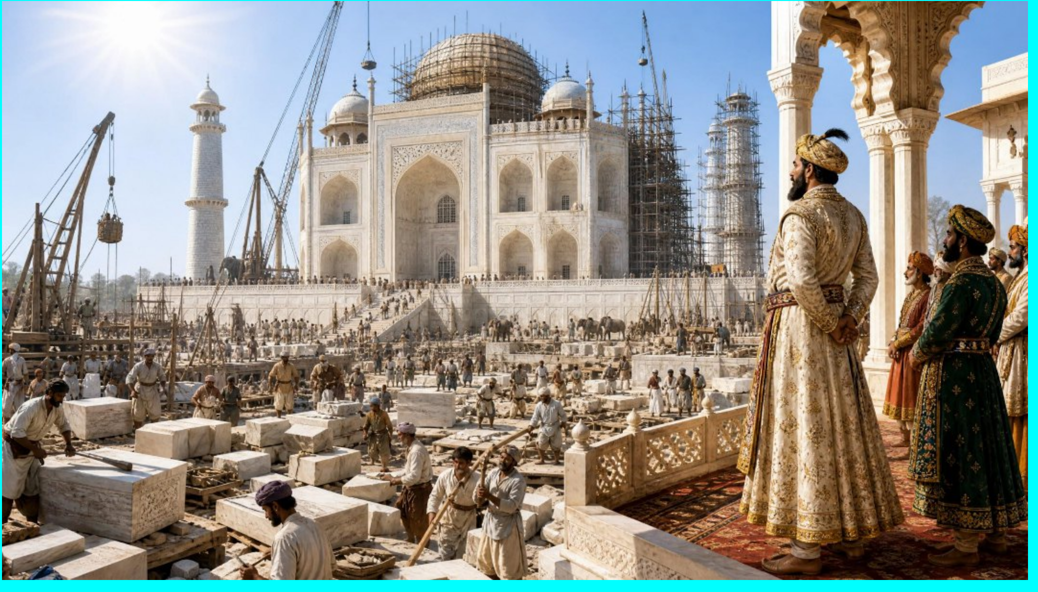
शाहजहाँ (पत्नी का हाथ पकड़कर): “मुमताज, तुम कमज़ोर हो रही हो – तुम घर में रुको।”

मुमताज (धीरे से): “महाराज, मेरी यही अंतिम इच्छा है – एक ऐसा स्मारक बनवाना… जैसा दुनिया ने कभी नहीं देखा। संगमरमर का… सफेद… हीरों और मोतियों से सजा। मेरी याद में।”

(मुमताज की मृत्यु हो जाती है। शाहजहाँ तीन दिन तक अपने कमरे में बंद रहता है – न खाता है, न पीता है। जब वह बाहर आता है, उसके बाल सफेद हो चुके हैं।)

शाहजहाँ (अपने सेनापति से): “मुमताज ने एक स्मारक माँगा था – मैं उसे ताजमहल दूंगा। इतना सुंदर, इतना अनोखा, कि पूरी दुनिया देखे और याद रखे – कि प्रेम कितना सुंदर होता है, और कितना दर्द देता है।”

(ताजमहल बन रहा है – हजारों मजदूर, सैकड़ों कारीगर, 22 साल लगे।)



(दिल्ली। शाहजहाँ ने लाल किला बनवाया – और उसके अंदर दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास। उसने जामा मस्जिद भी बनवाई। और उसके सिंहासन पर – मयूर सिंहासन – सोने का, हीरों-जवाहरात से जड़ा।)

शाहजहाँ (दरबार में): “मैं चाहता हूँ – मेरी राजधानी दुनिया की सबसे सुंदर हो। मेरे महल दुनिया के सबसे भव्य हों। और मेरी मुमताज की याद… हर यात्री, हर बादशाह, हर फकीर – उसके समाधि के सामने झुके।”

(पर उसका अपना बेटा – औरंगजेब – उससे खुश नहीं था।)

औरंगजेब (अपने भाई दारा से, ईर्ष्या के स्वर में): “भाई, तुम बड़े हो – पर मैं ज्यादा ताकतवर हूँ। पिता तुम्हें चाहते हैं – पर सेना मेरी है। तुम उपनिषदों का फारसी में अनुवाद करवा रहे हो – मैं कुरान पढ़ रहा हूँ। तुम सूफी संतों के पीछे भागते हो – मैं मैदान में तलवार चलाता हूँ। मैं बादशाह बनूंगा – तुम्हारी किताबें किसी काम नहीं आएंगी।”



(1657 ई. – औरंगजेब ने शाहजहाँ को कैद कर लिया। आगरा के किले में – वही किला जहाँ से ताजमहल दिखता था।)

शाहजहाँ (अपनी कोठरी की खिड़की से ताजमहल की तरफ देखते हुए, फुसफुसाते हुए): “मुमताज… मैं तुम्हारे पास नहीं आ सका – मैं यहाँ कैद हूँ। पर मैं तुम्हें देख सकता हूँ – हर रात, चाँद की रौशनी में, वह सफेद संगमरमर चमकता है। क्या औरंगजेब जानता है कि उसने मुझे क्या खोया है? उसने मुझसे तख्त छीना – पर उसने मुझसे मुमताज को नहीं छीना। वहाँ तुम हो – और यहाँ मैं हूँ। एक दीवार के दो तरफ।”

तथ्य: शाहजहाँ ने ताजमहल (1631-1653 ई.) मुमताज महल की याद में बनवाया – यूनेस्को विश्व धरोहर है। लाल किला (दिल्ली, 1638 ई.) – इसकी प्रमुख इमारतें: दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, रंगमहल। जामा मस्जिद (दिल्ली) – उसी ने बनवाई। मोती मस्जिद (आगरा) भी उसी की देन है। मयूर सिंहासन – सोने से निर्मित, हीरे-जवाहरात से जड़ा। 1657 ई. में बीमार पड़े – बेटों के बीच युद्ध छिड़ गया – औरंगजेब विजयी हुआ और शाहजहाँ को आगरा के किले में कैद कर दिया। 1666 ई. में उसकी मृत्यु हुई – ताजमहल में मुमताज के पास दफनाया गया।

💚 शाहजहाँ की अच्छाई:
कला और स्थापत्य का महान संरक्षक – ताजमहल, लाल किला, जामा मस्जिद, मयूर सिंहासन – ये सब उसकी देन हैं।

🖤 शाहजहाँ की बुराई:
अपने बड़े भाइयों को मरवाकर गद्दी पाई – क्रूर भी था। राजकोष खाली कर दिया – इन भव्य इमारतों ने खजाना खाली कर दिया। औरंगजेब को समय रहते नहीं रोक पाया।

दृश्य **7:** औरंगजेब **(1658-1707** ई.**) – "**जजिया कर और दक्कन का जंजाल**"**

टाइम: 1658-1707 ई.
जगह: दिल्ली, सैन्य शिविर दक्कन में, बीजापुर, गोलकुंडा ।

पात्र:

· औरंगजेब – शाहजहाँ का बेटा, कट्टर सुन्नी मुस्लिम, सख्त, निर्दयी, पर अत्यंत अनुशासित

· दारा शिकोह – उसका बड़ा भाई, उदार, सूफी, मारा गया
· गुरु तेग बहादुर – सिक्खों के नौवें गुरु
· शिवाजी महाराज – मराठा राजा, लगातार औरंगजेब को हराते रहे
· शाहजहाँ – वृद्ध पिता, कैद में

(दिल्ली के पास – समुगढ़ का युद्ध। औरंगजेब ने अपने बड़े भाई दारा शिकोह को हराया।)

औरंगजेब (अपने सैनिकों से): “दारा शिकोह एक धर्म-विरोधी है – उसने उपनिषदों का अनुवाद करवाया, उसने हिंदू संतों के पास जाकर ज्ञान लिया। एक मुसलमान को ऐसा नहीं करना चाहिए। उसे मौत की सज़ा दी जाएगी।”



(दारा शिकोह को दिल्ली की सड़कों पर ले जाया गया – अपमानित किया गया – फिर मार डाला गया।)

औरंगजेब (पिता शाहजहाँ के कैद से, उनसे मिलने आता है – ठंडे स्वर में): “पिता, आपने दारा को बादशाह बनाना चाहा था – पर सेना ने मुझे चुना। अब मैं बादशाह हूँ। आप इसी किले में रहिए – मैंने आपके लिए अच्छा खाना, अच्छे कपड़े और वह खिड़की दी है जहाँ से ताजमहल दिखता है। मैं क्रूर नहीं हूँ – मैं बस अनुशासन में विश्वास करता हूँ। आप स्वर्ग जाएँगे – पर धरती पर अब मेरा राज होगा।”

(शाहजहाँ उसकी तरफ देखता है – पर कुछ नहीं बोलता। आँखों में बस दर्द है।)

(दिल्ली – दरबार। औरंगजेब ने जजिया कर – हिंदुओं पर धर्म कर – वापस लगा दिया (1679 ई.) – जिसे अकबर ने हटा दिया था।)

औरंगजेब (दरबार में): “मैंने जजिया कर फिर से लगा दिया है। कुछ लोग कहेंगे – अकबर ने हटा दिया था… अकबर महान था – पर उसने इस्लाम के सिद्धांतों को छोड़ दिया। धर्म कर – जजिया – उन लोगों पर लगता है जो मुस्लिम नहीं हैं। यह कुरान का आदेश है – और मैं कुरान के हर आदेश का पालन करूंगा। हिंदू चाहें तो मुस्लिम बन सकते हैं – और उनसे कर नहीं लिया जाएगा। यह उनकी पसंद है।”

(एक हिंदू मंत्री – खुलेआम विरोध करता है।)

हिंदू मंत्री: “महाराज, यह गलत है! हम मुसलमान नहीं बनना चाहते – पर हम आपकी जनता हैं। हम कर देते हैं – हम सेना में लड़ते हैं – हम आपकी जान बचाने के लिए खड़े होते हैं। और आप हम पर धर्म कर लगा रहे हैं? यह अन्याय है।”

औरंगजेब (ठंडी मुस्कान के साथ): “यह अन्याय नहीं – यह न्याय है। मेरे धर्म में यही नियम है। जो राज्य में रहता है, उसे उस राज्य

के धर्म के नियम मानने चाहिए। और ‘महाराज’ कहकर पुकारने वाले थे – अब क्या कोई बोलेगा?”

(कोई नहीं बोलता। सन्नाटा।)

तथ्य: औरंगजेब ने 1679 ई. में हिंदुओं पर जजिया कर फिर से लगाया। उसने ‘झरोखा दर्शन’ (बादशाह का लोगों को दिखना) और ‘तुलादान प्रथा’ (सोने-चाँदी के साथ राजा का तौलना) पर प्रतिबंध लगा दिया – वह सादगी में विश्वास करता था।

(दक्कन – बीजापुर के किले के सामने। औरंगजेब बूढ़ा हो चुका है – उसके बाल सफेद हैं, पर वह अभी भी तलवार उठा सकता है।)

औरंगजेब (अपने सेनापति से): “यह दक्कन… यह मुझे बर्बाद कर देगा। बीजापुर जीत लिया – गोलकुंडा जीत लिया – पर यह मराठा शिवाजी… उसने कितनी बार मुझे हराया? पहले तो उसने अफजल खाँ को मारा – मेरा सबसे अच्छा सेनापति। फिर उसने सूरत लूटी। फिर उसने बरदपुर लूटा। मैंने उसे कैद किया – पर वह भाग गया। अपने बेटे संभाजी के साथ। मैंने संभाजी को पकड़वाया – मरवा दिया – पर मराठा नहीं मरे। उनके नए नेता – पेशवा – आए, और वे और अधिक ताकतवर हो गए। मैं 27 साल से दक्कन में हूँ – मेरी सेना थक गई – मेरा खजाना खाली है – और मैं अपनी कब्र भी यहीं खोद रहा हूँ।”

तथ्य: औरंगजेब ने बीजापुर (1686 ई.) और गोलकुंडा (1687 ई.) जीत लिया – पर शिवाजी और मराठों को नहीं जीत सका। वह दक्कन में 27 साल (1681-1707) बिताकर मरा – उसने कहा था, ‘मैंने अपना कफन खुद कमाया – टोपियाँ बेचकर।’ (वह टोपियाँ सिलना जानता था – उन्हें बाजार में बेचता था और पैसे कफन के लिए रखता था।)

(दिल्ली – औरंगजेब की मृत्युशैया। वह 89 साल का है – बूढ़ा, बीमार, हड्डियों का ढाँचा।)

औरंगजेब (अपने बेटे से, अंतिम साँस लेते हुए): “मैंने कभी भोजन में दो रोटी से अधिक नहीं खाई… मैंने कभी दो वस्त्र – एक सर्दी के लिए, एक गर्मी के लिए – से अधिक नहीं पहने। मैंने जजिया कर लगाया – क्या यह सही था? मुझे नहीं पता। मैंने दारा भाई को मरवाया – क्या यह सही था? मुझे नहीं पता। मैंने अपने पिता को कैद किया – क्या यह सही था? मुझे नहीं पता। पर मैं जानता हूँ – मैंने अपनी पूरी कोशिश की – इस्लाम के हर नियम का पालन किया। पर क्या इस्लाम ने मुझे जीतना सिखाया – या मुझे हारना भी सिखाया? आखिरी साँस पर भी मुझे कोई सुकून नहीं है… मैं बस यही कहूंगा – कि मैंने कोशिश की… और शायद मेरी कोशिश ही मेरी सज़ा है ।



तथ्य: औरंगजेब के समय मुगल साम्राज्य का सर्वाधिक विस्तार हुआ – पूरे भारत पर एक छत्र। पर उसने सिख गुरु तेग बहादुर को

फाँसी दी – जिन्होंने इस्लाम कबूल करने से मना कर दिया। उसने जजिया कर (1679) लगाया। दक्कन में 27 साल बिताकर मरा – उसकी कब्र बहुत साधारण है – उसने खुद लिखवाया, 'यहाँ एक गरीब बूढ़ा दफन है।'

💚 औरंगजेब की अच्छाई:
कट्टर मुस्लिम – धार्मिक था, भ्रष्ट नहीं था। खुद टोपियाँ बेचकर कफन के पैसे कमाए – सादगी में विश्वास करता था। शराब और नशे से दूर रहा।

🖤 औरंगजेब की बुराई:
असहिष्णु, क्रूर – सिख गुरु तेग बहादुर को फाँसी दी। हिंदुओं पर जजिया कर लगाया। दारा शिकोह (अपने उदार भाई) को मरवाया। अपने पिता शाहजहाँ को कैद किया। दक्कन में 27 साल बिताकर मुगल खजाना खाली कर दिया – मराठों को हरा नहीं सकने के कारण मुगल साम्राज्य कमजोर पड़ गया।



दृश्य 8: मुगल साम्राज्य का पतन

(दादा और पोता – फिर से उसी जगह बैठे हैं।)

दादा: “बेटा, औरंगजेब के बाद कोई बड़ा बादशाह नहीं आया। बहादुर शाह प्रथम – लोग उसे ‘शाहे बेखबर’ (लापरवाह बादशाह) कहते थे। मुहम्मद शाह ‘रंगीला’ – नाच-गाने में लगा रहा। 1739 ई. में ईरानी बादशाह नादिरशाह ने दिल्ली लूटी – मयूर सिंहासन ले गया, कोहिनूर हीरा ले गया – करोड़ों का सोना-चाँदी लूटा – औरबंगजेब के 27 साल की कमाई एक रात में बर्बाद हो गई। और फिर... 1857 ई. में अंग्रेजों ने आखिरी मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर को बंदी बनाकर रंगून (बर्मा) भेज दिया – वहीं मर गया। मुगल साम्राज्य खत्म हो गया।”

पोता: “तो दादा – तोमर से राजपूतों ने दिल्ली बसाई – गुलामों ने सल्तनत चलाई – मुगलों ने ताजमहल बनवाया – पर आखिर में सब चले गए... और अंग्रेज आ गए।”

दादा (गंभीरता से): “हाँ बेटा। और अब हमें अंग्रेजों की कहानी सुननी है – जो कभी ताजमहल नहीं बनवा सके, पर पूरे देश को गुलाम बना दिया।”

🔄 तुलना – भारत और विश्व (मुगल काल)

▪समय (लगभग) भारत में और विश्व में
▪1526-1530 ई.
 ▪बाबर – पानीपत-1, बाबरनामा ।
 ▪यूरोप में - प्रोटेस्टेंट सुधार (मार्टिन लूथर) ।
▪1530-1556 ई.
▪ हुमायूँ (निर्वासन), शेरशाह सूरी (जब्ती प्रणाली, ग्रांड ट्रंक रोड) ।

▪ मैजलन की जलयात्रा (1522)
▪इंग्लैंड में चर्च ऑफ इंग्लैंड
▪1556-1605 ई.
▪अकबर –
जजिया कर हटाया, फतेहपुर सीकरी, दीन-ए-इलाही मनसबदारी।
▪इंग्लैंड में - एलिजाबेथ प्रथम
स्पेनिश
▪आर्मडा का पतन (1588), शेक्सपियर।
▪1605-1627 ई.
▪जहाँगीर –
न्याय की जंजीर, नूरजहाँ, सूरत में अंग्रेजों की फैक्ट्री (1611)।
▪जेम्सटाउन की स्थापना (अमेरिका, 1607)
▪गैलीलियो की दूरबीन खोज
▪1627-1657 ई.
▪ शाहजहाँ –
ताजमहल, लाल किला, जामा मस्जिद, मयूर सिंहासन।
▪इंग्लैंड में गृहयुद्ध
▪लुई XIV (फ्रांस)
▪1658-1707 ई.
▪औरंगजेब –
जजिया कर (1679), सिख गुरु तेग बहादुर को फाँसी।
▪दक्कन में 27 साल न्यूटन की गति के नियम
▪जापान में एडो काल (समुराई)

इस अंक के प्रश्न-उत्तर

▪पानीपत का प्रथम युद्ध कब हुआ और किसके बीच? 1526 ई. – बाबर (मुगल) vs इब्राहिम लोदी।
▪'बाबरनामा' किस भाषा में लिखी गई?

तुर्की भाषा में (बाबर की आत्मकथा)।
▪हुमायूँ को किसने हराया और कौन-से युद्धों में?
शेरशाह सूरी ने – चौसा (1539) और कन्नौज (1540) में।
▪अकबर का जन्म कहाँ हुआ था?
अमरकोट (सिंध) – 1542 ई. (जब हुमायूँ निर्वासन में था)।
▪अकबर ने कौन-सा कर हटाया और कब?
जजिया कर (हिंदुओं पर धर्म कर) – 1564 ई. में।
▪दीन-ए-इलाही कब बना और किसने बनाया?
1582 ई. – अकबर ने (नया धर्म, जो नहीं चला)।
▪'न्याय की जंजीर' किसने और कहाँ लगवाई?
जहाँगीर ने – आगरा के किले में।
▪नूरजहाँ का असली नाम क्या था?
मेहरुन्निसा।
▪ताजमहल किसने बनवाया और किसके लिए?
शाहजहाँ ने – अपनी पत्नी मुमताज महल के लिए (1631-1653) ई.।
▪औरंगजेब ने जजिया कर कब लगाया?
1679 ई. में (अकबर ने हटा दिया था)।
▪औरंगजेब ने किस सिख गुरु को फाँसी दी?
गुरु तेग बहादुर (नौवें सिख गुरु)।

महत्वपूर्ण याद रखने योग्य बिंदु

1. बाबर (1526-1530 ई.)
   · पानीपत का प्रथम युद्ध (1526) – तुलगुमा नीति, तोपें → मुगल साम्राज्य की नींव।
   · खानवा (1527) और चन्देरी (1528) युद्ध।
   · 'बाबरनामा' – तुर्की में आत्मकथा, बाद में फारसी अनुवाद।
2. हुमायूँ (1530-1540, 1555-1556 ई.)

· शेरशाह सूरी से हार – चौसा (1539) और कन्नौज (1540)।
· अकबर का जन्म अमरकोट (1542) – निर्वासन के दौरान।
· 1555 – दिल्ली वापसी, पर 1556 में दीनपनाह में गिरकर मृत्यु।

3. शेरशाह सूरी (1540-1545 ई.)

· 'जब्ती' प्रणाली – भूमि की पैमाइश, उपज का 1/3 कर।
· ग्रांड ट्रंक रोड – कोलकाता से पेशावर।
· शुद्ध सोने-चाँदी के सिक्के – अकबर ने इसे ही अपनाया।
· कालिंजर में तोप के गोले से मृत्यु (1545)।

4. अकबर (1556-1605 ई.)

· पानीपत का द्वितीय युद्ध (1556) – हेमू पराजित।
· जजिया कर हटाया (1564) – महत्वपूर्ण सुधार।
· फतेहपुर सीकरी (1571) – नई राजधानी।
· इबादतखाना (1575) – धार्मिक बहस का केंद्र।
· दीन-ए-इलाही (1582) – नया धर्म, सफल नहीं हुआ।
· मनसबदारी प्रणाली – सैन्य-प्रशासकीय सुधार।
· नवरत्न (9 विद्वान) – बीरबल, तानसेन, अबुल फजल, फैजी, राजा टोडरमल, मानसिंह, फकीर अज़ियाउद्दीन, अब्दुल रहीम खानखाना, मुल्ला दो प्याजा।

5. जहाँगीर (1605-1627 ई.)

· 'न्याय की जंजीर' – आगरा के किले में।
· नूरजहाँ (मेहरुन्निसा) – उसके नाम के सिक्के चले।
· गुरु अर्जुन देव (सिख) को फाँसी – सिख-मुगल दुश्मनी की शुरुआत।
· अंग्रेजों की पहली फैक्ट्री – सूरत (1611)।

6. शाहजहाँ (1627-1657 ई.)

· ताजमहल (1631-1653) – सफेद संगमरमर का प्रेम स्मारक।
· लाल किला (दिल्ली, 1638) – दीवान-ए-आम, दीवान-ए-खास, रंगमहल।
· जामा मस्जिद, मोती मस्जिद, मयूर सिंहासन।

· औरंगजेब ने पिता को आगरा के किले में कैद किया (1657) – 1666 में मृत्यु।

7. औरंगजेब (1658-1707 ई.)

· सबसे बड़ा मुगल सम्राट (क्षेत्रफल में) – पर अंतिम शक्तिशाली।

· जजिया कर (1679) – हिंदुओं पर धर्म कर फिर से लागू।

· गुरु तेग बहादुर (सिख) को फाँसी (1675)।

· 'झरोखा दर्शन', 'तुलादान प्रथा' पर प्रतिबंध – सादगी की नीति।

· दक्कन में 27 साल – बीजापुर (1686), गोलकुंडा (1687) जीते, पर मराठों को नहीं हरा पाए।

· उसकी मृत्यु के बाद मुगल साम्राज्य का तीव्र पतन शुरू – नादिरशाह (1739) ने दिल्ली लूटी।

8. मुगल साम्राज्य का पतन – औरंगजेब के बाद कमज़ोर बादशाह → नादिरशाह की लूट (1739) → अंग्रेजों ने 1857 में बहादुर शाह जफर को बंदी बनाया।

अंक समाप्त

अगले अंक 11 में : मराठा साम्राज्य – शिवाजी महाराज (गुरिल्ला युद्ध, अफजल खाँ का वध, राज्याभिषेक, अष्टप्रधान मंत्रिमंडल), पेशवा काल (बालाजी विश्वनाथ, बाजीराव प्रथम, बालाजी बाजीराव), पानीपत का तृतीय युद्ध (1761), मराठा साम्राज्य का अंत (1818)।

तो चलिए, अब हम इस महानाटक के ग्यारहवें अंक में प्रवेश करते हैं।

यह वह अंक है जहाँ मुगल साम्राज्य बुढ़ापे में काँप रहा था, और उसी समय एक नई शक्ति पैदा हुई – मराठा। एक छोटे से किले से शुरू होकर, शिवाजी महाराज ने एक ऐसा साम्राज्य खड़ा किया जिसने औरंगजेब को उसकी नींद से जगा दिया। गुरिल्ला युद्ध, अष्टप्रधान मंत्रिमंडल, और एक ऐसा राज्याभिषेक जिसने उन्हें 'छत्रपति' बना दिया।

यह कहानी है मराठा साम्राज्य की – शिवाजी के सपने से लेकर पानीपत के तीसरे युद्ध तक, और फिर अंग्रेजों के हाथों अंत तक।

अंक **11:** मराठा साम्राज्य **– "**शिवाजी के सपने से लेकर पानीपत के खून तक**"**

(1627 ई. से 1818 ई. तक – वह दहाड़ जिसने मुगलों की नींद उड़ा दी)

प्रस्तावना**:** एक किला**,** एक लड़का**,** एक सपना

एक शाम। दादा और पोता एक पहाड़ी किले के खंडहर के पास बैठे हैं। हवा तेज चल रही है – मानो वहाँ अभी भी कोई तलवार चला रहा हो।

पोता: "दादा, औरंगजेब ने मुगल साम्राज्य को बहुत बड़ा बना दिया – पर आपने कहा था कि मुगल साम्राज्य औरंगजेब के बाद टूट गया। क्यों? इतना बड़ा साम्राज्य अचानक कैसे टूट गया?"

दादा (एक पत्थर उठाकर, उसे पलटते हुए – शायद उसी किले का एक टुकड़ा): “बेटा, साम्राज्य बड़े होते हैं तलवार से – पर टिकते हैं व्यवस्था से। औरंगजेब ने 27 साल दक्कन में बिताए – दिल्ली से दूर। मराठों से लड़ता रहा, पर उन्हें हरा नहीं सका। मराठा कोई सेना नहीं थे – वे एक विचार थे। ‘हिंदवी स्वराज्य’ – अपना राज्य, अपने नियम, अपनी मिट्टी। यह विचार एक लड़के ने पैदा किया था – शिवाजी।”

पोता: “शिवाजी? वह कौन थे?”



दादा (मुस्कुराते हुए): “बेटा, 1627 ई. की बात है। पुणे के पास शिवनेर किले में एक बच्चे का जन्म हुआ – शिवाजी। उसके पिता शाहजी भोंसले एक योद्धा थे – उसकी माँ जीजाबाई एक बहुत साहसी महिला थीं। शिवाजी जब बड़ा हुआ, तो उसने प्रतिज्ञा की – ‘मैं मराठों का एक स्वतंत्र राज्य बनाऊंगा।’ और उसने तोरण का किला जीतकर यह सफर शुरू किया – केवल 16 साल की उम्र में। अब चलो – कहानी आगे बढ़ाते हैं।”

दृश्य **1:** शिवाजी महाराज **(1627-1680** ई.**) – "**बाघ नख से छत्रपति तक**"**

टाइम: 1659-1674 ई.
जगह: प्रतापगढ़ किला (पुणे के पास), रायगढ़ (राजधानी)

पात्र:

· शिवाजी – शाहजी भोंसले और जीजाबाई का पुत्र, मध्यम कद, तेज आँखें, दाढ़ी नहीं (उस समय), बाघ नख हाथ में लिए
· जीजाबाई – उसकी माँ, विदुषी, साहसी, हर युद्ध से पहले शिवाजी को आशीर्वाद देती थीं
· अफजल खाँ – बीजापुर का सेनापति, विशालकाय देह, मूँछें इतनी बड़ी कि लोग डर जाते थे
· गागा भट्ट – काशी के विद्वान, जिन्होंने शिवाजी का राज्याभिषेक करवाया
· समर्थ रामदास – शिवाजी के आध्यात्मिक गुरु

(प्रतापगढ़ किले के पास – जंगल। बीजापुर के सुल्तान ने शिवाजी को मारने के लिए अफजल खाँ को भेजा। अफजल खाँ विशालकाय था – उसकी मूँछें ही इतनी बड़ी थीं कि लोग उसका नाम सुनकर काँप जाते थे।)

(शिवाजी अपने तम्बू में बैठे हैं – उनके हाथ में बाघ नख (बाघ के पंजे जैसी एक छोटी सी धार) है। वह घूर रहे हैं उसे – मानो पूछ रहे हों – 'क्या यह काफी होगा?')

शिवाजी (खुद से, धीरे से): "अफजल खाँ मुझसे तीन गुना बड़ा है – उसके पास हाथी हैं, तोपें हैं, और उसकी तलवार मेरे बराबर लंबी है। पर मेरे पास पहाड़ हैं – मेरे पास यह जंगल है – मेरे पास बाघ नख है। एक झटका – अगर सही जगह लगा, तो हाथी भी गिर जाता है। एक बार देखता हूँ – उसकी छाती कितनी मोटी है।"

(वह उठते हैं – घोड़े पर सवार होते हैं – और नीचे उतरते हैं जहाँ अफजल खाँ उनसे मिलने आया है।)

(दृश्य बदलता है – एक साफ-सुथरे मैदान में, दोनों सेनाओं से दूर, अफजल खाँ और शिवाजी आमने-सामने।)

अफजल खाँ (गर्व से, शिवाजी की ओर देखते हुए): "शिवाजी, तुम एक छोटे से पर्वत के राजा हो – मेरा साम्राज्य विशाल है। मेरे सामने घुटने टेको, या तुम मरोगे। तुम्हारे पास क्या है – यह छोटा सा किला? हम बीजापुर वाले हज़ारों हाथी ला सकते हैं – तुम्हारे सामने सब कुछ तबाह कर देंगे।"

शिवाजी (शांत, पर आँखों में चमक, न झुके, न डरे): "अफजल खाँ, मैं घुटने नहीं टेकता। यह मेरी मातृभूमि है – और मैं इसकी रक्षा करूंगा। तुम सोचते हो कि बड़ी सेना, बड़े हाथी, बड़ी तोपें – यही ताकत है? तुम गलत हो। असली ताकत है – मिट्टी से प्यार। और मेरी मिट्टी से मैंने कसम खाई है – कभी किसी के आगे नहीं झुकूंगा। चाहे तुम बड़े हो, चाहे तुम छोटे – तुम मुझे नहीं हरा सकते।"

अफजल खाँ (हँसते हुए): "अच्छा – बात करता है। बड़ा साहस है तुझ में – पर अकारथ। आ – गले लग।"

(अफजल खाँ शिवाजी को गले लगाने के लिए आगे बढ़ता है – पर असल में वह उन्हें कुचलना चाहता है। जैसे ही वह बाँहें फैलाता है,

शिवाजी झुकते हैं – और उसी वक्त, अपने हाथ में छुपे बाघ नख से अफजल खाँ की छाती चीर देते हैं।)

(अफजल खाँ चीखता है – खून बहने लगता है – वह ज़मीन पर गिर जाता है।)



अफजल खाँ (गिरते हुए, आखिरी शब्द): “तू... धोखेबाज... कहाँ था यह...?”

शिवाजी (खून से सने हाथ पोंछते हुए, ठंडे स्वर में): “यह धोखा नहीं – यह युद्ध है। तुम मुझे कुचलना चाहते थे – मैंने तुम्हें कुचल दिया। अब जाओ – अपने सुल्तान से कहना – शिवाजी ने कहा है – अब पहाड़ों के राजा की ताकत देख ली?”

(अफजल खाँ की सेना भाग खड़ी होती है। शिवाजी उसी रात अपने किले में लौटते हैं – जीजाबाई उनकी प्रतीक्षा कर रही हैं।)

जीजाबाई (बेटे को गले लगाते हुए, आँखों में आँसू, पर चेहरे पर गर्व): “शिवा, तुम्हें पता है – मैंने उस दिन क्या सोचा था जब तुम

पैदा हुए थे? मैंने सोचा था – यह बच्चा या तो मर जाएगा, या बादशाह बनेगा। आज तुमने अफजल खाँ को मारा – तुम बादशाह बनोगे। मुझे गर्व है – तुम मेरे बेटे हो।”

शिवाजी (माँ के पैर छूते हुए): “माँ, यह तुम्हारी दुआ थी – तुम्हारी सिखाई हुई बातें। तुमने कहा था – ‘मराठा कभी झुके नहीं।’ मैंने वही किया।”

तथ्य: शिवाजी ने बीजापुर के सेनापति अफजल खाँ को प्रतापगढ़ के पास 1659 ई. में पराजित किया – ‘बाघ नख’ (बाघ के पंजे जैसी धार) का प्रयोग किया। इस घटना ने शिवाजी को एक बड़े योद्धा के रूप में स्थापित किया। शिवाजी ने गुरिल्ला युद्ध पद्धति (पहाड़ियों में छुपकर, अचानक हमला, फिर गायब हो जाना) को अपनाया – यह बड़ी सेनाओं के खिलाफ बहुत प्रभावी थी।

(दृश्य बदलता है – 1674 ई. – रायगढ़ किला। पहाड़ी की चोटी पर। शिवाजी का राज्याभिषेक। हज़ारों लोग इकट्ठा हैं। शिवाजी सोने के सिंहासन पर बैठे हैं – पास में जीजाबाई, गागा भट्ट, समर्थ रामदास।)



गागा भट्ट (वैदिक मंत्रों का उच्चारण करते हुए): “आज के दिन से, शिवाजी भोंसले ‘छत्रपति शिवाजी महाराज’ होंगे – एक स्वतंत्र राज्य के स्वामी। मुगलों के आगे नहीं झुकेंगे – बीजापुर के आगे नहीं झुकेंगे। यह एक नए युग का प्रारंभ है।”

शिवाजी (उठकर खड़े होते हैं, तलवार उठाकर आकाश की ओर): “मैं प्रतिज्ञा करता हूँ – मेरा राज्य हिंदू-मुसलमान, सबके लिए खुला होगा। यहाँ कोई जजिया कर नहीं होगा – कोई जबरन धर्म परिवर्तन नहीं होगा। हर व्यक्ति अपने धर्म का पालन कर सकता है। और हर मराठा – हर किसान – हर योद्धा – मेरा परिवार है।”

(जीजाबाई रोती हैं – खुशी के आँसू।)

जीजाबाई (अपने बेटे से, थोड़ी काँपती आवाज में): “शिवा, मुझे याद है – जब तुम छोटे थे, तुमने कहा था – ‘माँ, मैं मराठों का राजा बनूंगा।’ सब हँसे थे – ‘यह बच्चा क्या बादशाह बनेगा?’ आज वह दिन आ गया है। तुम्हारे पिता शाहजी… अगर वह जीवित होते…”

शिवाजी (माँ को गले लगाते हुए): “माँ, आँसू मत बहाओ। पिता देख रहे हैं – वहाँ ऊपर। और वह गर्व महसूस कर रहे हैं।”

तथ्य: 6 जून, 1674 – शिवाजी का राज्याभिषेक – रायगढ़ किले में। उन्होंने ‘छत्रपति’ की उपाधि धारण की – अर्थात ‘स्वतंत्र राज्य का स्वामी’। राज्याभिषेक काशी के प्रसिद्ध विद्वान गागा भट्ट से करवाया गया। शिवाजी के आध्यात्मिक गुरु समर्थ रामदास थे।

(राज्याभिषेक के बाद – शिवाजी ने अपना दरबार बनाया। आठ मंत्रियों की परिषद – अष्टप्रधान।)

शिवाजी (दरबार में, आठ मंत्रियों को संबोधित करते हुए): “मैंने आठ मंत्री नियुक्त किए हैं – हर एक की अपनी जिम्मेदारी होगी।

पेशवा – प्रधानमंत्री – सारे काम की देखरेख।

अमात्य – वित्त मंत्री – खजाना संभालना।

मंत्री – अभिलेख रखने वाला – हर फैसले का दस्तावेज बनाना।

सचिव – पत्रव्यवहार – राज्य के सारे पत्र, संदेश, आदेश।

सुमंत – विदेश मंत्री – दूसरे राज्यों से बातचीत, गठबंधन।

सेनापति – सेनाध्यक्ष – पूरी सेना का नेतृत्व।

पंडित राव – धार्मिक मामले – हिंदू धर्म के कर्मकांड, दान, तीर्थ।

न्यायाधीश – न्याय मंत्री – अदालतें, मुकदमे, सजाएँ।

यह आठ मंत्री – मेरी ताकत होंगे। अकेला राजा कुछ नहीं कर सकता। पर एक टीम – राज्य बदल सकती है।”



तथ्य: अष्टप्रधान – आठ मंत्रियों की परिषद – शिवाजी के शासन की एक अनोखी उपलब्धि। शिवाजी की कर व्यवस्था मलिक अम्बर (अहमदनगर के सेनापति) की व्यवस्था पर आधारित थी – उन्होंने इसे सुधारा और मराठा राज्य में लागू किया।

💚 शिवाजी की अच्छाई:
चतुर, साहसी, दूरदर्शी – उन्होंने गुरिल्ला युद्ध को पूरी ताकत से इस्तेमाल किया। राज्याभिषेक करके एक जाति विशेष (मराठा) को राष्ट्रीय पहचान दी। अष्टप्रधान – एक संतुलित प्रशासन।

🖤 शिवाजी की बुराई:
कभी-कभी बहुत क्रूर हो जाते थे – अफजल खाँ को उन्होंने कोई मौका नहीं दिया (हालाँकि युद्ध में यह उचित था)। अपने सौतेले भाई व्यंकोजी को भी हराने के बाद कठोर शर्तें दीं।

तथ्य: शिवाजी का जन्म (1627), राज्याभिषेक (1674), मृत्यु (1680)।

दृश्य **2:** पेशवा काल **(1713-1818** ई.**) – "**जब सत्ता हाथ बदलती है**"**

टाइम: 1680-1713 ई. (संक्रमण), 1713-1818 ई. (पेशवा)

दादा: “बेटा, 1680 ई. में शिवाजी की मृत्यु हो गई। उनके बाद मराठा साम्राज्य कमजोर पड़ गया – उनके बेटे संभाजी और फिर राजाराम बादशाह बने, पर औरंगजेब से नहीं जीत सके। औरंगजेब ने संभाजी को पकड़कर मरवा दिया। पर औरंगजेब भी दक्कन में फँसा रहा – मराठों को हरा नहीं सका। औरंगजेब की मृत्यु (1707) के बाद मराठों ने फिर से ताकत बटोरी। 1713 ई. में बालाजी विश्वनाथ मराठों के पहले पेशवा (प्रधानमंत्री) बने। और धीरे-धीरे पेशवा ही असली शासक बन गए – शिवाजी के वंशज (‘छत्रपति’) तो नाम के राजा रह गए।”

बालाजी विश्वनाथ (1713-1720 ई.) – "मराठा साम्राज्य का दूसरा संस्थापक"

(दरबार – पुणे। बालाजी विश्वनाथ बूढ़े हैं, पर आँखों में चमक है। उनके सामने एक मुगल दूत खड़ा है।)



बालाजी विश्वनाथ (धीरे, पर हर शब्द को तौलकर): “मुगल साम्राज्य अब वह नहीं रहा – औरंगजेब मर चुका है। उसके बाद तो बादशाह एक से एक कमज़ोर आए। अब मराठा समय है। मैंने मुगलों से एक संधि करवाई है – 1719 ई. की वह संधि हमारी ‘मैग्नाकार्टा’ है। मुगलों ने हमें दक्कन की ‘चौथ’ (कर) वसूलने का अधिकार दे दिया है – हर राज्य से हमें 25% कर लेने की इजाजत। बदले में हम मुगलों के साथ युद्ध नहीं करेंगे – और अगर कोई मुगल विद्रोही होगा, तो हम उनके खिलाफ सेनाएँ भेजेंगे। यह कोई साधारण संधि नहीं है – यह मराठा साम्राज्य को कानूनी मान्यता दे रही है।”

मुगल दूत (थोड़ी हिचकिचाहट के साथ): “पेशवा साहब, दक्कन के राजा खुश नहीं हैं – वे मुगलों को कर देते थे – अब सोचते हैं, ‘मराठों को क्यों दें?’ यह बहुत आसान नहीं होगा।”

बालाजी विश्वनाथ (मुस्कुराते हुए): “आसान नहीं – पर हमारे पास तलवार है। जो नहीं देगा – उससे हम युद्ध करेंगे और जबरन वसूलेंगे। यही नियम है – जो ताकतवर है, वही कर लेता है। अब हम ताकतवर हैं।”

तथ्य: बालाजी विश्वनाथ (प्रथम पेशवा) – उन्हें ‘मराठा साम्राज्य का द्वितीय संस्थापक’ भी कहा जाता है। उन्होंने 1719 ई. में मुगलों से एक संधि करवाई – जिसे ‘मराठा साम्राज्य का मैग्नाकार्टा’ कहते हैं – मराठों को दक्कन की ‘चौथ’ (कर) वसूलने का कानूनी अधिकार मिल गया।

💚 बालाजी विश्वनाथ की अच्छाई:
कूटनीतिज्ञ – उन्होंने मुगलों से कानूनी मान्यता प्राप्त की, बिना बड़े युद्ध के।

🖤 बालाजी विश्वनाथ की बुराई:
उन्होंने पेशवा पद को वंशानुगत बना दिया – बाद में यही फूट का कारण बना।

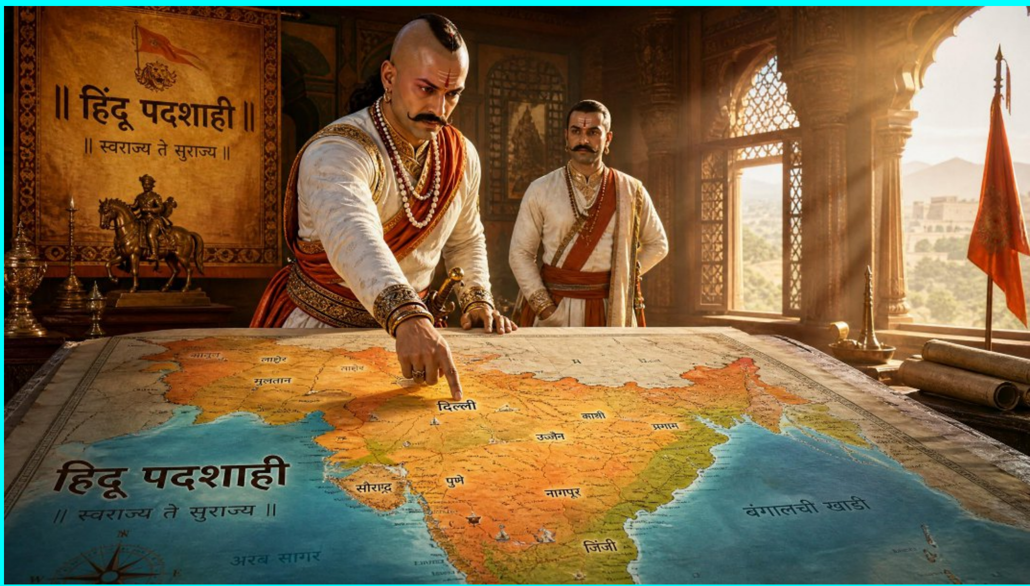
बाजीराव प्रथम (1720-1740 ई.) – "हिंदू पादशाही का सपना"

टाइम: 1720-1740 ई.
जगह: पुणे – मराठा राजधानी

पात्र:

· बाजीराव प्रथम – बालाजी विश्वनाथ का बेटा, 20 साल की उम्र में पेशवा बना, कभी युद्ध नहीं हारा
· चिमाजी अप्पा – उसका भाई, सेनापति
· मस्तानी – उसकी मुस्लिम रानी (बहुत विवादित, पर ऐतिहासिक)

(दरबार। बाजीराव अभी 20 साल का है – युवा, तेज, आँखों में आग। वह नक्शे पर उंगली घुमा रहा है।)



बाजीराव प्रथम (अपने भाई चिमाजी अप्पा से): “भाई, देख यह नक्शा – दिल्ली यहाँ है, पुणे यहाँ। मुगल कमज़ोर हैं – औरंगजेब के बाद कोई ताकतवर बादशाह नहीं आया। हम मालवा, गुजरात, बुन्देलखण्ड – सब जीत सकते हैं। और फिर… एक दिन, दिल्ली। मैं सपना देखता हूँ – हिंदू पादशाही। पूरे भारत में एक हिंदू साम्राज्य – अकबर जैसा विशाल, पर हमारे नियमों से, हमारे धर्म से। यह कोई मुगलों से बदला लेने की बात नहीं है – यह एक नए भारत की नींव रखने की है।”

चिमाजी अप्पा (थोड़ी चिंता में): “भाई, तुम सपने देखते हो – पर ये सपने पूरे होंगे तो हमें बहुत युद्ध करने पड़ेंगे। राजपूत हमसे खुश नहीं हैं – वे हमें लुटेरा समझते हैं। मुगल अभी भी दिल्ली में बैठे हैं – वे चुपचाप नहीं बैठेंगे।”

बाजीराव (मुस्कुराते हुए): “तो हम उन्हें जीतेंगे – तलवार से नहीं, बुद्धि से। पहले हम मालवा जीतेंगे – वहाँ से कर आएगा। फिर

गुजरात – वहाँ से बंदरगाह, व्यापार, पैसा। फिर बुन्देलखण्ड – वहाँ रास्ता खुल जाएगा दिल्ली का। राजपूत हमारे दुश्मन क्यों हैं? क्योंकि हमने उन्हें धोखा दिया? नहीं – हमने उनसे लड़ा ही नहीं। वो मुगलों से मिलकर हमें दुश्मन मानते हैं। तो चलो – हम कुछ राजपूतों को अपने साथ मिला लेते हैं – दूसरों को हरा देते हैं। यही राजनीति है – दोस्त वो जो काम आए, दुश्मन वो जो रास्ता रोके।"

(बाजीराव ने मालवा, गुजरात, बुन्देलखण्ड जीत लिए – कभी युद्ध नहीं हारा। वह अब तक का एकमात्र सेनापति था जो हर युद्ध में विजयी रहा।)

मस्तानी (बाजीराव की पत्नी – वह मुस्लिम थी, एक दरबारी संगीतकार की बेटी): "बाजीराव, लोग तुमसे कहते हैं – 'तुम हिंदू पादशाही का सपना देखते हो, पर तुमने एक मुस्लिम से शादी कर ली।' क्या यह सही है?"

बाजीराव (मस्तानी का हाथ पकड़कर): "मैं हिंदू पादशाही का सपना इसलिए देखता हूँ कि हिंदू फिर से ताकत में आएँ, मुगलों का अत्याचार खत्म हो। पर मैं मुसलमानों से नफरत नहीं करता। तुम मुस्लिम हो – पर तुम मेरी पत्नी हो। तुम्हारा धर्म मेरे लिए मायने नहीं रखता – तुम्हारा साथ मायने रखता है। जो कहें – वे कहें। मुझे परवाह नहीं।"

तथ्य: बाजीराव प्रथम के समय मराठों की शक्ति चरमोत्कर्ष पर थी। उसे 'हिंदू पादशाही' का सिद्धांत प्रतिपादित करने का श्रेय दिया जाता है – अर्थात पूरे भारत में हिंदू साम्राज्य स्थापित करना। वह कभी युद्ध नहीं हारा – यह उसकी सबसे बड़ी उपलब्धि है। उसकी प्रेम कहानी मस्तानी (मुस्लिम रानी) से बहुत प्रसिद्ध है – हालाँकि उस समय के समाज में इसे स्वीकार नहीं किया गया था।

💚 बाजीराव प्रथम की अच्छाई:

महान सेनापति – कभी युद्ध नहीं हारा। दूरदर्शी – ‘हिंदू पादशाही’ का सपना देखा। साहसी – 20 साल की उम्र में पेशवा बना।

🖤 बाजीराव प्रथम की बुराई:
मराठों को एक साम्राज्य तो दिया – पर अपने बेटे को सही शिक्षा नहीं दे पाया। बहुत महत्वाकांक्षी था – कभी-कभी जल्दबाजी में फैसले ले लिए।

बालाजी बाजीराव (1740-1761 ई.) – "पानीपत के खून में डूबा सपना"

टाइम: 1760-1761 ई.
जगह: पुणे → पानीपत का मैदान (हरियाणा)

पात्र:

· बालाजी बाजीराव (नाना साहब) – बाजीराव का बेटा, पेशवा (बाजीराव की मृत्यु के बाद)
· सदाशिवराव भाऊ – बालाजी बाजीराव के चचेरे भाई, सेनापति
· अहमदशाह अब्दाली – अफगान सेनापति (दुर्रानी साम्राज्य के संस्थापक)
· विश्वासराव – बालाजी बाजीराव का बेटा, युद्ध में 18 साल की उम्र में मारा गया

(पुणे – दरबार। बालाजी बाजीराव चिंतित है। उसके सामने अफगानों से लड़ने का सवाल है।)



बालाजी बाजीराव (अपने चचेरे भाई सदाशिवराव भाऊ से): “भाऊ, उत्तर से खबर आई है – अहमदशाह अब्दाली ने दिल्ली लूट ली। मुगल बादशाह हमसे मदद माँग रहा है – पर वह बादशाह अब सिर्फ नाम का है। असल सवाल यह है – अगर हम अब्दाली से नहीं लड़े, तो वह दिल्ली पर कब्जा कर लेगा। और अगर हमने उसे हरा दिया – तो पूरा उत्तर भारत हमारा हो जाएगा। यही मौका है – हिंदू पादशाही का सपना सच हो सकता है।”

सदाशिवराव भाऊ (उत्साह से, पर थोड़ी चिंता भी): “पेशवा साहब, मैं जाता हूँ – सेना लेकर। पर एक बात कहूँ – हमें राजपूतों की मदद चाहिए। उनके बिना हमारी सेना कमज़ोर है। हमने जयपुर, जोधपुर – सबसे झगड़े किए हैं। अब वे हमसे नफरत करते हैं। क्या वे हमारे साथ लड़ेंगे?”

बालाजी बाजीराव (निराश होकर): “राजपूत नहीं आएंगे… मैंने उनसे संदेश भेजा – उन्होंने मना कर दिया। रोहिल्ला (अफगान जनजाति) तो अब्दाली के साथ हैं। सिख हमारे साथ हैं – पर उनकी सेना छोटी है। हम अकेले हैं। पर हमें जाना ही होगा – क्योंकि नहीं गए तो अब्दाली पूरे उत्तर पर कब्जा कर लेगा।”

(14 जनवरी, 1761 ई. – पानीपत का मैदान। मराठा सेना और अब्दाली की सेना आमने-सामने। तोपों की गड़गड़ाहट।)

सदाशिवराव भाऊ (अपने सैनिकों से, चिल्लाते हुए): “मराठाओं! आज तुम्हारा सपना – हिंदू पादशाही – इसी मैदान पर तय होगा। तुम्हारे पीछे पुणे है, तुम्हारे पीछे माँ तुलजा भवानी है। एक कदम पीछे नहीं हटना – एक कदम!”

(युद्ध जारी है। दोनों तरफ से गोले उड़ रहे हैं। रसद खत्म हो रही है – मराठा सेना भूखी है। तीन दिन से कुछ नहीं खाया।)

सदाशिवराव भाऊ (अपने साथी सेनापति से, थककर): “रसद… कहाँ है रसद? हमने तीन दिन से अनाज नहीं देखा। सैनिक थक गए हैं – और अब्दाली सेना ताज़ी है। अगर आज शाम तक रसद नहीं आई – तो हम…”

(अचानक – एक तीर उसकी छाती में लगता है। वह गिर जाता है।)



(दूसरी तरफ – विश्वासराव (बालाजी बाजीराव का 18 साल का बेटा) हाथी पर बैठा है। एक गोला उसके पास आकर फटता है – वह लहूलुहान होकर गिर जाता है।)

(युद्ध का मैदान बदल जाता है – लाशों के ढेर लग जाते हैं। लाखों मराठा सैनिक मारे जाते हैं।)

तथ्य: पानीपत का तृतीय युद्ध – 14 जनवरी, 1761 – अहमदशाह अब्दाली (अफगान) vs मराठा। मराठों की हार ने उनकी ताकत को तोड़ दिया। हार के कारण – रसद (खाने-पीने का सामान) खत्म हो गया था, पेशवा खुद युद्ध में नहीं गया था (बालाजी बाजीराव पुणे में रुका था), राजपूतों ने मदद नहीं की।

(पुणे – बालाजी बाजीराव को पराजय का समाचार मिलता है।)

बालाजी बाजीराव (समाचार सुनकर, पागलों की तरह चिल्लाते हुए): "सब मर गए? भाऊ… विश्वासराव… सब? मैंने यह क्या किया? मैं खुद क्यों नहीं गया? मैं पुणे में बैठा रहा – और वे मर गए… अब मराठा साम्राज्य खत्म हो गया… मैंने अपने बेटे को खो दिया – अपने भाई को खो दिया – अपनी सेना को खो दिया… अब क्या बचा?"

(वह रोता है – बिना आवाज़ के। कुछ महीनों बाद वह भी मर जाता है – दुख से।)

दादा (दृश्य के बीच में): "पानीपत की तीसरी लड़ाई – मराठों के लिए वही थी जो कलिंग मौर्यों के लिए थी – एक ऐसी हार जिससे साम्राज्य कभी उबर नहीं पाया। पर मौर्यों की तरह मराठों का भी अंत नहीं हुआ – वे बिखरे, पर बचे। फिर अंग्रेज आए – और उन्होंने मराठों की आपसी फूट का फायदा उठाया।"

दृश्य 3: मराठा साम्राज्य का अंत (1818 ई.)

टाइम: 1818 ई.
जगह: पुणे – पेशवा का दरबार (अब अंग्रेजों के अधीन)

पात्र:

· बाजीराव द्वितीय – अंतिम पेशवा, अयोग्य, कमज़ोर
· अंग्रेज अधिकारी – जिसने उसे पकड़ा
· एलफिंस्टन – अंग्रेज गवर्नर (बॉम्बे प्रेसीडेंसी)

(पुणे – शनिवार वाड़ा। पेशवा का सिंहासन अब खाली है। अंग्रेज सैनिक चारों तरफ खड़े हैं।)

एलफिंस्टन (अंग्रेज अधिकारी, बाजीराव द्वितीय से, ठंडे स्वर में): “बाजीराव द्वितीय, तुम्हारा राज्य समाप्त कर दिया गया है। अब से कोई पेशवा नहीं होगा – यह पद हम (अंग्रेज) समाप्त कर रहे हैं। तुम्हें बिठूर (कानपुर के पास) में एक घर दिया जाएगा – वहाँ रहोगे। पेंशन दी जाएगी – पर राजा नहीं रहोगे।”



बाजीराव द्‌वितीय (रोते हुए, सिंहासन की तरफ देखते हुए): “मैंने अपने पूर्वजों का साम्राज्य खो दिया… शिवाजी महाराज… आपने कितना संघर्ष किया – प्रतापगढ़ में अफजल खाँ का वध, रायगढ़ में राज्याभिषेक, अष्टप्रधान – आपने सब कुछ बनाया। और मैं… उस सबको खो बैठा। मुझे माफ कर देना… मुझे ताकत नहीं थी… मुझे बुद्‌धि नहीं थी… मुझे सिर्फ सिंहासन चाहिए था – पर उस सिंहासन पर बैठने लायक मैं नहीं था।”

(बाजीराव द्‌वितीय को बिठूर भेज दिया जाता है – 1853 ई. में वहाँ उसकी मृत्यु हो जाती है।)

दादा (दृश्य समाप्त करते हुए): “बेटा, मराठे वीर थे – पर आपस में लड़ते रहे। शिवाजी ने एक साम्राज्य बनाया – पेशवाओं ने उसे बढ़ाया – पर आपसी फूट ने उसे खत्म कर दिया। पानीपत एक घाव था – पर असली मौत मराठों के अहंकार और एकता की कमी से हुई। अंग्रेजों ने उसी फूट का फायदा उठाया – एक राज्य को दूसरे के खिलाफ खड़ा किया – और पूरे देश को गुलाम बना लिया। अब हमें अंग्रेजों की कहानी सुननी है – वो कहानी जहाँ बंदूक सीख गई, तलवार भूल गई।”

🔄 तुलना – भारत और विश्व (मराठा काल)

समय (लगभग) भारत में और विश्व में
▪1627-1680 ई.
शिवाजी प्रतापगढ़, राज्याभिषेक (1674), अष्टप्रधान।
▪इंग्लैंड में गृहयुद्ध (राजा बनाम संसद)।
▪फ्रांस में लुई XIV शासन।
▪1713-1720 ई. बालाजी विश्वनाथ –
मराठा साम्राज्य का 'मैग्नाकार्टा' (1719)।
▪ फ्रांसीसी क्रांति से पहले यूरोप में सामाजिक उथल-पुथल।
▪1720-1740 ई. बाजीराव प्रथम –
'हिंदू पादशाही', मालवा-गुजरात-बुन्देलखण्ड में विस्तार।
▪ चीन में किंग वंश (अधिकतम विस्तार)।
1740-1761 ई.
▪पानीपत का तृतीय युद्ध (1761) –
मराठों की करारी हार।
▪इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति की शुरुआत।
▪अमेरिकी स्वतंत्रता (1776)
1761-1818 ई.
मराठा साम्राज्य का पतन – अंग्रेजों की दो-दो करके कूटनीति।
▪ फ्रांसीसी क्रांति (1789), नेपोलियन का पतन (1815)
▪ अंग्रेजों का भारत में मजबूत होना

इस अंक के प्रश्न-उत्तर

▪शिवाजी महाराज की राजधानी कौन-सी थी?

रायगढ़ किला (महाराष्ट्र) ।
▪अफजल खाँ को किसने और कैसे मारा?
शिवाजी ने – 'बाघ नख' (बाघ के पंजे जैसी धार) से – प्रतापगढ़ के पास (1659 ई.) ।
▪शिवाजी ने किस युद्ध पद्धति को अपनाया?
गुरिल्ला युद्ध पद्धति – पहाड़ियों में छुपकर अचानक हमला ।
▪राज्याभिषेक कब और कहाँ हुआ?
1674 ई. रायगढ़ में उपाधि
▪छत्रपति शिवाजी ने कितने मंत्रियों की परिषद बनाई और उसे क्या कहते हैं?
अष्टप्रधान – आठ मंत्री ।
▪मराठों के पहले पेशवा कौन थे?
बालाजी विश्वनाथ (1713 ई.) ।
▪'मराठा साम्राज्य का मैग्नाकार्टा' किसे कहते हैं? बालाजी विश्वनाथ की 1719 ई. की मुगल संधि मराठों को दक्कन में 'चौथ' (कर) वसूलने का कानूनी अधिकार ।
▪'हिंदू पादशाही' का सपना किस पेशवा ने देखा? बाजीराव प्रथम (1720-1740) ।
▪पानीपत का तृतीय युद्ध कब और किसके बीच हुआ?
14 जनवरी, 1761 – अहमदशाह अब्दाली (अफगान) vs मराठा ।
▪अंतिम मराठा पेशवा कौन था?
बाजीराव द्वितीय ।
▪बाजीराव द्वितीय को कहाँ और क्यों भेजा गया?
बिठूर (कानपुर के पास) – अंग्रेजों ने 1818 में पेशवा पद समाप्त कर दिया ।

महत्वपूर्ण याद रखने योग्य बिंदु

1. शिवाजी (1627-1680 ई.)

· गुरिल्ला युद्ध, बाघ नख से अफजल खाँ का वध (1659)।
· राज्याभिषेक (1674, रायगढ़) – 'छत्रपति' की उपाधि।
· अष्टप्रधान – आठ मंत्रियों की परिषद – एक अनोखा प्रशासनिक ढाँचा।
· कर व्यवस्था – मलिक अम्बर की व्यवस्था पर आधारित।

2. पेशवा काल (1713-1818 ई.)

· बालाजी विश्वनाथ (पहले पेशवा) – 'मराठा साम्राज्य का द्वितीय संस्थापक', 1719 की मुगल संधि – 'मराठा साम्राज्य का मैग्नाकार्टा' (दक्कन की चौथ वसूलने का अधिकार)।
· बाजीराव प्रथम (दूसरे पेशवा) – 'हिंदू पादशाही' का सपना, कभी युद्ध नहीं हारा। मालवा, गुजरात, बुन्देलखण्ड में विस्तार।
· बालाजी बाजीराव (तीसरे पेशवा) – पानीपत का तृतीय युद्ध (14 जनवरी, 1761) – मराठों की हार। कारण – रसद खत्म, पेशवा खुद नहीं गया, राजपूतों ने मदद नहीं की।
· बाजीराव द्वितीय (अंतिम पेशवा) – 1818 ई. में अंग्रेजों ने पेशवा पद समाप्त किया – बाजीराव द्वितीय को बिठूर (कानपुर के पास) निर्वासित किया – 1853 में मृत्यु।

3. मराठा साम्राज्य का पतन:

· आपसी फूट (पेशवा, गायकवाड़, सिंधिया, होलकर – आपस में लड़ते रहे)।
· अंग्रेजों की कूटनीति – दो-दो करके मराठा राज्यों को हराया।
· पानीपत (1761) – मराठों की सेना कभी पूरी तरह उबर नहीं पाई।

अंक समाप्त

अगले अंक 12 में: स्वतंत्रता संग्राम – 1857 का विद्रोह (कारतूस, नेतृत्व: बहादुर शाह जफर, रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, कुँवर सिंह, बेगम हजरत महल), सामाजिक सुधारक (राजा राममोहन राय – सती प्रथा समाप्त, स्वामी दयानंद – आर्य समाज, विवेकानन्द – शिकागो भाषण), क्रांतिकारी (भगत सिंह, आज़ाद, सुभाष चन्द्र बोस), गाँधी युग (चंपारण, दांडी यात्रा, भारत छोड़ो), विभाजन (1947), गाँधी की हत्या (1948)।

तो चलिए, अब हम इस महानाटक के बारहवें अंक में प्रवेश करते हैं।

यह वह अंक है जिसके लिए हमने इतनी लंबी यात्रा की – पाषाण काल की गुफाओं से लेकर मुगलों के ताजमहल तक, मराठों के गुरिल्ला युद्ध से लेकर अंग्रेजों की चालाकी तक। और अब, आखिरकार, वह दौर आता है जब भारत अपनी आज़ादी के लिए उठ खड़ा होता है – न किसी राजा के लिए, न किसी साम्राज्य के लिए, बल्कि अपने लिए।

यह कहानी है राष्ट्रीय आंदोलन की – 1857 के विद्रोह से लेकर 1947 की उस आधी रात तक, जब जवाहरलाल नेहरू ने 'भाग्य से मिलन' का भाषण दिया। गाँधी, नेहरू, पटेल, अंबेडकर, सुभाष, भगत सिंह – ये वे नाम हैं जिन्होंने भारत को जगाया, और ब्रिटिश साम्राज्य को झकझोर दिया।

—

अंक **12:** स्वतंत्रता तक **–** **"**जब भारत ने 'करो या मरो' कहा**"**

(1857 ई. से 1947 ई. तक – 90 साल की वह घटनाएँ जिसने एक साम्राज्य को झकझोर दिया)

प्रस्तावना: **1857 –** जब पहली बार आग लगी

एक शाम। दादा और पोता उसी चबूतरे पर बैठे हैं – जहाँ इतनी सारी कहानियाँ सुन चुके हैं। पोता के हाथ में एक पुराना, जंग लगा कारतूस है। वह उसे पलट-पलटकर देख रहा है।

पोता: “दादा, मुगल गए, मराठे गए, और फिर अंग्रेज आ गए… उन्होंने हमें कैसे गुलाम बना लिया? इतने बड़े देश को?”

दादा (कारतूस लेकर देखता है, फिर धीरे से रख देता है): “बेटा, अंग्रेज तोप लेकर आए – हम तलवार लेकर सामने खड़े थे। तोप जीत गई। पर बस तोप नहीं – उनके पास व्यापार था, चालाकी थी, और झूठी वादे करके राजा को बहलाने की साजिश थी। ईस्ट इंडिया कंपनी 1600 में आई – छोटे से व्यापार के लिए। धीरे-धीरे उन्होंने प्लासी (1757), बक्सर (1764) जैसे युद्धों में हमारे राजाओं को हराया। और 1857 तक आते-आते, वे पूरे भारत के मालिक बन चुके थे।”

पोता: “1857… वही कारतूस वाली बात?”

दादा (आँखें बंद करके, उस दूर की आग को फिर से जलते देखते हुए): “हाँ बेटा। 1857 में एक बात ने सबकी नींद खोल दी – अंग्रेजों के बंदूक के कारतूस में सुअर और गाय की चर्बी थी – मुसलमान सुअर को हराम मानते हैं, हिंदू गाय को पवित्र। मुँह से काटना पड़ता था – दोनों भड़क गए। लाल कोट पहने अंग्रेज सिपाही हम पर गोली चलाते थे – और अब हमसे कह रहे थे कि अपने ही धर्म को ठुकराकर उनके कहे अनुसार आगे बढ़ो – एक ऐसा अपमान जो सदियों में कभी नहीं हुआ।”

(वह कारतूस उठाता है – फिर नीचे रख देता है।)

दादा: “यही वह कारतूस है – बेटा। यह नहीं है – पर यह वही है। आग लगी – और भारत उठ खड़ा हुआ।”

दृश्य 1: मंगल पांडे – "पहली गोली"

टाइम: 29 मार्च, 1857 ई.
जगह: बैरकपुर (बंगाल, कोलकाता के पास)

पात्र:

· मंगल पांडे – सिपाही, 30 साल, आँखों में आग, हाथ में बंदूक
· जनरल हर्सी – अंग्रेज अधिकारी, सफेद वर्दी, सिर पर टोपी, हाथ में कोड़ा
· सिपाही – मंगल पांडे के साथी, डरे हुए

(बैरकपुर छावनी। रात का समय है। मंगल पांडे एक कोने में खड़ा है – उसके हाथ में बंदूक है, पर उसने कारतूस नहीं काटा है।)



सिपाही (डरते हुए): “मंगल, तुम क्यों नहीं काट रहे कारतूस? सब काट रहे हैं – अंग्रेज साहब देखेंगे तो गुस्सा होंगे। तुम्हें मालूम है – जो आज्ञा नहीं मानता, उसे फाँसी दे दी जाती है।”

मंगल पांडे (गुस्से से, पर आवाज़ दबाकर): “यह कारतूस गलत है। इसमें सुअर और गाय की चर्बी है – मैं इसे मुँह में नहीं डालूंगा। और तुम भी मत डालना। हम इंसान हैं – जानवर नहीं। हमारे धर्म में यह सब मना है – हमें अपने धर्म की इज्जत करनी चाहिए, न कि अंग्रेजों के आगे झुकना चाहिए।”

(अगली सुबह। अंग्रेज अधिकारी जनरल हर्सी मंगल पांडे के सामने खड़ा है। चारों तरफ अंग्रेज सैनिक – बंदूकें ताने।)

जनरल हर्सी (तेज आवाज़ में, कोड़ा हिलाते हुए): “मंगल पांडे, तुमने आज्ञा का उल्लंघन किया है। बन्दूक नीचे रखो – नहीं तो मैं गोली चलाने का आदेश दूंगा।”

मंगल पांडे (बन्दूक तानकर, पीछे नहीं हटता): “नहीं रखूंगा। तुम्हारे कारतूस गलत हैं। तुम गलत हो। और हम भारतीय तुम्हारी गुलामी नहीं करेंगे। मैं अकेला हूँ – तुम बहुत हो – पर एक दिन यह पूरा देश

तुम्हारे खिलाफ उठ खड़ा होगा। आज मैं मरूंगा – पर कल तुम भागोगे।”

(वह अंग्रेज अधिकारी पर गोली चलाता है – चूक जाता है। अंग्रेज सैनिक दौड़ते हैं – उसे पकड़ लिया जाता है।)

(फाँसी का दिन – 8 अप्रैल, 1857। मंगल पांडे को फंदे पर लटकाया जा रहा है। भीड़ इकट्ठा है।)

मंगल पांडे (फंदे पर चढ़ते हुए, चिल्लाते हुए): “इंकलाब जिंदाबाद! हम मरेंगे, पर हमारी आग बुझेगी नहीं! एक मंगल पांडे मरता है – हज़ारों पैदा होंगे!”

तथ्य: मंगल पांडे ने 29 मार्च, 1857 को अंग्रेज अधिकारी पर हमला किया। उसे 8 अप्रैल, 1857 को फाँसी दी गई। उसी की शहादत ने पूरे उत्तर भारत में विद्रोह की आग लगा दी।

💚 मंगल पांडे की अच्छाई:
साहस, आत्मसम्मान – उसने अकेले ही अंग्रेजों का सामना किया।

🖤 मंगल पांडे की बुराई:
वह सिर्फ एक सिपाही था – एक चिंगारी था, पूरे विद्रोह का नेतृत्व नहीं किया।

दृश्य **2:** दिल्ली **–** बहादुर शाह जफर की कहानी

टाइम: 11 मई, 1857 ई.
जगह: दिल्ली, लाल किला

पात्र:

· बहादुर शाह जफर – अंतिम मुगल बादशाह, 80 साल का, बूढ़ा, कमजोर, पर आँखों में बुझी हुई आग
· विद्रोही सैनिक – मेरठ से दिल्ली पहुँचे, हाथों में तलवार
· बेगम – उसकी पत्नी

(मेरठ – 10 मई, 1857। विद्रोही सैनिकों ने अंग्रेज अधिकारियों को मार डाला, छावनी जला दी, और दिल्ली की तरफ चल दिए। एक रात में वे दिल्ली पहुँचे।)

(लाल किला – बहादुर शाह जफर के कमरे में। वह बूढ़ा हो चुका है – उसके हाथ काँपते हैं, वह चल भी नहीं सकता। वह बिस्तर पर लेटा है। अचानक दरवाजे पर शोर।)



विद्रोही सैनिक (लाल किले के फाटक पर, जोर-जोर से दस्तक देते हुए): “बादशाह सलामत! हम आपके सैनिक हैं – हमने अंग्रेजों को

मार दिया है! मेरठ से दिल्ली तक का रास्ता खाली है। अब आप हमारे बादशाह हैं – दिल्ली अब हमारी है!”

(बहादुर शाह जफर कम्बल ओढ़े खिड़की से झाँकता है – सैकड़ों सैनिक, हाथों में तलवार, आगे बढ़ते हुए।)

बहादुर शाह जफर (हकलाती आवाज़ में, घबराकर): “क्या… क्या हुआ? वे कौन हैं? क्या मुझे मारने आए हैं?”

बेगम (पास खड़ी, थोड़ी उत्सुकता से): “नहीं, महाराज – ये विद्रोही सैनिक हैं – ये कह रहे हैं – हमने अंग्रेजों को हराया। अब आप हमारे बादशाह हैं।”

(बहादुर शाह जफर – पहले डरता है, फिर उसकी आँखों में एक चमक आती है – जैसे मरते हुए आदमी को अचानक हवा लग गई हो। वह उठता है – दरबार में जाता है।)

बहादुर शाह जफर (दरबार में, काँपती आवाज़ में, पर दृढ़ता से): “तुम लोग… सच में… सच में अंग्रेजों को हराया? मैं बूढ़ा हूँ – मेरा हाथ तलवार नहीं उठा सकता – मेरे पैर किले से बाहर नहीं जा सकते। पर मेरा नाम – बहादुर शाह जफर – यह नाम इतिहास में रहेगा। मैं तुम्हारे साथ हूँ – नहीं लड़ूंगा, पर आशीर्वाद दूंगा।”

(उसने तलवार उठाने की कोशिश की – पर गिर गई। एक सैनिक ने उसे उठाकर उसके हाथ में थमा दी।)

विद्रोही सैनिक (चिल्लाते हुए): “बादशाह सलामत! अंग्रेजों से लोहा लेना है – हमें चाहिए आपका नाम – आपको नहीं। आप बस राज करिए – हम लड़ेंगे।”

तथ्य: 11 मई, 1857 को विद्रोही सैनिक दिल्ली पहुँचे – बहादुर शाह जफर को सम्राट घोषित किया। उसने विद्रोह का नेतृत्व किया – पर वह बहुत बूढ़ा था, उसके हाथ में तलवार सीधी नहीं रहती थी।

💚 बहादुर शाह जफर की अच्छाई:
अंतिम मुगल – उसने विद्रोह को एक राष्ट्रीय पहचान दी।

🖤 बहादुर शाह जफर की बुराई:
बहुत बूढ़ा, कमज़ोर – असली नेतृत्व नहीं कर सका। विद्रोही सेना में एकता नहीं बना सका।

(अंग्रेजों ने 1857 के अंत तक दिल्ली पर फिर से कब्जा कर लिया – बहादुर शाह जफर को रंगून निर्वासित कर दिया गया – 1862 में वहीं मर गया।)

दादा: "बेटा, यह विद्रोह असफल रहा – अंग्रेजों ने उसे बहुत क्रूरता से कुचला। पूरे उत्तर भारत में उन्होंने गाँव-गाँव में आग लगा दी – लोगों को पेड़ों पर लटकाया, तोपों के सामने बाँधकर उड़ा दिया। लेकिन इस विद्रोह ने एक चीज़ पैदा कर दी – राष्ट्रवाद की भावना। अब न कोई हिंदू था, न मुसलमान – सब भारतीय थे।"

दृश्य 3: झाँसी की रानी – "मैं अपनी झाँसी नहीं दूंगी"

टाइम: 1858 ई.
जगह: झाँसी – किले के अंदर, फिर युद्ध के मैदान में

पात्र:

· रानी लक्ष्मीबाई – 22 साल, साहसी, घोड़े पर सवार, बच्चा पीठ पर बाँधे
· दामोदर राव – उसका बेटा (गोद लिया हुआ), 6-7 साल का
· अंग्रेज सेनापति – ह्यूरोज (Sir Hugh Rose)

(झाँसी – एक छोटी सी रियासत। राजा गंगाधर राव की मृत्यु हो गई है। रानी लक्ष्मीबाई ने एक बेटा गोद लिया है – दामोदर राव। अंग्रेजों ने 'व्यपगत का सिद्धांत' (डलहौजी की नीति – अगर किसी राजा का कोई निजी वारिस नहीं, तो राज्य अंग्रेजों के अधीन हो जाएगा) के तहत झाँसी हड़प ली है।)

(रानी की सभा – किले के अंदर। रानी खड़ी है – हाथ में तलवार।)

रानी लक्ष्मीबाई (गुस्से में, पर संयमित स्वर में): "अंग्रेजों ने मेरा राज्य छीन लिया – मुझसे पूछकर? मैं रानी हूँ – मेरा राज्य मेरी जागीर नहीं है जो तुम ले लो। मेरे पति का कोई बेटा नहीं था – इसलिए मैंने गोद लिया। पर अंग्रेज कहते हैं – 'तुम्हें राज्य नहीं मिल सकता, क्योंकि तुम औरत हो, और गोद लिया हुआ बेटा असली नहीं।' – मैं अपनी झाँसी नहीं दूंगी।"

सेनापति (डरते हुए): "महारानी, अंग्रेजों की सेना बहुत बड़ी है – हमारे पास बंदूकें नहीं हैं।"

रानी (तलवार निकालकर): "बंदूक ही एकमात्र हथियार नहीं है। हमारे पास तलवार है, साहस है, जोश है। चलो, युद्ध करेंगे।"

(1858 ई. – अंग्रेजों ने झाँसी पर हमला कर दिया। रानी ने खुद युद्ध किया – घोड़े पर सवार, बच्चा पीठ पर बाँधकर।)



(युद्ध का मैदान – गोलियाँ चल रही हैं, तोपें फट रही हैं। रानी तलवार चला रही है – घोड़ा उछल रहा है।)

रानी (युद्ध के मैदान में, चिल्लाते हुए): "आज मैं मरूंगी – पर झाँसी अंग्रेजों को नहीं मिलेगी। तुम ले सकते हो किला – पर मेरा नाम, मेरी कहानी, तुम कभी नहीं मिटा सकते। जय शंकर! जय झाँसी!"

(वह घायल हो गई – पर हार नहीं मानी। वह किले से घोड़े पर कूद गई – बच्चे को पीठ पर लिए। नदी पार करने की कोशिश में – एक गोली लगी। वह गिर गई।)

(आखिरी क्षण – वह ज़मीन पर लेटी है। दामोदर राव रो रहा है।)

रानी (अंतिम साँस लेते हुए, बच्चे से): "दामोदर… तुम जीवित रहना… मराठों का खून तुम्हारी रगों में है… उन्हें कभी मत भूलना… कि तुम्हारी माँ… रानी लक्ष्मीबाई थी…"

तथ्य: रानी लक्ष्मीबाई ने झाँसी की रक्षा करते हुए अंग्रेजों से लोहा लिया। 17-18 जून, 1858 को कालपी (वर्तमान उत्तर प्रदेश) में वीरगति प्राप्त की।

💚 रानी लक्ष्मीबाई की अच्छाई:
साहसी, अद्वितीय योद्धा – उसने अपने बच्चे को पीठ पर बाँधकर युद्ध किया।

🖤 रानी लक्ष्मीबाई की बुराई:
(कोई नहीं – वह एक निःस्वार्थ वीरांगना थी)

दृश्य **4:** बंगाल विभाजन और स्वदेशी आंदोलन **(1905 ई.)**

टाइम: 1905 ई.
जगह: कलकत्ता (अब कोलकाता), बंगाल

पात्र:

· लॉर्ड कर्जन – भारत का वायसराय
· सुरेन्द्रनाथ बनर्जी – बंगाल के नेता
· रवीन्द्रनाथ टैगोर – कवि

(कलकत्ता की सड़कें। लॉर्ड कर्जन ने बंगाल को दो हिस्सों में बाँटने का आदेश दे दिया है। लाखों लोग सड़कों पर उमड़ पड़े हैं। 'वन्दे मातरम्' और 'सत्यमेव जयते' के नारे गगन में भेद रहे हैं।)

सुरेन्द्रनाथ बनर्जी (सड़क पर खड़े होकर, हाथ उठाए): “देखो! कर्जन साहब ने हमारे बंगाल को दो हिस्सों में लाठी से काट दिया। एक टुकड़ा हिंदू – एक मुसलमान। अंग्रेजों की नीति है – फूट डालो और राज करो। पर हम एक हैं – हिंदू और मुसलमान दोनों। यह नाटक असफल होगा!”

(लोग अंग्रेजी कपड़ों को एकत्र कर आग लगा देते हैं। देशी खद्दर का ढेर बाजारों में आ जाता है।)

रवीन्द्रनाथ टैगोर (लिखते हुए – आँखों में आँसू के साथ कलम चलाते हुए): “जन गण मन अधिनायक जय हे, भारत भाग्य विधाता…” (यही बाद में राष्ट्रगान बना।)

तथ्य: लॉर्ड कर्जन ने 1905 में बंगाल का विभाजन किया – इसके विरोध में स्वदेशी आंदोलन चला (विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार, देशी वस्तुओं का प्रयोग)। 1906 में कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में पहली बार ‘स्वराज’ शब्द का प्रयोग उठाया गया।

दृश्य **5:** सामाजिक सुधारक **– "**जब अपने समाज को बदलने की कोशिश हुई**"**

दादा: “बेटा, अंग्रेजों से लड़ने से पहले, हमें अपने समाज को बदलना होगा। जातिवाद, छुआछूत, सती प्रथा – ये हमारी कमजोरियाँ थीं।”

उप-दृश्य **5.1:** राजा राममोहन राय **– "**सती प्रथा बंद करवाई**"**

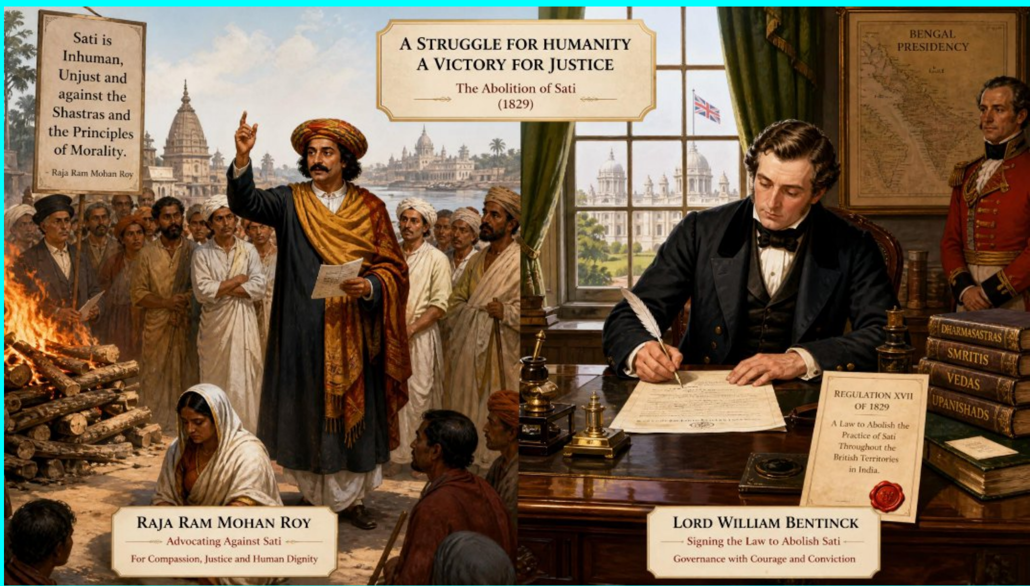
टाइम: 1828-1829 ई.

जगह: कोलकाता

पात्र:

· राजा राममोहन राय – बंगाली विद्वान, नरम स्वर, पर दृढ़
· लॉर्ड बैंटिक – भारत के गवर्नर-जनरल

(कोलकाता – एक चिता के पास। एक विधवा अपने पति की चिता पर बैठी है – लोग आग लगाने वाले हैं। राममोहन राय दौड़ता हुआ आता है।)



राममोहन राय (चिल्लाते हुए): “रुको! यह अत्याचार है। औरत को जीवित जलाना – कोई धर्म ऐसा नहीं सिखाता। तुम सब उसके चेहरे को देखो – वह जीवित है, वह साँस ले रही है – और तुम उसे आग में झोंक दोगे? क्या यह तुम्हारा धर्म है? यह बर्बरता है – धर्म के नाम पर की जाने वाली बर्बरता।”

(वह लॉर्ड बैंटिक से मिलता है।)

राममोहन राय (लॉर्ड बैंटिक से): “यह सती प्रथा एक सामाजिक बुराई है। औरत जीवित है – उसे जलाना किसी भी धर्म में नहीं लिखा है। यह पुरुषों का बनाया कानून है – ताकि विधवा की संपत्ति पर कब्जा किया जा सके। आप इस कानून को रोक सकते हैं – आपके पास अधिकार है।”

लॉर्ड बैंटिक (सोचकर): “हिंदू धर्म के मामले में अंग्रेज कानून बनाएँ – इससे विद्रोह होगा। पर तुम सही कह रहे हो – यह बर्बरता है। मैं देखता हूँ क्या किया जा सकता है।”

तथ्य: राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज (1828) बनाया। लॉर्ड बैंटिक ने 1829 में सती प्रथा को कानूनन समाप्त कर दिया।

💚 अच्छाई:
 दूरदर्शी – उन्होंने सामाजिक सुधारों की नींव डाली।
🖤 बुराई:
बहुत सीधे थे – कट्टरपंथी उनसे सहमत नहीं थे।

उप-दृश्य **5.2:** स्वामी दयानंद सरस्वती **– "**वापस वेदों की ओर**"**

टाइम: 1875 ई.
जगह: बॉम्बे

पात्र:

· स्वामी दयानंद – संन्यासी, तेज़ आँखें, कट्टर
· पुजारी – मंदिर में मूर्ति के सामने फूल चढ़ा रहा है

(एक मंदिर। पुजारी मूर्ति के सामने घंटी बजा रहा है – लोग फूल चढ़ा रहे हैं। दयानंद अंदर आते हैं – उनके चेहरे पर क्रोध है।)

दयानंद (तेज आवाज़ में): “यह मूर्ति पूजा क्यों? वेदों में कहीं नहीं लिखा है कि पत्थर की मूर्ति की पूजा करो। तुम धर्म के नाम पर अंधविश्वास फैला रहे हो। वापस वेदों की ओर चलो। वेदों में न तो छुआछूत है, न जातिवाद, न मूर्तिपूजा। यह सब तुमने बाद में बना लिया।”

तथ्य: स्वामी दयानंद ने आर्य समाज (1875) बनाया – ‘वापस वेदों की ओर’ का आह्वान किया। उनकी पुस्तक ‘सत्यार्थ प्रकाश’ है।

💚 अच्छाई:
कट्टर सुधारक – उन्होंने हिंदू समाज को झकझोरा।
🖤 बुराई:
कट्टर और असहिष्णु – उन्होंने अन्य धर्मों की निंदा की।

उप-दृश्य **5.3:** स्वामी विवेकानन्द **–** शिकागो धर्म संसद **(1893)**

टाइम: 1893 ई.
जगह: शिकागो (अमेरिका) – विश्व धर्म संसद

पात्र:

· विवेकानन्द – संन्यासी, गेरुआ वस्त्र, लंबी दाढ़ी, तेज़ बोल

(शिकागो। दुनिया भर के धर्मों के विद्वान इकट्ठा हैं। बारी-बारी से लोग बोल रहे हैं। विवेकानंद उठते हैं – उनके गेरुआ वस्त्र सबसे अलग हैं।)



विवेकानन्द (गरजती आवाज़ में, साफ अंग्रेजी में): “Sisters and brothers of America!”

(तालियों की गड़गड़ाहट – दो मिनट तक।)

विवेकानन्द (धीरे, पर हर शब्द को तौलकर): “मैं उस धर्म का प्रतिनिधित्व करता हूँ जिसने दुनिया को सहिष्णुता सिखायी – जिसने दुनिया को ‘वसुधैव कुटुम्बकम्’ (पूरी दुनिया एक परिवार है) सिखाया। हम न केवल सहिष्णुता में विश्वास करते हैं – हम सभी धर्मों की स्वीकार्यता में विश्वास करते हैं।”

तथ्य: स्वामी विवेकानन्द ने 1893 में शिकागो धर्म संसद में भाषण दिया। उन्होंने रामकृष्ण मिशन (1897) बनाया।

💚 अच्छाई:
 उन्होंने भारत के प्राचीन ज्ञान को विश्व के सामने रखा।
🖤 बुराई:
(कोई नहीं) ।

दृश्य **6:** जलियाँवाला बाग हत्याकांड **– "**जब शांतिपूर्ण सभा खून से लाल हो गई**"**

टाइम: 13 अप्रैल, 1919 (बैसाखी का दिन)
जगह: अमृतसर, जलियाँवाला बाग

पात्र:

· जनरल डायर – क्रूर अंग्रेज अधिकारी
· हज़ारों निर्दोष नागरिक – महिलाएँ, बच्चे, बूढ़े
· उधम सिंह – 12 साल का बच्चा, जिसने यह नरसंहार देखा
· डॉ. सत्यपाल और डॉ. सैफुद्दीन किचलू – कांग्रेसी नेता (जिनके खिलाफ कार्रवाई हुई थी)

दादा: “बेटा, 13 अप्रैल, 1919 – बैसाखी का दिन। अमृतसर में हज़ारों लोग जलियाँवाला बाग में एकत्र हुए थे। यह कोई मेला नहीं था – यह एक शांतिपूर्ण सभा थी। लोग रौलेट एक्ट (जिसके तहत बिना मुकदमा चलाए लोगों को जेल भेजा जा सकता था) के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे थे। दो दिन पहले ही कांग्रेसी नेताओं डॉ. सत्यपाल और डॉ. सैफुद्दीन किचलू को गिरफ्तार करके अमृतसर से बाहर

भेज दिया गया था। लोग उनकी रिहाई की मांग को लेकर इकट्ठा हुए थे।”



(जलियाँवाला बाग – चारों तरफ ऊँची दीवारें, एक ही संकरा रास्ता। हज़ारों की भीड़ जमा है – स्त्रियाँ, बच्चे, बुजुर्ग। कोई हथियार नहीं। कोई पुलिस विरोध नहीं।)

(जनरल डायर अपनी गाड़ी से उतरता है – सीढ़ियों पर चढ़ता है। पीठ पर उसके 50 से अधिक गोरा सैनिक, बंदूकें ताने। वह बिना किसी चेतावनी के आदेश देता है।)

जनरल डायर (ठंडी मुस्कान के साथ, शान्त स्वर में – जैसे चाय का ऑर्डर दे रहा हो): “Fire.”

(गोलियाँ चलने लगती हैं। पहली गोली – एक बूढ़ा गिर जाता है। दूसरी – एक माँ अपने बच्चे को छाती से चिपकाए गिर जाती है। बाग में इकट्ठे लोगों में अफरा-तफरी मच जाती है। कोई बचने का रास्ता नहीं – लोग दीवारों पर चढ़ने लगते हैं, कुआँ में कूदने लगते हैं।)

(बाग के एक कोने में 12 साल का उधम सिंह अपनी माँ की लाश के पास घुटनों पर बैठा है। वह अपनी माँ को उठाने की कोशिश कर रहा है, पर वह नहीं उठती। खून से उसके कपड़े भीग गए हैं।)

उधम सिंह (आँखों में सूखा दर्द, फुसफुसाते हुए): "माँ... तुझे इन गोरों ने मारा। मैं बड़ा होऊँगा – और इन बदमाशों को ज़रूर सज़ा दूँगा। चाहे 20 साल लग जाएँ, चाहे मैं मर जाऊँ – पर मैं इनका बदला लूंगा।"

(गोलियाँ अभी भी चल रही हैं। एक गोली उधम सिंह की बाँह को चीर जाती है – पर वह दर्द को अनदेखा करता है। वह दीवार पर चढ़ता है – उसका सिर निकलता है – वह कूद जाता है।)

तथ्य:
जलियाँवाला बाग हत्याकांड (13 अप्रैल, 1919) – 379 निर्दोष लोग मारे गए (सरकारी आंकड़ा), वास्तविक संख्या 1000 से अधिक। जनरल डायर ने बिना किसी चेतावनी के 10 मिनट तक गोलियाँ चलवाईं। उसने बाद में कहा – "मैं उन्हें सबक सिखाना चाहता था।" जनरल डायर को कभी सज़ा नहीं हुई – उसे सेवानिवृत्त कर दिया गया। इसी घटना ने उधम सिंह को बदला लेने की प्रतिज्ञा दिलाई, जिसे उसने 1940 में लंदन में पूरा किया।

दृश्य 7: चौरी-चौरा कांड (4 फरवरी, 1922) – "गोरखपुर में आग"

टाइम: 4 फरवरी, 1922
जगह: चौरी-चौरा (गोरखपुर, उत्तर प्रदेश)

पात्र:

· प्रदर्शनकारी किसान – नंगे पाँव, हाथों में तिरंगा
· पुलिस अधिकारी – गोरे साहब, कोड़ा हाथ में
· महात्मा गाँधी – सूचना पाकर बहुत व्यथित

(चौरी-चौरा गाँव। किसान इकट्ठा होते हैं – असहयोग आंदोलन के तहत। अंग्रेज थाने के सामने प्रदर्शन। पुलिस गोली चलाने की धमकी देती है।)



किसान (चिल्लाते हुए): “वापस जाओ अंग्रेजों! यह धरती अब तुम्हारी नहीं रही। हम चाहते हैं खुद की सत्ता – स्वराज!”

पुलिस अधिकारी (हाथ खड़े करके): “फायर!”

(गोलियाँ नहीं चलतीं – बंदूकें जाम। भीड़ उग्र हो जाती है – थाने में आग लगा दी जाती है। 22 पुलिसकर्मी जलकर मर जाते हैं।)

(वार्ता – गाँधी के कानों तक यह समाचार पहुँचता है।)

गाँधी (आँखें बंद करके, गहरी साँस लेते हुए): “मैंने यह आंदोलन अहिंसा पर किया था। हिंसा हो गई – यह मेरे लिए असहनीय है। मैं असहयोग वापस ले रहा हूँ।”

तथ्य: चौरी-चौरा कांड (4 फरवरी, 1922) – 22 पुलिसकर्मी मारे गए। 12 फरवरी, 1922 – गाँधी ने असहयोग आंदोलन (1920-22) वापस ले लिया। कांग्रेस के कई नेता इस निर्णय से सहमत नहीं थे – इसी से हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) जैसे क्रांतिकारी संगठन मजबूत हुए।

दृश्य 8: साइमन कमीशन (3 फरवरी, 1928) – "साइमन गो बैक"

टाइम: 3 फरवरी, 1928
जगह: लाहौर (बाद में पूरे भारत में)

पात्र:

· सर जॉन साइमन – ब्रिटिश अधिकारी (बिना भारतीय सदस्य के)
· लाला लाजपत राय – बूढ़े, पर अडिग
· पुलिस – लाठियाँ लिए

(लाहौर। साइमन कमीशन आता है – बिना एक भी भारतीय सदस्य के। सड़कों पर ‘साइमन गो बैक’ के नारे गूँजते हैं।)

लाला लाजपत राय (मुस्कुराते हुए, पर आँखों में आग): “देखो! यह गोरे लोग आए हैं – हमारा संविधान बनाने। पर सवाल यह है – क्या हम खुद अपना संविधान नहीं बना सकते? भारत में रहते हो, भारत की हवा में साँस लेते हो – फिर भारत के वारिस नहीं बन सकते? ‘साइमन गो बैक!’”

(पुलिस ने लाठीचार्ज की आज्ञा दे दी। लाठियाँ बरसती हैं – एक लाठी लालाजी के सीने पर पड़ती है।)

लाला लाजपत राय (घुटनों पर गिरते हुए, फिर भी हाथ ऊपर उठाते हुए): “मुझे मार डालो – पर हर एक लाठी की चोट अंग्रेजों के ताबूत में आखिरी कील होगी।”

(वह घायल हो गए – 17 नवंबर, 1928 को उनकी मृत्यु हो जाती है।)

तथ्य: साइमन कमीशन (3 फरवरी, 1928) – बिना किसी भारतीय सदस्य के आया। लाला लाजपत राय की मृत्यु ने क्रांतिकारियों को झकझोरा – भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव ने सॉन्डर्स (लाठीचार्ज देने वाले अफसर) की हत्या की (17 दिसंबर, 1928)।

दृश्य 9: क्रांतिकारी – "बम, पिस्तौल, और बलिदान"

दादा: “बेटा, अहिंसा के इस दौर में भी, कुछ युवा ऐसे थे – जिन्होंने हथियार उठा लिए। उनका तर्क था – ‘अंग्रेजों की गोली को गोली ही जवाब दे सकती है।’ चलो, उन्हीं क्रांतिकारियों की कहानी सुनते हैं। अब तक आपने नाम सुने होंगे – पर उनकी कहानी सुनकर आपको पता चलेगा कि ये नाम अमर क्यों हैं।”

उप-दृश्य 9.1: बाघा जतिन (जतिन्द्रनाथ मुखर्जी) – "बंगाल का बाघ"

टाइम: सितंबर 1915
जगह: बालेश्वर (ओडिशा), नदी के किनारे

पात्र:

· बाघा जतिन – युगांतर पार्टी का नेता, बहुत ताकतवर, जिसने एक बार नंगे हाथों बाघ मारा था
· चित्तप्रिय राय चौधरी – उसका साथी
· अंग्रेज पुलिस – घेरा डाले हुए

दादा: “बेटा, बाघा जतिन का असली नाम जतिन्द्रनाथ मुखर्जी था। वह इतना ताकतवर था कि उसने एक बार एक बाघ को नंगे हाथों मार डाला था – इसलिए उसका नाम ‘बाघा’ पड़ा। वह युगांतर पार्टी का नेता था – जिसने सुभाष चंद्र बोस को भी प्रेरित किया।”

(बालेश्वर। जतिन अपने साथियों के साथ बैठा है। वह बहुत मजबूत देह वाला है – उसकी बाँहें भालू जैसी हैं। साढ़े तीन फुट की लंबी तलवार उसकी कमर में बँधी है।)
बाघा जतिन (अपने साथियों से, आँखों में चमक): “देखो भाईयों, हम युगांतर पार्टी के क्रांतिकारी हैं। अंग्रेज जानते हैं कि मैंने अपने जीवन में एक बाघ को मारा है – पर वे नहीं जानते कि मैं हर रोज उनके साम्राज्य को मार रहा हूँ। हमें हथियार चाहिए – हमें क्रांति चाहिए। हम अंग्रेजों को हथियारों के बल पर ही हरा सकते हैं। गाँधी

का अहिंसा मार्ग गुलामों के लिए है – हम आज़ाद पैदा हुए हैं, हम आज़ाद मरेंगे।"

(अचानक पुलिस का घेरा आ जाता है। गोलियाँ चलने लगती हैं।)

(जतिन अकेले ही तीन पुलिस वालों को मार डालता है – पर उसे भी कई गोलियाँ लगती हैं। वह घुटनों पर गिर जाता है।)

बाघा जतिन (अपने साथी चित्तप्रिय से, अंतिम साँस लेते हुए):
"चित्तप्रिय... भागो। मैं मर रहा हूँ – पर भारत मरेगा नहीं। तुम जियो – और उन्हें बताओ कि एक बाघा जतिन था... जिसने अपनी मिट्टी के लिए अपना सब कुछ दे दिया। जय हिंद!"

(वह जमीन पर गिर जाता है।)

तथ्य: बाघा जतिन (1879-1915) – युगांतर पार्टी के प्रमुख नेता। उन्होंने प्रथम विश्व युद्ध के दौरान जर्मनी से हथियार लाने का प्रयास किया। 9 सितम्बर, 1915 को बालेश्वर मुठभेड़ में वीरगति प्राप्त की। उन्होंने सुभाष चंद्र बोस और भगत सिंह को प्रेरित किया।

💚 अच्छाई:
अदम्य साहस, शारीरिक ताकत, नेतृत्व क्षमता।
🖤 बुराई:
हिंसक मार्ग – हथियार उठाए, पुलिस को मारा।

उप-दृश्य **9.2:** प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस – **"**सबसे कम उम्र के फाँसी पाने वाले**"**

टाइम: 30 अप्रैल, 1908

जगह: मुजफ्फरपुर (बिहार)

पात्र:

· खुदीराम बोस – 18-19 साल का युवा क्रांतिकारी
· प्रफुल्ल चाकी – 19 साल का क्रांतिकारी, युगांतर पार्टी का सदस्य
· जज किंग्सफोर्ड – (निशाना, पर चूक गए)

दादा: “बेटा, 1908 में खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी ने अंग्रेज जज किंग्सफोर्ड की हत्या का प्रयास किया। वह जज वही था जिसने क्रांतिकारियों को कठोर सज़ाएँ दी थीं।”

(मुजफ्फरपुर। शाम का समय। एक बग्घी आती है – उस पर सवार दो यूरोपियन महिलाएँ हैं।)

खुदीराम बोस (प्रफुल्ल से फुसफुसाते हुए, बम हाथ में लिए):
“प्रफुल्ल दा – किंग्सफोर्ड की बग्घी आ रही है। हमें आज उसे सबक सिखाना है। यह वही मजिस्ट्रेट है जिसने हमारे सैकड़ों कार्यकर्ताओं को सड़कों पर पीटा है।”

(प्रफुल्ल चाकी बम फेंकता है – जोरदार विस्फोट।)

राहगीर (चिल्लाते हुए): “बम… बम फट गया! दो औरतें मारी गईं!”
(प्रफुल्ल और खुदीराम दोनों समझ जाते हैं – वे किंग्सफोर्ड को मारने में सफल नहीं हुए। अंग्रेज महिलाएँ मारी गईं। वे अलग-अलग दिशाओं में भागते हैं।)

(मोकामा स्टेशन। प्रफुल्ल चाकी पुलिस से घिर जाता है।)

प्रफुल्ल चाकी (अपनी पिस्तौल अपने सीने पर रखते हुए): “मैं गिरफ्तार नहीं होऊंगा। मेरे शरीर को पकड़ सकते हो – पर मेरे इरादों को नहीं। जय हिंद!”

(गोली चलती है – प्रफुल्ल चाकी गिर जाता है। पुलिस उसका सिर काट लेती है – यह अंग्रेजी हुकूमत की जघन्यतम घटनाओं में शामिल है।)

(खुदीराम बोस को गिरफ्तार कर लिया जाता है। मुकदमा चलता है। 19 साल के खुदीराम को फाँसी की सज़ा सुनाई जाती है।)

(फाँसी का दिन – 11 अगस्त, 1908। खुदीराम बोस को फंदे पर लटकाया जा रहा है। वह मुस्कुरा रहा है।)

खुदीराम बोस (अंतिम शब्द, भगवद गीता हाथ में लिए): “मौत से मत डरो। वीरों की यही पहचान है। मैं 19 साल का हूँ – पर मुझे गर्व है कि मैं देश के लिए मर रहा हूँ। जय हिंद!”

(फंदा कस जाता है।)

तथ्य: खुदीराम बोस (1889-1908) – सबसे कम उम्र के क्रांतिकारी जिन्हें फाँसी हुई (19 वर्ष)। प्रफुल्ल चाकी (1888-1908) – गिरफ्तारी से पहले आत्महत्या। पुलिस ने उनका सिर काटकर अदालत में पेश किया।

💚 अच्छाई:
कम उम्र में बलिदान, देश के प्रति समर्पण।
🖤 बुराई:
हिंसक मार्ग – बम फेंका, निर्दोष महिलाएँ मारी गईं।

उप-दृश्य **9.3:** काकोरी कांड **– "**जब **10** क्रांतिकारियों ने अंग्रेजी खजाना लूटा**"**

टाइम: 9 अगस्त, 1925
जगह: काकोरी (लखनऊ के पास), रेलवे ट्रैक

पात्र (पूरी सूची):

· राम प्रसाद बिस्मिल – काकोरी कांड के नेता, कवि, HRA के संस्थापक – 28 साल
· अशफाक उल्ला खाँ – बिस्मिल के साथी, हिंदू-मुस्लिम एकता के प्रतीक – 25 साल
· चंद्रशेखर आज़ाद – पुलिस को चकमा देकर भाग निकले – 19 साल तब
· राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी – बंगाली क्रांतिकारी – 30 साल
· ठाकुर रोशन सिंह – अचूक निशानेबाज – 33 साल
· शचीन्द्रनाथ बख्शी – बंगाली क्रांतिकारी – 21 साल
· केशव चक्रवर्ती – बंगाली क्रांतिकारी – 22 साल
· मन्मथनाथ गुप्त – लेखक, क्रांतिकारी – 25 साल
· मुकुन्दी लाल – सह-षड्यंत्रकर्ता – 22 साल
· बनवारी लाल – सह-षड्यंत्रकर्ता – 23 साल
· (कुल 10 मुख्य क्रांतिकारी, चार को फाँसी)

दादा: “बेटा, काकोरी कांड क्रांतिकारी आंदोलन का सबसे बड़ा और सबसे व्यवस्थित प्रयास था। इसकी योजना बनाई थी राम प्रसाद बिस्मिल ने – जो एक कवि भी थे। उनके साथ थे अशफाक उल्ला खाँ – जिन्होंने हिंदू-मुस्लिम एकता की मिसाल पेश की। और चंद्रशेखर आज़ाद – जो बाद में HSRA के कमांडर बने।”

(शाहजहाँपुर – 8 अगस्त, 1925। रात। सभी क्रांतिकारी एक गुप्त बैठक में इकट्ठा होते हैं।)



राम प्रसाद बिस्मिल (गंभीर स्वर में, नक्शे पर उंगली घुमाते हुए): "भाइयों, हमारे संगठन हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन (HRA) को हथियार खरीदने के लिए पैसे चाहिए। अंग्रेज हमारी जनता से लूट का माल इकट्ठा कर रहे हैं – वही माल अब हम वापस लेंगे। कल रात शाहजहाँपुर से लखनऊ जाने वाली डाउन ट्रेन में अंग्रेजी सरकार का खजाना जा रहा है। हम उसे लूटेंगे।"

अशफाक उल्ला खाँ (आगे बढ़ते हुए, आँखों में चमक): "बिस्मिल भाई, मैं तुम्हारे साथ हूँ। यह सिर्फ़ डकैती नहीं है – यह अंग्रेजों को सबक सिखाने का मौका है। हिंदू और मुसलमान दोनों मिलकर यह काम करेंगे – यही उन्हें सबसे ज्यादा डराएगा।"

चंद्रशेखर आज़ाद (तलवार उठाते हुए): "तय है। मैं बाहर पहरा दूंगा। कोई पुलिस वाला पास नहीं फटकने पाएगा।"

बिस्मिल: “कल रात 8 बजे ट्रेन काकोरी स्टेशन के पास पहुँचेगी। राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी – तुम चेन खींचोगे। रोशन सिंह – तुम्हारी रायफल सबसे अचूक है, तुम संभालना। बाकी लोग सामान लादोगे।”

(9 अगस्त, 1925 – रात के 8 बजे। शाहजहाँपुर से लखनऊ जा रही डाउन ट्रेन काकोरी स्टेशन के पास पहुँचती है।)

राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी (अपने साथियों से): “अब मैं चेन खींच रहा हूँ। तुम लोग तैयार रहना।”

(लाहिड़ी ने इमरजेंसी चेन खींची – ट्रेन रुक जाती है।)

(दसों क्रांतिकारी ट्रेन पर चढ़ जाते हैं। चंद्रशेखर आज़ाद बाहर पहरा दे रहा है।)

बिस्मिल (ट्रेन के गार्ड से, तलवार दिखाते हुए): “वो खजाने के बैग – जो अंग्रेजी सरकार ले जा रही है – हमें दे दो। हमें हथियार खरीदने हैं।”

रोशन सिंह (अपनी रायफल तानकर, क्रूर आवाज़ में): “जल्दी करो। हमारा वक्त कम है।”

(बिस्मिल और अशफाक उल्ला खाँ बैग लेकर बाहर निकलते हैं।)

(पर भागते समय मन्मथनाथ गुप्त की बंदूक से एक गोली छूट जाती है – उस ट्रेन का एक यात्री, अहमद अली, मारा जाता है। घटना अब ‘डकैती’ से ‘हत्या’ में बदल जाती है।)

(क्रांतिकारी तितर-बितर हो जाते हैं। चंद्रशेखर आज़ाद पुलिस को चकमा देकर भाग निकलता है। बाकी साथियों के सिर पर फाँसी का फरमान लटकने लगता है।)

(गिरफ्तारियाँ होती हैं। मुकदमा चलता है। अदालत के जज के सामने सभी क्रांतिकारी डटे रहते हैं।)

बिस्मिल (अदालत में, सीना तानकर): "हमने कोई अपराध नहीं किया। हमने अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ विद्रोह किया है – यह हमारा कर्तव्य है। फाँसी देनी हो तो दो – पर हम झुकेंगे नहीं।"

(जज – सजा सुनाता है।)

जज (गंभीर स्वर में): "राम प्रसाद बिस्मिल, राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी, ठाकुर रोशन सिंह और अशफाक उल्ला खाँ – चारों को फाँसी। शचीन्द्रनाथ सान्याल को आजीवन कारावास। बाकी को 3 से 14 साल की सजा।"

(फाँसी का दिन – 19 दिसंबर, 1927। बिस्मिल को फाँसी के तख्ते पर लाया जाता है।)

बिस्मिल (अपने उर्दू शेर पढ़ते हुए): "सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है, देखना है जोर कितना बाजू-ए-कातिल में है..."

(फंदा कस जाता है। अशफाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी और रोशन सिंह को भी फाँसी दे दी जाती है।)

तथ्य: काकोरी कांड (9 अगस्त, 1925) – राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी और ठाकुर रोशन सिंह को फाँसी हुई। शचीन्द्रनाथ सान्याल को आजीवन कारावास (बाद में उनकी जेल में ही मृत्यु हो गई)। चंद्रशेखर आज़ाद पुलिस को चकमा

देकर भाग निकले – और उन्होंने हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी (HSRA) का पुनर्गठन किया। काकोरी कांड ने युवाओं में क्रांति की आग और भड़का दी।

💚 अच्छाई:
अदम्य साहस, योजना, हिंदू-मुस्लिम एकता, बलिदान।
🖤 बुराई:
 हिंसक मार्ग – डकैती, हत्या, क्रांति के नाम पर अपराध।

उप-दृश्य **9.4:** जतिन दास **– "**जिसने भगत सिंह को बम बनाना सिखाया और **63** दिन अनशन किया**"**

टाइम: 1929
जगह: लाहौर, मियाँवाली जेल

पात्र:

· जतिन दास (जतिन्द्र नाथ दास) – बंगाली क्रांतिकारी, बम निर्माता, भगत सिंह के सहयोगी – 25 साल
· भगत सिंह – उसका दोस्त और साथी क्रांतिकारी
· अंग्रेज जेल अधिकारी – कठोर

दादा: “बेटा, जतिन दास वही थे जिन्होंने भगत सिंह को बम बनाना सिखाया। वह HSRA के लिए गुप्त बम कारखाना चलाता था। लाहौर षड्यंत्र केस (1929) में गिरफ्तार होने के बाद, उन्होंने और उनके साथियों ने 64 दिनों की भूख हड़ताल कर डाली।”

(शाहजहाँपुर जेल – बिस्मिल के साथ जतिन दास भी बंद थे, पर बाद में लाहौर केस में उनकी नई कहानी शुरू होती है।)

(जेल की कोठरी – जतिन दास कमजोर हो चुके हैं, पर वह नहीं झुकते।)

जतिन दास (अपने साथियों से, कमज़ोर शरीर को सहारा देते हुए):
“अंग्रेज हमें खाना तो दे सकते हैं – पर हमारे इरादे नहीं बदल सकते। हम भूखे रहेंगे – पर अंग्रेजों को यह सबक मिलेगा कि हिंदुस्तानी भूखों मर सकते हैं, पर अपने सिद्धांत नहीं बेच सकते।”

(63 दिन बीत जाते हैं। 13 सितंबर, 1929 – जतिन दास की तबीयत बहुत बिगड़ जाती है।)

जतिन दास (अपने साथी क्रांतिकारी से, अंतिम साँस लेते हुए):
“भगत… से कहना – उसका बम मैंने पूरा कर दिया है। मैं नहीं रहा… पर क्रांति जारी है। जय हिंद…”



(वह मर जाता है। उसका शरीर सूखकर कंकाल बन चुका है। उसकी मृत्यु के बाद नेहरू और सुभाष बोस तक उनके पार्थिव शरीर को सम्मान देने पहुँचे।)

तथ्य: जतिन दास (1904-1929) – बंगाली क्रांतिकारी। 13 सितंबर, 1929 को 63 दिनों की भूख हड़ताल के बाद लाहौर जेल में उनकी मृत्यु हो गई। उन्होंने भगत सिंह को बम बनाना सिखाया और उनके साथ HSRA के सदस्य थे।

💚 अच्छाई:
क्रांति के लिए आत्म-बलिदान, अदम्य इच्छाशक्ति।
🖤 बुराई:
भूख हड़ताल – अपनी जान दे दी, जिससे परिवार का भविष्य अधर में रह गया।

उप-दृश्य 9.5: चंद्रशेखर आज़ाद – "जो डर गया, समझो मर गया"

टाइम: 27 फरवरी, 1931
जगह: इलाहाबाद, अल्फ्रेड पार्क (अब आज़ाद पार्क)

पात्र:

· चंद्रशेखर आज़ाद – 25 साल, हाथ में पिस्तौल, HSRA का कमांडर
· ब्रिटिश पुलिस – चारों तरफ से घेरा डाले हुए

(अल्फ्रेड पार्क। पुलिस ने चंद्रशेखर आज़ाद को घेर लिया है। उसके पास बचने का कोई रास्ता नहीं है – एक पिस्तौल में केवल एक गोली बची है।)

पुलिस अफसर (चिल्लाते हुए, हाथ में लाठी लिए): “चंद्रशेखर, हार मान लो! तुम घिर चुके हो। हम तुम्हें जिंदा पकड़ लेंगे – और फिर फाँसी पर लटका देंगे।”

चंद्रशेखर आज़ाद (मुस्कुराते हुए, आँखों में कोई डर नहीं – बस एक अजीब सी शांति): “मैंने 15 साल की उम्र में प्रण लिया था – ‘मैं कभी पुलिस के हाथ नहीं आऊंगा।’ मैं आज़ाद हूँ – और आज़ाद ही मरूंगा।”

(वह अपनी पिस्तौल अपने सीने पर रखता है।)

चंद्रशेखर आज़ाद (अंतिम शब्द, गरजते हुए): “जो डर गया – समझो मर गया!”



(गोली चलती है – वह गिर जाता है। जमीन पर खून बिखर जाता है।)

(पुलिस उसके पास दौड़ती है – पर अब कुछ नहीं बचा। उन्होंने उसका नाम जान लिया था – कभी न पकड़ा गया, न गिरफ्तार हुआ। आज़ाद ही मरा।)

दादा: “बेटा, यह था चंद्रशेखर आज़ाद – जो कभी पुलिस के हाथ नहीं आया। उसकी मौत ने पूरे देश में क्रांति की ज्वाला और प्रज्वलित कर दी।”

तथ्य: चंद्रशेखर आज़ाद (असली नाम चंद्रशेखर तिवारी) ने 27 फरवरी, 1931 को इलाहाबाद के अल्फ्रेड पार्क में पुलिस से घिर जाने पर आत्महत्या कर ली। वह केवल 25 वर्ष के थे। उन्होंने HSRA (हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी) का पुनर्गठन किया और भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु को प्रशिक्षित किया।

💚 अच्छाई:
अदम्य साहस, आत्मसम्मान – उन्होंने अपनी प्रतिज्ञा निभाई, कभी गिरफ्तार नहीं हुए।
🖤 बुराई:
अपनी जान ले ली – क्या यह सही था? बहस का विषय।

उप-दृश्य **9.6:** भगत सिंह**,** राजगुरु**,** सुखदेव **–** फाँसी **(23** मार्च**, 1931)**

टाइम: 23 मार्च, 1931
जगह: लाहौर सेंट्रल जेल

पात्र:

· भगत सिंह – 23 वर्ष, HSRA का प्रमुख नेता
· शिवराम राजगुरु – 22 वर्ष, सॉन्डर्स हत्याकांड में शामिल
· सुखदेव थापर – 23 वर्ष, सह-षड्यंत्रकर्ता

(लाहौर सेंट्रल जेल। तड़के सवेरे – अंधेरा ही अंधेरा है। तीनों क्रांतिकारियों को फाँसी के तख्ते पर लाया जाता है।)



भगत सिंह (फाँसी के फंदे को देखते हुए, मुस्कुराते हुए): “मौत तो निश्चित है। फर्क सिर्फ इतना है – आज हम इतिहास बना रहे हैं।”

सुखदेव (भगत सिंह से, हाथ मिलाते हुए): “भगत, तुम्हारा नाम इस देश से कभी नहीं मिटेगा।”

राजगुरु (अपने साथियों से): “जब तक भारत में एक साँस बाकी है – तब तक हमारी याद आएगी।”

(तीनों स्वयं फाँसी का फंदा अपने गले में डालते हैं – डर का कोई नाम नहीं।)

भगत सिंह (अंतिम शब्द, चिल्लाते हुए): “इंकलाब जिंदाबाद!”

(फंदा कस जाता है।)

(सुबह होते ही पूरे भारत में खबर फैल जाती है। लाखों लोग सड़कों पर आ जाते हैं – रोते, गाते, ‘इंकलाब जिंदाबाद’ के नारे लगाते।)

दादा (आँखों में आँसू लिए): “बेटा, भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव की शहादत ने सारे भारत को जगा दिया। उनके बलिदान ने दिखा दिया – मरना भी जीने का एक ढंग है।”

तथ्य: भगत सिंह (1907-1931), शिवराम राजगुरु (1908-1931), सुखदेव थापर (1907-1931) – तीनों को 23 मार्च, 1931 को लाहौर सेंट्रल जेल में फाँसी दे दी गई। भगत सिंह केवल 23 वर्ष के थे। उनका नारा ‘इंकलाब जिंदाबाद’ आज भी अमर है।

💚 अच्छाई:
अदम्य साहस, देशभक्ति – वे मुस्कुराते हुए फाँसी पर चढ़े।
🖤 बुराई:
हिंसक मार्ग – सॉन्डर्स हत्याकांड, बम फेंकना। क्या यह सही था? बहस का विषय।

उप-दृश्य **9.7:** उधम सिंह **–** **"**जलियाँवाला बाग का बदला**"**

टाइम: 13 मार्च, 1940
जगह: लंदन, कैक्सटन हॉल

पात्र:

· उधम सिंह – 41 साल, 20 साल बाद बदला लेने आया
· कई पूर्व ब्रिटिश अधिकारी – जलियाँवाला बाग से जुड़े

दादा: “बेटा, उधम सिंह वही 12 साल का बच्चा था – जिसने जलियाँवाला बाग में अपनी माँ और भाई को खोया था। उसने प्रतिज्ञा की थी – ‘चाहे 20 साल लग जाएँ, डायर को मारूंगा।’ जब उसे पता चला कि डायर पहले ही मर चुका है, तो उसने तय किया – वह उन सब अधिकारियों को मारेगा जो उस नरसंहार के जिम्मेदार थे।”

(लंदन। कैक्सटन हॉल। जनरल डायर की स्मृति में एक सभा हो रही है। हॉल के अंदर कई पूर्व अधिकारी बैठे हैं।)

(उधम सिंह नकली मूछें लगाकर, एक सज्जन के भेष में आता है – एक छोटी सी पिस्तौल उसके कोट में छिपी है।)

उधम सिंह (अपने मन में): “बीस साल… बीस साल पहले जलियाँवाला बाग में मैंने अपनी माँ और भाई को खोया था। आज वह दिन है – आज मैं अपनी प्रतिज्ञा पूरी करूँगा।”

(वह सीढ़ियों पर चढ़ता है। अपनी पिस्तौल निकालता है।)



उधम सिंह (चिल्लाते हुए, पिस्तौल तानकर): “जलियाँवाला बाग का बदला! तुम लोगों ने मेरे परिवार को – हजारों निर्दोषों को मारा। आज उसी का खामियाजा भुगतो!”

(गोलियाँ चलती हैं। चीखें। चार अंग्रेज अधिकारी – जिनमें डायर का एक सहयोगी भी था – मारे जाते हैं।)

(पुलिस उसे पकड़ लेती है। मुकदमा चलता है।)

जज (सख्ती से): “उधम सिंह, तुम्हें फाँसी होगी।”

उधम सिंह (मुस्कुराते हुए): “फाँसी? मैं तो मर मिटा – पर मैंने अपना लक्ष्य पूरा कर लिया। जलियाँवाला बाग की आत्मा अब शांत होगी। जय हिंद!”

(31 जुलाई, 1940 – लंदन की जेल में उधम सिंह को फाँसी दे दी जाती है।)

दादा: “बेटा, एक बच्चा – जिसने 12 साल की उम्र में अपनों को खोया था – 20 साल बाद बदला लेने के लिए लंदन गया। यह बलिदान अद्वितीय है।”

तथ्य: उधम सिंह ने 13 मार्च, 1940 को लंदन के कैक्सटन हॉल में जलियाँवाला बाग के जिम्मेदार अधिकारियों की हत्या की। 31 जुलाई, 1940 को उन्हें फाँसी दे दी गई।

💚 अच्छाई:
20 साल तक धैर्य रखा – एक दिन बदला लिया। उसने जलियाँवाला बाग के लाखों शहीदों की आवाज़ बनकर अंग्रेजों को जवाब दिया।
🖤 बुराई:
हिंसक मार्ग – अधिकारियों की हत्या। पर क्या नरसंहार का बदला लेना गलत था? बहस का विषय।

दृश्य **10:** गाँधी युग **– "**अहिंसा का चमत्कार**"**

दादा: “बेटा, क्रांतिकारियों के बीच ही एक और बड़ी ताकत उठी – अहिंसा की ताकत। महात्मा गाँधी ने साबित कर दिखाया कि बिना हथियार उठाए भी अंग्रेजों को हराया जा सकता है।”

उप-दृश्य **10.1:** चंपारण सत्याग्रह **(1917) –** पहला सत्याग्रह

टाइम: 1917 ई.
जगह: चंपारण (बिहार)

पात्र:

· महात्मा गाँधी – लाठी पकड़े, चश्मा, सिर पर गंजी टोपी
· किसान – भूखे, मजबूर, डरे हुए
· अंग्रेज अधिकारी – कठोर

(चंपारण, बिहार – किसानों पर अत्याचार हो रहा है। नील की खेती जबरदस्ती करवाई जा रही है।)

गाँधी (किसानों के बीच बैठकर, उनकी बात सुनते हुए): “तुम क्यों नहीं बोलते? तुम्हारे साथ अत्याचार हो रहा है – तुम भूखे हो, तुम मजबूर हो – पर तुम सैकड़ों हो, हजारों हो। अंग्रेज कुछ ही हैं।”



किसान (डरते हुए): “साहब, हम डरते हैं। अंग्रेज जेल डाल देंगे – हमारे खेत छीन लेंगे – हमें पीटेंगे।”

गाँधी (हाथ में लाठी लेकर मुस्कुराते हुए): “तो डरो मत। मैं भी जाऊंगा जेल। हम सब जाएंगे। पर बोलना जरूरी है – चुप रहना

गुलामी है। बोलना – भले सजा मिले – आज़ादी का पहला कदम है।"

(गाँधी ने पहला सत्याग्रह (अहिंसक प्रतिरोध) किया। अंग्रेज अधिकारी घबरा गए – उन्होंने किसानों की माँगें मान लीं।)

तथ्य: चंपारण (1917) – गाँधी का पहला सत्याग्रह। उन्होंने किसानों के लिए नील की खेती का उत्पीड़न बंद करवाया।

उप-दृश्य **10.2:** दांडी यात्रा **(1930) –** नमक कानून तोड़ा

टाइम: 12 मार्च – 6 अप्रैल, 1930
जगह: साबरमती आश्रम (अहमदाबाद) से दांडी (गुजरात) तक

पात्र:

· महात्मा गाँधी – 78 लोगों के साथ, लाठी पकड़े
· सरदार पटेल – साथ में
· जवाहरलाल नेहरू – साथ में
· हजारों अनुयायी – रास्ते में जुड़ते गए

दादा: "बेटा, 1930 में गाँधी ने दांडी यात्रा निकाली – 386 किलोमीटर, 24 दिन। बिना किसी हथियार के, केवल सत्य और अहिंसा के बल पर।"

(साबरमती आश्रम – 12 मार्च, 1930। सुबह की धूप। गाँधी अपनी लाठी टिकाकर चलने को तैयार हैं। 78 लोग उनके पीछे खड़े हैं।)

गाँधी (अपने साथियों से): “हम आज अंग्रेजों के नमक कानून को तोड़ने जा रहे हैं। नमक – एक ऐसी चीज जो हर गरीब के लिए जरूरी है – उस पर भी अंग्रेजों का कब्जा? हम दिखाएंगे – हम अपना नमक खुद बनाएंगे, खुद खाएंगे। चलो!”

(24 दिन की पैदल यात्रा। रास्ते में हजारों लोग जुड़ते जाते हैं।)



(समुद्र तट – 6 अप्रैल, 1930। गाँधी झुकते हैं – मुट्ठी भर नमक उठाते हैं।)

गाँधी (चिल्लाते हुए, पूरे देश को संबोधित करते हुए): “मैंने नमक कानून तोड़ा है। हर भारतीय को नमक बनाने का अधिकार है। अंग्रेज नहीं बताएंगे कि हमें कितना नमक चाहिए – हम बनाएंगे नमक, हम खाएंगे नमक – हम आज़ाद हैं!”

(पूरे देश में नमक बनने लगा। लोगों ने अंग्रेजी कपड़े जलाए, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया, जेलें भर गईं।)

तथ्य: दांडी यात्रा (12 मार्च – 6 अप्रैल, 1930) – ब्रिटिश नमक कानून तोड़ने के लिए। इसने पूरे देश में सविनय अवज्ञा आंदोलन को जन्म दिया।

उप-दृश्य **10.3:** भारत छोड़ो आंदोलन **(1942) – "**करो या मरो**"**

टाइम: 8 अगस्त, 1942
जगह: बॉम्बे, गोवालिया टैंक मैदान

पात्र:

· महात्मा गाँधी – मंच पर
· जवाहरलाल नेहरू – उनके साथ
· सरदार पटेल – उनके साथ
· हजारों लोग – भीड़

(बॉम्बे, गोवालिया टैंक मैदान – 8 अगस्त, 1942। हजारों लोग इकट्ठा हैं। गाँधी मंच पर खड़े हैं।)



गाँधी (अपनी प्रसिद्ध आवाज में, डगमगाकर नहीं, बल्कि पूरी ऊर्जा से बोलते हुए): “करो या मरो – हम अंग्रेजों से कहते हैं – भारत छोड़ो। हम अपनी लड़ाई खुद लड़ेंगे। चाहे हम भूखे रहें, चाहे हम मरें – हम झुकेंगे नहीं। मैंने अपने जीवन में कभी अंग्रेज से हथियार नहीं उठाया – पर अब मैं कहता हूँ – चाहे जेल जाऊँ, चाहे मुझे गोली लगे – मैं नहीं झुकूंगा।”

नेहरू (मंच पर खड़े, आग बबूला होकर): “गाँधी जी ठीक कहते हैं। हम अंग्रेजों से सहयोग नहीं करेंगे। उनके कारखानों में काम नहीं करेंगे – उनके स्कूलों में नहीं पढ़ेंगे – उनके कोर्ट में नहीं जाएंगे – हम एक स्वतंत्र राष्ट्र चाहते हैं, और वह अब तुरंत चाहते हैं।”

(पूरा देश उठ खड़ा हुआ। जेलें भर गईं – लाखों लोग गिरफ्तार किए गए – गाँधी जेल गए, नेहरू जेल गए, पटेल जेल गए।)

तथ्य: भारत छोड़ो आंदोलन (8 अगस्त, 1942) – गाँधी ने ‘करो या मरो’ का नारा दिया। अंग्रेजों ने कांग्रेस पर प्रतिबंध लगा दिया – पूरे नेतृत्व को जेल में डाल दिया। पर आंदोलन नहीं रुका – आम जनता ने अंग्रेजी शासन के खिलाफ विद्रोह कर दिया।

💚 गाँधी की अच्छाई:
अहिंसा, सत्याग्रह – उन्होंने दुनिया को यह सिखाया कि हथियारों के बिना भी साम्राज्य को हराया जा सकता है।
🖤 गाँधी की बुराई:
अंबेडकर ने उन पर दलितों की उपेक्षा करने का आरोप लगाया। पूना पैक्ट (1932) में गाँधी ने अंबेडकर से समझौता कर लिया – अलग निर्वाचन क्षेत्र की मांग वापस ले ली गई।

—

दृश्य **11:** सुभाष चंद्र बोस **–** **"**जब भारत ने विदेश में सेना बनाई**"**

टाइम: 1941-1945 ई.
जगह: कलकत्ता, फिर सिंगापुर, फिर बर्मा

पात्र:

· सुभाष चंद्र बोस – कांग्रेस के अध्यक्ष (दो बार), उत्साही, आग बबूला
· कैप्टन मोहन सिंह – जिन्होंने सबसे पहले आजाद हिंद फौज बनाई
· रासबिहारी बोस – गदर पार्टी के नेता
· जापानी सेनापति – सुभाष से मिलने वाले

दादा: “बेटा, गाँधी के अहिंसा मार्ग से सहमत न होने वाला एक और बड़ा नेता था – सुभाष चंद्र बोस। उसने कहा – ‘अंग्रेजों को हथियारों से ही भगाया जा सकता है।’”



(1938 – कांग्रेस का हरिपुरा (गुजरात) अधिवेशन। सुभाष चंद्र बोस अध्यक्ष बने।)

सुभाष चंद्र बोस (उत्साही स्वर में): “मैं अध्यक्ष बनना चाहता हूँ – पर गाँधी जी के तरीकों से सहमत नहीं हैं। अहिंसा से अंग्रेज नहीं भागेंगे – हमें भी हिंसा करना सीखना होगा। जरूरत पड़े तो हमें बंदूक उठानी चाहिए – तोप चलानी चाहिए – जापान और जर्मनी से मदद लेनी चाहिए।”

(गाँधी उनसे नाराज़ थे – दूसरी बार भी सुभाष अध्यक्ष बने (1939, त्रिपुरी) – पर गाँधी के विरोध के कारण उन्होंने इस्तीफा दे दिया।)

(1941 – कलकत्ता, सुभाष चंद्र बोस घर में नजरबंद हैं। रात का समय – वह खिड़की से निकलते हैं – गुमनामी में एक कार में बैठते हैं – पेशावर, फिर अफगानिस्तान, फिर मास्को (रूस), फिर बर्लिन (जर्मनी) – वहाँ से सबमरीन (पनडुब्बी) से जापान पहुँचते हैं।

(सिंगापुर – 1943। सुभाष ने आजाद हिंद फौज (INA – इंडियन नेशनल आर्मी) की कमान संभाली।)

सुभाष (अपने सैनिकों को, हाथ उठाकर, जोशीले स्वर में): “तुम मुझे खून दो – मैं तुम्हें आजादी दूंगा। दिल्ली चलो – चलो दिल्ली चलो। जब तक आखिरी अंग्रेज भारत से नहीं निकलता – हम नहीं रुकेंगे।”

(सैनिकों ने नारा लगाया – “दिल्ली चलो! दिल्ली चलो!”)

(इम्फाल, बर्मा – 1944। आजाद हिंद फौज ने ब्रिटिश भारत की पूर्वी सीमा पर हमला किया – पर हार गए।)

(1945 – ताइवान के पास सुभाष का विमान दुर्घटनाग्रस्त हो गया – सुभाष चंद्र बोस मारे गए। (या जीवित हैं – रहस्य।)

तथ्य: सुभाष चंद्र बोस ने फॉरवर्ड ब्लॉक (1939) बनाया। आजाद हिंद सरकार (21 अक्टूबर, 1943 – सिंगापुर) की स्थापना की। उसके प्रसिद्ध नारे – ‘दिल्ली चलो’, ‘तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा’।

💚 अच्छाई:
जोश, साहस, विदेशी सहायता से सेना खड़ी करने की क्षमता – उनका व्यक्तित्व करिश्माई था।
🖤 बुराई:
उन्होंने जापान (जो स्वयं एक आक्रमणकारी था) से मदद ली – क्या यह सही था? बहस का विषय।

दृश्य **12:** विभाजन और स्वतंत्रता **–** **"**जब भारत बाँटा गया**"**

टाइम: 1947 ई.

जगह: दिल्ली, लाहौर, कलकत्ता – पूरे उत्तर-पश्चिम और पूर्वी भारत

पात्र:

· जवाहरलाल नेहरू – कांग्रेस नेता, प्रथम प्रधानमंत्री
· सरदार पटेल – गृह मंत्री, कड़े स्वभाव
· मुहम्मद अली जिन्ना – मुस्लिम लीग के नेता, पाकिस्तान की मांग
· महात्मा गाँधी – अंतिम प्रयास – दंगे रोकने के लिए पैदल चल रहे हैं
· लॉर्ड माउंटबेटन – अंतिम वायसराय

दादा: “बेटा, 1940 में जिन्ना ने पहली बार पाकिस्तान की मांग उठाई। कांग्रेस ने मना कर दिया – ‘हम हिंदुस्तान को नहीं बाँटेंगे’। पर 1946 में दंगे भड़के – कलकत्ता, नोआखली, बिहार – हजारों मारे गए। गाँधी पैदल चलते हुए नोआखली गए – ‘हिंदू-मुस्लिम भाईचारा’ दिलाने। पर दंगे नहीं रुके। 1947 – अंग्रेजों ने फैसला सुना दिया – बँटवारा होगा।”

(दिल्ली – 3 जून, 1947। लॉर्ड माउंटबेटन, नेहरू, जिन्ना, पटेल – चारों एक मेज पर बैठे हैं।)



माउंटबेटन (गंभीरता से): “बँटवारा – यही एकमात्र रास्ता है। हिंदू बहुल क्षेत्र भारत, मुस्लिम बहुल क्षेत्र पाकिस्तान। पंजाब और बंगाल – दो हिस्सों में बँटेंगे। लाखों लोग पलायन करेंगे – हम उनकी सुरक्षा की गारंटी नहीं दे सकते – पर बँटवारा होगा।”

जिन्ना (कड़ी आवाज़ में): “हम पाकिस्तान लेंगे – चाहे बाटकर लें, चाहे आधा-आधा करके – मुसलमानों को अलग देश चाहिए।”

नेहरू (उदास, टूटे स्वर में): “मैं अपने दिल को चीर रहा हूँ – पर हम मानते हैं। बँटवारा होगा।”

पटेल (सख्ती से, पर अंदर ही अंदर दुखी): “हम मान गए – पर यह गलत है। एक दिन हमें पछताना पड़ेगा।”

(जून-अगस्त 1947 – पूरे पंजाब और बंगाल में खून बह रहा है। हिंदू पाकिस्तान से भारत आ रहे हैं – मुसलमान भारत से पाकिस्तान जा रहे हैं। रेलगाड़ियाँ लाशों से भरी हैं – सड़कों पर शव बिखरे हैं – लाखों मारे गए।)

(14 अगस्त, 1947 – पाकिस्तान स्वतंत्र।)

(15 अगस्त, 1947 – भारत स्वतंत्र।)

(दिल्ली – संसद भवन की आधी रात। नेहरू अपने ऐतिहासिक भाषण में कहते हैं।)

नेहरू (आधी रात को, रेडियो पर, काँपती आवाज़ में): “Long years ago, we made a tryst with destiny… (बहुत साल पहले हमने भाग्य से मिलने की बात कही थी…) आज रात, करीब आधी रात को, जब दुनिया सोती है, भारत अपनी नींद से जागेगा – जीवन और आज़ादी के लिए।” .
(तिरंगा फहराया जाता है – तालियाँ – खुशी – पर उसी तिरंगे के नीचे खून बह रहा है।)

तथ्य: भारत का विभाजन – 14/15 अगस्त, 1947 – लाखों मारे गए, करोड़ों बेघर हुए। माउंटबेटन योजना (3 जून, 1947) के अनुसार बँटवारा हुआ।

अंतिम दृश्य – गाँधी की हत्या (30 जनवरी, 1948)

टाइम: 30 जनवरी, 1948 ई.
जगह: दिल्ली, बिड़ला हाउस

पात्र:

· महात्मा गाँधी – 78 वर्ष, सफेद चादर ओढ़े
· नाथूराम गोडसे – एक हिंदू कट्टरपंथी

(बिड़ला हाउस। गाँधी प्रार्थना सभा की ओर जा रहे हैं – लाठी टिके, धीरे-धीरे।)

(एक युवक (नाथूराम गोडसे) उनके सामने आता है – 'बापू' कहता है – झुकता है – और तीन गोलियाँ निकालकर उनके सीने में उतार देता है।)

गाँधी (गिरते हुए, हाथ जोड़कर, मुँह से निकलता है): "हे राम…"

(पूरा देश रो पड़ा।)



▪नेहरू (रेडियो पर, रोते हुए, रुक-रुक कर): "The light has gone out of our lives… (हमारे जीवन से रोशनी चली गई है…)"

तथ्य: महात्मा गाँधी की हत्या 30 जनवरी, 1948 – नाथूराम गोडसे ने की।

🔄 तुलना – भारत और विश्व (स्वतंत्रता संग्राम काल)

1857-1858 ई.
भारत में:
1857 विद्रोह (कारतूस, बहादुर शाह जफर, रानी लक्ष्मीबाई, कुँवर सिंह) ।
विश्व में:
अमेरिका में गृहयुद्ध (1861-65), डार्विन का 'ओरिजिन ऑफ स्पीशीज़' (1859) ।

1885 ई.
भारत में:
कांग्रेस की स्थापना (बॉम्बे) – व्योमेश चंद्र बनर्जी अध्यक्ष ।
विश्व में:
बर्लिन सम्मेलन (1884-85) – अफ्रीका का बँटवारा ।

1905-1911 ई.
भारत में:
बंगाल विभाजन (1905), स्वदेशी आंदोलन ।
विश्व में:
रूस में क्रांति (1905), फ्रांस में चर्च-राज्य पृथक्करण ।

1917-1922 ई.
भारत में:
चंपारण (1917), रॉलेट एक्ट, जलियाँवाला बाग (1919), असहयोग (1920-22) ।
विश्व में:
रूसी क्रांति (1917), प्रथम विश्व युद्ध समाप्त (1918), फासीवाद का उदय (इटली, 1922) ।

1930-1931 ई.
भारत में:
दांडी यात्रा (1930), गाँधी-इरविन समझौता।
विश्व में: दुनिया में महामंदी (1929), हिटलर का उदय (जर्मनी, 1933)।

1942-1945 ई.
भारत में:
भारत छोड़ो (1942), आजाद हिंद फौज, सुभाष चंद्र बोस।
विश्व में:
द्वितीय विश्व युद्ध (1939-45), हिटलर की हार,
हिरोशिमा-नागासाकी पर बम (1945)।

1947 ई.
भारत में:
भारत-पाकिस्तान बँटवारा (14/15 अगस्त, 1947), हिंसा, पलायन।
विश्व में:
द्वितीय विश्व युद्ध के बाद शीत युद्ध (अमेरिका vs सोवियत संघ)।

1948 ई.
भारत में:
गांधी की हत्या (30 जनवरी, 1948)।
विश्व में:
इज़राइल की स्थापना, बर्लिन की नाकाबंदी।

इस अंक के प्रश्न-उत्तर

प्रश्न: 1857 के विद्रोह का तात्कालिक कारण क्या था?
उत्तर: चर्बी वाले कारतूस (सुअर + गाय की चर्बी) ।

प्रश्न: बहादुर शाह जफर को अंग्रेजों ने कहाँ निर्वासित किया?
उत्तर: रंगून (बर्मा) ।

प्रश्न: 'व्यपगत का सिद्धांत' किसकी नीति थी?
उत्तर: डलहौजी (अंग्रेज गवर्नर-जनरल) ।

प्रश्न: सती प्रथा किसने समाप्त करवाई और कब?
उत्तर: राजा राममोहन राय – 1829 ई. (लॉर्ड बैंटिक ने कानून बनाया) ।

प्रश्न: 'वापस वेदों की ओर' का नारा किसने दिया?
उत्तर: स्वामी दयानंद सरस्वती (आर्य समाज) ।

प्रश्न: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना कब और कहाँ हुई?
उत्तर: 1885, बॉम्बे (अध्यक्ष – व्योमेश चंद्र बनर्जी) ।

प्रश्न: 'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' किसने कहा?
उत्तर: बाल गंगाधर तिलक (गरमपंथी नेता) ।

प्रश्न: क्रांतिकारी भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु को फाँसी कब हुई?
उत्तर: 23 मार्च, 1931

प्रश्न: गाँधी का पहला सत्याग्रह कहाँ और कब हुआ?
उत्तर: चंपारण (बिहार, 1917) ।

प्रश्न: दांडी यात्रा कब हुई?
उत्तर: 12 मार्च – 6 अप्रैल, 1930 ई.

प्रश्न: 'करो या मरो' का नारा किस आंदोलन में दिया गया?
उत्तर: भारत छोड़ो आंदोलन (1942) ।

प्रश्न: 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा' किसने कहा?
उत्तर: सुभाष चंद्र बोस ।

प्रश्न: भारत-पाकिस्तान बँटवारा कब हुआ?
उत्तर: 14/15 अगस्त, 1947 ई. ।

प्रश्न: महात्मा गाँधी की हत्या कब और किसने की?
उत्तर: 30 जनवरी, 1948 ई. – नाथूराम गोडसे ।

महत्वपूर्ण याद रखने योग्य बिंदु

1. 1857 का विद्रोह (10 मई, 1857) – प्रथम स्वतंत्रता संग्राम।
   नेता: बहादुर शाह जफर (दिल्ली), रानी लक्ष्मीबाई (झाँसी), नाना साहब (कानपुर), तात्या टोपे, कुँवर सिंह (बिहार), बेगम हजरत महल (लखनऊ), मंगल पांडे।
2. सामाजिक सुधारक:
   · राजा राममोहन राय – ब्रह्म समाज (1828), सती प्रथा समाप्त (1829)
   · स्वामी दयानंद – आर्य समाज (1875), 'वापस वेदों की ओर', 'सत्यार्थ प्रकाश'
   · स्वामी विवेकानन्द – रामकृष्ण मिशन (1897), शिकागो धर्म संसद (1893)
3. कांग्रेस (1885) – पहले अध्यक्ष व्योमेश चंद्र बनर्जी।
   प्रारंभ में नरमपंथी (दादाभाई नौरोजी, फिरोजशाह मेहता) – बाद में गरमपंथी (लाल-बाल-पाल – लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, बिपिन चंद्र पाल)

4. क्रांतिकारी:

· बाघा जतिन (1915) – बालेश्वर मुठभेड़

· प्रफुल्ल चाकी और खुदीराम बोस (1908) – मुजफ्फरपुर षड्यंत्र

· काकोरी कांड (9 अगस्त, 1925) – राम प्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्ला खाँ, राजेन्द्र नाथ लाहिड़ी, रोशन सिंह (फाँसी); चंद्रशेखर आज़ाद भाग निकले

· चंद्रशेखर आज़ाद (27 फरवरी, 1931) – अल्फ्रेड पार्क, आत्महत्या

· जतिन दास (13 सितंबर, 1929) – 63 दिन भूख हड़ताल, लाहौर जेल

· भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव (23 मार्च, 1931) – फाँसी

· उधम सिंह (13 मार्च, 1940) – लंदन में जलियाँवाला बाग का बदला

5. गाँधी युग:

· चंपारण (1917) – पहला सत्याग्रह

· असहयोग (1920-22), दांडी यात्रा (1930), भारत छोड़ो (1942) – 'करो या मरो'

· गाँधी के साथी: जवाहरलाल नेहरू, सरदार पटेल, डॉ. भीमराव अंबेडकर (पूना पैक्ट, 1932)

6. सुभाष चंद्र बोस – फॉरवर्ड ब्लॉक (1939), आजाद हिंद फौज (INA), आजाद हिंद सरकार (21 अक्टूबर, 1943, सिंगापुर) – नारे: 'दिल्ली चलो', 'तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा'

7. विभाजन (1947):

· मुहम्मद अली जिन्ना – पाकिस्तान की मांग (1940)

· लॉर्ड माउंटबेटन (अंतिम वायसराय) – माउंटबेटन योजना (3 जून, 1947)

· 14/15 अगस्त, 1947 – भारत और पाकिस्तान स्वतंत्र

8. गाँधी की हत्या (30 जनवरी, 1948) – नाथूराम गोडसे (हिंदू कट्टरपंथी)

—

अंक समाप्त

अगले अंक 13 में: आज़ादी के बाद – संविधान (26 जनवरी, 1950, डॉ. भीमराव अंबेडकर निर्माता), रियासतों का विलय (सरदार पटेल, ऑपरेशन पोलो – हैदराबाद), प्रधानमंत्री (नेहरू से मोदी तक), भारत के धर्म (हिंदू, बौद्ध, जैन, सिख, इस्लाम, ईसाई) – उनकी अच्छाइयाँ और बुराइयाँ।

तो चलिए, अब हम इस महानाटक के तेरहवें और अंतिम अंक में प्रवेश करते हैं।

यह वह अंक है जहाँ आज़ादी का सपना सच होता है – पर सपने के साथ एक दर्द भी आता है: बँटवारा, खून, लाखों बेघर। और फिर एक नए भारत की शुरुआत – संविधान, गणतंत्र, और एक ऐसी यात्रा जो आज भी जारी है।

यह कहानी है आज़ादी के बाद की – जब नेहरू ने नए भारत की नींव रखी, जब इंदिरा ने आपातकाल लगाया, जब वाजपेयी ने परमाणु बम बनवाया, जब मोदी ने नोटबंदी की। और साथ ही, उन धर्मों की कहानी जो इस भूमि पर हजारों सालों में विकसित हुए – हिंदू, बौद्ध, जैन, सिख, इस्लाम, ईसाई – उनकी अच्छाइयाँ, उनकी बुराइयाँ, और उनका वर्तमान।

अंक **13:** आज़ादी के बाद **– "**नए भारत का जन्म और धर्मों की यात्रा**"**

(1947 ई. से वर्तमान तक – और साथ ही, धर्मों की कहानी जो हजारों सालों में बनी)

प्रस्तावना: **15** अगस्त**, 1947 – "**एक नए सपने की शुरुआत**"**

एक शाम। दादा और पोता उसी चबूतरे पर बैठे हैं – जहाँ इतने सारे अंक बीत गए। पोता के हाथ में एक पुराना अखबार है – जिसकी स्याही लगभग मिट चुकी है, पर तारीख साफ है: 15 अगस्त, 1947।

पोता: "दादा, आपने सुना था वह रेडियो पर – नेहरू जी का भाषण?"

दादा (आँखें बंद करके, उस रात को फिर से जीते हुए): "बेटा, 15 अगस्त, 1947 की रात को हम सब रो रहे थे और हँस रहे थे। रो रहे थे – इसलिए कि देश बँट गया था, लाखों मारे गए थे, करोड़ों बेघर हो गए थे। हँस रहे थे – इसलिए कि गुलामी खत्म हो गई थी। अब हम अपने थे।"

पोता: "बँटवारे के बाद क्या हुआ? हमने फिर से देश कैसे बनाया?"

दादा (गहरी साँस लेते हुए): "बेटा, बँटवारे के बाद हमारे पास कुछ नहीं था – न सेना, न खजाना, न अनाज। पर हमारे पास एक सपना था – गरीबी, अशिक्षा, बीमारी को हराने का। और हमारे पास एक किताब थी – संविधान – दुनिया का सबसे लंबा लिखित संविधान – जिसे एक दलित परिवार से आने वाले महान विद्वान डॉ. भीमराव अंबेडकर ने लिखा। उन्होंने बचपन में छुआछूत देखी थी – उन्हें स्कूल में अलग बैठाया जाता था – उन्होंने जीवन भर अपमान झेला। और उसी अंबेडकर ने हमें वह संविधान दिया जिसने

छुआछूत को अपराध घोषित कर दिया – हर नागरिक को वोट देने का अधिकार दिया – और कहा – 'सब समान हैं'।"

भाग **1:** संविधान और गणतंत्र **– "**जब भारत ने खुद को लिखा**"**

दृश्य 1.1: संविधान सभा – "दुनिया का सबसे लंबा संविधान"

टाइम: 1946-1949 ई.
जगह: दिल्ली, संविधान सभा (अब संसद भवन)

पात्र:

· डॉ. भीमराव अंबेडकर – संविधान के मुख्य निर्माता, दलित परिवार से
· डॉ. राजेन्द्र प्रसाद – संविधान सभा के अध्यक्ष, बाद में प्रथम राष्ट्रपति
· जवाहरलाल नेहरू – प्रथम प्रधानमंत्री
· सरदार पटेल – गृह मंत्री, जिन्होंने रियासतों का विलय किया
· मौलाना अबुल कलाम आज़ाद – शिक्षा मंत्री

दादा: "बेटा, संविधान सभा में 300 से अधिक सदस्य थे – जिनमें 15 महिलाएँ भी थीं। उन्होंने दो साल, ग्यारह महीने, अठारह दिन में यह संविधान बनाया।"

(संविधान सभा – 1946। सभी लोग एकत्र हैं। अंबेडकर खड़े हैं – उनके हाथ में एक मोटी पांडुलिपि है।)



डॉ. अंबेडकर (गंभीरता से, हर शब्द को तौलकर): “हम एक ऐसा संविधान बना रहे हैं जो हर भारतीय का होगा – चाहे वह गरीब हो, अमीर हो, पढ़ा-लिखा हो, अनपढ़ हो, ऊँची जाति का हो या नीची। इस संविधान में लिखा होगा – ‘हर नागरिक को वोट देने का अधिकार है’ – चाहे वह पुरुष हो या स्त्री, चाहे वह किसी भी जाति का हो, चाहे किसी भी धर्म का हो। यह पहली बार होगा कि इतने बड़े देश में हर वयस्क को वोट मिलेगा।”

नेहरू (खड़े होकर): “हम लोकतंत्र चुनेंगे – जहाँ जनता राजा है। धर्मनिरपेक्षता – राज्य का कोई धर्म नहीं होगा – सबको अपना धर्म मानने की आज़ादी होगी। और समाजवाद – हम गरीबी, अशिक्षा, बीमारी को हराने का संकल्प लेंगे। यह संविधान केवल कानून की किताब नहीं है – यह हमारे सपनों की किताब है।”

(26 नवंबर, 1949 – संविधान पारित हुआ।)

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद (उठकर खड़े होते हैं): “आज हमने एक ऐतिहासिक काम पूरा किया है। अब 26 जनवरी, 1950 को यह

संविधान लागू होगा – और उस दिन भारत एक गणतंत्र बन जाएगा।"

(26 जनवरी, 1950 – दिल्ली, राजपथ। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद राष्ट्रपति बनते हैं – पहली बार तिरंगा फहरता है, लेकिन किसी अंग्रेज के हाथों नहीं – अपने हाथों।)



तथ्य: संविधान 26 नवंबर, 1949 को पारित हुआ, 26 जनवरी, 1950 को लागू हुआ। डॉ. राजेन्द्र प्रसाद प्रथम राष्ट्रपति बने। संविधान में लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, समाजवाद को शामिल किया गया।

💚 डॉ. अंबेडकर की अच्छाई:
दूरदर्शी, प्रतिभाशाली – उन्होंने छुआछूत को कानूनी अपराध घोषित किया।

🖤 डॉ. अंबेडकर की बुराई:
गाँधी से मतभेद थे – अलग निर्वाचन क्षेत्र की मांग वापस लेनी पड़ी (पूना पैक्ट, 1932)। उनकी कुछ नीतियाँ विवादित रहीं।

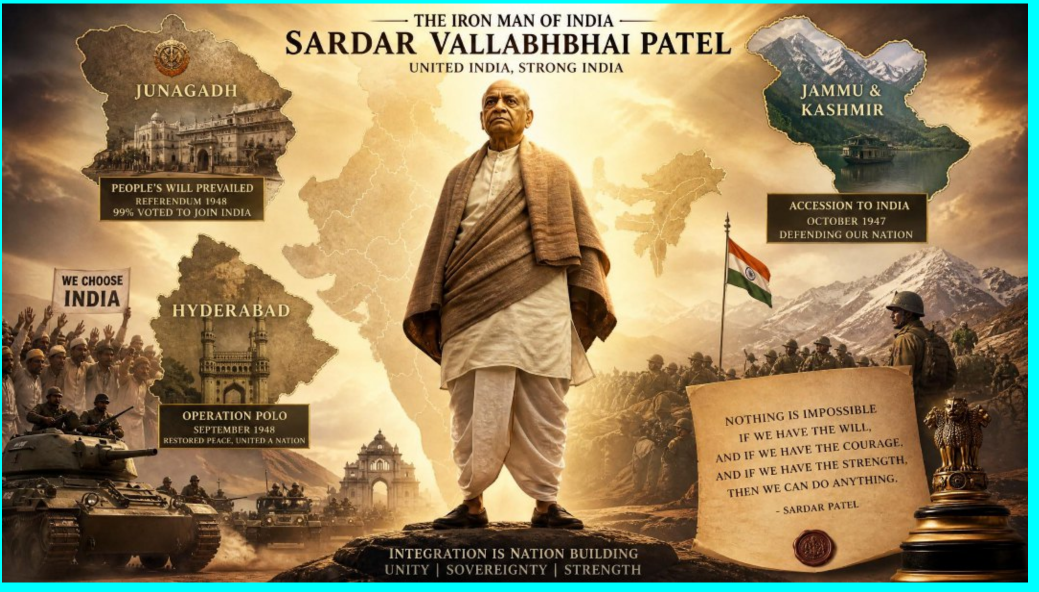
दृश्य **1.2:** रियासतों का विलय **– "**जब सरदार पटेल ने देश जोड़ा**"**

टाइम: 1947-1950 ई.
जगह: जूनागढ़, हैदराबाद, कश्मीर

पात्र:

· सरदार पटेल – गृह मंत्री, 'लौह पुरुष'
· निज़ाम – हैदराबाद के शासक (मुसलमान, हिंदू रियासत पर शासन)
· शेख अब्दुल्ला – कश्मीर के नेता

दादा: "बेटा, जब भारत आज़ाद हुआ, देश में 560 से अधिक रियासतें थीं – हर एक पर कोई न कोई नवाब या राजा बैठा था। सरदार पटेल ने उन्हें जोड़ने का काम किया – प्यार से, दबाव से, कभी तलवार दिखाकर, कभी रिश्वत देकर।"



(जूनागढ़ – नवाब पाकिस्तान जाना चाहता था – पर वहाँ हिंदू बहुल जनता थी।)

पटेल (अपने सेक्रेटरी से, दृढ़ता से): “जूनागढ़ का नवाब पाकिस्तान जाना चाहता है – पर वहाँ हिंदू बहुल हैं। हम वहाँ जनमत संग्रह कराएँगे – लोग मानेंगे तो पाकिस्तान, नहीं तो भारत। जनता की इच्छा से हम पीछे नहीं हटेंगे।”

(जनमत संग्रह हुआ – जूनागढ़ भारत में मिल गया।)

(हैदराबाद – निज़ाम भारत में मिलना नहीं चाहता था। वह पाकिस्तान जाना चाहता था – या फिर एक स्वतंत्र राज्य बनाना चाहता था – हालाँकि उसकी रियासत पूरी तरह भारत के घेरे में थी।)

पटेल (निज़ाम को चेतावनी भेजते हुए): “आपकी रियासत भारत के बीच में है। हम आपको पाकिस्तान नहीं जाने देंगे। अगर आप नहीं मानेंगे – तो हम सेना भेजेंगे – और यह युद्ध होगा – जिसका अंत आपकी पराजय के अलावा कुछ नहीं होगा।”

(1948 – 'ऑपरेशन पोलो' – भारतीय सेना ने हैदराबाद पर हमला किया। निज़ाम ने तीन दिन में हार मान ली।)

(कश्मीर – पाकिस्तानी कबाइली सेना ने हमला किया। महाराजा हरि सिंह भारत में विलय के लिए तैयार थे – पर शर्त रखी कि भारत युद्ध लड़ेगा।)

पटेल (नेहरू से): "कश्मीर विवादित है – पाकिस्तानी कबाइली सेना ने हमला कर दिया है। महाराजा भारत में विलय के लिए तैयार हैं – पर इस बारे में सोचना होगा – यह युद्ध लंबा चलेगा।"

(कश्मीर का मामला आज भी अनसुलझा है।)

तथ्य: सरदार पटेल ने 560 से अधिक रियासतों का विलय कराया। जूनागढ़ (जनमत संग्रह), हैदराबाद ('ऑपरेशन पोलो', 1948), कश्मीर (विवादित)।

💚 सरदार पटेल की अच्छाई:
कुशल कूटनीतिज्ञ – उन्होंने बिना गृहयुद्ध के भारत को एक किया।

🖤 सरदार पटेल की बुराई:
सख्त स्वभाव – उन्होंने जूनागढ़ और हैदराबाद में जनमत संग्रह करवाने से पहले ही दबाव डाला।

भाग **2:** आज़ादी के बाद के प्रधानमंत्री – **"**नेहरू से मोदी तक**"**

दादा: “बेटा, आज़ादी के बाद हमारे देश ने कई प्रधानमंत्री देखे – कुछ ने देश को आगे बढ़ाया, कुछ ने गलतियाँ कीं, कुछ ने इतिहास रच दिया। चलो, एक-एक करके जानते हैं।”

जवाहरलाल नेहरू (1947-1964) – "आधुनिक भारत के निर्माता"

टाइम: 1947-1964 ई.
जगह: दिल्ली, संसद

पात्र:

· नेहरू – प्रथम प्रधानमंत्री, आधुनिकता के पुजारी, अंग्रेज़ी में धाराप्रवाह, पर हिंदी में अटकते
· लाल बहादुर शास्त्री – उनके सहयोगी, बाद में प्रधानमंत्री
· इंदिरा गाँधी – उनकी बेटी

(संसद – नेहरू खड़े हैं। उनके हाथ में भाषण है।)



नेहरू (अपने सपनों की बात करते हुए): "हमारी बेटियाँ परमाणु वैज्ञानिक बनेंगी – हमारे बेटे इंजीनियर बनेंगे। हम इस्पात के कारखाने लगाएँगे – बाँध बनाएँगे – रेलवे लाइन बिछाएँगे – हम विज्ञान को आगे बढ़ाएँगे। हम किसी से पीछे नहीं हैं।"

(1962 – भारत-चीन युद्ध। भारत हारता है।)

नेहरू (गंभीरता से, टूटे स्वर में): "हम कमज़ोर थे – क्योंकि हमारे पास हथियार नहीं थे, हमारी सीमाएँ असुरक्षित थीं। अब हम अपनी रक्षा खुद करेंगे – और कभी किसी से नहीं हारेंगे। यह सबक बहुत महंगा था – पर अब हम तैयार हैं।"

तथ्य: नेहरू ने पंचवर्षीय योजनाएँ शुरू कीं – भारत-चीन युद्ध (1962) – भारत हारा। नेहरू की मृत्यु 1964 में हुई।

💚 नेहरू की अच्छाई:
लोकतंत्र के पुजारी, आधुनिक भारत के निर्माता – IIT, AIIMS, इस्पात कारखाने, बाँध।

🖤 नेहरू की बुराई:
 चीन के साथ युद्ध (1962) में हार – कमज़ोर सैन्य नीति। कश्मीर मुद्दा अनसुलझा छोड़ा।

लाल बहादुर शास्त्री (1964-1966) – "जय जवान, जय किसान"

टाइम: 1965 ई.
जगह: दिल्ली, रेडियो स्टेशन

पात्र:

· शास्त्री जी – छोटे कद के, पर बड़े दिल के

(रेडियो – शास्त्री जी का भाषण।)

शास्त्री जी (साफ-सुथरी आवाज़ में): “जय जवान, जय किसान – हमारे जवान हमारी रक्षा करते हैं – हमारे किसान हमें खाना खिलाते हैं। दोनों का सम्मान करो। दोनों देश की रीढ़ हैं।”



(1965 – भारत-पाक युद्ध। भारत जीतता है।)

शास्त्री जी (युद्ध के बाद रेडियो पर, राष्ट्र को संबोधित करते हुए):
“हमने पाकिस्तान को हराया – पर हम शांति चाहते हैं। हमने ताशकंद में समझौता किया है – सीमाएँ वही रहेंगी – पर अब युद्ध नहीं होंगे।”

(ताशकंद – समझौते के अगले दिन शास्त्री जी की हृदयगति रुक जाती है – रहस्य बना हुआ है।)

तथ्य: शास्त्री जी ने ‘जय जवान, जय किसान’ का नारा दिया (1965)। भारत-पाक युद्ध (1965) – भारत विजयी। ताशकंद समझौता (1966) – समझौते के अगले दिन शास्त्री जी की मृत्यु हो गई – रहस्य बना हुआ।

💚 शास्त्री जी की अच्छाई:
ईमानदार (एक छोटी सी पेंशन लेकर मरे), सादा जीवन – किसानों और जवानों के सम्मान का प्रतीक।

🖤 शास्त्री जी की बुराई:
केवल 18 महीने प्रधानमंत्री रहे – कुछ बड़ा नहीं कर पाए।

इंदिरा गाँधी (1966-1977, 1980-1984) – "आपातकाल और गरीबी हटाओ"

टाइम: 1971-1984 ई.
जगह: दिल्ली, संसद, अमृतसर

पात्र:

· इंदिरा गाँधी – नेहरू की बेटी, 'लौह महिला'
· जय प्रकाश नारायण – आपातकाल के विरोधी

(1971 – बांग्लादेश युद्ध। भारत-पाक युद्ध।)

इंदिरा गाँधी (संसद में): "हम पाकिस्तान को हराएँगे – और हम बांग्लादेश को एक नए देश के रूप में स्थापित करेंगे। हम शांति नहीं चाहते – हम न्याय चाहते हैं।"



(भारत जीतता है – बांग्लादेश नया देश बनता है।)

(1975 – इंदिरा गाँधी पर चुनाव धाँधली का आरोप लगता है – एक अदालत ने उन्हें सज़ा सुनाई। वह संसद में बहुमत खो देना नहीं चाहतीं – वह आपातकाल लगा देती हैं।)

इंदिरा गाँधी (रेडियो पर, 26 जून, 1975 को): "देश में आंतरिक अशांति बढ़ रही है – मैंने आपातकाल लगा दिया है। अब से प्रेस पर पाबंदी होगी – विरोधी नेताओं को गिरफ्तार किया जाएगा – सभी अधिकार रोक दिए जाएँगे।"

जय प्रकाश नारायण (जेल में, रोते हुए): "यह तानाशाही है। हम लोकतंत्र वापस लेंगे – चाहे सड़कों पर उतरना पड़े, चाहे जेल जाना पड़े – लोकतंत्र को मारा नहीं जा सकता।"

(1977 – आपातकाल हटा – इंदिरा गाँधी चुनाव हार जाती हैं – फिर 1980 में वापस जीतती हैं।)

(1984 – ऑपरेशन ब्लू स्टार – स्वर्ण मंदिर में सैनिक कार्रवाई। सिख उग्रवादियों ने स्वर्ण मंदिर को किला बना लिया था – सेना ने उन्हें निकाला – पर उसी साल 31 अक्टूबर को इंदिरा गाँधी के दो सिख अंगरक्षकों ने उनकी हत्या कर दी।)

तथ्य: 1971 – भारत-पाक युद्ध, बांग्लादेश का जन्म। आपातकाल (1975-1977) – लोकतंत्र का स्थगन – 26 जून, 1975 को इंदिरा गाँधी ने आपातकाल लगाया। 1984 – ऑपरेशन ब्लू स्टार – उसी वर्ष 31 अक्टूबर को इंदिरा गाँधी की हत्या।

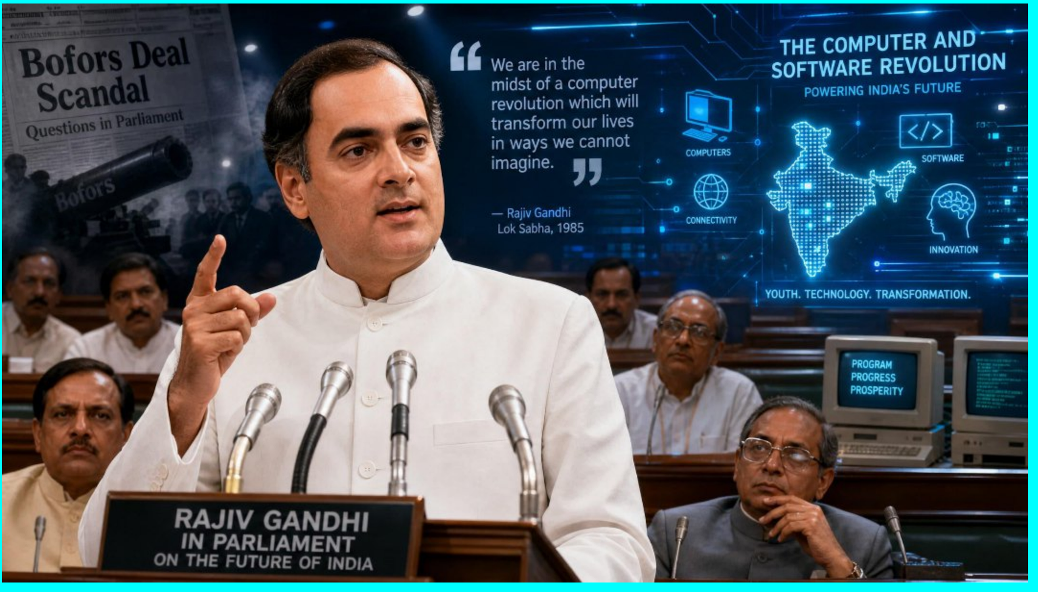
💚 इंदिरा गाँधी की अच्छाई:
 बांग्लादेश युद्ध जीतना (1971), भारत को मजबूत बनाना।

🖤 इंदिरा गाँधी की बुराई:
 आपातकाल (1975-77) – लोकतंत्र को कुचल दिया। ऑपरेशन ब्लू स्टार (1984) – स्वर्ण मंदिर में सेना भेजी – सिखों को नाराज़ किया – और उसी की वजह से उनकी हत्या हुई।

राजीव गाँधी (1984-1989) – "कंप्यूटर युग की शुरुआत"

टाइम: 1984-1989 ई.
जगह: दिल्ली, संसद

(राजीव गाँधी युवा थे – उनकी माँ की हत्या के बाद वे प्रधानमंत्री बने।)



राजीव गाँधी (संसद में): “हम देश में कंप्यूटर क्रांति लाएँगे। हम नेटवर्क बढ़ाएँगे – हम सॉफ्टवेयर उद्योग शुरू करेंगे – भारत को 21वीं सदी में ले जाएँगे।”

(1991 – श्रीलंका के तमिल उग्रवादियों (LTTE) ने राजीव गाँधी की हत्या कर दी।)

तथ्य: राजीव गाँधी की हत्या (1991) – LTTE ने की। बोफोर्स घोटाला – विवादित।

💚 राजीव गाँधी की अच्छाई:
कंप्यूटर क्रांति, युवाओं को आगे लाना।

🖤 राजीव गाँधी की बुराई:
बोफोर्स घोटाला – भ्रष्टाचार का आरोप (बाद में साफ हुआ)।

अटल बिहारी वाजपेयी (1998-2004) – "जब भारत ने परमाणु बम बनाया"

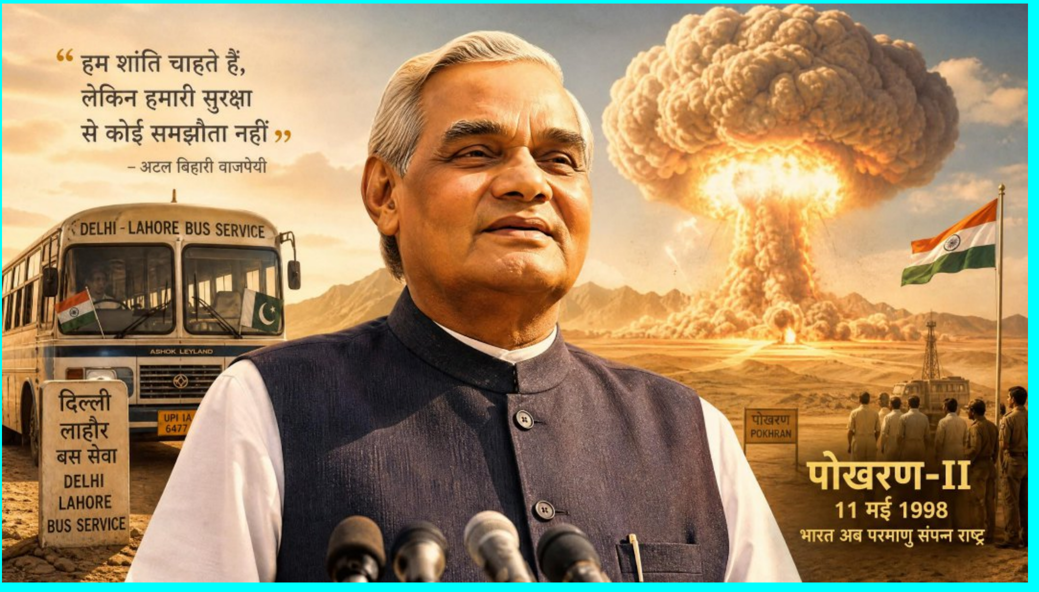
टाइम: 1998 ई.
जगह: राजस्थान, पोखरण

पात्र:

· अटल बिहारी वाजपेयी – प्रधानमंत्री, कवि
· डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम – परमाणु वैज्ञानिक (बाद में राष्ट्रपति)

(राजस्थान – पोखरण – 11 और 13 मई, 1998। भारत ने 5 परमाणु बमों का परीक्षण किया।)

वाजपेयी (टेलीविज़न पर, गर्व से): “हमने दुनिया को यह बता दिया है – भारत अब किसी से कम नहीं है। हम एक परमाणु शक्ति (Nuclear Power) हैं। हमारा परमाणु परीक्षण सफल रहा – भारत सुरक्षित है – हमें कोई धमका नहीं सकता।”



(उसी वर्ष – दिल्ली-लाहौर बस सेवा शुरू की – शांति का प्रयास।)

तथ्य: पोखरण-2 (1998) – भारत परमाणु शक्ति बना।
दिल्ली-लाहौर बस सेवा (1999) – शांति का प्रयास।

💚 वाजपेयी की अच्छाई:
परमाणु बम बनाया – भारत को बुलंदियाँ पर पहुँचाया। कवि – उनकी कविताएँ प्रसिद्ध हैं।

🖤 वाजपेयी की बुराई:
गुजरात दंगे (2002) – नियंत्रण नहीं कर पाए (आलोचना)।

मनमोहन सिंह (2004-2014) – "जब अर्थव्यवस्था बढ़ी, पर भ्रष्टाचार भी"

टाइम: 2004-2014 ई.
जगह: दिल्ली, संसद

मनमोहन सिंह (संसद में): “हमारी पहली प्राथमिकता गरीबी हटाना है। हम मनरेगा (MNREGA) लाए हैं – हर परिवार को 100 दिन काम की गारंटी – गाँवों में रोजगार। हम सूचना का अधिकार लाए हैं – हर नागरिक को सरकारी कामकाज जानने का अधिकार।”



(पर 2G स्पेक्ट्रम घोटाला, कोयला घोटाला, राष्ट्रमंडल खेलों में भ्रष्टाचार – सब उनकी सरकार को घेर लेते हैं।)

तथ्य: मनरेगा (2005), भारत-अमेरिका परमाणु समझौता (2008), 2G स्पेक्ट्रम घोटाला (2010)।

💚 मनमोहन सिंह की अच्छाई:
मनरेगा (ग्रामीण रोजगार), भारत-अमेरिका परमाणु समझौता।

🖤 मनमोहन सिंह की बुराई:

भ्रष्टाचार के बड़े घोटाले – कमज़ोर नेता (सब उनकी नाक पर चलते थे)।

नरेन्द्र मोदी (2014-वर्तमान) – "जब भारत ने नेता बदला"

टाइम: 2014-2024 ई.
जगह: गुजरात से दिल्ली तक, संसद

पात्र:

· नरेन्द्र मोदी – प्रधानमंत्री
· पाकिस्तानी प्रधानमंत्री – नवाज शरीफ, इमरान खान

(2014 – नरेन्द्र मोदी ने भारी बहुमत से चुनाव जीता – पहली बार पूर्ण बहुमत वाली सरकार।)

मोदी (संसद में): “हम ‘सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास’ करेंगे। देश को विकास की नई राह पर ले जाएँगे।”



(2016 – नोटबंदी – 500 और 1000 के पुराने नोट बंद कर दिए।)

मोदी (टेलीविज़न पर, 8 नवंबर, 2016 को): “मैं आज रात से 500 और 1000 रुपये के पुराने नोटों को बंद कर रहा हूँ। कालाधन, नकली नोट, आतंकवाद के वित्त पर काबू पाने के लिए यह कदम उठाया गया है।”

(बैंकों में लंबी लाइनें – लोग परेशान – छोटे व्यापारी तबाह – पर नोटबंदी सरकार का एक बड़ा आर्थिक प्रयोग था।)

(2017 – जीएसटी (Goods and Services Tax) – पूरे देश में एक कर – सरल, पर शुरू में कठिन था।)

(2019 – पुलवामा में आतंकी हमले के बाद, भारत ने पाकिस्तान के बालाकोट में घुसकर हमला किया।)

मोदी (रैली में, गरजते हुए): “हम अब घुसकर मारेंगे – सीमा पार घुसकर। हम जवाब देंगे – वो भी ऐसा कि वे भूल न जाएँ।”

(2020 – कृषि कानून – किसानों ने विरोध किया – दिल्ली की सीमाओं पर हज़ारों किसान डटे रहे। अंततः सरकार ने कानून वापस ले लिए।)

तथ्य: नोटबंदी (2016), जीएसटी (2017), बालाकोट हवाई हमला (2019), कृषि कानून (2020-21, वापस लिए गए), राम मंदिर निर्माण (2024 में समाप्त)।

💚 मोदी की अच्छाई:
विकास, आतंकवाद पर कार्रवाई, डिजिटल इंडिया (UPI, आधार), गरीबों को खाना (PM Garib Kalyan Yojana)।

🖤 मोदी की बुराई:
नोटबंदी (गलत तैयारी), कृषि कानून (वापस लेना पड़ा), सांप्रदायिक तनाव (आलोचना)।

भाग **3:** भारत के धर्म **– "**हजारों सालों की यात्रा**"**

दादा: "बेटा, आज़ादी के बाद के प्रधानमंत्रियों को जान लिया – पर अब तुम्हें उन धर्मों को भी जानना चाहिए जिन्होंने इस देश को बनाया। हर धर्म की अपनी अच्छाई है, अपनी बुराई है – कोई एकदम सही नहीं, कोई एकदम गलत नहीं।"

हिंदू धर्म – "सबसे पुराना धर्म"

टाइम: लगभग 4000 ई.पू. से वर्तमान
जगह: सिंधु घाटी, गंगा घाटी, पूरा भारत

दादा: “हिंदू धर्म की कोई एक संस्थापक नहीं है। यह हजारों सालों में बना – सिंधु घाटी सभ्यता की प्रकृति पूजा (पीपल, मातृदेवी, पशुपति – शिव) और आर्यों के वेद (यज्ञ, इंद्र, अग्नि) मिलकर बने।”



· वेद (लगभग 1500 ई.पू.) – सबसे पुराने ग्रंथ – ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद।

· उपनिषद (800-400 ई.पू.) – ज्ञान की बात, आत्मा और ब्रह्म की खोज – 'सत्यमेव जयते'।
· रामायण और महाभारत (लगभग 500 ई.पू. – 400 ई.) – राम और कृष्ण के जीवन पर – भगवद्गीता (कर्म, भक्ति, ज्ञान)।
· गुप्त काल (320-550 ई.) – हिंदू धर्म फिर से सत्ता में आया – मूर्ति पूजा बढ़ी, मंदिर बनने लगे।

💚 हिंदू धर्म की अच्छाई:

· 'वसुधैव कुटुम्बकम्' – पूरी दुनिया एक परिवार है।
· अहिंसा, करुणा, दया – बहुत महत्व।
· कई रास्ते – एक भगवान (एक सत्य, कई रास्ते)।
· सहिष्णुता – हिंदू धर्म कभी किसी धर्म को 'बुरा' नहीं कहता।

🖤 हिंदू धर्म की बुराई:

· वर्ण-व्यवस्था (जाति जन्म पर) – हजारों साल का अत्याचार, आज भी गाँवों में।
· शूद्रों और दलितों पर अत्याचार – छुआछूत।
· स्त्रियों पर अत्याचार – बाल-विवाह, सती प्रथा, दहेज प्रथा (हालाँकि अब गैर-कानूनी हैं)।
· धर्म के नाम पर ढोंग – मूर्ति पूजा की आलोचना (आर्य समाज और अन्य सुधारकों ने की)।

बौद्ध धर्म – "जब एक राजकुमार ने घर छोड़ दिया"

टाइम: 563 ई.पू. – वर्तमान
संस्थापक: गौतम बुद्ध (लुम्बिनी, नेपाल – 563 ई.पू.)

दादा: “गौतम बुद्ध एक राजकुमार थे – चारों तरफ कोई दुःख नहीं (पिता ने बूढ़े, बीमार, मुर्दा नहीं देखने दिए)। एक दिन उन्होंने एक बूढ़ा, एक बीमार, एक मुर्दा और एक संन्यासी देखा – उन्होंने घर छोड़ दिया। 35 वर्ष की उम्र में, बोधगया में पीपल के पेड़ के नीचे उन्हें ज्ञान मिला।”



बुद्ध की शिक्षा:

· चार आर्य सत्य (दुःख है, दुःख का कारण है, दुःख का निवारण है, रास्ता है)।
· आठ सिद्धांत (अष्टांगिक मार्ग) – सही समझ, सही लक्ष्य, सही बोलना, सही कर्म, सही आजीविका, सही प्रयास, सही स्मृति, सही समाधि।
· अहिंसा परमो धर्मः – सबसे बड़ा धर्म अहिंसा है।
· कोई ईश्वर नहीं – बस कर्म, बस ज्ञान, बस मोक्ष।

अशोक (274-232 ई.पू.) ने बौद्ध धर्म फैलाया – श्रीलंका, बर्मा, थाईलैंड, चीन, जापान।

💚 बौद्ध धर्म की अच्छाई:

· अहिंसा, करुणा, दया सबसे ऊपर।
· कोई जातिवाद नहीं – सब समान।
· मूर्ति पूजा नहीं (मूल बौद्ध धर्म में) – केवल ध्यान।
· बुद्ध की डायरी – 'स्वयं सोचो, स्वयं देखो, स्वयं सत्य का अनुभव करो'।

🖤 बौद्ध धर्म की बुराई:

· बुद्ध को भगवान बना दिया (बाद के बौद्ध धर्म में – महायान शाखा) – जबकि बुद्ध ने खुद कहा – 'मैं केवल एक शिक्षक हूँ'।
· भारत में विलीन हो गया (हिंदू धर्म ने बुद्ध को विष्णु का अवतार बना लिया) – लुप्त हो गया।
· मठों में स्त्रियाँ भिक्षुणी बन सकती हैं, पर बहुत कम (अब बढ़ रहा है)।

जैन धर्म – "जब एक राजकुमार ने अहिंसा को जीया"

टाइम: लगभग 600 ई.पू. – वर्तमान
24वें और अंतिम तीर्थंकर: महावीर (जन्म – 540 ई.पू., निर्वाण – 468 ई.पू.)

दादा: "जैन धर्म के 24 तीर्थंकर (मार्ग दिखाने वाले) हुए – पहले थे ऋषभदेव (पौराणिक), अंतिम थे महावीर (ऐतिहासिक)।"

महावीर की शिक्षा:

· पाँच व्रत – अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी मत करो), अपरिग्रह (संग्रह मत करो), ब्रह्मचर्य।
· त्रिरत्न – सम्यक दर्शन (सही नजरिया), सम्यक ज्ञान (सही ज्ञान), सम्यक चरित्र (सही चरित्र)।
· कर्मफल से छुटकारा – केवल कर्म ही बंधन है, मुक्ति कर्म के नाश से।

💚 जैन धर्म की अच्छाई:

· अहिंसा सबसे ऊपर – सबसे छोटे जीव को भी नहीं मारना (पानी छानकर पीना, मुँह पर कपड़ा बाँधना)।
· जातिवाद नहीं, स्त्रियों को भी मोक्ष।
· सादगी (अपरिग्रह) – कम संग्रह, कम जरूरतें।

🖤 जैन धर्म की बुराई:

· बहुत कट्टर अहिंसा – कभी-कभी व्यावहारिक नहीं (किसान खेत नहीं जोत सकता – कीड़े मारने का डर)।

· श्वेताम्बर (सफेद कपड़े पहनने वाले) और दिगम्बर (नंगे रहने वाले) – फूट।

सिख धर्म – "जब एक गुरु ने ‘खालसा’ बनाया"

टाइम: 1469 ई. – वर्तमान
प्रथम गुरु: गुरु नानक देव (जन्म – 1469 ई., पंजाब)

दादा: “गुरु नानक ने कहा – ‘कोई हिंदू नहीं, कोई मुसलमान नहीं – सब एक हैं।’”

10 गुरु हुए:

· गुरु नानक (1469-1539) – सिख धर्म की स्थापना, आदि ग्रंथ की रचना।
· गुरु अंगद (1539-1552) – गुरुमुखी लिपि के जनक।
· गुरु अर्जुन देव (1581-1606) – स्वर्ण मंदिर की नींव रखी, गुरु ग्रंथ साहिब का संकलन किया – जहाँगीर ने फाँसी दे दी।
· गुरु हरगोबिंद (1606-1645) – सिखों को सैनिक जाति में बदला।
· गुरु तेग बहादुर (1664-1675) – औरंगजेब ने इस्लाम कबूल न करने पर फाँसी दे दी।
· गुरु गोबिंद सिंह (1675-1708) – खालसा पंथ की स्थापना (1699), अंतिम गुरु।



(गुरु गोबिंद सिंह ने 'पाँच ककार' बनाए – केश (बिना कटे बाल), कंघा, कड़ा (लोहे का कंगन), कच्छा (विशेष अंडरवियर), कृपाण (छोटी तलवार)।)

गुरु गोविंद सिंह (खालसा बनाते हुए): "अब मेरे बाद कोई गुरु नहीं होगा – गुरु ग्रंथ साहिब ही गुरु होंगे। खालसा मेरा रूप है – खालसा योद्धा है – खालसा न्याय के लिए खड़ा है।"

💚 सिख धर्म की अच्छाई:

· सब समान – कोई जातिवाद, कोई छुआछूत।
· खालसा – वीरता, न्याय, और गरीबों की रक्षा।
· लंगर (सब एक साथ खाना) – सब बराबर।

🖤 सिख धर्म की बुराई:

· गुरु अर्जुन देव (जहाँगीर ने फाँसी दी) – सिखों में कट्टरपंथ, कुछ उग्र।
· ऑपरेशन ब्लू स्टार (1984) – सिख-हिंदू दंगे, इंदिरा गाँधी की हत्या – दर्द आज भी है।

इस्लाम धर्म – "जब अरब व्यापारी भारत आए"

टाइम: 712 ई. – वर्तमान
संस्थापक: पैगंबर मुहम्मद (570-632 ई., मक्का, अरब)

दादा: “इस्लाम भारत में 712 ई. में आया – मुहम्मद बिन कासिम ने सिंध जीता। फिर महमूद गजनवी (1025 ई. में सोमनाथ) और मुहम्मद गोरी (1192 ई. में दिल्ली पर कब्जा) के आक्रमण। फिर दिल्ली सल्तनत (1206-1526) और मुगल साम्राज्य (1526-1857) – दोनों इस्लामिक राज्य।”

सूफी संत (चिश्ती, सुहरावर्दी, कादरी) ने प्रेम से इस्लाम फैलाया – ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती (अजमेर) सबसे प्रसिद्ध।



💚 इस्लाम धर्म की अच्छाई:

· एकेश्वरवाद – एक ईश्वर।
· सब समान – कोई जातिवाद (कुरान में साफ), सब भाई।
· दान (ज़कात) – गरीबों का हिस्सा।
· सूफी संत – प्रेम और शांति का संदेश।

🖤 इस्लाम की बुराई:

· भारत में बलपूर्वक धर्म परिवर्तन (गजनवी और गोरी ने मंदिर तोड़े, जबरन मुसलमान बनाया) – औरंगजेब ने जज़िया कर लगाया।
· कब्जे और लूट।
· औरंगजेब ने सिख गुरु तेग बहादुर को मरवाया – सिख-मुसलमान दुश्मनी।
· 1947 का बँटवारा – धर्म के नाम पर लोगों ने एक-दूसरे का खून बहाया, लाखों मारे गए।

ईसाई धर्म – "जब संट थॉमस भारत आया"

टाइम: 52 ई. – वर्तमान
संस्थापक: ईसा मसीह (यीशु, 4 ई.पू. – 29 ई., बेथलहम; फिलिस्तीन / इसराइल)

दादा: “ईसाई धर्म भारत आया संट थॉमस (ईसा मसीह के 12 शिष्यों में से एक) के साथ – 52 ई. में, केरल पहुँचे। फिर पुर्तगाली (1498 ई., वास्को डी गामा) और अंग्रेज (1600 ई., ईस्ट इंडिया कंपनी) लाए।”

मिशनरियों ने गरीबों, दलितों, आदिवासियों को बपतिस्मा (धर्म परिवर्तन) दिया।

💚 ईसाई धर्म की अच्छाई:

· एकेश्वरवाद – एक परम पिता (भगवान), एक पुत्र (ईसा मसीह)।
· प्रेम और क्षमा – ‘दूसरा गाल दो, शत्रु से प्रेम करो’।

· कलवरी का बलिदान – ईसा ने मानवता के लिए खुद को बलि चढ़ाया।
· मिशनरियों ने स्कूल, अस्पताल बनाए – शिक्षा, स्वास्थ्य में सुधार।

🖤 ईसाई धर्म की बुराई:

· मिशनरी गतिविधियाँ – कभी-कभी फोर्सफुल लगती हैं (गरीबों को प्रलोभन देकर धर्म बदलवाना)।
· गोवा इंक्विजिशन (पुर्तगाली, 1560-1812) – गैर-ईसाइयों पर अत्याचार, यातनाएँ – काला अध्याय।

अंतिम दृश्य – दादा और पोता की बातचीत

(दादा और पोता – जहाँ से कहानी शुरू हुई थी, वहीं बैठे हैं। सूरज डूब रहा है।)

पोता: "दादा, इतने सारे अंक, इतने सारे राजा, इतने सारे युद्ध, इतने सारे धर्म… हमें क्या सीखना चाहिए?"

दादा (गहरी साँस लेते हुए, पोते के सिर पर हाथ रखते हुए): "बेटा, इतिहास से हम यह सीखते हैं – सत्ता चाहे किसी के हाथ में हो, वह अकेले कुछ नहीं कर सकती। अशोक कलिंग हार गया – पर उसने अपने पश्चाताप से बदलने की कोशिश की। पृथ्वीराज वीर था – पर उसके अहंकार ने दिल्ली खो दी। शिवाजी ने एक साम्राज्य बनाया – पर उनके वंशज फूट से खो बैठे। गाँधी ने अहिंसा से हराया – पर एक कट्टरपंथी की गोली रोक नहीं सके। हर युग में अच्छाई और बुराई साथ-साथ चलती है – कभी अच्छाई जीतती है, कभी बुराई। पर इतिहास की सबसे बड़ी सीख यह है – कोई साम्राज्य स्थायी नहीं

होता। केवल विचार रह जाते हैं – केवल वे लोग जो कुछ बदलकर गए।"

पोता: "तो हमें इतिहास क्यों पढ़ना चाहिए?"

दादा (मुस्कुराते हुए): "ताकि हम उन्हीं गलतियों को दोहराएँ नहीं – ताकि हम अहंकार से बचें, ताकि हम अपनी जड़ें पहचानें, और ताकि हम जानें – हम कहाँ से आए हैं… क्योंकि जो अपना अतीत भूल जाता है – वह भविष्य खो देता है।"

🔄 **तुलना – भारत और विश्व (आज़ादी के बाद)**

समय (लगभग) भारत में और विश्व में
▪1947 में -
भारत-पाकिस्तान बँटवारा (14/15 अगस्त), हिंसा, पलायन ।
▪ द्वितीय विश्व युद्ध समाप्त ।
▪शीत युद्ध (अमेरिका vs सोवियत संघ) ।
▪1948 में -
गाँधी की हत्या (30 जनवरी), संविधान सभा जारी ।
▪इज़राइल की स्थापना ।
▪बर्लिन की नाकाबंदी (1948-49) ।
▪1950 में - संविधान लागू (26 जनवरी) गणतंत्र ।
▪यूरोप में -
नाटो का गठन (सोवियत संघ के खिलाफ) ।
▪1962 में भारत-चीन युद्ध – भारत हारा ।
▪क्यूबा मिसाइल संकट ।
▪दुनिया परमाणु युद्ध के कगार पर ।
▪1965 में -
▪भारत-पाक युद्ध – भारत जीता ।

▪अमेरिका में ह्यूमन राइट्स एक्ट।
▪वियतनाम युद्ध (1965-75)।
▪1971 में भारत-पाक युद्ध – बांग्लादेश का जन्म।
▪वियतनाम युद्ध जारी।
▪अमेरिका में - अपोलो 15 चाँद पर उतरा।
▪(1975-77) में - आपातकाल (इंदिरा गाँधी)।
▪लोकतंत्र का स्थगन
▪ अमेरिका में -
वाटरगेट कांड (राष्ट्रपति निक्सन का इस्तीफा)
▪1984 में - ऑपरेशन ब्लू स्टार, इंदिरा गाँधी की हत्या।
▪ अमेरिका में - रीगन शासन।
▪बर्लिन की दीवार (1989 में गिरी)।
▪1991 में भारतीय अर्थव्यवस्था में सुधार (लाइसेंस राज खत्म), राजीव गाँधी की हत्या।
▪सोवियत संघ का विघटन।
▪ पहला गल्फ युद्ध
▪1998 पोखरण-2 – भारत परमाणु शक्ति बना।
▪अमेरिका के राष्ट्रपति क्लिंटन पर अभिशंसन (इस्तीफा नहीं)।
▪भारत में - 2016 नोटबंदी।
▪अमेरिका में - डोनाल्ड ट्रम्प राष्ट्रपति बने।
▪ब्रेक्जिट (UK) में 2020 कृषि कानून, कोरोना महामारी विश्व भर में कोरोना महामारी (लॉकडाउन, आर्थिक मंदी)।

इस अंक के प्रश्न-उत्तर

▪संविधान कब लागू हुआ?
26 जनवरी, 1950।
▪संविधान के मुख्य निर्माता कौन थे?
डॉ. भीमराव अंबेडकर।

▪किस प्रधानमंत्री ने 'गरीबी हटाओ' का नारा दिया? इंदिरा गाँधी।
▪किस प्रधानमंत्री ने 1965 में पाकिस्तान को हराया और 'जय जवान, जय किसान' का नारा दिया?
लाल बहादुर शास्त्री।
▪भारत ने परमाणु परीक्षण कब किया?
1998 (पोखरण-2, अटल बिहारी वाजपेयी)।
▪आपातकाल कब लगाया गया था?
1975-77 (इंदिरा गाँधी)।
▪'सत्यमेव जयते' किस धर्म से लिया गया है?
हिंदू धर्म (मुण्डकोपनिषद्)।
▪बौद्ध धर्म के संस्थापक कौन थे?
गौतम बुद्ध।
▪जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर कौन थे?
महावीर।
▪सिख धर्म के दसवें गुरु कौन हैं?
गुरु गोबिंद सिंह।
▪इस्लाम भारत में कब आया?
712 ई. (मुहम्मद बिन कासिम)।
▪ईसाई धर्म सबसे पहले भारत कब आया?
52 ई. (सेंट थॉमस)।
▪सबसे पुराना धर्म कौन सा है?
हिंदू धर्म (लगभग 4000 ई.पू. से)।

महत्वपूर्ण याद रखने योग्य बिंदु

आज़ादी के बाद:

1. 1947 – आज़ादी और बँटवारा।

2. संविधान (26 जनवरी, 1950) – डॉ. भीमराव अंबेडकर निर्माता, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद प्रथम राष्ट्रपति।
3. रियासतों का विलय – सरदार पटेल।
4. प्रधानमंत्री:
· नेहरू (1947-64) – पंचवर्षीय योजनाएँ, आधुनिक भारत के निर्माता। हार: 1962 भारत-चीन युद्ध।
· शास्त्री (1964-66) – 'जय जवान, जय किसान', 1965 में पाक को हराया।
· इंदिरा गाँधी (1966-77, 1980-84) – 1971 युद्ध, बांग्लादेश का जन्म। आपातकाल (1975-77) – लोकतंत्र का स्थगन। ऑपरेशन ब्लू स्टार (1984) – सिखों से टकराव, हत्या।
· राजीव गाँधी (1984-89) – कंप्यूटर क्रांति, हत्या (1991)।
· वाजपेयी (1998-2004) – पोखरण-2 (1998), परमाणु शक्ति।
· मनमोहन सिंह (2004-14) – मनरेगा (2005), भारत-अमेरिका परमाणु समझौता।
· मोदी (2014-वर्तमान) – नोटबंदी (2016), जीएसटी (2017), बालाकोट (2019), कृषि कानून (2020-21) वापस।

धर्म:

1. हिंदू धर्म (4000 ई.पू. से) – सबसे पुराना, कोई एक संस्थापक नहीं, सिंधु + आर्य मिश्रण। अच्छाई: सहिष्णु, 'वसुधैव कुटुम्बकम्'। बुराई: जातिवाद, छुआछूत, स्त्रियों पर अत्याचार।
2. बौद्ध धर्म (563 ई.पू., गौतम बुद्ध) – चार आर्य सत्य, अष्टांगिक मार्ग, अहिंसा। अच्छाई: अहिंसा, सब समान। बुराई: भारत में विलीन।
3. जैन धर्म (540-468 ई.पू., महावीर) – 24 तीर्थंकर, पाँच व्रत, अहिंसा परम। अच्छाई: अहिंसा, सादगी। बुराई: बहुत कट्टर।
4. सिख धर्म (1469 ई., गुरु नानक) – 10 गुरु, खालसा (1699), पाँच ककार। अच्छाई: सब समान, लंगर। बुराई: ऑपरेशन ब्लू स्टार (1984) – दर्द आज भी।

5. इस्लाम (712 ई.) – एकेश्वरवाद। अच्छाई: सब समान, दान, सूफी प्रेम। बुराई: बलपूर्वक धर्म परिवर्तन, 1947 बँटवारा, जजिया कर (औरंगजेब)।
6. ईसाई धर्म (52 ई. में सेंट थॉमस) – एकेश्वरवाद, प्रेम और क्षमा। अच्छाई: मिशनरियों ने शिक्षा-स्वास्थ्य में मदद की। बुराई: गोवा इंक्विजिशन (1560-1812) – यातनाएँ।

अंक समाप्त

दादा (अपने पोते से, आकाश की ओर देखते हुए, आखिरी शब्द): “बेटा, हमने पाषाण काल की गुफाओं से लेकर परमाणु बम तक की यात्रा कर ली। अब यह कहानी तुम्हारी है – तुम्हें आगे बढ़ानी है। याद रखना – इतिहास केवल तारीखों और राजाओं का नाम नहीं है – यह हमारी पहचान है, हमारी जड़ें हैं। इसे मत भूलना।”

पोता (मुस्कुराते हुए): “नहीं दादा, नहीं भूलूंगा। और एक दिन मैं अपने पोते को यही कहानी सुनाऊंगा – जैसे तुमने मुझे सुनाई।”

(आकाश में तारे चमकने लगते हैं। कहानी खत्म होती है – पर यात्रा जारी है।)

पूरा महानाटक समाप्त